তারকীবুল কোরআন

تركيب القرآن

আমপারা

পারা ৩০

সম্পাদনা

অধ্যাপক ডা. এন. কামরুল আহসান

প্রকাশনায়

লোকমান প্রকাশনী

৩৪ বাংলাবাজার, ঢাকা-১১০০।

তারকীবুল কোরআন

تركيب القرآن

সম্পাদনা
অধ্যাপক ডা. এন. কামরুল আহসান
প্রকাশক
আহসান সাকিব ও আহমেদ সাঈফি
লোকমান প্রকাশনী
৩৪ নর্থব্রুক হল রোড, বাংলাবাজার, ঢাকা-১১০০।
মোবাইল: ০১৯১৫২২১৯৭৫, ০১৭৫৮১১৬২১৮
গ্রন্থস্বত্ব
[প্রকাশক কর্তৃক সংরক্ষিত]
প্রকাশকাল
প্রথম প্রকাশঃ ২০১৭
দ্বিতীয় প্রকাশঃ অনলাইন সংস্করণ
তৃতীয় প্রকাশ : জানুয়ারি, ২০২৫ইং
পরিবেশনায়
মানচিত্র প্রকাশনী
৩৪ নর্থব্রুক হল রোড, বাংলাবাজার, ঢাকা-১১০০।
মূল্য : ৬৯০.০০ টাকা মাত্র।

মুদ্রণে
মুসলিম ভিলেজ, ঢাকা-১১০০
ISBN 978-984-34094-9-7

ঘরে বসেই অর্ডার করুন
হোম ডেলিভারী গ্রহণ করুন।
www.lokmanbd.com
www.muslimvillagebd.com
Email:lokmanbd481@gmail.com

سُوْرَةُ النَّبَإِ مَكِّيَّةٌ

৭৮। সূরা আন্-নাবা : মাক্কী

রুকু: ০২ আয়াত:৪০

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿1﴾	عَمَّ
فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل [VI س ا ل] (سُؤال،مسألة) জিজ্ঞাসাবাদ করা, سؤالপ্রশ্ন, مسائلُ ج مأسلةবিষয়, সমস্যা **পরষ্পর তারা জিজ্ঞাসাবাদ করছে**	جرّ (عَنْ) +ح. استفهام (ما) **কি তা?**
78|1|তারা পরস্পরে কি বিষয়ে জিজ্ঞাসাবাদ করছে?	

ٱلۡعَظِيۡمِ ﴿2﴾	ٱلنَّبَإِ	عَنِ
معرفة صفة مجرورة (عظامة) [ك] [عظم]বড় হওয়া, عظمٌ أظُمٌ ج হাড়, عُظماءُ ج عظيمٌবড়, শক্তিশালী	معرفة اسم مجرور بالكسر –متعلق بالفعل <يسألون>	جرّ সম্পর্কে

বিরাট	(نبْء،نُبوء) [ف][ن ب ا]উঁচু হওয়া, বাড়তি হওয়া, II-খবর দেওয়া, نبأ ج أنباء খবর, তথ্য সংবাদ	
78|2|মহা সংবাদ সম্পর্কে,		

مُخْتَلِفُوْنَ ﴿3﴾	فِيْهِ	هُمْ	اَلَّذِىْ
اسم مرفوع بالواو لأنه جمع مذكر سالم ،<ن>عوض عن التنوين (خلْف) [ن][خ ل ف] VIII উত্তরাধিকারী হওয়া, VIII-দ্বিমত করা, اختلافٌ ج اختلافات পার্থক্য মতানৈক্যকারীর	جرّ +ضمير متصل - متعلق بخبر آخر তা তে	ضمير منفصل – مبتدأ তারা	اسم موصول – صفة ثانية <للنبأ> যারা
78|3|যে সম্পর্কে তারা মতানৈক্য করে।			

سَيَعْلَمُوْنَ ﴿4﴾	كَلَّا
ح. استقبال +فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (عِلْم) [ف][علم]জানা, عِلمٌজ্ঞান শীঘ্রই জানবে তারা	ح. ردع কক্ষণনা
78|4|না, সত্ত্বরই তারা জানতে পারবে, 78|5|অতঃপর না, সত্ত্বর তারা জানতে পারবে।	

سَيَعْلَمُوْنَ ﴿5﴾	كَلَّا	ثُمَّ
ح. استقبال +فعل مضارع مرفوع بثبوت +ضمير متصل – فاعل (عِلْم) [ف][علم]জানা, عِلْمٌজ্ঞান জানবে তারা	ح. ردع কক্ষণনা	ح.عطف অতঃপর
78|5|অতঃপর না, সত্বর তারা জানতে পারবে।		

مِهْدًا ﴿6﴾	ٱلْأَرْضَ	نَجْعَلِ	أَلَمْ
اسم منصوب - مفعول ثانٍ [م ه د]॥সমভাবে বিছানো, مَهْدٌ ج مُهودٌবিছানা, দোলনা বিছানার	معرفة اسم منصوب – مفعول به [ا ر ض]॥ মাটিতে গাঁড়া, أرْضٌ(م) ج أراضٍ ،أراضون পৃথিবী, জমিন পৃথিবী	فعل مضارع مجزوم مجزوم (جعْل) [ف][جعل]সৃষ্টি করা, جعْلٌ جأجعالٌবেতন, পুরষ্কার সৃষ্টি করেছি আমরা	ح. استفهام +ح. نفي কি নাই
78|6|আমি কি করিনি ভূমিকে বিছানা			

أَوْتَادًا ﴿7﴾	وَٱلْجِبَالَ
اسم منصوب - مفعول به ثانٍ [و ت د]॥বাঁধা, পোঁতা,,وتَدٌ ج أوتادٌপেড়েক। পেড়েক	ح.عطف +معرفة اسم منصوب - مفعول به (جعْل) [ف][جعل] সৃষ্টি করা, جعْلٌ جأجعالٌবেতন, পুরষ্কার পাহাড় সমূহ
78|7|এবং পর্বতমালাকে পেরেক?	

وَخَلَقْنَٰكُمْ	أَزْوَٰجًا ﴿8﴾
ح.عطف +فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل ~فاعل +ضمير – مفعول به (خلْق) [ن][خ ل ق]সৃষ্টি করা, আকার দেওয়া, خَلْقٌসৃষ্টি, خُلْقٌপ্রকৃতি এবং সৃষ্টি করেছি আমরা তোমাদের	اسم منصوب ـ مفعول به [ز و ج]IIজোড়া মিলানো,দ্বীগুন করা, زَوْجٌ ج أزواجٌজোড়ার একটি, স্বামী, স্ত্রী, زوجةٌ ج زوجاتস্ত্রী জোড়াজোড়ার
78|8|আমি তোমাদেরকে জোড়া জোড়া সৃষ্টি করেছি, 78|9|তোমাদের নিদ্রাকে করেছি ক্লান্তি দূরকারী,	

وَجَعَلْنَا	نَوْمَكُمْ	سُبَاتًا ﴿9﴾
ح.عطف +فعل ماض مبني على السكون +ضمير متصل – فاعل (جعْل) [ف][جعل] করা, সৃষ্টি করা, جعْلٌ ج أجعالٌবেতন, এবং করেছি আমরা	اسم منصوب مفعول به +ضمير متصل – جر بالإضافة (نوْم) [ف] [ن و م]ঘুমান, نَوْمٌঘুম তোমাদের ঘুম	اسم منصوب ـ مفعول به [ن][سبت]বিশ্রাম করা, سُباتٌ অবসাদ, ঘুম ঘুম
78|9|তোমাদের নিদ্রাকে করেছি ক্লান্তি দূরকারী,		

وَجَعَلْنَا	ٱلَّيْلَ	لِبَاسًا ﴿10﴾
ح.عطف +فعل ماض مبني على السكون لأتصاله +ضمير متصل – فاعل	معرفة اسم منصوب ـ مفعول به [ليل] রাতেরবেলা, রাত, ليلاًরাতে, لَيلَ نهارَদিন ও রাত	اسم منصوب ـ مفعول به (لُبْس) [س][لبس]পরিধান করা, لباسٌ ج البِسةٌপোষাক

আবরণ	রাত	(جعْل) [ف][جعل]সৃষ্টি করা, جعْلٌ جأجعالٌবেতন, পুরস্কার (جعْل) [ف][করা, সৃষ্টি করা, جعْلٌ ج أجعالٌবেতন, এবং করেছি আমরা
78|10|রাত্রিকে করেছি আবরণ।		

مَعَاشًا ﴿11﴾	ٱلنَّهَارَ	وَجَعَلْنَا
اسم منصوب مفعول به (عَيْش،معِيْش) [ض][عيش]বেঁচে থাকা,معاشٌ জীবিকা, জীবন জীবিকা অর্জনের সময়	معرفة اسم منصوب مفعول به (نـهْر) [ف][ن ه ر]প্রচুর প্রবাহিত হওয়া,তিরষ্কার করা, রাগে মুখ ফিরান, نـهْرٌ ج أنـهُر،أنـهَرনদী, প্রবাহ, نـهارٌ ج أنـهرٌ،نُـهُرٌদিন, দিনের বেলা । দিন	ح.عطف +فعل ماض مبني على السكون +ضمير متصل – فاعل (جعْل) [ف][جعل]করা, সৃষ্টি করা, جعْلٌ ج أجعالٌবেতন এবং করেছি
78|11|দিনকে করেছি জীবিকা অর্জনের সময়,		

شِدَادًا ﴿12﴾	سَبْعًا	فَوْقَكُمْ	وَبَنَيْنَا
صفة منصوبة [شدد][ض] (شِدّة)দৃঢ় হওয়া شديدٌ ج أشِدّةٌ শক্ত, শক্তি শালী সুদৃঢ়	اسم منصوب - مفعول به [سبع]॥ সাত ভাগ করা, (م)، سبعة سبعٌসাত	ظ. مكان منصوب +ضمير متصل جر بالإضافة – متعلق بالفعل +ضمير متصل – جر بالإضافة (فَوْق) [ن][ف و ق]অতিক্রম করা, উচ্চতর হওয়া, (ظرف) فَوْقُ উপর, (جر) فَوْقَউপরে	ح.عطف +فعل ماض مبني عل السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل (بِناء) [ض][ب ن ي] بِناءٌ ،بنيان)তৈরী করা, স্থাপনা

	সাত	তোমাদের উপর	নির্মাণ করেছি আমরা

78|12|নির্মান করেছি তোমাদের মাথার উপর মজবুত সপ্ত-আকাশ।

وَهَّاجًا ﴿13﴾	سِرَاجًا	وَجَعَلْنَا
صفة منصوبة (وهاجًا) [ض] [و ه ب] উজ্বল করা, وهّاجٌউজ্জ্বল, ঝলমলে উজ্বল	اسم منصوب ـ مفعول به [س ر ج]سَجَرَবেনী করা, বুনান, سِرَاجٌ ج سُرُجٌআলো, বাতি সূর্য	ح.عطف +فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل (جعْل) [ف][جعل]করা, সৃষ্টি করা, جعْلٌ ج أجعالٌবেতন সৃষ্টি করেছি আমরা

78|13|এবং একটি উজ্জ্বল প্রদীপ সৃষ্টি করেছি।

ثَجَّاجًا ﴿14﴾	مَآءً	ٱلْمُعْصِرَٰتِ	مِنَ	وَأَنْزَلْنَا
صفة منصوبة [ث ج ج][ن] প্রচুর প্রবাহিত হওয়া, ثجّاجٌপ্রচুর প্রবাহিত অবিশ্রান্ত	اسم منصوب ـ مفعول به [م و ه][ن][ف] [ك] (موْه، مُؤوه) মিশ্রিত করা, প্রচুর পানি হওয়া, ماءٌ ج مِياءٌপানি, তরল, রস পানি	معرفة اسم مجرور ـ متعلق بالفعل [IVعصر][ض] (عصْر) চিপা, চাপ দেওয়া, مُعْصِراتমেঘমালা মেঘমালা	جرّ হতে	ح.عطف +فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل [ن ز ل][ض] (نُزول) নামানো, নিচে নামা, পরা, نزْلٌ ج نُزولٌকোয়ার্টার, বাসা। বর্ষণ করেছি আমরা

78|14|আমি জলধর মেঘমালা থেকে প্রচুর বৃষ্টিপাত করি,

لِّنُخۡرِجَ	بِهِۦ	حَبًّا	وَنَبَاتًا ﴿15﴾
ل-تعليل +فعل مضارع منصوب، فاعل – مستتر <نحنُ> ،الجملة في محل جر - متعلق بالفعل <أنزلنا> (خُروج) [ن] [خرج]বাহির হওয়া, خرجةٌ ج خرجاتٌবহির্গমণ জন্য বের করব আমরা	جرّ +ضمير متصل – متعلق بالفعل <نخرج>তা দিয়ে	اسم منصوب ـ مفعول به (حُبّ) [ض][ح ب ب] পছন্দ করা, حُبٌّভালবাসা, স্নেহ, حَبَّاتٌ، حُبوبٌ ج حَبَّةٌ/حَبٌّশস্য। শস্য	ح.عطف +اسم منصوب ـ مفعول به (نبْت) [ن][ن ب ت] জন্মানো, نباتٌ ج نباتاتٌউদ্ভিদ, গাছপালা উদ্ভিদ

78|15|যাতে তদ্দ্বারা উৎপন্ন করি শস্য, উদ্ভিদ।

وَجَنَّٰتٍ	أَلۡفَافًا ﴿16﴾
ح.عطف +اسم منصوب بالكسرة بدلًا من الفتحة لأنها – جمع المؤنث السالم (جُنون) [ن] [ج ن ن] ঢাঁকা, গোপন করা, جِنٌّজ্বিন, جِنِّيَّةٌস্ত্রী জ্বিন, جَنَّةٌ ج جِنَّاتٌবাগন, বেহেস্ত এবং বাগিচা সমূহ	صفة منصوبة (لفّ) [ن][ل ف ف] মোড়নো, পেঁচানো, لِفٌّ ج الفافٌঘন বনানী ঘন

78|16|ও পাতাঘন উদ্যান।

إِنَّ	يَوۡمَ	ٱلۡفَصۡلِ	كَانَ	مِيقَٰتًا ﴿17﴾
ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	اسم منصوب ـاسم <ان>	معرفة اسم مجرور ـ مضاف إليه	فعل ماض ناقص ،اسم<كان>مستتر ـ هوت>	اسم منصوب ـ خبر <كان>

[و ق ت] IIনিয়োগ করা, নির্ধারণ করা, وقْتٌ ج مِقاتٌ ج مواقِيتُأوقاتٌসময়, নির্দ্দিষ্ট সময়, নির্দিষ্ট	[ك و ن][ن] (كوْن،كِيان) হওয়া, ঘটা, থাকা, كوْنٌ ج أكوانঘটনা আছে	[س] [ن][فصل] অতিরিক্ত হওয়া, উত্তম হওয়া, فضْلٌ فُضولঅতিরিক্ত বিচারের	[ي و م] IIIদিনের ভাড়া, يومٌ ج أيامٌদিন, সময়, বয়স। দিন	
78|17|নিশ্চয় বিচার দিবস নির্ধারিত রয়েছে।				

فِي	يُنفَخُ	يَوْمَ
جرّ মধ্যে	فعل مضارع مرفوع بالضمة مجهول –الجملة في محل جر بالإضافة [ن ف خ] ফুঁক দেওয়া হবে	اسم منصوب – مضاف [ي و م] IIIদিনের ভাড়া, يومٌ ج أيامٌদিন, সময়, বয়স দিন
78|18|যেদিন শিংগায় ফুঁক দেয়া হবে,		

أَفْوَاجًا ﴿18﴾	فَتَأْتُونَ	ٱلصُّورِ
اسم منصوب – حال فوجٌ ج أفواجٌ [ف و ج] দল, গোষ্ঠী। দলেদলে	ح. عطف +فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (إتيان،أتي،مأتةً) [ض][ا ت ي] আসা, আনা, দেওয়া, পাওয়া এবং আসবে তোমরা	معرفة اسم مجرور-في محل نائب فاعل [ص و ر]IIআকার দেওয়া, صوْرٌশব্দ, ধ্বনি শিঙ্গার
তখন তোমরা দলে দলে সমাগত হবে।		

أَبْوَٰبًا ﴿19﴾	فَكَانَتْ	ٱلسَّمَآءُ	وَفُتِحَتِ
اسم منصوب - خبر <كان> [ب و ب]II অধ্যায় ভাগ করা, শ্রেণীবদ্ধ করা, بابٌ ج أبابٌদরজা দরজা	ح.عطف +فعل ماض ناقص، <تْ>التأنيث، اسم <كان> مستتر - <هي > [ك و ن][ن] (كَوْن،كِيان) হওয়া, ঘটা, থাকা, كَوْنٌ ج أكوانঘটনা হল এবং হবে	معرفة اسم مرفوع -نائب فاعل (سمْو) [ن][سمو] উঁচু হওয়া, (م) سماءٌ ج سماواتআকাশ, মহাকাশ আকাশ	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح مجهول، <تْ> التأنيث، الكسرة لالتقاء السكنين (فتْح) [ف][ف ت ح]খোলা, فتحةٌ ج فُتَحاتখোলা , 'আ'স্বরবর্ণ। উন্মুক্ত হবে
78|19|আকাশ বিদীর্ণ হয়ে; তাতে বহু দরজা সৃষ্টি হবে।			

سَرَابًا ﴿20﴾	فَكَانَتْ	ٱلْجِبَالُ	وَسُيِّرَتِ
اسم منصوب - حبر <كان> (سَرَب) [س][سرب] প্রবাহিত করা, سِرْبٌ ج أسرابٌপাল, গ্রুপ, سَرْب ج أسرابٌসুড়ঙ্গ, سَرابٌমরীচিকা মরীচিকা	ح.عطف + فعل ماض ناقص، <تْ>التأنيث، اسم <كان> مستتر - <هي > (كَوْن،كِيان) [ن][ك و ن] হওয়া, ঘটা, থাকা, كَوْنٌ ج أكوانঘটনা এবং হবে হবে	معرفة اسم مرفوع- فاعل [جبل][ن] [ض] (جبْل)আকার দেওয়া, جبَلٌ ج جِبالٌপাহাড় পাহাড় সমূহ	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح مجهول، <تِ> التأنيث الكسرة لالتقاء السكنين، [س ي ر II][ض] (سيْر،مسير) চলা, ভ্রমণ করা, II–চালানো, سيارةٌ ج سياراتٌমটরগাড়ী চালান হবে
78|20|এবং পর্বতমালা চালিত হয়ে মরীচিকা হয়ে যাবে।			

مِرْصَادًا (21)	كَانَتْ	جَهَنَّمَ	إِنَّ
اسم منصوب - خبر <كان> (رصْد) [ن][رصد]পাহাড়া দেওয়া, مِرصادٌচৌকি, ঘাঁটি ঘাঁটি	ح.عطف + فعل ماض ناقص، <تْ>التأنيث، اسم <كان> مستتر - <هي > (كوْن،كِيان) [ن][ك و ن]হওয়া, ঘটা, থাকা, كوْنٌ ج أكوانঘটনা এবং হবে হবে	اسم علم منصوب (ممنوع) - اسم <ان> জাহান্নাম	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই

78|21|নিশ্চয় জাহান্নাম প্রতীক্ষায় থাকবে।

مَـَٔابًا (22)	لِّلطّٰغِيْنَ
اسم منصوب - خبر <كان> (أوْب،إِياب) [ن] [ا و ب] প্রত্যাবর্তন করা,إِيابٌপ্রত্যাবর্তন, مآبপ্রত্যাবর্তন স্থল প্রত্যাবর্তন স্থল	جرّ +معرفة اسم مجرور بالياء لأن جمع مذكر سالم ،<ن>عوض عن التنوين - متعلق <كانت> (طغا،طاغي، طغًى) [س] [ف][ن][ط غ ي] সীমালঙ্ঘণ করা, طَاغٍ ج طُغاة،طَاغُونَসীমালঙ্ঘণকারী সীমালঙ্ঘনকারীদের জন্য

78|22|সীমালংঘনকারীদের আশ্রয়স্থলরূপে।

أَحْقَابًا (23)	فِيْهَآ	لّٰبِثِيْنَ
ظ. زمان منصوب – متلعق <لبثين> [ح ق ب] VIII - ব্যাগ ভর্তি করা, حِقْبَةٌ،حقبٌ ج أحْقابٌলম্বা সময় যুগ যুগ ধরে	جرّ +ضمير - متعلق <لبثين> তার মধ্যে	اسم منصوب ، بالياء لأن جمع مذكر سالم ،<ن> عوض عن التنوين - حال (لبَث) [س][ل ب ث]ইতস্তত করা, অবস্থান করা, لابِثٌঅবস্থানকারী অবস্থানকারী রা

78|23|তারা তথায় শতাব্দীর পর শতাব্দী অবস্থান করবে।

فِيهَا	يَذُوقُونَ	لَّا
جرّ+ضمير - متعلق بالفعل তার মধ্যে	فعل مضارع مرفوع بثبوت +ضمير متصل – فاعل (ذوْق) [ن][ذوق] স্বাদ লওয়া, أذْواق ج ذَوْقٌস্বাদ অতএব স্বাদ নাও তোমরা	ح. نفي না
78|24|তথায় তারা কোন শীতল		

﴾24﴿ شَرَابًا	وَلَا	بَرْدًا
اسم منصوب – مفعول به (سُرْب) [س][ش ر ب] পান করা, شَرْبٌপান করণ, شربةٌপান পানীয়	ح.عطف +ح. نفي এবং না	اسم منصوب – مفعول به (نرْد) [ك] [ن] [برد] ঠান্ডা হওয়া, بَرْضٌঠান্ডা ঠান্ডা
78|24|তথায় তারা কোন শীতল এবং পানীয় আস্বাদন করবে না		

﴾25﴿ وَّغَسَّاقًا	حَمِيْمًا	إِلَّا
ح.عطف +اسم منصوب - مفعول به معطوفة (غسَق،غَسْق)[ض][غ ش ق]অন্ধকার হওয়া, غَساقٌ غَسَّاقٌ، পুঁতিগন্ধময়, দুর্গন্ধ পুঁজ	اسم منصوب – مستثنى منقطع بالفتحة (حمّ) [ن][ح م م]গরম করা, جميمٌ ج أحِمّاءُ জাহান্নামের গরম পানি। উত্তপ্ত পানি	ح. استثناء ব্যতীত
78|25|কিন্তু ফুটন্ত পানি ও পূঁজ পাবে।		

جَزَآءً	وِّفَاقًا ﴿26﴾
اسم منصوب ـ مفعول مطلق ، مصدر بفعل محذوف (جزاء) [ض][ج ز ي]প্রতিদান দেওয়া, جزاءٌপ্রতিদান প্রতিফল	اسم منصوب ـ صفة منصوبة (فوْق) [س] [و ف ق]সঠিক হওয়া, وفْقٌযথেষ্ট উপযুক্ত
78|26|পরিপূর্ণ প্রতিফল হিসেবে।	

إِنَّهُمْ	كَانُوْا	لَا	يَرْجُوْنَ	حِسَابًا ﴿27﴾
ح. مشبه بفعل +ضمير متصل- اسم <ان> নিশ্চয়ই তারা	فعل ماض ناقص مبني على الضم لإتصاله ،<ا> فارقة +ضمير متصل ـ اسم <كان> (كوْن،كِيان) [ن][ك و ن] হওয়া, ঘটা, থাকা, كوْنٌ أكوان جঘটনা এবং হবে ছিল	ح. نفي না	فعل مضارع مرفوع بثبوت +ضمير متصل – فاعل، الجملة ~ خبر <كان> (رجاء) [ن] [ر ج و] আশা করা, رجًا ج أرجاءٌভিতরের দেওয়াল, অন্তর্দেশ, আশা করত	اسم منصوب ـ مفعول به (حسْب،حِسابٌ) [ن] [ح س ب] হিসাব করা حِسابٌ ج حِساباتٌ,হিসাব, বিল হিসাবের
78|27|নিশ্চয় তারা হিসাব-নিকাশ আশা করত না।				

وَكَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا	كِذَّابًا ﴿28﴾
ح.عطف +فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،<ا> فارقة (كِذْبٌ) [ض] [ك ذ ب]॥ মিথ্যা বলা, ॥– মিথ্যাবলার অভিযোগ করা, মিথ্যাবাদী বলা	جرّ +اسم مجرور،<ات>التأنيث ـ متعلق بالفعل <كذبوا>+ ضمير متصل – جر بالإضافة [ا ي ي]	اسم منصوب – مفعول مطلق ،مصدر (كِذْبٌ) [ض] [ك ذ ب] ॥ মিথ্যা বলা, ॥– মিথ্যাবলার অভিযোগ করা, মিথ্যাবাদী বলা

মিথ্যা	آيَةٌচিহ্ন, (اسم وَاحْدَةِ)،آي ج آياتٌ আয়াত আমাদের আয়াতগুলি	মিথ্যারোপ করত তারা

78|28|এবং আমার আয়াতসমূহে পুরোপুরি মিথ্যারোপ করত।

كِتَٰبًا ﴿29﴾	أَحْصَيْنَٰهُ	شَيْءٍ	وَكُلَّ
اسم منصوب - مفعول به مطلق ،مصدر [ك ت ب][ن] كِتَابٌ ج (كتُب،كِتبَة)লিখা, كُتُوبٌবই, চিঠি লিখিত	فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل +ضمير متصل – مفعول به [ح ص ي IV]গণনা করা, রাখা, يُحصىঅসংখ্য, حصاةٌ حصًى ج حصواتٌ ، নুড়ী পাথর শুনেছি আমরা	اسم مجرور - مضاف إليه [ش ي ا] [ف] (مَشِيئة)চাওয়া, ইচ্ছা করা, شيءٌ ج أشياءٌকিছু, জিনিষ কিছু	ح.عطف +اسم منصوب – مفعول به لفعل محذوف ،مضاف [ك ل ل][ض] (كلٌّ) পরিশ্রান্ত হওয়া, كُلّসব, كلّاকক্ষণও না এবং সব

78|29|আমি সবকিছুই লিপিবদ্ধ করে সংরক্ষিত করেছি।

نَّزِيدَكُمْ	فَلَن	فَذُوقُوا
فعل مضارع منصوب ،فاعل – مستتر <نحن> + ضمرمتصل المخاطبين – مفعول به (زيادة) [ض][ز ي د]অতিরিক্ত হওয়া, বৃদ্ধি পাওয়া, زِيادةٌবৃদ্ধি বাড়াব আমরা তোমাদের	ح. استئنافية +ح. نفي অতঃপর কক্ষণনা	فا– سببية +فعل أمر مبني على حذف النون +ضمير متصل – فاعل ذَوْقٌ ج (ذَوْق) [ن][ذوق]স্বাদ লওয়া, أَذْواقস্বাদ ফলে স্বাদ নাও তোমরা

78|30|অতএব, তোমরা আস্বাদন কর, আমি কেবল তোমাদের শাস্তিই বৃদ্ধি করব।

إِلَّا	عَذَابًا ﴿30﴾
ح. حصر ছাড়া	اسم منصوب - مفعول به [ض] [ك][ع ذ ب]মিষ্টি হওয়া, আনন্দদায়ক হওয়া, [ض] বাধা দেওয়া, II–শাস্তি দেওয়া, أعذِبةٌ، عذاباتٌ ج عَذابٌশাস্তি, ব্যাথা শাস্তি

78|30|অতএব, তোমরা আস্বাদন কর, আমি কেবল তোমাদের শাস্তিই বৃদ্ধি করব।

إِنَّ	لِلْمُتَّقِيْنَ	مَفَازًا ﴿31﴾
ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	جرّ +معرفة اسم مجرور بالياء لأن جمع مذكر سالم – خبر المقدم <ان> (وقاية، وقْي)[ض][و ق ي] VIII রক্ষা করা,VIII– সতর্ক হওয়া, পাহারা দেওয়া, وِقايةরক্ষা, واقٍপাহারাদার, অভিভাবক, مُتَّقٍ،مُتَّقِي ج مُتَّقونখোদাভীরু মুত্তাকীদের জন্য	اسم منصوب - اسم <ان> المؤخر (فَوْز) [ن][ف و ز]কৃতকার্য হওয়া, লাভ করা, فَوْزٌবিজয়, সাফল্য, مَفازَةٌ،مَفازٌসাফল্য, مفازاتٌ ج مَفازةٌমরুভূমি সাফল্য

78|31|পরহেযগারদের জন্যে রয়েছে সাফল্য।,

حَدَآئِقَ	وَأَعْنَٰبًا ﴿32﴾
اسم منصوب بدل، بال و لم تنون لأنها ممنوعة - [ح د ق] বাগিচা সমূহ	ح.عطف +اسم منصوب – مفعول به [ع ن ب] أناب ج عِنَبٌ،عِنعِنبةٌআঙ্গুর আঙ্গুর সমূহ

78|32|উদ্যান, আঙ্গুর,

دِهَاقًا ﴿34﴾	وَكَأْسًا	أَتْرَابًا ﴿33﴾	وَكَوَاعِبَ
صفة منصوبة (دهْق)[ف] [د ه ق] ভর্তি করা, دِهاقٌকানায় কানায় পূর্ণ উচ্ছসিত	ح.عطف +اسم منصوب [ك ا س] كَأَسٌ(م) ج كُؤُوسকাপ এবং পান পাত্র	صفة منصوبة [ت ر ب][س] (ترِب)ধূলিমলিন হওয়া, تِرِبٌ ج أترِبَ, تَرِبٌধলিময় সমবয়সী। সমবয়স্কা	ح.عطف +اسم منصوب – مفعول به [ك ع ب] [ن] [ض] স্ফিত হওয়া, পূর্ণ হওয়া, كعِبٌ ج كواعِبُপূর্ণ বিকশিত, গোল- পূর্ণ, গোলগাল মেয়ে, (যুবতী) এবং নব্যযুবতীরা
78|33|সমবয়স্কা, পূর্ণযৌবনা তরুণী। 78|34|এবং পূর্ণ পানপাত্র।			

فِيهَا	يَسْمَعُونَ	لَّا
جرّ +ضمير - متعلق بالفعل তার মধ্যে	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل ~ الجملة حال <المتقين> (سمَع) [ي] [س م ع]শুনা, سمْعٌ ج أسماعٌকান শুনবে তারা	ج. نفي না
78|35|তারা তথায় অসার ও মিথ্যা বাক্য শুনবে না।		

كِذَّبًا﴿35﴾	وَلَا	لَغْوًا
اسم منصوب – مفعول به ~ معطوفة (كِذْبٌ) [ض] [ك ذ ب] II মিথ্যা বলা, II– মিথ্যাবলার অভিযোগ করা, মিথ্যাবাদী বলা মিথ্যা	ح.عطف +ح. نفي এবং না	اسم منصوب – مفعول به (لغْو) [ن][ل غ و] কথা বলা, لغْوবাজেকথা অনর্থক কথা
78|35|তারা তথায় অসার ও মিথ্যা বাক্য শুনবে না।		

حِسَابًا ﴿36﴾	عَطَآءً	رَّبِّكَ	مِّنْ	جَزَآءً
صفة منصوبة (حسْب،حِساب) [ن] [ح س ب] হিসাব করা حِسابٌ ج حِساباتٌ, হিসাব, বিল। যথাযথ	اسم منصوب – مفعول به <بجزاء> [ع ط و] IIIদেওয়া, عطاءٌ ج أطِيَةٌউপহার উপহার দেওয়া, দান	اسم مجرور +ضمير متصل المُخاطَب – جر بالإضافة – متعلق بصفة محذوفة <جزآء> (ربّ) [ن][ر ب ب]প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌরব, তোমার রবের	جرّ হতে	اسم منصوب - مفعول مطلق ،مصدر [ج ز ي] প্রতিদান
78|36|এটা আপনার পালনকর্তার তরফ থেকে যথোচিত দান,				

وَٱلۡأَرۡضِ	ٱلسَّمَٰوٰتِ	رَّبِّ
ح.عطف +معرفة اسم مجرور - مضاف إليه معطوفة [ا ر ض]।।মাটিতে ফেলা, أرضٌ(م) ج أراضٍমাটি, দেশ এবং পৃথিবীর	معرفة اسم مجرور –مضاف إليه (سُموع) [ن][س م و]উঁচু হওয়া, উপরে হওয়া, سُموعٌউচ্চতা, (م)سمواتٌ ج سَمٰءٌআকাশ আকাশ মন্ডলীর	اسم مجرور - بدل <ربك> (ربّ) [ن][ر ب ب]প্রভু হওয়া, رَبٌّ ج أربابٌরব, রবের

78\|37\|যিনি নভোমন্ডল, ভূমন্ডল ও এতদুভয়ের

ٱلرَّحۡمَٰنِۖ	بَيۡنَهُمَا	وَمَا
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه (رحْمة) [س][ر ح م] ক্ষমা থাকা , ক্ষমাশীল হওয়া, رحيمٌ ج رُحماءُদয়াময়, الرَّحْمَٰنِদয়াময় (মহান আল্লাহ), مرحمةٌ ج مراحِمُদয়া, সমবেদনা, مَرحومٌমৃত । অশেষ দয়াময়ের	ظ. مكان منصوب +ضمير – متعلق بصلة الموصول المحذوفة ~ مضاف + ضمير متصل – جر بالإضافة (بيان) [ض] [ب ي ن]প্রকাশিত হওয়া, بينَ، ما بين، فيما بينমাঝে, দুয়ের মাঝে উভয়ের মাঝে	ح.عطف +اسم موصول، معطوفة على مفعول به এবং যা

মধ্যবর্তী সবকিছুর পালনকর্তা, দয়াময়, কেউ

خِطَابًا ﴿37﴾	مِنۡهُ	يَمۡلِكُونَ	لَا
اسم منصوب - (خُطبة) [ن] [خ ط ب] বক্তৃতা দেওয়া, خِطابٌ ج خِطابات বক্তৃতা, خُطبةٌ ج خُطبٌ বক্তৃতা	جرّ +ضمير - متعلق بالفعل তাঁর সাথে	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (مِلْك،مُلْك) [ض][م ل ك]অধিগ্রহণ করা, মালিক হওয়া , مالِكٌ ج ملاكون অধিকারী, মালিক, مُلكٌ ج مُلوكٌ রাজা, বাদশাহ, مَلَكٌ (مَلأك)،ملائِكةٌ ফেরেশতাগণ	ح. نفي না

কথার		সক্ষম হবে তারা	
তাঁর সাথে কথার অধিকারী হবে না।			

اَلرُّوْحُ	يَقُوْمُ	يَوْمَ
معرفة اسم مرفوع – فاعل (رواح) [ان][ر و ح / ر ي ح] রাতে যাওয়া, চলে যাওয়া, ج (م) رِيحٌ رِيَاحٌগন্ধ, বাতাস, ج رُوحٌ أَرْوَاحٌজীবনের নিঃশ্বাস, আত্মা, জীবন, জীবনের সারাংশ। রুহ	فعل مضارع مرفوع بالضمة (قَومة،قِيام) [ان][ق و م] , দাড়ান, IV-সোজা করা, দাঁড় করানো ,X-উঠা, দাড়া قَوْمٌ ج أَقْوَامٌজনতা, জাতি, গোত্র, قَومةٌদাঁড়ান, مَقَامٌ ج مَقَامَاتٌস্থান,অবস্থান,تَقْوِيمٌ ج تقاويمُপুনর্গঠন, গঠন, দাঁড়ানো, সংশোধন, পন্জিকা, قَيِّمٌসঠিক, মূল্যবান, তত্বাবধায়ক, القَيِّمةُসঠিক বিশ্বাস, قِيَامَةٌপূণরউত্থান, বিপ্লব, অভিভাবকত্ব। দাঁড়াবে	ظ. زمان منصوب متعلق <يملكون > [ي و م]IIIদিনের ভাড়া, ج يومٌ أَيامٌদিন, সময়, বয়স। [III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أَيَّامٌদিন, ঘন্টা সেদিন
78|38|যেদিন রুহ ও ফেরেশতাগণ সারিবদ্ধভাবে দাঁড়াবে।		

صَفًّا	وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ
اسم منصوب - حال (صفّ) [ن][ص ف ف] সারিবদ্ধভাবে দাঁড়ান সারিবদ্ধ	ح.عطف +معرفة اسم مرفوع – فاعل معطوفة (مَلْك،مُلك) [ض] [م ل ك] মালিক হওয়া, مُلُوكٌ ج مُلكٌরাজা, বাদশাহ, مَلَكٌ (مَلَأك)،ملائِكةٌফেরেশতাগণ ফেরেশতারা
78|38|যেদিন রূহ ও ফেরেশতাগণ সারিবদ্ধভাবে দাঁড়াবে।	

أَذِنَ	مَنْ	إِلَّا	يَتَكَلَّمُونَ	لَّا
فعل ماض مبني على الفتح (إِذْن) [س][ا ذ ن] শুনা, অনুমতি দেওয়া, إِذْنٌ ج أُذونٌঅনুমতি অনুমতি দেবেন	اسم موصول – مستثنى أو بدل من الضمير<يتكلمون> যাকে	ح. استثناء ব্যতীত	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل [ك ل م V] II–সম্বোধন করা, বলা, V–কথা বলা, কথা বলতে পারবে তারা	ح. نفي না
দয়াময় আল্লাহ যাকে অনুমতি দিবেন, সে ব্যতিত কেউ কথা বলতে পারবে না				

صَوَابًا ﴿38﴾	وَقَالَ	ٱلرَّحۡمَٰنُ	لَهُ
اسم منصوب – مفعول به (صوْب) [ن][ص و ب] সঠিক হওয়া, যথাযথ হওয়া, صوابٌযথাযথ, সঠিক যথাযথ	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر <هو > (قوْل) [ن][ق و ل] কথা বলা, বলা, قَالَةٌকথা, বক্তৃতা, قوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُশব্দ, কথা,বক্তব্য এবং বলবে	معرفة اسم مرفوع ـ فاعل (رحْمة) [س][ر ح م]ক্ষমা থাকা , ক্ষমাশীল হওয়া, رحيمٌ ج رُحماءُদয়াময়, الرَّحْمَٰنِদয়াময় (মহান আল্লাহ) দয়াময়	جرّ +ضمير - متعلق بالفعل তার জন্য
এবং সে সত্যকথা বলবে।			

ٱلۡحَقُّۖ	ٱلۡيَوۡمُ	ذَٰلِكَ
معرفة صفة مرفوعة (حقّ) [ض] [ح ق ق]সত্য হওয়া, حقٌّসত্য, সঠিক সত্য	معرفة اسم مرفوع ـ خبر [ي و م]IIII দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أيَّامٌদিন, ঘন্টা দিন	اسم اشارة - مبتدأ সেই
78|39|এই দিবস সত্য।		

شَآءَ	فَمَن
فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر <هو >	ح. استئنافية +اسم شرط ـ مبتدأ

(مَشِيئَةٌ) [ف] [ا ش ي] চাওয়া, ইচ্ছা করা, شيءٌ ج أشياءٌকিছু, জিনিষ চায়	অতএব যে
অতঃপর যার ইচ্ছা, সে	

مَآبًا ﴿39﴾	رَبِّهِۦ	إِلَىٰ	ٱتَّخَذَ
اسم منصوب – مفعول به (أَوْب،أَوْبة)آبَ،[ن][ا و ب]ফিরে আসা,مآبٌ প্রত্যাবর্তন স্থল। প্রত্যাবর্তনের	اسم مجرور – متعلق بالفعل +ضمير متصل – جر بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب]প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌরব, মালিক তার রবের	جرّ প্রতি	فعل ماض مبني على الفتح (أخْذ) [ن][ا خ ظ] VIII গ্রহন করা, পাওয়া, VIII-দখল করা, গ্রহন করা, أخْذٌগ্রহন গ্রহন করুক
তার পালনকর্তার কাছে ঠিকানা তৈরী করুক।			

عَذَابًا	أَنذَرۡنَٰكُمۡ	إِنَّآ
اسم منصوب – مفعول به [ض] [ك][ع ذ ب] মিষ্টি হওয়া, আনন্দদায়ক হওয়া, [ض] বাধা দেওয়া, II-শাস্তি দেওয়া, عَذابٌ ج عذاباتٌ، أعذِبةٌশাস্তি, ব্যথা শাস্তি	فعل ماض +ضمير +ضمير (نذْر،نُذور) [ن] [IVن ذ ر] উৎসর্গ করা,শপথ করা, IV- সতর্ক করা, نذْرٌ ج نُذورٌশপথ, উৎসর্গ সতর্ক করছি আমরা তোমাদের	ح. مشبه بفعل +ضمير متصل – اسم <ان> নিশ্চয়ই আমরা
78|40|আমি তোমাদেরকে আসন্ন শাস্তি সম্পর্কে সতর্ক করলাম, যেদিন		

يَنْظُرُ	يَوْمَ	قَرِيْبًا
فعل مضارع مرفوع بالضمة (نظَر،منْظَر) [ن][ن ظ ر] দেখা, نَظَرٌ ج أنظارٌ দেখার কাজ, নযর, দর্শন দেখবে	ظ. زمان منصوب -متعلق بالفعل [ي و م] III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أَيَّامٌ দিন, ঘন্টা সেদিন	صفة منصوبة (قُرْب) [ك] [ق ر ب] নিকটে হওয়া, নিকটে আসা, قَرِيبٌ নিকটে, হাতের কাছে নিকটে
78|40|আমি তোমাদেরকে আসন্ন শাস্তি সম্পর্কে সতর্ক করলাম, যেদিন		

قَدَّمَتْ	مَا	ٱلْمَرْءُ
فعل ماض مبني على الفتح، <تْ>التأنيث (قدْم،قُدوم) [ك] [س][ن] [ق د م] II অগ্রসর হওয়া, [س] পৌঁছা, [ك] বৃদ্ধ হওয়া, II– যেতে দেওয়া আগে পাঠিয়েছে	اسم موصول - مفعول به যা	معرفة اسم مرفوع - فاعل [ك] [س] [ن] [م ر ا] স্বাস্থ্যকর হওয়া, [ك] সুপুরুষ হওয়া, اِمرأ،اِمرء،إمرؤ،المرء একজন মানুষ, ব্যক্তি মানুষ
মানুষ প্রত্যেক্ষ করবে যা সে সামনে প্রেরণ করেছে		

ٱلْكَافِرُ	وَيَقُوْلُ	يَدَاهُ
معرفة اسم مرفوع – فاعل (كفْر) [ض] [ك ف ر] ঢেকে রাখা, গোপন করা, বিদ্রোহী হওয়া, كافِرٌ ج كافرون،كُفّارٌ কাফের, বিদ্রোহী।	ح.عطف +فعل مضارع مرفوع بالضمة (قوْل) [ن][ق و ل] কথা বলা, বলা, قَوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُ শব্দ, কথা, বক্তৃতা, قَالَةٌ কথা,বক্তব্য	اسم مرفوع - فاعل،<ا> علامة رفع - لأنه مثنى +ضمير متصل – جر بالإضافة

কাফের	**বলবে**	**[ي د ي]** **يَدٌ، (مث) يَدانِ، ج أيدٍ،أيادٍহাত, সামনের পা।** **তার দুহাত**
এবং কাফের বলবে,		

تُرٰبًا ﴿40﴾	كُنْتُ	يٰلَيْتَنِيْ
اسم منصوب – خبر <كان] (تَرِبٌ،تِرْبٌ) [س][ت ر ب] **ধূলিমলিন হওয়া,** تُرابٌ أترِبة**ধূলি মাটি মাটি**	فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – اسم <كان] (كوْن،كِيان) [ن][ك و ن] **হওয়া, ঘটা, থাকা,** كوْنٌ ج أكوان**ঘটনা এবং হবে** **হতাম আমি**	ح. نداء +ح. مشبه بفعل«ان» +ن-وقية +ضمير المتكلن - اسم <ليت> **হায় আফসোস**
হায়, আফসোস-আমি যদি মাটি হয়ে যেতাম।		

।। সূরা আন্-নাবা সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّة

৭৯। সূরা আন্-নাযিআত : মাক্কী

রুকু: ০২ আয়াত:৪৬

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

وَٱلنَّٰزِعَٰتِ	غَرۡقٗا ﴿1﴾
ح. جرّ (القسم) + معرفة اسم مجرور - مُقسَم به ~ بواو<القسم> ~جر مجرور متعلق بالفعل محذوف (نَزْع) [ض][ن ز ع] সরানো , বের করা, نزعةٌঝোঁক, প্রবনতা, نوازِعُ ج نازِعةٌপ্রত্যাহার করা, বের করা ج نزَعاتٌ শপথ, সজোরে নির্গতকারী	اسم منصوب - مفعول مطلق – مصدر بالفعل تقديره<تغَرّق> (غَرَق) [س][غ ر ق]ডুব দেওয়া, ঢুকা, নিচে যাওয়া, ডুবে
79|1|শপথ সেই ফেরেশতাগণের, যারা ডুব দিয়ে আত্মা উৎপাটন করে,	

وَٱلنَّٰشِطَٰتِ	نَشۡطٗا ﴿2﴾
ح. جرّ (القسم) +معرفة اسم مجرور– مُقسَم به ~ بواو<القسم> ~جر مجرور متعلق بالفعل محذوف / أو وحقِّ الملائكة الناشِطات (نَشْط)(نشاط) [ن] [س] [ن ش ط] প্রাণবন্ত হওয়া, আগ্রহ করা, [ن] গিট দেওয়া, কষানো, ناشِطপ্রাণবন্ত, উদ্দিপ্ত, أنشُطٌগিট, গিরা, ناشِطات ج ناشِطٌমৃদু জান কবজ কারী ফেরেশতাগণ, উন্মুক্তকারী, উল্কা। শপথ, বাঁধন উন্মুক্তকারী	اسم منصوب – (نشْط)[ن][ن ش ط] গিট দেওয়া, نشْطٌকোমলতা উন্মুক্ত
79|2|শপথ তাদের, যারা আত্মার বাঁধন খুলে দেয় মৃদুভাবে;	

وَٱلسَّٰبِحَٰتِ	سَبۡحٗا ﴿3﴾
ح. جرّ(القسم) +معرفة اسم مجرور - مُقسَم به ~ بواو<القسم> ~جر - مجرور ~متعلق بالفعل محذوف سابِحٌ ج (سبْح) [ف][س ب ح] সাঁতার কাটা, ভাসা, سابحونসন্তরনকারী শপথ, সাঁতারকারী	اسم منصوب – مفعول به سابِحٌ ج (سبْح) [ف][س ب ح] সাঁতার কাটা, ভাসা, سابحونসন্তরনকারী। সাঁতরায়
79|3|শপথ তাদের, যারা সন্তরণ করে দ্রুতগতিতে,	

فَٱلسَّٰبِقَٰتِ	سَبۡقٗا ﴿4﴾	فَٱلۡمُدَبِّرَٰتِ	أَمۡرٗا ﴿5﴾
ح.عطف +معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل محذوف [س ب ق] [ض] [ن] আসা, যাওয়া, সামনে যাওয়া, سبْقٌপ্রাধান্য, পূর্ববর্তীতা, অগ্রগণ্যতা ও অগ্রগামী	اسم منصوب – مفعول به [س ب ق] [ض] [ن] আসা, যাওয়া, সামনে যাওয়া, سبْقٌপ্রাধান্য, পূর্ববর্তীতা, অগ্রগণ্যতা অগ্রগমন	ح.عطف +معرفة اسم مجرور متعلق بالفعل محذوف (دُبور) [ن][د ب ر]I চলে যাওয়া, পৃষ্ঠপ্রদর্শন করা, II- প্রস্তুতি নেওয়া, আয়োজন করা, مُدبِّرٌ ج مُدبِّرون ব্যবস্থাপক, ম্যানেজার এবং কার্যনির্বাহী	اسم منصوب -مفعول به (أمْر) [ن][ا م ر] আদেশ করা, أمْرٌ ج أوامِرٌআদেশ, أمْرٌ ج أُمورٌকাজ। কর্ম
79|4|শপথ তাদের, যারা দ্রুতগতিতে অগ্রসর হয় এবং 79|5|শপথ তাদের, যারা সকল কর্মনির্বাহ করে, কেয়ামত অবশ্যই হবে।			

﴾6﴿ ٱلرَّاجِفَةُ	تَرۡجُفُ	يَوۡمَ
[ر ج ف]معرفة اسم مرفوعতীব্র প্রকম্পন	فعل مضارع مرفوع بالضمة (رَجْف،رجفان) [ن] [ر ج ف] কম্পিত হওয়া, رجْفَة প্রকম্পিত হবে	ظ. زمان منصوب – مفعول به متعلق بالفعل محذوف [ي و م]III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أَيَّامٌদিন, ঘন্টা সেদিন
79|6|যেদিন প্রকম্পিত করবে প্রকম্পিতকারী,		

﴾7﴿ ٱلرَّادِفَةُ	تَتۡبَعُهَا
معرفة اسم مرفوع– (رِدْف) [س] [ن][ر د ف]পরে আসা, رِزْقٌ ج أرزافٌ পরপর আগমন, رَدِيفَةٌ (م)، رديفٌঅনুগামী প্রকম্পন অনুগামী	فعل مضارع مرفوع بالضمة +ضمير متصل المؤنث – مفعول به مقدم (تبَع) [س][ت ب ع] অনুসরণ করা, تبْعٌঅনুসারী, অনুসরণ অনুসরণ করবে তারা
79|7|অতঃপর পশ্চাতে আসবে পশ্চাদগামী;	

﴾8﴿ وَاجِفَةٌ	يَوۡمَئِذٍ	قُلُوبٌ
اسم مرفوع - صفة مرفوعة (وجْف) [ض][و ج ف] উত্তেজিত হওয়া, সন্ত্রস্ত হওয়া, واجفٌহৃদকম্প	ظ. زمان - يومَ ظ.زمان منصوب متعلق « ترجف » – مضاف + «اذٍ» – مبني على السكون، الكسرة لالتقاء السكنين (تنوين العِوَض) - مضاف إلَيهِ – و هو مضاف ،مضاف إليه – الجملة«ترجف الراجفة» محذوفة [المعوض بالتنوين«ذٍ» - تنوينُ العِوَضِ]	اسم مرفوع - مبتدأ [ق ل ب][ض] (قَلْب)ঘোরা, উপরে উঠা, قَلْبٌ ج قُلوبٌহৃদয়, কেন্দ্র, আত্মা

সন্ত্রস্থ	সেদিন	ঘোরা অন্তর
79|8|সেদিন অনেক হৃদয় ভীত-বিহবল হবে।		

خٰشِعَةٌ ﴿٩﴾	أَبْصٰرُهَا
اسم مرفوع - خبر (خُشوع) [ف][خ ش ع] অবনত,সন্ত্রস্থ ভীতসন্ত্রস্থ	اسم مرفوع بالضمة +ضمير متصل– المؤنث،جر بالإضافة <قلوب> (بصَر) [س] [ك] [ب ص ر] দেখা, অনুধাবন করা তার দৃষ্টি সমূহ
79|9|তাদের দৃষ্টি নত হবে।	

لَمَرْدُوْدُوْنَ	أَءِنَّا	يَقُوْلُوْنَ
ل-تاكيد +اسم مرفوع – خبر <ان> (ردّ) [ن] [ر د د] ফিরে আনা, ردٌّপ্রত্যাবর্তন, مرْدودونপ্রত্যাবর্তনকারী। অবশ্যই প্রত্যাবর্তনকারী হবে তারা	ح. استفهام +ح. مشبه بفعل +ضمير متصل – اسم <ان> নিশ্চয়ই কি আমরা	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (قوْل) [ن][ق و ل] কথা বলা, বলা, قَالَةٌকথা, বক্তৃতা, أقاوِيلُ،أقوالٌ،قوْلٌশব্দ, কথা,বক্তব্য বলে তারা
79|10|তারা বলেঃ আমরা কি প্রত্যাবর্তিত হবই-		

﴾10﴿ ٱلْحَافِرَةِ	فِي
(حفْر) [ض][ح ف ر] متعلق بالفعل – اسم مجرور معرفةগর্ত করা, কবর দেওয়া, حافِرٌ ج حافِرون খুর (পা), حافِرةআসল অবস্থা পূর্বাবস্থায়	جرّ মধ্যে
পূর্বাবস্থায়।	

﴾11﴿ نَّخِرَةً	عِظَٰمًا	كُنَّا	أَءِذَا
اسم منصوب - صفة منصوبة [ن خ ر][ن] [س] (نخْر،نخَر)নাক ডাকা [ن], পোকা খাওয়া [س]। গলিত	اسم منصوب – حبر <كان> (عظامة) [ك][ع ظ م] বড় হওয়া, মহান হওয়া, عظْمٌ ، عِظامٌ ، أعْظُمٌ হাড় অস্থিসমূহে	فعل ماض ناقص مبني على السكون +ضمير متصل – اسم <كان> (كوْن،كِيان) [ن][ك و ن] হওয়া, ঘটা, থাকা, كوْنٌ ج أكوانঘটনা এবং হব আমরা	ح.استفهام +ظ. زمان - شرطية غير جازمة, جوابه محذوف কি যখন
79|11|গলিত অস্থি হয়ে যাওয়ার পরও?			

﴾12﴿ خَاسِرَةٌ	كَرَّةٌ	إِذًا	تِلْكَ	قَالُوا
صفة مرفوعة [خ س ر][س] (خُسور،خسارةٌ)ক্ষতি হওয়া, ক্ষতি স্বীকার করা, ক্ষতি করা , خسارةَ ج خسائِرُক্ষতি।	اسم مرفوع - خبر (كرّ) [ن][ك ر ر]ফিরে আসা, قَرَّةٌ ج قرّاتٌপ্রত্যাবর্তন প্রত্যাবর্তন	ح. جواب তাহলে	اسم اشارة – مبتدأ এটা	فعل ماض مبني على الضم لإتصالة +ضمير متصل - فاعل (قوْل) [ن][ق و ل] কথা বলা, বলা, قَالَةٌকথা, বক্তৃতা, قوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُশব্দ, কথা,বক্তব্য বলল তারা

বড়ই ক্ষতি কর				
79|12|তবে তো এ প্রত্যাবর্তন সর্বনাশা হবে!				

وَاحِدَةٌ ﴿13﴾	زَجْرَةٌ	هِيَ	فَإِنَّمَا
اسم مرفوع – صفة مرفوعة (وحْدة) [ك][ض][و ح د] একা হওয়া, وحَدَةএকাত্ব, وَاحِدَةٌএক একটি মাত্র	اسم مرفوع – خبر (زجْر) [ن] [زجر] বাধা দেওয়া,তিরস্কার করা, زَجْرةতিরস্কার, বিকটশব্দ মহাশব্দ	ضمير منفصل - مبتدأ তা	ح. استئنافية +ح. مشبه بفعل +ما-كافة প্রকৃত পক্ষে
79|13|অতএব, এটা তো কেবল এক মহা-নাদ,			

بِٱلسَّاهِرَةِ ﴿14﴾	هُمْ	فَإِذَا
جرّ +معرفة اسم مجرور - متعلق بخبر محذوف (سهَر) [س][س ه ر] নিদ্রাহীন হওয়া, ساهِرজাগ্রত, ساهِرةনৈশ পর্টিতে অংশগ্রহনকারিণী, ময়দান, মরুভূমি খোলা ময়দানে	ضمير منفصل - مبتدأ তারা	ح. استئنافية +ظ. زمان - حرف فجائِية অতঃপর যখন
79|14|তখনই তারা ময়দানে আবির্ভূত হবে।		

مُوسَىٰٓ ﴿15﴾	حَدِيثُ	أَتَاكَ	هَلْ
اسم علم مجرور بالفتحة المقدرة على <ى> للتعذر ، بدل من الكسر (ممنوع) মূসার	اسم مرفوع – فاعل II (حُدوث،حَداثةٌ) [ك][ف][ح د ث]ঘটা, সংঘটিত হওয়া [ف] , নূতন [ك],II - বলা, আলোচনা করা, حدَثٌ ج أحْداثٌ নূতন, খারাপ কাজ, حديثٌ ج أحاديثُ،حِدْثان কথা, বক্তব্য। বৃত্তান্ত	فعل ماض مبني على الفتح المقدر على الأيف للتعذر +ضمير متصل المُخاطب – مفعول به (إتيان،أتي،مأتةً) [ض][ا ت ي]আসা, আনা, দেওয়া, পাওয়া, إِتْيان কাজ, কার্যক্রম, مأتًى আসার স্থান। এসেছে তোমাদের কাছে	ح. استفهام কি
79|15|মূসার বৃত্তান্ত আপনার কাছে পৌছেছে কি?			

بِٱلْوَادِ	رَبُّهُۥ	نَادَاهُ	إِذْ
جرّ +معرفة اسم مجرور متعلق بالفعل (دية) [ض][و د ي] রক্ত - ক্ষতিপূরণ (রক্ত - মূল্য) আদায় করা, دِيَةٌ ক্ষতিপূরণ, وادٍ ج أوْديةٌ উপত্যকা, নদী উপত্যকায়	اسم مرفوع ـ فاعل +ضمير متصل الاغائب – جر بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب] প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أرْبابٌ রব, মালিক তার রব	فعل ماض مبني على الفتح على المقدر على < ا > للتعذر + ضمير متصل – مفعول به (نَدْو،ندًى،نداوَة) [س] [ن][ن د و] ডাকা, ভিজা হওয়া [س], نَدوةٌ সভা, نُدوةٌ ভিজা তাকে	ظ. زمان متعلق [أتاك> যখন
79|16|যখন তার পালনকর্তা তাকে			

<table>
<tr><td>طُوًى ﴿16﴾</td><td>ٱلْمُقَدَّسِ</td></tr>
<tr><td>اسم مجرور - بدل من <الودادی> ، علامتة جرّ - الكسرة المقدر
للتعذر على<ى> ما قبل تنبينها
(طيّ)[ض][ط و ي]ভাঁজ করা, বন্ধ করা,
তুয়ার</td><td>معرفة صفة مجرورة
(قُدْس) [ك] [ااق د س] পবিত্র হওয়া
পবিত্র</td></tr>
<tr><td colspan="2">পবিত্র তুয়া উপ্যকায় আহবান করেছিলেন,</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>فِرْعَوْنَ</td><td>إِلَىٰ</td><td>ٱذْهَبْ</td></tr>
<tr><td>اسم علم مجرور بالفتحة (ممنوع)
ফিরাউনের কাছে</td><td>جرّ
প্রতি</td><td>فعل أمر مبني على السكون - فاعل مستتر <انت>
(ذهاب،مذهب) [ف][ذ ه ب] যাওয়া,
IV–যাওনো, সড়ান, ذَهَبٌস্বর্ণ, ذهابٌযাওয়া-(কর্ম)
যাও</td></tr>
<tr><td colspan="3">79|17|ফেরাউনের কাছে যাও,</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>طَغَىٰ ﴿17﴾</td><td>إِنَّهُۥ</td></tr>
<tr><td>فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على <ى>للتعذر
– فاعل مستتير <هو> ~ الجملة – خبر <ان>
[ط غ ي]
বিদ্রোহী করেছে</td><td>ح. مشبه بفعل +ضمير متصل – اسم <ان>
নিশ্চয়ই সে</td></tr>
<tr><td colspan="2">নিশ্চয় সে সীমালংঘন করেছে।</td></tr>
</table>

لَّكَ	هَلْ	فَقُلْ
جرّ +ضمير - متعلق بالفعل <قل> **তোমার**	ح. استفهام **কি**	ح. عطف +فعل أمر مبني على السكون ، وحذفت <و> لإلتقاء السكينين (قَوْل) [ن][ق و ل] **কথা বলা, বলা,** قَالَةٌ**কথা, বক্তৃতা,** قَوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُ**শব্দ, কথা,বক্তব্য** **এবং ফল**
79|18|অতঃপর বলঃ তোমার পবিত্র		

﴾18﴿ تَزَكَّىٰ	أَنْ	إِلَىٰٓ
فعل مضارع منصوب بالفتح المقدّر على <ى>للتعذر ،فاعل مستتر – <انت> (زكاء) [س] [ن][ز ك ي V] **বড় হওয়া, বৃদ্ধি পাওয়া, V-পবিত্র হওয়া** **পবিত্র হবে তুমি**	ح. مصدرية **যে**	جرّ **প্রতি**
হওয়ার আগ্রহ আছে কি?		

﴾19﴿ فَتَخْشَىٰ	رَبِّكَ	إِلَىٰ	وَأَهْدِيَكَ
ح.عطف +فعل مضارع منصوب بالفتح على <ى>للتعذر ،فاعل مستتر <انت> (خشي،خشْيَة) [س][خ ش ي] **ভয় করা,** خَشْيَةٌ**ভয়, দুঃচিন্তা** **যেন ভয় কর তুমি**	اسم مجرور +ضمير متصل – جر بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب] **প্রভু হওয়া,** رَبٌّ ج أربابٌ**রব, মালিক** **তোমার রবের**	جرّ **প্রতি**	ح.عطف +فعل مضارع منصوب بالفتح +ضمير متصل - مفعول به ،فاعل – مستتر <انا> (هدْي،هُدًى) [ض][ه د ي]**পরিচালিত করা, পথ দেখান,** هدى**নির্দেশণা,** هُدًى**সঠিক নির্দেশণা** **পথ দেখাব আমি তোমাকে**
79|19|আমি তোমাকে তোমার পালনকর্তার দিকে পথ দেখাব, যাতে তুমি তাকে ভয় কর।			

الْكُبْرٰي ﴿20﴾	الْاٰيَةَ	فَاَرٰهُ
معرفة اسم منصوب – صفة منصوبة بالفتحة المقدرة على <ى>للتعذر (كبْر،كِبارة) [ك] [ن] [ك ب ر] বয়সে অতিক্রম করা, বয়স্ক হওয়া [ن] , বড় হওয়া, বৃদ্ধি পাওয়া [ك], كِبْرٌ،كُبرٌكُبرٌئ বড় বড়	معرفة اسم منصوب – مفعول به ثان [ا ي ي] آيَةٌ (آي) ج آياتٌ নিদর্শন, আয়াত একটি নিদর্শন	ح. استئنافية +فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على <ا> للتعذر +ضمير متصل – مفعول به ،فاعل - مستتر <هو> (رأي،رُؤية) [ف][ر ا ي] দেখা, অনুধাবন করা, رأي ج آراء মতামত, দৃষ্টিভঙ্গি। অতঃপর দেখাল তাদের
79|20|অতঃপর সে তাকে মহা-নিদর্শন দেখাল।		

وَعَصٰي ﴿21﴾	فَكَذَّبَ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على <ى>للتعذر (مَعْصية) [ض][ع ص ي] অবাধ্য হওয়া, অমান্য করা, عصِى ج عصيون বিদ্রোহী অবাধ্য হল	ح. استئنافية +فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر <هو> (كذِب،كذبَة) [ض][ك ذ ب II] মিথ্যা বলা, كِذْبٌ،كَذِبٌ মিথ্যা অতঃপর পর মিথ্যারোপ করল সে
79|21|কিন্তু সে মিথ্যারোপ করল এবং অমান্য করল।	

يَسْعٰي ﴿22﴾	اَدْبَرَ	ثُمَّ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدرة على <ى>للتعذر ،فاعل مستتر - <هو> (سعْي) [ف][س ع ي]হাঁটা, চলা, سَعْي হাঁটা, السعْي কা’বায় সায়ী সচেষ্ট হল	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر <هو> (دُبور) [ك] [د ب ر IV] পিঠ দেখান, চলে যাওয়া,, دُبورٌ পশ্চাৎদেশ, পিছন পিঠ ফিরাল	ح.عطف অতঃপর

79|22|অতঃপর সে প্রতিকার চেষ্টায় প্রস্থান করল।

فَنَادٰي ﴿23﴾	فَحَشَرَ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على <ى>للتعذر (نَدَى)(نَدْو) [س][ن][ن د و] ডাকা [ن], মিজান [س], نَدْوَةٌসভা, কাউন্সিল। এবং ঘোষণা করল	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر <هو> (حشْر) [ن] [ض][ح ش ر]সমবেত করা, الحشْر يَوْمُকিয়ামত, পূণরুত্থান দিন, حشَرةٌ ج حشَراتٌপোকা, কীট এবং সমবেত করল
79|23|সে সকলকে সমবেত করল এবং সজোরে আহবান করল,	

اَلْاَعْلٰي ﴿24﴾	رَبُّكُمُ	اَنَا۠	فَقَالَ
معرفة اسم منصوب ـ صفة منصوبة بالفتحة على الفتح المقدّر على <ى>للتعذر (عُلُو)[ن][ع ل و]উঁচু হওয়া, عُلَيَة ج عُلًى (م)، أعلَىসর্বোচ্চ, الأعْلَىসর্বশ্রেষ্ট সর্বশ্রেষ্ট	اسم مرفوع ـ خبر +ضمير متصل المُخاطبين – جر بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب] প্রভু হওয়া, رَبٌّ ج أربابٌ রব, মালিক তোমাদের রব	ضمير منفصل - مبتدأ আমি	ح. عطف +فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر <هو> (قَوْل) [ن][ق و ل]কথা বলা, বলা, قَوْلٌশব্দ،أقوالٌ،أقاوِيلُ কথা, বক্তৃতা, قَالَةٌকথা,বক্তব্য এবং বলল
79|24|এবং বললঃ আমিই তোমাদের সেরা পালনকর্তা।			

نَكَالَ	ٱللَّهُ	فَأَخَذَهُ
اسم منصوب – مفعول مطلق مضاف (نكَل) (نكَلة)(نكْل) [س] [ن] [ض][ن ك ل]বিরত থাকা [س],শপথ ভাঙ্গা [ض], উদাহরন করা [ن], শাস্তি, نِكْلٌভঙ্গ করণ, ছিন্ন, نَكَالٌউদাহরনযোগ্য শাস্তি শাস্তি	لفظ الجلالة مرفوع - فاعل [اله] ॥ খোদা বানান, الهٌ،اِلاهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, (ال+اله) الله আল্লাহ। আল্লাহ	فا-سببية +فعل ماض مبني على الفتح +ضمير متصل الاغائب – مفعول به (أَخْذ) [ن][ا خ ذ] গ্রহন করা, أَخْذٌগ্রহন ফলে ধরলেন তাকে
79|25|অতঃপর আল্লাহ তাকে পরকালের		

وَٱلۡأُولَىٰٓ ﴿25﴾	ٱلۡأٓخِرَةِ
ح.عطف +معرفة اسم مجرور بالياء المقدّر على <ى> للتعذر (أوْل) آلَ، [ن][ا و ل]ফিরে আসা, آلপরিবার, آلةযন্ত্র, أَوَّلٌপ্রথম, শুরু، (م) أُلَى ج أولون،أوائِلُ ،(م) أليات প্রথম অংশ, الأُلَىٰদুনিয়া। দুনিয়ার	معرفة اسم مجرور – مضاف إليه [ا خ ر] ॥দেরী করা, বাদ দেওয়া,آخَرٌ ج آخَرون،آخَرات শেষ, চুড়ান্ত, الآخِر،الآخِرةপরকাল আখেরাতের
79|25|অতঃপর আল্লাহ তাকে পরকালের ও ইহকালের শাস্তি দিলেন।	

ذَٰلِكَ	فِي	إِنَّ
اسم اشارة ـ متعلق بخبر محذوف<ان> এর	جرّ মধ্যে	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
79|26|যে ভয় করে তার জন্যে		

يَخْشَىٰ (26)	لِّمَن	لَعِبْرَةً
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدرة على <ى>للتعذر ،فاعل – مستتر <هو> (خشْي،خشْيَة) [س][خ ش ي]ভয় করা, خَشْيَةٌভয়, দুঃচিন্তা ভয় করে	جرّ +اسم موصول - متعلق بالفعلতাদের জন্য	ل-تاكيد +اسم منصوب ـ اسم <ان> (عبْر)(عبَر) [س][ن][ع ب ر]অতিক্রম করা [ن], কাঁদা [س], عَبْرٌঅতিক্রম, عِبرةٌ ج عِبرٌশিক্ষা, হুঁশিয়ারি, উপদেশ অবশ্যই শিক্ষা
অবশ্যই এতে শিক্ষা রয়েছে।		

خَلْقًا	أَشَدُّ	ءَأَنتُمْ
اسم منصوب – تمييز (خلْق) [ن][خ ل ق] গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خَلْقٌসৃষ্টি, خُلْقٌ ج أخلقٌপ্রকৃতি, স্বভাব সৃষ্টি	اسم تفضيل مرفوع بالضمة ،لم ينون (ممنوع) – خبر (شِدَّة) [ض] [ش د د] শক্ত হওয়া, শক্তি শালী হওয়া, أشَدُّঅধিক শক্ত কঠিনতর	ح. استفهام +ضمير منفصل رفعٍ ـ مبتدأ কি তোমরা
79|27|তোমাদের সৃষ্টি অধিক কঠিন না		

بَنٰهَا ﴿27﴾	ٱلسَّمَآءُ ۚ	أَمِ
فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على <ا> للتعذر منع من ظُهورها+ ضمير متصل – مفعول به (بناء، بنْيان) [ض][ب ن ي]তৈরী করা, স্থাপন করা, بِناءٌস্থাপনা নির্মাণ করেছেন তিনি তা	معرفة اسم مرفوع – مبتدأ ، خبر محذوف (سُموع) [ن][س م و] উঁচু হওয়া, উপরে হওয়া, سُموعٌউচ্চতা, (م)سَمنءٌ ج سموات আকাশ আকাশ	ح.عطف অথবা
না আকাশের, যা তিনি নির্মাণ করেছেন?		

فَسَوّٰهَا ﴿28﴾	سَمْكَهَا	رَفَعَ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح على <ا> المقدّر للتعذر ،فاعل – مستتر <هو> +ضمير متصل – مفعول به (سواء)[س][س و ي] সমান করা, II-নিয়মিত করা, মসৃন করা, বিন্যস্ত করা । এবং সুবিন্যস্ত করেছেন তিনি তা	اسم منصوب ـ مفعول به +ضمير متصل – جر بالإضافة [س م ك]IIঘন করা,سَمْكٌ ছাদ, سَمَكةٌ ج سِمَكٌ মাছسُمْكٌঘনত্ব, উপরের স্তর তার	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر <هو> (رفْع) [ف][ر ف ع] উপরে উঠান,رَفْعَةٌউত্তোলন, رِفْعَةٌউচ্চতা উঁচু করেছেন তিনি
79|28|তিনি একে উচ্চ করেছেন ও সুবিন্যস্ত করেছেন।		

ضُحٰهَا ﴿29﴾	وَأَخْرَجَ	لَيْلَهَا	وَأَغْطَشَ
اسم منصوب +ضمير [ض ح و]তার দিবালেক	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح [خ ر ج IV] এবং বের করেছেন	اسم منصوب ـ مفعول به +ضمير متصل – جر بالإضافة [ل ي ل]	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر <هو>

		لَيْلٌرাত(সময়) , ج ليلَةٌ ليلاترাত, সন্ধ্যা তার রাত	(غطْش) [ض][IVغ ط ش] অন্ধকার হওয়া, IV - অন্ধকার করা, غطَشٌঅল্প দৃষ্টি অন্ধকারাচ্ছন্ন করেছেন
79|29|তিনি এর রাত্রিকে করেছেন অন্ধকারাচ্ছন্ন এবং এর সূর্যোলোক প্রকাশ করেছেন।			

دَحٰهَآ ﴿30﴾	ذٰلِكَ	بَعْدَ	وَٱلْأَرْضَ
فعل ماض مبني على الفتح على <ا> المقدّر للتعذر +ضمير متصل مفعول به، فاعل – مستتر <هو> (دحْو) [ن][د ح و]ছড়ানো, সমান করা, ج مِدحًى مَدَاحٍবিছানোর যন্ত্র বিস্তীর্ণ করেছেন তা	اسم اشارة، <ل>للبَعْدِ،<ك>للخِطاب - مضاف إليه এর	ظ. زمان منصوب - متعلق بالفعل محذوف،مضاف (بعْد) [س][ك] [ب ع د]দূরে হওয়া, بَعْدٌ ج أبْعَادদূরত্ব, بَعْدُপরে,তখন, (جرّ) بَعْدَপরে, অধিকন্তু। পরে	ح.عطف +معرفة اسم منصوب – مفعول به محذوف [ا ر ض] IIমাটিতে ফেলা, ج (م)أرضٌ أراضٍমাটি, দেশ পৃথিবীকে
79|30|পৃথিবীকে এর পরে বিস্তৃত করেছেন।			

وَمَرْعٰهَا ﴿31﴾	مَآءَهَا	مِنْهَا	أَخْرَجَ
ح.عطف +اسم منصوب بالفتحة المقدرة على <ا>للتعذر +ضمير متصل- جر بالإضافة (رعْي،مرعًى) [ف][ر ع ي] ঘাস খাওয়ানো, রক্ষা করা, مَرْعًى ج مَراعٍ, مَرعاةٌচারণক্ষেত্র, ঘাস, তৃণ। ও তার উদ্ভিদ	اسم منصوب - مفعول به +ضمير متصل – جر بالإضافة [ك] [ف][ن][م و ه] (موْه، مُوُوه)পানি। তার পানি	جرّ +ضمير - متعلق بالفعل তা হতে	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر <هو> IV (خُروج) [ن] [خرج]বাহির হওয়া, IV–বাহির করা, আনা , خرجةٌ ج خرجاتٌবহির্গমণ বের করেছেন

79|31|তিনি এর মধ্য থেকে এর পানি ও ঘাস নির্গত করেছেন,

أَرۡسَىٰهَا ﴿32﴾	وَٱلۡجِبَالَ
فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على <ا>للتعذر +ضمير متصل – جر بالإضافة (رُسوو) [ن] [ر س و] আঁকড় ধরা, স্থিত হওয়া, مَرسًى ج مَراسٍ নোঙ্গরকরণ, مِرساة নোঙ্গর প্রোথিত করেছেন তা	ح.عطف +معرفة اسم منصوب ـ مفعول به (جبْل) [ض] [ن][ج ب ل]আকার দেওয়া, তৈরী করা, جبَلٌ ج جِبالٌ পর্বত, পর্বত মালা এবং পর্বতমালাকে
79|32|পর্বতকে তিনি দৃঢ়ভাবে প্রতিষ্ঠিত করেছেন,	

وَلِأَنۡعَٰمِكُمۡ ﴿33﴾	لَّكُمۡ	مَتَٰعًا
ح.عطف +جرّ +اسم مجرور +ضمير متصل – جر بالإضافة [ن ع م][ن] [ف] [س] (نعْمة،منْعم) সুখে বাসকরা, نَعَمٌ ج أنْعامٌ গৃহপালিত পশু। তোমাদের গৃহপালিত পশুর জন্য	جرّ +ضمير متصل المخاطَب ـ متعلق بصفة محذوفة <متاعًا> তোমাদের জন্য	اسم منصوب – مفعول لأجله (متْع،متعة) [ف] [م ت ع] নেওয়া, বহন করা, শক্ত হওয়া, متاعٌ ج أمتِعةٌ প্রয়োজনের সামগ্রী জীবিকা সামগ্রী
79|33|তোমাদের ও তোমাদের চতুস্পদ জন্তুদের উপকারার্থে।		

ٱلۡكُبۡرَىٰ ﴿34﴾	ٱلطَّآمَّةُ	جَآءَتِ	فَإِذَا
معرفة اسم مرفوع ـ صفة مرفوعة بالضمة المقدرة على <ى>للتعذر	معرفة اسم مرفوع – فاعل	فعل ماض مبني على الفتح، <ت> التأنيث الساكنة ،حركت الكسر لإلتقاء السكينين	ح. استئنافية +ظ. زمان الشرط غير جازم অতঃপর যখন

(كِبْر) [ك][ن][ك ب ر]বয়স হওয়া, বৃদ্ধ হওয়া [ن], বৃদ্ধি পাওয়া, বড় হওয়া [ك], كَبِيرٌ ج كِبارٌ،كُبْراءُবড়, বিরাট বড়	(طَمّ) [ن][ط م م] নিমজ্জিত করা, বন্যা করা, طامَّةٌ طَمَّات ج দুর্যোগ, দুর্ঘটনা দুর্ঘটনা	(مجئ) [ض][ج ي ا]আসা, পৌঁছা, جيئةপৌঁছা আসবে	

79|34|অতঃপর যখন মহাসংকট এসে যাবে।

سَعٰي ﴿35﴾	مَا	الْإِنسَانُ	يَتَذَكَّرُ	يَوْمَ
فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على «ى» للتعذر (سعْي) [ف][س ع ي] হাটা, চেষ্টা করা, سعْيহাঁটার কাজ, السعْيসায়'ঈ করা চেষ্টা করেছিল সে	اسم موصول - مفعول به যা	معرفة اسم مرفوع - فاعل [ك] [س][ا ن س] বন্ধু হওয়া, ভাল হওয়া, أُنْسٌবন্ধুত্ব, নৈকট্য, إِنْسٌবন্ধু, মানষ, মানবজাতি, إنسانমনুষ, الإنسابমানুষ, কেউ, এক ব্যক্তি। মানুষ	فعل مضارع مرفوع بالضمة [ن][ذ ك ر] (ذِكْر) V] স্মরণ করা, ذِكْرٌ ج أذكارٌস্মরণ স্মরণ করবে	اسم منصوب – بدل من <اذا> [ي و م] III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أَيَّامٌদিন, ঘন্টা সেদিন

79|35|অর্থাৎ যেদিন মানুষ তার কৃতকর্ম স্মরণ করবে

يَرٰي ﴿36﴾	لِمَنْ	الْجَحِيمُ	وَبُرِّزَتِ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدرة على «ى» للتعذر (رأْي) [ف][ر ا ي]দেখা, رَأْي ج آراءٌমতামত, দর্শন দেখে সে	جرّ +اسم موصول- متعلق بالفعل «يرى» তারজন্য	معرفة اسم علم مرفوع - فاعل [ج ح م] جحِمٌ(م) জাহান্নামের আগুন	ح.عطف +فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،«تْ» التأنيث ~الكسرة لإلتقاء السكينين (بُروز) [ن] [ب رز II] প্রদর্শন করা, বাহির হওয়া, بُروزٌপ্রাধান্য, বাড়তি অংশ, অভিক্ষেপ, প্রদর্শনী প্রকাশ করান হবে

		جَحِيمٌজাহান্নাম, আগুন জাহান্নাম	
79|36|এবং দর্শকদের জন্যে জাহান্নাম প্রকাশ করা হবে,			

طَغٰيۙ﴿37﴾	مَنۡ	فَاَمَّا
فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على «ى» للتعذر ،فاعل – مستتر «هو» ~ الجملة- خبر ،صلة الموصول (طغًى،طغْي) [س][ف] [ن][ط غ ي] সীমালঙ্ঘণ করা, طَاغٍ ج طُغَاةٌবিদ্রোহী, طُغوانবন্যা, নিপীড়ন, অত্যাচার বিদ্রোহ করেছে	اسم موصول – مبتدأ যে	ح. واقعة «اذا جآء» +ح. تفصيل অতঃপর জন্য যে
79|37|তখন যে ব্যক্তি সীমালংঘন করেছে;		

الدُّنۡيَاۙ﴿38﴾	الۡحَيٰوةَ	وَاٰثَرَ
صفة منصوبة [ن][د ن و] নিকটে হওয়া, কাছে যাওয়া, أدنَي ج أدنِياءُনিকট, নিচু, নিকৃষ্ট, دُنيا ج دُنيَيَاتপৃথিবী দুনিয়ার	معرفة اسم منصوب – مفعول به [ح ي ي][س] (حياة) বেঁচে থাকা, حَياةٌ ج حَيواتٌজীবন জীবনকে	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» (أثْر،أثارة) [ض] [ن][ا ث ر IV] সম্প্রচার করা, অবহিত করা , IV- অগ্রাধিকার দেওয়া, أَثَرٌখোঁজ, অনুসন্ধান এবং অগ্রাধিকার দিয়েছে
79|38|এবং পার্থিব জীবনকে অগ্রাধিকার দিয়েছে,		

ٱلۡمَأۡوَىٰ ﴿39﴾	هِيَ	ٱلۡجَحِيمَ	فَإِنَّ
معرفة اسم مرفوع بالضمة المقدرة على <ى>للتعذر – خبر [ا و ي][ض] আশ্রয় চাওয়া, أيواءআশ্রয়, مأوًى ج مآوٍআশ্রয়স্থল । বাসস্থান	ضمير منفصل - مبتدأ তাই	معرفة اسم منصوب – اسم «ان» [ج ح م] جحِمٌ(م) জাহান্নামের আগুন দোযখ	فا-واقعة (جواب الشرط) +ح. مشبه بفعل তবে নিশ্চয়ই
79|39|তার ঠিকানা হবে জাহান্নাম।			

رَبِّهِۦ	مَقَامَ	خَافَ	مَنۡ	وَأَمَّا
اسم مجرور – مضاف إليه +ضمير متصل – جر بالإضافة [ر ب ب][ن] (ربّ)প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌরব, মালিক তার রবের	اسم منصوب – مفعول به [ق و م][ن] (قَومة،قِيام) , দাড়ান, IV-সোজা করা, দাঁড় করানো ,X-উঠা, দাড়া أقوامٌ ج قَومٌজনতা, জাতি, গোত্র, قومةٌদাঁড়ান, مَقامٌ ج مَقاماتٌস্থান,অবস্থান,تقاويمُ ج تقْوِيمٌপুনর্গঠন, গঠন, দাঁড়ানো, সংশোধন, পন্জিকা, قَيِّمٌসঠিক, মূল্যবান, তত্বাবধায়ক, القَيِّمةُসঠিক বিশ্বাস, قِيامةٌপূণরউত্থান, বিপ্লব, অভিভাবকত্ব। দাঁড়াতে	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» [خ و ف][ف] (خوْف)ভীত হওয়া, خَوْفٌভয়। ভয় করেছে	اسم موصول - مبتدأ যে	ح.عطف + ح. تفصيل এবং জন্য যে
79|40|পক্ষান্তরে যে ব্যক্তি তার পালনকর্তার সামনে দন্ডায়মান হওয়াকে ভয় করেছে এবং				

ٱلۡهَوَىٰ ﴿40﴾	عَنِ	ٱلنَّفۡسَ	وَنَهَى
معرفة اسم مجرور - الكسرة المقدرة على «ى» للتعذر (هُوِيّ) [ض][ه و ي]পড়া, নিচে নামা, هَوًى ج أهواءٌভালবাসা, ঝোঁক, পছন্দ, প্রেম, الهوىকামনা, প্রেম খারাপ কামনা	جرّ - الكسرة لالتقاء الساكنين হতে	معرفة اسم منصوب – مفعول به (نَفْس،نِفاس) [ن] [ن ف س] অমূল্য হওয়া, মূল্যবান হওয়া, نَفْسٌ(م) ج نُفوسٌ،أنْفسٌআত্মা, মন, ব্যক্তি, সত্বা । প্রবৃত্তিকে	فعل ماض مبني على الفتح على «ى» المقدرة للتعذر ،فاعل – مستتر «هو» (نـهْي) [ف] [ن ه ي] নিষেধ করা, نـهْيٌনিষেধ বিরত রেখেছে
খেয়াল-খুশী থেকে নিজেকে নিবৃত্ত রেখেছে,			

ٱلۡمَأۡوَىٰ ﴿41﴾	هِيَ	ٱلۡجَنَّةَ	فَإِنَّ
معرفة اسم مرفوع بالضمة المقدرة على «ى»للتعذر- خبر «هي» ~ والجملة خبر «ان» [ض][ا و ي]আশ্রয় চাওয়া, أيواءআশ্রয়, مأوًى ج مآوٍআশ্রয়স্থল বাসস্থান	ضمير منفصل – مبتدأ	معرفة اسم علم منصوب – اسم «ان» (جنّ،جُنون) [ن][ج ن ن]ঢাকা, গোপন করা, নামা,(م) جِنِّيةٌ جِنٌّজ্বিন, جَنَّةٌ ج جِنان، جَنَّاتٌবেহেস্ত, বাগান জান্নাত	فـا–واقعة (جواب الشرط) +ح. مشبه بفعل তবে নিশ্চয়ই
79|41|তার ঠিকানা হবে জান্নাত।			

يَسۡـَٔلُونَكَ	عَنِ	ٱلسَّاعَةِ
فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل +ضمير متصل – مفعول به [IV] [س ا ل] (سُؤال،مسألة) জিজ্ঞাসাবাদ করা, سؤالপ্রশ্ন, مسائِلُ ج مسألةবিষয়, সমস্যা জিজ্ঞাসা করে তারা তোমাকে	جرّ হতে	معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل . [س و ع] ساعةٌ ج ساعاتٌ،ساعসময়, ঘন্টা, ঘড়ি, الساعةٌপূণঃরুত্থান দিন, কিয়ামত কিয়ামত

79|42|তারা আপনাকে জিজ্ঞাসা করে,

أَيَّانَ	مُرۡسَىٰهَا ﴿42﴾
اسم استفهام - في محل ظ. زمان متعلق- بخبر المحذوف المقدم কখন	اسم مرفوع بالضمة المقدرة على «ا» مبتدأ مؤخر +ضمير متصل – جر بالإضافة (رُسوو) [ن][ر س و IV] দৃঢ় হওয়া, আঁকড়ে ধরা , IV- শক্ত করে স্থাপন করা,স্থিতিশীল করা, সংঘটিত করা, স্থাপন করা, مُرسَى ،مُرساস্থিতি সংঘটিত তা

কেয়ামত কখন হবে?

فِيمَ	أَنتَ	مِن	ذِكۡرَىٰهَآ ﴿43﴾
جرّ +ح. استفهام কি মধ্যে	ضمير منفصل - مبتدأ তুমি	جرّ হতে	اسم مجرور بالكسرة المقدّرة على «ا» للتعذر +ضمير متصل – جر بالإضافة (ذِكْر) [ن][ذ ك ر V] স্মরণ করা, ذِكْرٌ ج أذكارٌস্মরণ

উল্লেখ তার			

79|43|এর বর্ণনার সাথে আপনার কি সম্পর্ক

مُنتَهَىٰهَآ ﴿44﴾	رَبِّكَ	إِلَىٰ
اسم مرفوع بالضمة المقدرة على «ا» للتعذر – مبتدأ مؤخر+ضمير متصل – جر بالإضافة [VIII ن ه ي / و][ن] (نَهْو) (نَهْي) নিষেধ করা, VIII-শেষ হওয়া, চূড়ান্ত হওয়া, نَهْوٌশেষ, সমাপ্তি, نَهْيনিষেধ, مُنْتَهىনিখুত, চূড়ান্ত, সম্পূর্ণ । তার চূড়ান্ত	اسم مجرور –خبر مقدم +ضمير متصل المخاطَب – جر بالإضافة ربٌّ ج ,প্রভু হওয়া[ر ب ب][ن] (ربّ) أربابٌরব, মালিক তোমার রবের	جرّ প্রতি

79|44|এর চরম জ্ঞান আপনার পালনকর্তার কাছে।

يَخۡشَىٰهَا ﴿45﴾	مَن	مُنذِرُ	أَنتَ	إِنَّمَآ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدرة على «ا» للتعذر ،فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به ،الجملة – صلة الموصول [خ ش ي][س] (خشْي،خشْية) ভয় করা, خشْيةٌভয়, خاشٍউদ্বিগ্ন ভয় করে তা	اسم موصول - جر بالإضافة যে	اسم مرفوع – خبر [ن ذ ر][ن] [ض] (نذْر) IV উৎসর্গ করা, শপথ করা, IV-সতর্ক করা, ঘোষনা করা, مُنذِرٌসতর্ককারী। সতর্ককারী	ضمير منفصل - مبتدأ তুমি	ح. مشبه بفعل +ما- كافةপ্রকৃত পক্ষে

79|45|যে একে ভয় করে, আপনি তো কেবল তাকেই সতর্ক করবেন।

كَأَنَّهُمۡ	يَوۡمَ	يَرَوۡنَهَا
ح. مشبه بفعل +ضمير متصل – اسم «كأن» যেন তারা	اسم منصوب ـ خبر «كأن» [ي و م]III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أَيَّامٌদিন, ঘন্টা যে দিন	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل +ضمير متصل – مفعول به ~الجملة جر بالإضافة (رأْي) [ف][ر ا ي] দেখা, رَأْي ج آراءٌমতামত, দর্শন দেখব তা

79|46|যেদিন তারা একে দেখবে,

لَمۡ	يَلۡبَثُوٓاْ	إِلَّا
ح. نفي جزم না	فعل مضارع مجزوم بحذف النون +ضمير متصل – فاعل،«ا» فارقة (لبَث) [س][ل ب ث]ইতস্তত করা, অবস্থান করা, لابِثٌঅবস্থানকারী অবস্থান করে নাই	ح. حصر ছাড়া

সেদিন মনে হবে যেন তারা

عَشِيَّةً	أَوۡ	ضُحَىٰهَا ﴿46﴾
اسم منصوب ـ مفعول فيه (عشًا) (عشْو،عشًى) [س] [ن][ع ش و / ي]সন্ধ্যা হওয়া, عشًا،عشًىরাতকানা, عشِيসন্ধ্যা, عشِيّةٌ ج عشيّات এক সন্ধ্যা, عَشاءٌনৈশভোজ এক সন্ধ্যা	ح.عطف অথবা	اسم منصوب بالفتحة المقدرة على «ا» للتعذر +ضمير متصل – جر بالإضافة (ضحًا) (ضحْو) [س] [ن][ض ح و /ي] উজ্জ্বল হওয়া, صحْوٌউজ্জ্বলতা, ضاحٍ ج ضاحون সচেতন, সতর্ক তার এক সকাল

দুনিয়াতে মাত্র এক সন্ধ্যা অথবা এক সকাল অবস্থান করেছে।

।।সূরা আন্-নাযি'আত সমাপ্ত ।

سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ

৮০। সূরা আবাসা : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:৪২

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

﴿1﴾ وَتَوَلّٰٓي	عَبَسَ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على «ا» للتعذر ،فاعل – مستتر «هو» (ولاء،ولاية) [س] [و ل ي V] কাছে হওয়া, নিকটে হওয়া, V-দখল করা, বাধা দেওয়া, বিরত থাকা, وَلِيّ ج أولياءُনিকট, নিকটে, সাহায্যকারী, বন্ধু। অনাগ্রহ দেখাল	فعل ماض مبني على الفتح (عبْس،عُبوس) [ض][ع ب س] ভ্রুকুঞ্চন করা, অবজ্ঞা করা, عُبوسٌঅবজ্ঞা, বিষাদ, কঠোরতা ভ্রুকুঞ্চিত করল
80|1|তিনি ভ্রূকুঞ্চিত করলেন এবং মুখ ফিরিয়ে নিলেন।	

﴾2﴿ ٱلۡأَعۡمَىٰ	جَآءَهُ	أَن
معرفة اسم مرفوع (عمًى) [س] [ع م ي]অন্ধ হওয়া, (م)، الأَعْمَى عمياءُ ج عُمْيٌঅন্ধ এক অন্ধ	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر« هو» +ضمير متصل – مفعول به (مجئ) [ض][ج ي ا] আসা, পৌঁছা, جيئةপৌঁছা এসেছে তার	ح. مصدرية যে
80|2|কারণ, তাঁর কাছে এক অন্ধ আগমন করল।		

﴾3﴿ يَزَّكَّىٰٓ	لَعَلَّهُۥ	يُدۡرِيكَ	وَمَا
فعل مضارع (زكاء) [س] [ن][ز ك ي II] বড় হওয়া, বৃদ্ধি পাওয়া, V–পবিত্র হওয়া, I I– পবিত্র করা। পরিশুদ্ধ হবে	ح. مشبه بفعل +ضمير متصل - اسم «لعل» হয়ত সে	فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدرة على «ي» للثقل – فاعل - مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به (دراية) [ض][د ر ي]জানা, অবগত হওয়া, درايةজ্ঞান, জানাবে তোমাকে	ح.عطف +ح. استفهام এবং কি
80|3|আপনি কি জানেন, সে হয়তো পরিশুদ্ধ হত,			

﴾4﴿ ٱلذِّكۡرَىٰٓ	فَتَنفَعَهُ	يَذَّكَّرُ	أَوۡ
معرفة اسم مرفوع بالضمة المقدرة على «ا» للتعذر (ذِكْر) [ن][ذ ك ر] স্মরণ করা, II–স্মরণ করানো , ذِكْرٌ ج أذكارٌস্মরণ	فا-سببية +فعل مضارع منصوب+ضمير متصل الاغائب – مفعول به مقدم (نَفْع) [ف] [ن ف ع] উপকারী হওয়া, نَفْعٌউপকার	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتر «هو» (ذِكْر) [ن][ذ ك ر II] স্মরণ করা, II–স্মরণ করানো , ذِكْرٌ ج أذكارٌস্মরণ	ح.عطف অথবা

উপদেশ	ফলে উপকার দিত তাকে	উপদেশ গ্রহন করত	
80|4|অথবা উপদেশ গ্রহণ করতো এবং উপদেশ তার উপকার হত।			

ٱسۡتَغۡنَىٰ ﴿5﴾	مَنِ	أَمَّا
فعل ماض مبني على الفتح المقدّرة على«ا» للتعذر ، فاعل – مستتر «هو» (غِنًى،غَناء) [س][غ ن ي X] ধণী হওয়া, অভাবমুক্ত হওয়া, غِنًىধণী, X-প্রয়োজনমুক্ত হওয়া। বেপরোয়া হল	اسم موصول مبني على السكون، الكسرة لالتقاء السكنين যে	ح. تفصيل জন্য যে
80|5|পরন্তু যে বেপরোয়া,		

تَصَدَّىٰ ﴿6﴾	لَهُۥ	فَأَنتَ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدرة على «ا» للتعذر, فاعل – مستتر «هو» ~ الجملة خبر «انت» (صدًى) [س][ص د ي V] তৃষ্ণার্ত হওয়া, V–আবিষ্ট হওয়া, দখল হওয়া মনযোগ দিচ্ছ	جرّ +ضمير –متعلق بخبر তার জন্য	فا-واقعة (جواب الشرط) +ضمير منفصل – مبتدأ তবে তুমি
80|6|আপনি তার চিন্তায় মশগুল।		

يَزَّكَّىٰ ﴿7﴾	أَلَّا	عَلَيْكَ	وَمَا
فعل مضارع منصوب «بأن»، المصدر المؤول - مبتدأ (زكاء) [س] [ن][ز ك ي]II বড় হওয়া, বৃদ্ধি পাওয়া, V- পবিত্র হওয়া, I I- পবিত্র করা। পরিশুদ্ধ হয় সে	ح. مصدرية +ح. نفي যে না	جرّ +ضمير - خبر مقدم তোমার উপর	ح.عطف +ح. نفي এবং না
80|7|সে শুদ্ধ না হলে আপনার কোন দোষ নেই।			

يَسْعَىٰ ﴿8﴾	جَآءَكَ	مَنْ	وَأَمَّا
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدرة على «ا» للتعذر ،فاعل – مستتر «هو» (سعْي)][ف][س ع ي]হাঁটা, দৌড়া, চেষ্টা করা, سَعْيٌহাঁটা, দৌড়, السعْيسা'য়ী । দৌড়ে	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به [ج ي ا] আসে তোমার কাছে	اسم موصول – مبتدأ যে	ح.عطف +ح. تفصيلএবং জন্য যে
80|8|যে আপনার কাছে দৌড়ে আসলো			

يَخْشَىٰ ﴿9﴾	وَهُوَ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدرة على «ا» للتعذر (خشْي،خشْية) [س][خ ش ي]ভয় করা, خشْيةٌভয়, خاشٍউদ্বিগ্ন ভয় করে	ح.عطف +ضمير منفصل منفصل-مبتدأ এবং সে
80|9|এমতাবস্থায় যে, সে ভয় করে,	

تَلَهّٰى ﴿10﴾	عَنْهُ	فَأَنْتَ
فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على «ا» للتعذر ،فاعل – مستتر «هو» [V ل ه ي / و][ن][س] (لَهْو) (لَهًا) আনন্দ করা, অপ্রস্তুত হওয়া [ن] , পছন্দ করা, প্রিয় হওয়া, প্রেমে পড়া [س] , V–আনন্দ করা, তৃপ্তি ভোগ করা, لَهْوٌআনন্দ, স্ফুর্তি, অমোনযোগ, চিত্তবিক্ষেপ অনীহা প্রকাশ করছ	جرّ +ضمير - متعلق بخبر তার থেকে	فا-واقعة (جواب الشرط) +ضمير منفصل - مبتدأ তবে তুমি
80|10|আপনি তাকে অবজ্ঞা করলেন।		

تَذْكِرَةٌ ﴿11﴾	إِنَّهَا	كَلَّآ
اسم مرفوع بالضمة – خبر «ان» [V ذ ك ر][ن] (ذِكْر) স্মরণ করা, II–স্মরণ করানো, V–স্মরণ করা , ذِكْرٌ ج أذكارٌস্মরণ, تَذْكِيرٌস্মরণকারী, স্মারক,تَذَكُّرٌস্মরণ, تَذْكِرةٌ ج تذَاكِرٌসংবাদ, অনুমতি, *تذْكِرةٌস্মারক, স্মরণকারী,* مُتَذَكِّرٌস্মরণকারী, উপদেশ গ্রহনকারী উপদেশ	ح. مشبه بفعل +ضمير متصل – اسم «ان» নিশ্চয়ই তা	ح. ردع কক্ষণনা
80|11|কখনও এরূপ করবেন না, এটা উপদেশবানী।		

ذَكَرَهُ ﴿12﴾	شَآءَ	فَمَن
اسم مرفوع بالضمة – خبر «ان»+ ضمير [ذ ك ر][ن] (ذِكْر) স্মরণ করা, II–স্মরণ করানো, V– স্মরণ করা , ذِكْرٌ ج أذكارٌস্মরণ, تَذْكِيرٌস্মরণকারী, স্মারক,تَذَكُّرٌস্মরণ, تَذْكِرَةٌ ج تذَاكِرٌসংবাদ, অনুমতি, *تَذْكِرَةٌস্মারক, স্মরণকারী,* مُتَذَكِّرٌস্মরণকারী, উপদেশ গ্রহনকারী উপদেশ	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو»، حذفت المفعول به ইচ্ছা করে	ح. استئنافية +اسم شرط جازم – مبتدأ অতএব যে
80|12|অতএব, যে ইচ্ছা করবে, সে একে গ্রহণ করবে।		

مُّكَرَّمَةٍ ﴿13﴾	صُحُفٍ	فِى
صفة مجرورة «صحف» (كرَمة،كرامة) [ك] [ك ر م]II আদর্শ হওয়া, II–আদর্শ বলা, সম্মান করা, مُكَرَّمٌসম্মানিত সম্মানিত	صفة مجرورة «تذكرة» [ص ح ف] IIবিকৃত করে পড়া, صَحِيفَةٌ ج صُحُفٌবইয়ের পাতা, পেপার সহিফা সমুহ	جرّ মধ্যে
80|13|এটা লিখিত আছে সম্মানিত,		

سَفَرَةٍ ﴿15﴾	بِأَيْدِى	مُّطَهَّرَةٍ ﴿14﴾	مَّرْفُوعَةٍ
اسم مجرور - مضاف إليه [س ف ر][ض] (سُفور) পর্দা সড়ান, سَفْرَةٌ ج سفراتٌভ্রমন দূতদের	جرّ +اسم مجرور - صفة «صحف» [ي د ي]	اسم مجرور – صفة مجرورة [ط ه ر] [ك] (طُهْر،طهارة) II পবিত্র হওয়া, Ii–পবিত্র করা, مُطَهَّرٌপবিত্র। পবিত্র	اسم مجرور- صفة مجرورة «صحف» [ر ف ع] [ف] (رَفْع) তুলে ধরা, উপরে উঠান, مرفوعةউত্তোলিত

	يَدٌ، (مث) يَدانِ، ج أيدٍ،أيادٍهাত, সামনের পা। হাতে		উচ্চ মর্যাদা সম্পন্ন
80|14|উচ্চ পবিত্র পত্রসমূহে, 80|15|লিপিকারের হস্তে,			

بَرَرَةٍ ﴿16﴾	كِرَامٍ
اسم مجرور – صفة مجرورة «سفرة» [ب ر ر][س] [ض] (بِرّ) بِرّ) কর্তব্যপরায়ণ হওয়া, নিষ্ঠাপূর্ণ হওয়া উপকার করা, بِرٌّসত্যপন্থী, আল্লাহ ভীরু, بَرٌّ،بارٌّ ج أبْرارٌ،بَرَرةٌ, সৎ, নিবেদিত সৎ	اسم مجرور - صفة مجرورة «سفرة» [ك ر م] [ك] II (كرَمة،كرامة) আদর্শ হওয়া, II–আদর্শ বলা, সম্মান করা, مُكَرَّمٌসম্মানিত সম্মানিত
80|16|যারা মহৎ, পূত চরিত্র।	

أَكْفَرَهُ ﴿17﴾	مَآ	ٱلْإِنسَانُ	قُتِلَ
فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به IV (كفْر) [ض] [ك ف ر]ঢেঁকে রাখা, গোপন করা, বিদ্রোহী হওয়া,IV–বিদ্রোহী করা, বিদ্রোহী বলা, كافِرٌ ج كافرون،كُفّارٌকাফের, বিদ্রোহী। অমান্যকারী তা	ح. استفهام কত	معرفة اسم مرفوع – نائب فاعل [ا ن س] [س] [ك] (أنَس)(أُنْس)ভদ্রহওয়া, ভাল হওয়া, أُنسٌঘনিষ্ঠতা, ناسٌমানুষ, اِنْسانমানুষ, الإنسانকোন মানুষ, একজন মানুষ মানুষ	فعل ماض مجهول مبني على الفتح [ق ت ل] [ن] (قتْل)হত্যা কর, قِتْلٌ ج أقْتالٌহত্যা, شقতْلٌ قَوْلٌশত্রু ধ্বংস হক

80|17|মানুষ ধ্বংস হোক, সে কত অকৃতজ্ঞ।

خَلَقَهُ ﴿18﴾	شَيْءٍ	أَيِّ	مِنْ
فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به (خاْق) [ن][خ ل ق] গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خَلْقٌসৃষ্টি, خُلْقٌ ج أخلقٌপ্রকৃতি, স্বভাব সৃষ্টি করেছেন তিনি তাকে	اسم مجرور -مضاف إليه (مَشِيئة) [ف] [ا ش ي] চাওয়া, ইচ্ছা করা, شيءٌ ج أشياءٌকিছু, জিনিষ কিছুর	ج. استفهام ~ جر- مجرور متعلق بالفعل «خلق» কোন	جرّ হতে
80|18|তিনি তাকে কি বস্তু থেকে সৃষ্টি করেছেন?			

فَقَدَّرَهُ ﴿19﴾	خَلَقَهُ	نُّطْفَةٍ	مِنْ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به ق د ر][ن] [ض][س] (قدْر)(قُدْرة) (قدَر II] সিদ্ধান্ত নেওয়া [ن], শক্তি থাকা [ض] [س] , II-নির্ধারন করা নির্দিষ্ট করেছেন তার	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به (خاْق) [ن][خ ل ق] গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خَلْقٌসৃষ্টি, خُلْقٌ ج أخلقٌপ্রকৃতি, স্বভাব সৃষ্টি করেছেন তাকে তিনি	اسم مجرور – متعلق بالفعل (نطْف) [ن] [ض] [ن ط ف] ঝরিয়ে পড়া, نُطْفةٌ ج نُطَفٌফোটা, শুক্র শুক্র ফোটা	جرّ হতে
80|19|শুক্র থেকে তাকে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তাকে সুপরিমিত করেছেন।			

يَسَّرَهُۥ ﴿20﴾	ٱلسَّبِيلَ	ثُمَّ
فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به (يسَر) [س][ي س ر II] সহজ হওয়া, II–সহজে দেওয়া(আল্লাহর) সহজ করেছেন	معرفة اسم منصوب – مفعول به «بفعل مُضْمَرَة» [س ب ل] II–দাতব্যে উৎসর্গ করা, سبيلٌ ج سُبُلٌরাস্তা, পথ পথ	ح.عطف অতঃপর
80|20|অতঃপর তার পথ সহজ করেছেন,		

فَأَقْبَرَهُۥ ﴿21﴾	أَمَاتَهُۥ	ثُمَّ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به ق ب ر][ن] [ض] (قَبْر،مَقبر) IV] কবর দেওয়া, قَبْرٌ ج قُبور কবর। এবং কবরস্থ করেন তাকে	اسم منصوب – مفعول به + ضمير متصل – (مَوْت) [ن][م و ت]মৃত্যু বরণ করা, মুছে যাওয়া, موتةٌ، مَوْتমৃত্যু। মৃত্যু দেন তাকে	ح.عطف অতঃপর
80|21|অতঃপর তার মৃত্যু ঘটান ও কবরস্থ করেন তাকে।		

أَنشَرَهُۥ ﴿22﴾	شَآءَ	إِذَا	ثُمَّ
فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به (نشْر) [ك] [ض] [ن] [ن ش ر IV] বিছান, খোলা [ن][ض] ,পুণঃরুত্থান করা [ك], نُشورٌপুণরুত্থান পুণরায় জীবিত করবেন তাকে	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» (مَشِيئة) [ف] [ش ي ا]চাওয়া, ইচ্ছা করা, شيءٌ ج أشياءٌকিছু, জিনিষ চাইবেন	ظ. زمان যখন	ح.عطف অতঃপর

80|22|এরপর যখন ইচ্ছা করবেন তখন তাকে পুনরুজ্জীবিত করবেন।

أَمَرَهُۥ (23)	مَآ	يَقْضِ	لَمَّا	كَلَّا
فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به (أمْر) [ا م ر][ن] আদেশ করা, أمْرٌ ج أوامِرٌ أمْرٌআদেশ, أُمورٌকাজ আদেশ করেছেন তিনি তাকে	اسم موصول - مفعول به যা	فعل مضارع مجزوم بحذف آخره«ي» بقيت الكسر – فاعل مستتير «هو» (قضاء) [ض][ق ض ي]শেষ করা, বিচার করা, সম্পাদন করা, قضًىবিচার, قضاءٌসমাপ্তি, সম্পাদন করেছে সে	ح. نفي না	ح. ردع কক্ষণনা

80|23|সে কখনও কৃতজ্ঞ হয়নি, তিনি তাকে যা আদেশ করেছেন, সে তা পূর্ণ করেনি।

طَعَامِهِۦٓ (24)	إِلَىٰ	ٱلْإِنسَٰنُ	فَلْيَنظُرِ
اسم مجرور - متعلق بالفعل +ضمير متصل – جر بالإضافة (طعَم) [س][ط ع م] খাওয়া, স্বাদ নেওয়া, طعامٌ ج أطْعِمَةখাদ্য, পুষ্টি খাদ্যের	جرّ প্রতি	معرفة اسم مرفوع – فاعل (أُنْس)(أنَس) [ك] [س] [ا ن س] ভদ্রহওয়া, ভাল হওয়া, أُنسٌঘনিষ্ঠতা, ناسٌমানুষ, انْسانমানুষ, الإنسانকোন মানুষ, একজন মানুষ মানুষ	ح. استئنافية +ل-أمر +فعل مضارع مجزوم ، علامة – السكون،الكسر آخره لإلتقاء السكينين (نظَر،مَنْظر) [ن][ن ظ ر]দেখা , পর্যবেক্ষণ করা, نظَرٌ ج أنظَرٌদর্শন অতঃপর লক্ষ্য করুক

80|24|মানুষ তার খাদ্যের প্রতি লক্ষ্য করুক,

صَبًّا ﴿25﴾	ٱلْمَآءَ	صَبَبْنَا	أَنَّا
اسم منصوب – مفعول مطلق (صبّ) [ن][ص ب ب]ঢালা,বর্ষণ করা, আরোপ করা, পূরণ করা, صبٌّপ্রবাহ, ঢালা, বর্ষণ বর্ষণ	معرفة اسم منصوب – مفعول به [م و ه][ن][ف] [ك] (مَوْه، مُوُوه) মিশ্রিত করা, প্রচুর পানি হওয়া, ماءٌ ج مِياءٌপানি, তরল, রস। পানি	فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل [ص ب ب][ن] (صبّ) ঢালা,বর্ষণ করা, আরোপ করা, পূরণ করা, صبٌّপ্রবাহ, ঢালা বর্ষণ করেছি আমরা	ح. مشبه بفعل +ضمير متصل - اسم«ان» নিশ্চয়ই আমরা

80|25|আমি আশ্চর্য উপায়ে পানি বর্ষণ করেছি,

شَقًّا ﴿26﴾	ٱلْأَرْضَ	شَقَقْنَا	ثُمَّ
اسم منصوب – مفعول مطلق] VII (شقّ) [ن][ش ق ق] বিদীর্ণ করা, ফাটানো,VII- বিদীর্ণ হওয়া,VIII- নির্গত করা, নিষ্পন্ন করা , شقٌّ ج شُقوقٌশরু ছিদ্র, ফাটা, চিরা, ফাঁক, شِقٌّঅর্ধেক, একাংশ شقٌّ ج شُقوقٌশরু ছিদ্র, ফাটা, চিরা, ফাঁক, شِقٌّঅর্ধেক, একাংশ বিদীর্ণ	معرفة اسم منصوب – مفعول به [ا ر ض] IIমাটিতে ফেলা, أرضٌ(م) ج أراضٍমাটি, দেশ মাটিকে	فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل] VII (شقّ) [ن][ش ق ق] বিদীর্ণ করা, ফাটানো,VII- বিদীর্ণ হওয়া,VIII- নির্গত করা, নিষ্পন্ন করা , شقٌّ ج شُقوقٌশরু ছিদ্র, ফাটা, চিরা, ফাঁক, شِقٌّঅর্ধেক, একাংশ شقٌّ ج شُقوقٌশরু ছিদ্র, ফাটা, চিরা, ফাঁক, شِقٌّঅর্ধেক, একাংশض বিদীর্ণ করেছি আমরা	ح.عطف অতঃপর

80|26|এরপর আমি ভূমিকে বিদীর্ণ করেছি,

حَبًّا ﴿27﴾	فِيهَا	فَأَنۢبَتۡنَا
اسم منصوب – مفعول به (حُبّ) [ض][ح ب ب] ভালবাসা, পছন্দ করা,حبّ‖বীজ তৈরী করা,حُبوبٌ ج حَبَّةٌ،حَبٌّশস্য,حُبٌّভালবাসা, স্নেহ, أحبابٌ ج حِبٌّপ্রিয়, প্রিয়তম শস্য	جرّ +ضمير متصل مجرور – متعلق بالفعل তার মধ্যে	ح.عطف +فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل IV (نَبْت) [ن][ن ب ت]জন্মানো, IV– জন্মানো , نباتٌ ج نَباتاتٌউদ্ভিদ, গাছপালা এবং উৎপন্ন করেছি আমরা
80|27|অতঃপর তাতে উৎপন্ন করেছি শস্য,		

وَنَخۡلٗا ﴿29﴾	وَزَيۡتُونٗا	وَقَضۡبٗا ﴿28﴾	وَعِنَبٗا
ح.عطف +اسم منصوب (نَخْل) [ن][ن خ ل] চালা, ছাঁকা, نَخْلٌ(ة) খেজুর(একটি খেজুর) খেজুর	اسم منصوب – مفعول به [ز ي ت] ‖তেল দেওয়া, زَيْتٌতৈল, زيْتون (ة) জলপাই (একটি জলপাই) যয়তুন	ح.عطف +اسم منصوب (قَضْب) [ض][ق ض ب] কাটা, গাছকাটা, ছাঁটা, قَضْبٌভোজ্য শাকস্বজি ও শাকস্বজি	ح.عطف +اسم منصوب - مفعول به [ع ن ب] ،عِنَبٌ(ة) ج أعنابٌআঙ্গুর(একটি আঙ্গুর) ও আঙ্গুর
80|28|আঙ্গুর, শাক-সব্জি, 80|29|যয়তুন, খর্জূর,			

وَأَبًّا ﴿31﴾	وَفَٰكِهَةٗ	غُلۡبٗا ﴿30﴾	وَحَدَآئِقَ
ح.عطف +اسم منصوب – صفة منصوبة	ح.عطف +اسم منصوب – مفعول به	اسم منصوب-صفة منصوبة [غ ل ب][ض][س] (غلْب)(غلَب) পরাজিত করা, জয় করা [ض] ,	ح.عطف +اسم منصوب - مفعول به

(أبّ) [ن][ا ب ب] আগ্রহী হওয়া, أبٌّ أُبُبٌّ ج ঘাস, তৃণ, তৃণভূমি উদ্ভিদ জাতীয় খাদ্য	(فكَه) [س][ف ك ه] প্রাণবন্ত হওয়া, فكِهٌ হাসিখুশি, فاكِهٌ আনন্দিত, উচ্ছ্বসিত, فاكِهةٌ ج فواكِهُ ফল এবং ফল	মোটা ঘাড়বিশিষ্ট, ঘনগাছপালা বিশিষ্ট হওয়া [س] , غُلبٌ ج غَلْباءُ মোটা ঘাড়বিশিষ্ট, ঘনগাছপালা বিশিষ্ট। ঘন সন্নিবেশিত	[ض] [ح د ق] (حدْق)ঘিড়ে ফেলা, حدِيقةٌ ج حَدائقُ বাগান বাগিচা সমূহ

80|30|ঘন উদ্যান, 80|31|ফল এবং ঘাস

وَلِأَنۡعَٰمِكُمۡ ﴿32﴾	لَّكُمۡ	مَّتَٰعًا
ح.عطف +جرّ +اسم مجرور –مضاف +ضمير متصل – مضاف إليه (نعْمة) [س] [ف] [ن] [ن ع م] আরাম আয়েশে বাস করা, نَعَمٌ ج أنْعامٌ পশু, গৃহপালিত পশু। তোমাদের চতুস্পদ জন্তুর জন্য	جرّ +ضمير –متعلق «متعا» তোমাদের জন্য	اسم منصوب مفعول لأجله (متْع،متعة) [ف][م ت ع] নেওয়া, বহন করা, শক্ত হওয়া, متاعٌ ج أمتِعةٌ প্রয়োজনের সামগ্রী ভোগ্যসামগ্রী

80|32|তোমাদেরও তোমাদের চতুস্পদ জন্তুদের উপাকারার্থে।

ٱلصَّآخَّةُ ﴿33﴾	جَآءَتِ	فَإِذَا
معرفة اسم مرفوع – فاعل ، الجملة – في محل جر بالإضافة (صخّ) [ن] [ص خ خ] শক্ত আঘাত করা, صخٌّ বধির করার শব্দ কর্ণবিদারক ধ্বনি	فعل ماض مبني على الفتح، «ت» التأنيث بالسكون،الكسرة – لإلتقاء السكينين (مجئ) [ض][ج ي ا] আসা, পৌঁছা, جيئة পৌঁছা আসবে	ح. استئنافية +ظ. زمان - الشرط غير جازم অতঃপর যখন

80|33|অতঃপর যেদিন কর্ণবিদারক নাদ আসবে,

أَخِيهِ ﴿34﴾	مِنْ	ٱلْمَرْءُ	يَفِرُّ	يَوْمَ
اسم مجرور ـ متعلق بالفعل – ضمير متصل – جر بالإضافة [ا خ و] III ভাই হিসাবে থাকা, أَخٌ ج إِخْوة،إخوانভাই তার ভাই	جرّ হতে	معرفة اسم مرفوع ـ فاعل [م ر ا] [ن] [س] [ك](مراءة) (مراة)(مروءة) স্বাস্থ্যবান হওয়া [س] , পৌরুষদীপ্ত হওয়া [ك], সুস্থ আবহাওয়া হওয়া [ك], (أمرأ،إمْؤ)- المَرءُএকজন মানুষ মানুষ	فعل مضارع مرفوع بالضمة [ف ر ر] [ض] (فَرّ)পালান, فِرارٌপলায়ন পালাবে	ظ. زمان منصوب – بدل من«اذا» [ي و م] III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أيَّامٌদিন, ঘন্টা সেদিন

80|34|সেদিন পলায়ন করবে মানুষ তার ভ্রাতার কাছ থেকে,

وَبَنِيهِ ﴿36﴾	وَصَٰحِبَتِهِۦ	وَأَبِيهِ ﴿35﴾	وَأُمِّهِۦ
ح.عطف +اسم مجرور ـ معطوف +ضمير متصل – جر بالإضافة [ب ن ي][ض] (بِنا،بُنيان)তৈরী করা, بِناءٌদালান, بُنَيّছেলে, بُنَيةমেয়ে, أبناءُ ، بنون ج ابنٌঅধিবাসী،সন্তান। ও তার সন্তানদের	ح.عطف +اسم مجرور ـ معطوف +ضمير متصل – جر بالإضافة [ص ح ب][س] (صُحْبة،صَحابة) সাথী হওয়া, صاحِبٌ،صاحِبةٌ(م) صاحباتٌ(م) ج أصحابٌ ،صاحِبাতٌসঙ্গী। ও তার স্ত্রী	ح.عطف +اسم مجرور ـ معطوف +ضمير متصل – جر بالإضافة [ا ب و] ،أبٌ ج آباءٌপিতা, পূর্বপুরুষ। ও তার পিতা	ح.عطف +اسم مجرور-معطوف على «اخيه» +ضمير متصل – جر بالإضافة [ا م م] [ن] (أمّ)(إمامة) (أُمومة)যাওয়া, অবলম্বন করা, নামাযে ইমমতি করা (إمامة), মা হওয়া (أُمومة), أُمٌّ ج أمَّاهاتমা, উৎস, ভিত্তি ও তার মা

80|35|তার মাতা, তার পিতা, 80|36|তার পত্নী ও তার সন্তানদের কাছ থেকে।

مِّنْهُمْ	اَمْرِئٍ	لِكُلِّ
جرّ +ضمير الغائبين – متعلق بصغة محذوفة «امرئ» তোমাদের মধ্যে	اسم مجرور (مروءة)(مراة) (مراءة) [ك][س] [ن] [م ر ا] স্বাস্থ্যবান হওয়া [س] , পৌরুষদীপ্ত হওয়া [ك], সুস্থ আবহাওয়া হওয়া [ك], (أمرأ،إمْرُ)- المَرءُএকজন মানুষ। ব্যক্তির	جرّ +اسم مجرور – متعلق بخبر مقدم [ك ل ل][ض] (كلٌّ) পরিশ্রান্ত হওয়া, كُلّসব, كلّاকক্ষণও না জন্য প্রত্যেক
80|37|সেদিন প্রত্যেকেরই নিজের এক চিন্তা থাকবে,		

يُغْنِيْهِ ﴿37﴾	شَأْنٌ	يَوْمَئِذٍ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدرة على «ي» للثقل ،فاعل – مستتر «هو» + ضمير متصل – مفعول به ~الجملة في محل – صفة «شان» [IVغ ن ي] [س] (غِنًى،غَناء) চাহিদা শুন্য হওয়া, অভাবমুক্ত হওয়া, IV - অভাবমুক্ত করা, ধনী করা, غِنًىসম্পদ, ধন	اسم مرفوع – مبتدأ مؤخر [ش ا ن]، شَانٌ شُؤُونবিষয়, ব্যাপার, অবস্থা অবস্থা	ظ. زمان – يومَ ظ.زمان منصوب متعلق «يفير» – مضاف + «اذٍ» - مبني على السكون، الكسرة لالتقاء السكنين (تنوين العِوَض) - مضاف إلَيهِ – و هو مضاف ،مضاف إليه - محذوف [المعوض بالتنوين«ذٍ» - تنوينُ العِوَضِ] সেদিন
80|37|সেদিন প্রত্যেকেরই নিজের এক চিন্তা থাকবে, যা তাকে ব্যতিব্যস্ত করে রাখবে।		

وُجُوهٌ	يَوْمَئِذٍ	مُّسْفِرَةٌ ﴿38﴾
اسم مرفوع – مبتدأ [و ج ه]، وَجْهٌ ج وُجوهٌ মুখ	ظ. زمان - يومَ ظ.زمان منصوب متعلق «يفير» – مضاف + «اذٍ» -على السكون، الكسرة لالتقاء السكنين - مضاف إلَيهِ – و هو مضاف ،مضاف إليه - محذوف (المعوض بالتنوين«ذٍ» - تنوينُ العِوَضِ) সেদিন	اسم مرفوع – خبر [IV س ف ر][ض](سُفور،سفْر) মুখের পর্দা খোলা, উজ্বল করা, IV–উজ্বল করা, مُسْفِرَةউজ্জ্বল
80|38|অনেক মুখমন্ডল সেদিন হবে উজ্জ্বল,		

ضَاحِكَةٌ	مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿39﴾
اسم مرفوع - خبر «وجوه» ضَحْكةٌ ج [ض ح ك] [س] (ضحَك) হাসা, ضحَكاتٌহাসি সহাস্য	اسم مرفوع – خبر «وجوه» [X ب ش ر][ض] [س] (بِشْر) আনন্দিত হওয়া, X– প্রফুল্ল হওয়া, مُستَبشِرٌসুখী, প্রফুল্ল প্রফুল্ল
80|39|সহাস্য ও প্রফুল্ল।	

وَوُجُوهٌ	يَوْمَئِذٍ	عَلَيْهَا	غَبَرَةٌ ﴿40﴾
ح.عطف +اسم مرفوع - مبتدأ [و ج ه] এবং মুখ	ظ. زمان - يومَ ظ.زمان منصوب متعلق «يفير» – مضاف + «اذٍ» – مبني على السكون، الكسرة لالتقاء السكنين (تنوين العِوَض) - مضاف إلَيهِ – و هو مضاف ،مضاف إليه - الجملة محذوفة [المعوض بالتنوين«ذٍ» - تنوينُ العِوَضِ) সেদিন	جرّ +ضمير - خبرতার উপর	اسم مرفوع - مبتدأ مؤخر [غ ب ر][ن] (غُبور)অতীত হওয়া، غَبرةٌধূলি মলিন

80|39|সহাস্য ও প্রফুল্ল। 80|40|এবং অনেক মুখমন্ডল সেদিন হবে ধুলি ধূসরিত।

قَتَرَةٌ ﴿41﴾	تَرۡهَقُهَا
اسم مرفوع – فاعل (قَتْر،قُتُور) [ض] [ن] [ق ت ر] কৃপণ হওয়া, বদ্ধমুষ্টির হওয়া, قَتَرَةٌধূলি অন্ধকার	فعل مضارع مرفوع بالضمة +ضمير متصل – مفعول به (رَهَق) [س] [ر ه ق]অধিগ্রহন করা, আচ্ছন্ন করা আচ্ছন্ন করবে তাকে
80|41|তাদেরকে কালিমা আচ্ছন্ন করে রাখবে।	

ٱلۡفَجَرَةُ ﴿42﴾	ٱلۡكَفَرَةُ	أُوْلَٰٓئِكَ هُمُ
معرفة اسم مرفوع – خبر (كفْر) [ض] [ك ف ر]] ঢেঁকে রাখা, গোপন করা, বিদ্রোহী হওয়া,IV-বিদ্রোহী করা, বিদ্রোহী বলা, كافِرٌ ج كافِرون،كُفَّارٌকাফের, বিদ্রোহী। কাফের	ضمير منفصل - مبتدأ	اسم اشارة - مبتدأ তারা
80|42|তারাই কাফের		

॥ সূরা আবাসা সমাপ্ত ॥

سُوۡرَةُ التَّكۡوِيۡرِ مَكِّيَّةٌ

৮১। সূরা আত-তাকবীর : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:২৯

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

كُوِّرَتۡ ﴿1﴾	ٱلشَّمۡسُ	إِذَا
فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،نائب فاعل – مستتر «هي» ،«تْ» التأنيث [ك و ر II] গুটানো, V-গোল হওয়া, كُورٌ أكوَارٌ জউঠের গদি । **গুটান হবে**	معرفة اسم مرفوع ـ نائب فاعل ،الفعل محذوف يفسِره «كورت» ~الجملة – جرّ بالإضافة «اذ» [ش م س] [ن] [ض] [س] (شُموس،شِماس) (شمَس) রৌদ্রদীপ্ত হওয়া, شَمْسٌ(م) ج شُموسশমসসূর্য। **সূর্য**	ظ. زمان - الشرط **যখন**
81|1|যখন সূর্য আলোহীন হয়ে যাবে, ,		

ٱنكَدَرَتۡ ﴿2﴾	ٱلنُّجُومُ	وَإِذَا
فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هي» ،«تْ» التأنيث [ك د ر VII] [ك] [س] (كُدورة) (كدَر) ঘোলা হওয়া, কর্দমাক্ত হওয়া, VII-ঘোলা হওয়া, অস্বচ্ছ হওয়া, ছোঁ-মারা, নূয়ে পড়া, পিছলে পড়া, ছড়িয়ে পড়া। **বিক্ষিপ্ত হবে**	معرفة اسم مرفوع ـ نائب فاعل ،الفعل محذوف ~والجملة – جرّ بالإضافة «اذ» [ن ج م] [ن] (نُجوم) আবির্ভূত হওয়া, দৃষ্টিগোচর হওয়া, نَجْمٌ ج نُجُومْসৌর বস্তু, তারা **তারকাগূলি**	ح.عطف +ظ. زمان – الشرط **এবং যখন**
81|1|যখন সূর্য আলোহীন হয়ে যাবে, 81|2|যখন নক্ষত্র মলিন হয়ে যাবে,		

سُيِّرَتۡ ﴿3﴾	ٱلۡجِبَالُ	وَإِذَا
فعل ماض مجهول	معرفة اسم مرفوع ـ نائب فاعل ،الفعل محذوف ~الجملة – جرّ بالإضافة «اذا»	ح.عطف +ظ. زمان - الشرط **এবং যখন**

(اس ي ر][ض] (سيْ،تسْيار)] সড়ান,উড়ান, II-চালান চালান হবে	(جبْل) [ض] [ن][ج ب ل]আকার দেওয়া,أَجْبَلٌ، جبَلٌ ج جِبالٌপাহাড়, পর্বতমালা। পর্বতমালা	
81|3|যখন পর্বতমালা অপসারিত হবে,		

عُطِّلَتْ﴿4﴾	ٱلْعِشَارُ	وَإِذَا
فعل ماض مجهول مبني على الفتح ، «تْ»التأنيث فاعل – مستتر «هي»، (عطَل) [س] [ع ط ل II] অসহায় হওয়া, II- যত্নহীন করা, অবহেলা করা উপক্ষিত হবে	معرفة اسم مرفوع - نائب فاعل ،الفعل محذوف ~الجملة – جرّ بالإضافة «اذا» [ن][ع ش ر]ভাগ সংগ্রহ করা(ওশর), عِشارٌতরুণ গর্ভবতী পশু(১০মাসের) পূর্ণ গর্ভবতী উষ্ট্রী	ح.عطف +ظ. زمان - الشرط এবং যখন
81|4|যখন দশ মাসের গর্ভবতী উষ্ট্রীসমূহ উপেক্ষিত হবে;		

حُشِرَتْ﴿5﴾	ٱلْوُحُوشُ	وَإِذَا
فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،«تْ» التأنيث ،فاعل – مستتر «هي» (حشْر) [ن] [ض][ح ش ر] জমা করা, الحشْرপূণরুত্থাণ দিন একত্রিত করা হবে	معرفة اسم مرفوع - نائب فاعل ،الفعل محذوف ~الجملة – جرّ بالإضافة «اذا» [و ح ش] IV মরুভূমি হওয়া, অবিচার করা, একাকী হওয়া, وَحْشٌ ج وُحوشবন্যপ্রাণী বন্যপ্রাণী দের	ح.عطف +ظ. زمان - الشرط এবং যখন
81|5|যখন বন্য পশুরা একত্রিত হয়ে যাবে,		

سُجِّرَتْ ﴿6﴾	ٱلْبِحَارُ	وَإِذَا
فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،«تْ» التأنيث ،فاعل – مستتر «هو» [ن] [س ج ر !!] জ্বালান, উত্তপ্ত করা, প্রজ্বলিত হবে, سِجارة ج سجائِرُসিগারেট	معرفة اسم مرفوع - نائب فاعل ،الفعل محذوف ~الجملة – جرّ بالإضافة «اذا» [ب ح ر] !!সমুদ্র যাত্রা করা , بَحْرٌ ج بِحارٌসমুদ্র, বড় নদী সমুদ্র	ح.عطف +ظ. زمان - الشرط এবং যখন
81|6|যখন সমুদ্রকে উত্তাল করে তোলা হবে,		

زُوِّجَتْ ﴿7﴾	ٱلنُّفُوسُ	وَإِذَا
فعل ماض مجهول مبني على الفتح،«تْ» التأنيث ،فاعل – مستتر «هو»، فاعل – مستتر _«هي» [ز و ج !!] জাড়া দেওয়া, যুক্ত করা, !!-জোড়া করা, সমান ব্যবহার করা, زَوجٌ ج زوجات জোড়ার একটি, স্বামী, স্ত্রী জুড়ে দেওয়া হবে	معرفة اسم مرفوع - نائب فاعل ،الفعل محذوف ~الجملة – جرّ بالإضافة «اذا» [ن ف س] [ن] [س] (نفْس،نِفاس)(نفاسة)মূল্যবান হওয়া, হিংসা করা [ن], সংযত হওয়া,প্রসূতি হওয়া [س], نفْسٌ(م) ج نفوس، أنْفس আত্মা, মণ, মানুষ আত্মাসমূহকে,	ح.عطف +ظ. زمان - الشرط এবং যখন
81|7|যখন আত্মাসমূহকে যুগল করা হব,		

سُئِلَتْ ﴿8﴾	ٱلْمَوْءُۥدَةُ	وَإِذَا
فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،«تْ» التأنيث ،فاعل – مستتر «هو» (سِأْل)(سُؤال) [ف][ض][س ا ل] জিজ্ঞাসা করা, سؤلة،سُؤْلٌইচ্ছা, অনুরোধ, أسئِلٌ ج سؤالজিজ্ঞাসা । জিজ্ঞাসা করা হবে	معرفة اسم مرفوع فاعل ،الفعل محذوف ~الجملة – جرّ بالإضافة «اذا» [ض][و ا د] জীবন্ত কবর দেওয়া, وئِيدٌধীর গতি জীবন্ত প্রোথিত কন্যাকে	ح.عطف +ظ. زمان - الشرط এবং যখন
81|8|যখন জীবন্ত প্রোথিত কন্যাকে জিজ্ঞেস করা হবে,		

قُتِلَتْ ﴿9﴾	ذَنۢبٍ	بِأَيِّ
فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،«تْ» التأنيث ،مفعول به - ثانٍ (قَتْل) [ن][ق ت ل] হত্যা করা, قَتْلٌহত্যা হত্যা করা হয়েছে	اسم مجرور -مضاف إليه ذَنْبٌ ج [IVذ ن ب]ভুল করা, ذُنوبঅপরাধ গুনাহের	جرّ +ح. استفهام - مضاف متلعق بالفعل «قتلت» জন্য কোন
81|9|কি অপরাধে তাকে হত্য করা হল?		

نُشِرَتْ ﴿10﴾	ٱلصُّحُفُ	وَإِذَا
فعل ماض مجهو مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هي» (نَشْر) [ن][ن ش ر] খোলা, نَشْرٌখোলা কর্ম উন্মোচিত হবে	معرفة اسم مرفوع - نائب فاعل ،الفعل محذوف – الجملة - جر بالإضافة «اذ» ثحيفة ج [II ص ح ف] ভূল পড়া, বিকৃত করা, صُحُفٌবইয়ের পাতা, কাগজ	ح.عطف +ظ. زمان - الشرط এবং যখন

81|10|যখন আমলনামা খোলা হবে,

كُشِطَتْ ﴿11﴾	ٱلسَّمَآءُ	وَإِذَا
فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،«ت» التأنيث ،فاعل – مستتر «هي» (كشْط) [ض][ك ش ط]উঠান, তুলে নেওয়া, مِكشَةٌউঠানোর চাকু। অপসারিত হবে আবরন	معرفة اسم مرفوع ب نائب فاعل ،الفعل محذوف ،الجملة – جر بالإضافة (سُموع) [ن][س م و]উঁচু হওয়া, উপরে হওয়া, سُموٌعউচ্চতা, سَمءٌ (م)سمواتٌ جআকাশ আকাশ	ح.عطف +ظ. زمان شرط এবং যখন
81|11|যখন আকাশের আবরণ অপসারিত হবে,		

سُعِّرَتْ ﴿12﴾	ٱلْجَحِيمُ	وَإِذَا
فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،«تْ» التأنيث ،فاعل – مستتر «هي» (سعْر) [ف][س ع ر] II] জ্বালান, II– জ্বালান প্রজ্বলিত করা হবে	معرفة اسم مرفوع – نائب - فاعل،الفعل محذوف – الجملة جر بالإضافة (م)جَحِمٌ [ج ح م] জাহান্নামের আগুন জাহান্নাম	ح.عطف +ظ. زمان এবং যখন
81|12|যখন জাহান্নামের অগ্নি প্রজ্বলিত করা হবে		

أُزْلِفَتْ ﴿13﴾	ٱلْجَنَّةُ	وَإِذَا
فعل ماض مجهول مبني على الفتح«تْ» التأنيث ،فاعل – مستتر «هي»	معرفة اسم مرفوع - نائب فاعل ،الفعل محذوف ،الجملة – جر بالإضافة	ح.عطف +ظ. زمان شرط এবং যখন

(زلْف) [ن][ز ل ف IV] অগ্রসর হওয়া, IV–কাছে আনা নিকটে আনা হবে	(جنّ،جُنون) [ن][ج ن ن]ঢাঁকা, গোপন করা, নামা,(م)جِنِّيةٌ جِنٌّজিন, جَنَّةٌ ج جَنَّاتٌ، جِنان বেহেস্ত, বাগান জান্নাত	
81|13|এবং যখন জান্নাত সন্নিকটবর্তী হবে,		

أَحۡضَرَتۡ ﴿14﴾	مَّآ	نَفۡسٌ	عَلِمَتۡ
فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هي» ~الجملة صلة (حُضُور) [ن][ح ض ر IV] উপস্থিত হওয়া, IV–আনা, উপস্থিত করা উপস্থিত করেছে	اسم موصول - مفعول به ،الجملة جواب الشرط যা	اسم مرفوع - فاعل [ن ف س] ব্যক্তি	فعل ماض مبني على الفتح، «تْ» التأنيث (عِلْم) [س][ع ل م] জানা, عِلْمٌজ্ঞান জানবে
81|14|তখন প্রত্যেকেই জেনে নিবে সে কি উপস্থিত করেছে।			

بِٱلۡخُنَّسِ ﴿15﴾	أُقۡسِمُ	فَلَآ
جرّ +معرفة اسم مجرور متعلق بالفعل (خنْس) [ن][خ ن س]পিছনে যাওয়া, خانِسٌ ج خُنَّسٌ পশ্চাদগামী, الخُنّس তারকাসমূহ যারা লুকায়, الخنّاس– শয়তানের উপাধী(যারা আল্লাহর নাম নিলে দুরে সড়ে যায়)। পশ্চাদপসরণকারীর	فعل مضارع مرفوع بالضمة،فاعل - مستتر«انا» (قسْم) [ض][ق ش م IV] ভাগ করা, قِسْمةভাগ, قَسَمٌ ج أَقْسَمٌশপথ শপথ করছি আমি	ح. واقعة «اذا» +ح. نفي অতঃপর না

81|15|আমি শপথ করি যেসব নক্ষত্রগুলো পশ্চাতে সরে যায়।

ٱلۡكُنَّسِ ﴿16﴾	ٱلۡجَوَارِ
معرفة صفة مجرورة ثانية (كنْس) [ن] [ك ن س]পরিষ্কার করা, كَانِسٌ ج كُنَّسٌবন্যষাঁড়, হরিণ (যারা নিজগুহায় লুকায়), الكُنَّسতারকারাজি(অস্তগামী) - الجوارِ الخُنَّسঅস্তগামী তারকাসমুহ) । অদৃশ্যমান	معرفة صفة مجرورة«الخناس» بالكسر للثقل على «ي» المقدرة ––اختصارًا الكسرة «الجوري» (جوْر) [ن][ج و ر] বিভ্রান্ত হওয়া, বিপথে যাওয়া, جوارনৈকট্য, প্রতিবেশী। চলমান
81|16|চলমান হয় ও অদৃশ্য হয়,	

عَسۡعَسَ ﴿17﴾	إِذَا	وَٱلَّيۡلِ
فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هي» [ع س ع س QI] অন্ধকার হওয়া বিদায় নেয়	ظ. زمان যখন	ح.عطف +معرفة اسم مجرور – معطوف على «الخنس» ليلٌ ج ليالي،[ل ي ل] রাত, রাতের সময়, الليلةআজ রাত এবং রাতের
81|16|চলমান হয় ও অদৃশ্য হয়, 81|17|শপথ নিশাবসান ও		

تَنَفَّسَ ﴿18﴾	إِذَا	وَٱلصُّبۡحِ
فعل ماض مبني على الفتح	ظ. زمان যখন	ح.عطف +معرفة اسم مجرور-معطوف

[س] [ك][ن ف س V] মূল্যবান হওয়া [ك], প্রসূতি হওয়া [س], V–শ্বাস নেওয়া, نَفْسٌ ج نُفُوسٌআত্মা, মণ, মানুষ শ্বাস নেয়		(صباحة) (صبْح) [ك] [ف][ص ب ح]সকালের পানীয় দেওয়া [ف], সুন্দর হওয়া [ك] ج صُبْحٌ، أصباحٌসকাল। ও প্রভাতের
81|18|প্রভাত আগমন কালের,		

إِنَّهُ	لَقَوْلُ	رَسُوْلٍ	كَرِيْمٍ ﴿19﴾
ح. مشبه بفعل +ضمير متصل – اسم«ان» নিশ্চয়ই তা	ل-تاكيد المزحلقة +اسم مرفوع - خبر «ان» (قَوْل) [ن][ق و ل] কথা বলা, বলা, قَالَةٌকথা, বক্তৃতা, قَوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُশব্দ, কথা,বক্তব্য অবশ্যই বাণী	اسم مجرور – مضاف إليه (رسَل) [س][ر س ل IV] লম্বাচুলের হওয়া, IV–পাঠান, ج رسولٌ رُسُلٌবার্তা বাহক। বার্তা বাহকের	صفة مجرورة (كرَم،كرمة) [ك][ك رم] সম্মানিত, উদার, ج كريمٌ كُرماءُ،كِرامٌসম্মানিত, আদর্শ সম্মানিত
81|19|নিশ্চয় কোরআন সম্মানিত রসূলের আনীত বাণী,			

ذِىْ	قُوَّةٍ	عِنْدَ
اسم مجرور - باليا«ي» لانها الأسماء الخمسة অধিকারী	اسم مجرور – مضاف اليه (قوّة)[س][ق و و] শক্তি শালী হওয়া, ج قُوّةٌ قُوّات،قُوًى শক্তি, ক্ষমতা শক্তির	ظ. مفو منصوب متعلق بحال «قوة»কাছে

81|20|যিনি শক্তিশালী, আরশের মালিকের নিকট মর্যাদাশালী,

﴿20﴾ مَكِيْنٍ	ٱلْعَرْشِ	ذِى
صفة مجرورة (مكانة) [ك][م ك ن] প্রভাবশালী হওয়া, শক্তিশালী হওয়া, مكينٌ ج مكناءُশক্ত, সম্মানিত মর্যাদাশালী	معرفة اسم مجرور بالياء «ي» لأنها الأسماء الخمسة - مضاف إليه [ن] [ض] [ع ر ش]গাছ উঠানোর মাচা তৈরি করা, عَرْشٌ ج عُروشসিংহাসন, আসন। আরশের	اسم مجرور মালিকের

81|20|যিনি শক্তিশালী, আরশের মালিকের নিকট মর্যাদাশালী,

﴿21﴾ أَمِيْنٍ	ثَمَّ	مُّطَاعٍ
صفة مجرورة (أَمْن) (أَمانة) [س] [ك][ا م ن] বিশ্বাসী হওয়া [ك] ، নিরাপদ হওয়া [س], أَمْنٌশান্তি, أَمينٌ ج أُمناءُবিশ্বস্ত । বিশ্বস্ত	ظ. مكان منصوب - متلعق «ذر العرش» সেখানে	صفة مجرورة (طَوْع) [ن][ط و ع]V মান্য করা, طَوْعٌবাধ্যতা, অনুগত, স্বেচ্ছা আনুগত্য, طوعًاস্বচ্ছায়। , মান্য করা হয়

81|21|সবার মান্যবর, সেখানকার বিশ্বাসভাজন।তোমরা

بِمَجْنُونٍ ﴿22﴾	صَاحِبُكُم	وَمَا
جرّ – زائد للتوكيد +اسم مجرور – خبر «ما» (جنّ،جُنون) [ن][ج ن ن]গোপন করা, নামা, جُنَّ (مجهوا)পাগল হওয়া, جِنٌّজিন্ন পাগল	اسم مرفوع-اسم «ما» +ضمير متصل المخاطَبين– جر بالإضافة (صُحبة) [س][ص ح ب]সাথী হওয়া, صاحِبٌ ج أصحابٌসাথী তোমাদের সাথী	ح.عطف +ح. نفي«ليس» এবং না
81|22|এবং তোমাদের সাথী পাগল নন		

ٱلْمُبِينِ ﴿23﴾	بِٱلْأُفُقِ	رَءَاهُ	وَلَقَدْ
معرفة صفة مجرورة (بيان) [ض] [ب ي ن] প্রকাশিত হওয়া, IV–ব্যাখ্যা করা, পৃথক করা,مُبينসুস্পষ্ট بينَ، ما بين، فيما بينমাঝে, দুয়ের মাঝে সুস্পষ্ট	جرّ +معرفة اسم مجرور - متعلق بالفعل /حال محذوف [ا ف ق]، أُفُقٌ ج آفَقٌদিগন্ত,اَفَقٌ দূরের ভূমি দিগন্তে	فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على «ا» للتعذر ،فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به (رأْي) [ف][ر ا ي] দেখা, رَأْي ج آراءٌমতামত, দর্শন। দেখেছে তাকে	ح.عطف +ل- تاكيد +ح. تحقيق এবং নিশ্চয়ই
81|23|তিনি সেই ফেরেশতাকে প্রকাশ্য দিগন্তে দেখেছেন।			

بِضَنِينٍ ﴿24﴾	ٱلْغَيْبِ	عَلَى	هُوَ	وَمَا
جر(زائد) + صفة مجرورة – لفظًا منصوب ،خبر «ما» (ضنٌّ) [ض][ص ن ن] কৃপণ হওয়া, ضنينٌকিপটে, গরীব, অসম্পূর্ণ	معرفة اسم مجرور – متعلق بخبر «ضننين»	جرّ উপর	ضمير منفصل - اسم «ما» তা	ح.عطف +ح. نفي(ليس) এবং না

কৃপণ	(غَيْب،غيبة) [ض][غ ي ب] অনুপস্থিত হওয়া, غَيْبٌঅনুপস্থিত গায়েবের			

81|24|তিনি অদৃশ্য বিষয় বলতে কৃপনতা করেন না।

رَّجِيۡمٍ ﴿25﴾	شَيۡطٰنٍ	بِقَوۡلِ	هُوَ	وَمَا
صفة مجرورة (رجْم) [ن][ر ج م] পাথর মারা, অপমান করা, رجيمঅভিশপ্ত, পাথর প্রহৃত অভিশপ্ত	اسم علم مجرور -مضافٌ إِلَيهِ [ش ط ن] IIশয়তানের মত করা, شيطانٌ ج شياطينُশয়তান শয়তানের	جرّ جر(زائد) + +اسم مجرور- لفظًا منصوب ،خبر «ما» (قَوْل) [ن][ق و ل] কথা বলা, বলা, قَالَةٌকথা, বক্তৃতা, قَوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُশব্দ, কথা,বক্তব্য উক্তি	ضمير منفصل – اسم «ما» তা	ح.عطف +ح. نفي(ليس) এবং না

81|25|এটা বিতাড়িত শয়তানের উক্তি নয়।

تَذۡهَبُوۡنَ ﴿26﴾	فَاَيۡنَ
فعل مضارع مرفوع بثبوت +ضمير متصل – فاعل (ذهاب،مذهب) [ف][ذ ه ب] যাওয়া, বহন করা, সড়ান, ذَهَبٌস্বর্ণ, ذهابٌত্যাগ, যাওয়া - কর্ম চলেছ তোমরা	ح. استئنافية +ح. استفهام - مفعول فيه ظرف مكان متعلق بالفعل «تذهبون» অতঃপর কোথায়

81|26|অতএব, তোমরা কোথায় যাচ্ছ?

﴾27﴿ لِّلْعٰلَمِيْنَ	ذِكْرٌ	إِلَّا	هُوَ	إِنْ
جرّ +معرفة اسم مجرور بالياء لأن جمع مذكر سالم ،«ن» عوض عن التنوين – متعلق بخبر محذوف / صفة محذوفة (عِلْم) [س][ع ل م] জানা, ج عُلومٌ عِلمٌজ্ঞান, عالِمٌ ج عُلماءُ জ্ঞাণী, عالَمٌ ج عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া বিশ্বজাহানের জন্য	اسم مرفوع - خبر «ان» [ذ ك ر] [ن] (ذِكْر،تذكار)স্মরণ করা, চিন্তা করা, কথা বলা, উল্লেখ করা, ذِكْرٌ ج أذكارস্মরণ, সংঘবদ্ধ স্মরণ (ج) উপদেশ	ح. حصر ছাড়া	ضمير منفصل - اسم «ان» তা	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
81|27|এটা তো কেবল বিশ্বাবাসীদের জন্যে উপদেশ,				

﴾28﴿ يَسْتَقِيْمَ	أَنْ	مِنْكُمْ	شَآءَ	لِمَنْ
فعل مضارع منصوب بالفتح،فاعل – مستتر «هو» - مفعول به X(قَومة،قِيام) [ن][ق و م] , দাড়ান, IV-সোজা করা, দাঁড় করানো ,X-উঠা, দাড়া قَومٌ ج أقوامٌজনতা, জাতি, গোত্র, قومةٌদাঁড়ান, مَقامٌ ج مَقاماتٌস্থান,অবস্থান, تقْويمٌ ج تقاويمُপুনর্গঠন, গঠন, দাঁড়ানো, সংশোধন, পন্জিকা, قَيِّمٌসঠিক, মূল্যবান, তত্বাবধায়ক, القَيِّمةٌসঠিক বিশ্বাস, قِيامَةٌপুণরউত্থান, বিপ্লব, অভিভাবকত্ব। অবস্থান সোজা চলতে	ح. مصدرية যে	جرّ +ضمير - متعلق بالفعل তোমাদের মধ্যে	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» [ف] [ش ي ا] (مَشِيئة)চাওয়া, ইচ্ছা করা, شيءٌ ج أشياءٌ কিছু, জিনিষ যে চায়	جرّ +اسم موصول - بدل «للعالمين» তার জন্য
81|28|তার জন্যে, যে তোমাদের মধ্যে সোজা চলতে চায়				

وَمَا	تَشَآءُوْنَ	إِلَّآ	أَنْ	يَشَآءَ
ح.عطف +ح. نفيএবং না	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل ،الجملة - حال (مَشِيئَة) [ف] [ش ي ا] চাওয়া, ইচ্ছা করা, شيءٌ ج أشياءٌকিছু, জিনিষ চাও তোমরা	ح. استثناء ছাড়া	ح. مصدرية যে	فعل مضارع منصوب بالفتح (مَشِيئَة) [ف] [ش ي ا] চাওয়া, ইচ্ছা করা, شيءٌ ج أشياءٌকিছু, জিনিষ ইচ্ছা করেন

81|29|তোমরা আল্লাহ রাব্বুল আলামীনের অভিপ্রায়ের

ٱللَّهُ	رَبُّ	ٱلْعَٰلَمِيْنَ ﴿29﴾
لفظ الجلالة مرفوع – فاعل [اله] ॥ খোদা (উপাস্য) বানান, الهٌ،اِلاهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, الله(ال+اله)আল্লাহ আল্লাহ	اسم مرفوع - بدل «الله» مضاف (ربّ) [ن][ر ب ب]প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌরব, মালিক রব	معرفة اسم مجرور بالياء لأن جمع مذكر سالم ،«ن» عوض عن التنوين – مضاف إليه (عِلْم) [س][ع ل م]] জানা, علمٌ ج عُلومٌজ্ঞান, عالِمٌ ج عُلماءُজ্ঞানী, عالَمٌ ج عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া বিশ্বজাহানের

বাইরে অন্য কিছুই ইচ্ছা করতে পার না।

॥ সূরা আত্-তাকবীর সমাপ্ত ॥

سُوْرَةُ الإنفطار مَكِّيَّة

৮২। সূরা ইনফিত্বার : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:১৯

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

ٱنفَطَرَتۡ ﴿1﴾	ٱلسَّمَآءُ	إِذَا
فعل ماض مبني على الفتح، «تْ» التأنيث ، فاعل – مستتر «هي» (فطْر) [ف ط ر][ن] VII] ফেটে যাওয়া, VII– **ফেটে যাবে**	معرفة اسم مرفوع – نائب فاعل ،الفعل محذوف يفسِره «انفطارت» ~الجملة جر بالإضافة (سُموع) [ن][س م و] উঁচু হওয়া, উপরে হওয়া, II– سمّىنাম দেওয়া, ঢাকা, سُموٌعউচ্চতা, ج سَمنٌ (م)سمواتٌআকাশ, ج أسماءٌ إسمٌনাম। **আকাশ**	ظ. زمان - الشرط **যখন**
82|1|যখন আকাশ বিদীর্ণ হবে,		

ٱنتَثَرَتۡ ﴿2﴾	ٱلۡكَوَاكِبُ	وَإِذَا
فعل ماض مبني على الفتح، «تْ» التأنيث ، فاعل – مستتر «هي» ن ث ر][ن] [ض] (نثْر،نِثار) VIII]]বিক্ষিপ্ত হওয়া, VIII - বিক্ষিপ্ত ছড়িয়ে পড়া বিক্ষিপ্ত হবে	معرفة اسم مرفوع – نائب رئيس بالفعل محذوف يفسِره «انتثرت» ~الجملة – خر بالإضافة [ك و ك ب]، كوكبٌ ج كواكِبُ তারকা তারকা সমূহ	ح.عطف +ظ. زمان الشرط এবং যখন
82|2|যখন নক্ষত্রসমূহ ঝরে পড়বে,		

فُجِّرَتۡ ﴿3﴾	ٱلۡبِحَارُ	وَإِذَا
فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،«تْ» التأنيث ، نائب فاعل – مستتر «خي» (فجْر،فُجور) [ف ج ر][ن] চৌচির হওয়া, ভেঙ্গে যাওয়া, পাপাচার করা, فَجْرٌসকাল, সকালের নামায, فُجورٌপাপাচার, অনৈতিকতা বিদীর্ণ করা হবে	معرفة اسم مرفوع – نائب فاعل بالفعل محذوف يفسِره «فجرت» ~الجملة – خر بالإضافة [ب ح ر] II সমূদ্র যাত্রা করা, بحَرٌ ج بِحارٌসমুদ্র সাগর	ح.عطف +ظ. زمان الشرط এবং যখন
82|3|যখন সমুদ্রকে উত্তাল করে তোলা হবে,		

وَإِذَا	ٱلْقُبُورُ	بُعْثِرَتْ ﴿4﴾
ح.عطف +ظ. زمان الشرط এবং যখন	معرفة اسم مرفوع ـ نائب فاعل بالفعل محذوف يفسِره «بعثر» ~الجملة – خر بالإضاف (قبْر،مقبر) [ض] [ن] [ق ب ر] কবর দেওয়া, قبْرٌ ج قُبور কবর । কবরগুলি	فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،«تْ» التأنيث ،نائب فاعل – ضمير مستتر «هي» (بعثرة)[ب ع ث ر QI] বিক্ষিপ্ত হওয়া, , بعثرةٌবিক্ষিপ্ত, উন্মুক্ত । উন্মোচিত করা হব
82|4|এবং যখন কবরসমূহ উন্মোচিত হবে,		

عَلِمَتْ	نَفْسٌ	مَّا
فعل ماض مبني على الفتح، «تْ» التأنيث (علْم) [س][ع ل م] জানা, علمٌ ج عُلومٌ জ্ঞান, عالِمٌ ج عُلماءُজ্ঞানী, عالَمٌ ج عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া [س][ع ل م] (علْم)জানা, علمٌ ج عُلومٌ জ্ঞান, عالِمٌ ج عُلماءُ জ্ঞানী, عالَمٌ ج عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া জানবে	اسم مرفوع – فاعل [س] [ك][ن ف س V] মূল্যবান হওয়া [ك], প্রসূতি হওয়া [س], V– শ্বাস নেওয়া, نفْسٌ ج نُفوسٌআত্মা, মণ, মানুষ প্রত্যেক ব্যক্তি	اسم موصول - مفعول به যা
82|5|তখন প্রত্যেকে জেনে নিবে সে কি অগ্রে প্রেরণ করেছে		

قَدَّمَتْ	وَأَخَّرَتْ ﴿5﴾
فعل ماض مبني على الفتح، «تْ» التأنيث،فاعل – مستتر «هي» [س][ق د م] II	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح، «تْ» التأنيث ،فاعل – مستتر «هي» [ا خ ر] IIদেরী করা, পরিত্যাগ করা, মুলতবী করা, آخِرٌ ج آخِرون ،أواخِرُচুড়ান্ত, শেষ

ছেড়েছে সে	(قُدوم) পৌঁছা, আসা, II–যেতে দেওয়া, قَدَمٌ ج أقدامٌপদক্ষেপ, মাপের একক ফুট আগে পাঠিয়েছে সে
এবং কি পশ্চাতে ছেড়ে এসেছে।	

مَا	ٱلۡإِنسَانُ	يَٰٓأَيُّهَا
ح. استفهام - مبتدأ কিসে	معرفة اسم مرفوع – بدل من«ايُّ» [ا ن س] মানুষ	ح. نداء +اسم مرفوع في محل نصب لأنه مُنادى، «ها» زائدة - للتنبة ওহে
82|6|হে মানুষ, কিসে তোমাকে তোমার মহামহিম		

ٱلۡكَرِيمِ ﴿6﴾	بِرَبِّكَ	غَرَّكَ
صفة مجرورة [[ك رم][ك] (كَرَم،كرمة)সম্মানিত, উদার, كريمٌ ج كُرماءُ،كِرامٌসম্মানিত, আদর্শ মহান	اسم مجرور - متعلق بالفعل +ضمير متصل المخاطَب – مفعول به (ربّ) [ن][ر ب ب]প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌরব, মালিক তোমার রবের সাথে	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل مستتر «هو» +ضمير متصل المخاطَب – مفعول (غُرور) [ن][غ ر ر II] বিভ্রান্ত করা, ধোঁকা দেওয়া ধোঁকা দিয়েছে তোমাকে
পালনকর্তা সম্পর্কে বিভ্রান্ত করল?		

فَعَدَلَكَ ﴿7﴾	فَسَوَّىٰكَ	خَلَقَكَ	ٱلَّذِىْ
ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ع د ل][ض] (عدْل)যথাযত করা । এবং ভারসাম্য করেছেন তোমাকে	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على «ا» للتعذر +ضمير متصل – مفعول به (سواء)[س][س و ي]সমান করা, II-নিয়মিত করা, মসৃন করা, বিন্যস্ত করা এবং সম্পূর্ণতা দিয়েছেন তোমাকে	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل ـ مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به (خاْق) [ن][خ ل ق]গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خلْقٌসৃষ্টি, خُلُقٌ ج أخلقٌপ্রকৃতি, স্বভাব সৃষ্টি করেছেন তোমাকে	اسم موصول ـ صفة مجرورة «ربّك» যিনি
82|7|যিনি তোমাকে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তোমাকে সুবিন্যস্ত করেছেন এবং সুষম করেছেন।			

صُورَةٍ	أَيِّ	فِىٓ
اسم مجرور مضاف إليه – [ص و ر]II আকৃতি দেওয়া, صُورة ج صُوَرٌআকৃতি আকৃতিতে	اسم مجرور ـ متعلقية «ربك» কিসের	مجرّমধ্যে
82|8|যিনি তোমাকে তাঁর		

رَكَّبَكَ ﴿8﴾	شَآءَ	مَّا
فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به (رُكوب) [س][ر ك ب II] আরোহন করা, স্থাপন করা,II- আরোহন করানো, স্থাপন করা, তৈরী করা গঠন করেছেন তোমাকে	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» (مَشِيئة) [ف] [ش ي ا]চাওয়া, ইচ্ছা করা, شيءٌ ج أشياءٌকিছু, জিনি	اسم موصول ـ زائدة যা

	ইচ্ছা করেন	
ইচ্ছামত আকৃতিতে গঠন করেছেন।		

بِٱلدِّينِ ﴿9﴾	تُكَذِّبُونَ	بَلْ	كَلَّا
جرّ +معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل [ض][د ي ن] **স্বীকার করা,** دينٌ ج أديان**ধর্ম, মত, বিশ্বাস,** يوم الدين**শেষ বিচার দিবস** **শেষ বিচারকে**	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (كِذب،كذبَة) [ض][ك ذ ب][II] **মিথ্যা বলা,** كِذْبٌ،كَذِبٌ**মিথ্যা** **মিথ্যা মনে করছ তোমরা**	ح. ردع **কক্ষণনা**	
82|9|কখনও বিভ্রান্ত হয়ো না; বরং তোমরা দান-প্রতিদানকে মিথ্যা মনে কর।			

كَٰتِبِينَ ﴿11﴾	كِرَامًا	لَحَٰفِظِينَ ﴿10﴾	عَلَيْكُمْ	وَإِنَّ
صفة منصوبة [ك ت ب][ن] (كتْب،كِتبة)**লিখা,** كِتابٌ ج كُتُوبٌ**বই, চিঠ** **লেখকবৃন্দ**	صفة منصوبة [ك ر م] [ك] (كرَمة،كرامة) **আদর্শ হওয়া, II- আদর্শ বলা, সম্মান করা,** مُكَرَّمٌ**সম্মানিত।** **সম্মানিত**	ل-تاكيد +اسم منصوب بالياء لأنه جمع مذكر سلم ،«ن» عوض عن التنوين – اسم «ان» (حِفْظ) [س] [ح ف ظ] **সংরক্ষণ করা,** حافِظٌ ج حافِظون**সংরক্ষণকারী** **অবশ্যই তত্বাবধায়করা**	جرّ +ضمير متصل – متعلق بخبر محذوف **তোমাদের উপর**	ح.عطف +ح. مشبه بفعل **এবং নিশ্চয়ই**
82|10|অবশ্যই তোমাদের উপর তত্ত্বাবধায়ক নিযুক্ত আছে। 82|11|সম্মানিত আমল লেখকবৃন্দ।				

﴾12﴿ تَفۡعَلُوۡنَ	مَا	يَعۡلَمُوۡنَ
فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (فعْل،فِعْل) [ف] [ف ع ل] করা,সম্পাদন করা, কাজ করা, فِعْلٌ ج أفْعالٌ،فِعالٌকাজ, কর্ম, প্রভাব। সম্পাদন করে তারা	اسم موصول - مفعول به যা	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (عِلْم) [س][ع ل م]জানা, عِلمٌ ج عُلومٌজ্ঞান, عالِمٌ ج عُلماءُজ্ঞাণী, عالَمٌ ج عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া (عِلْم) [س][ع ل م] জানা, عِلمٌ ج عُلومٌজ্ঞান, عالِمٌ ج عُلماءُজ্ঞাণী, عالَمٌ ج عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া জানে তারা
82|12|তারা জানে যা তোমরা কর।		

﴾13﴿ نَعِيۡمٍ	لَفِىۡ	ٱلۡأَبۡرَارَ	إِنَّ
اسم مجرور – متعلق بخبر محذوف (نِعْمة) [س] [ف] [ن] [ن ع م] আরাম আয়েশে বাস করা, نَعَمٌ ج أنْعامٌপশু, গৃহপালিত পশু। আনন্দে	ل-تاكيد +جرّ অবশ্যই মধ্যে	معرفة اسم منصوب - اسم «ان» (بِرّ) (بِرّ) [ض] [س][ب ر ر] কর্তব্যপরায়ণ হওয়া, নিষ্ঠাপূর্ণ হওয়া উপকার করা, بِرٌّসত্যপন্থী, আল্লাহ ভীরু, بَرّ ج أبرارٌকর্তব্যপরায়ণ, ধার্মিক সৎ ব্যক্তিরা	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
82|13|সৎকর্মশীলগণ থাকবে জান্নাতে			

﴾14﴿ جَحِيۡمٍ	لَفِىۡ	ٱلۡفُجَّارَ	وَإِنَّ
اسم مجرور - متعلق بخبر محذوف ، [ج ح م]	ل-تاكيد +جرّ অবশ্যই মধ্যে	معرفة اسم منصوب – اسم «ان» (فجْر،فُجور) [ن][ف ج ر] খনন করা, অনৈতিক কাজ করা, পাপ করা, II-উন্মুক্ত করা, বের হতে দেওয়া, فجْرٌসকাল,	ح.عطف +ح. مشبه بفعل

(م) جحِمٌ আগুন, জাহান্নামের আগুন দোযখের		সকালের নামায, فُجورٌপাপাচার, অনৈতিকতা, ج فاجِرةٌ فُجَّارٌপাপাচারী, ব্যভিচারী পাপাচারীরা	এবং নিশ্চয়ই
82|14|এবং দুষ্কর্মীরা থাকবে জাহান্নামে;			

ٱلدِّيۡنِ ﴿15﴾	يَوۡمَ	يَصۡلَوۡنَهَا
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه [ض][د ي ن]] স্বীকার করা, ج دينٌ أديانধর্ম, মত, বিশ্বাস, يوم الدينশেষ বিচার দিব বিচার	ظ. زمان منصوب - مضاف [ي و م]]III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أيَّامٌদিন, ঘন্টা দিনে	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل +ضمير متصل – مفعول به ~ الجملة - حال (صلي) [ض] [ص ل ي] ভাজা, আগুনে উন্মুক্ত হওয়া । প্রবেশ করবে তারা সেখানে
82|15|তারা বিচার দিবসে তথায় প্রবেশ করবে।		

بِغَآئِبِيۡنَ ﴿16﴾	عَنۡهَا	هُمۡ	وَمَا
جرّ +اسم مجرور - لفظًا منصوب – خبر «ما» (غيْب) [ض][غ ي ب]অনুপস্থিত থাকা, ج غائِبٌ غائِبونউপস্থিত নয় যে, অনুপস্থিত অনুপস্থিত	جرّ+ضمير متصل -متعلق بخبر«بغئبين» তা থেকে	ضمير منفصل- اسم «ما» তারা	ح. عطف +ح. نفي(ليس) এবং না
82|16|তারা সেখান থেকে পৃথক হবে না।			

ٱلدِّيْنِ ﴿17﴾	يَوْمُ	مَا	أَدْرٰكَ	وَمَآ
معرفة اسم مجرور - مضاف الجملة مفعول به «ادراك»، [ض][د ي ن]]স্বীকার করা, دِينٌ ج أديان ধর্ম, মত, বিশ্বাস, يوم الدين শেষ বিচার দিব বিচারের	اسم مرفوع - خبر [ي و م]]III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أيَّامٌ দিন, ঘন্টা দিন	ح. استفهام - مبتدأ কি	فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على «ا» للتعذر،فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به - الجملة خبر~ (دراية) [ض] [د ر ي IV] অবগত হওয়া, জানা, IV–অবগত করান , دِرَايَةٌ জ্ঞান, অবগতি জানাবে তোমাকে	ح.عطف +ح. استفهام – مبتدأ এবং কিসে
82|17|আপনি জানেন, বিচার দিবস কি?				

أَدْرٰكَ	مَآ	ثُمَّ
فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على «ا» للتعذر،فاعل - مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به ~-الجملة خبر (دراية) [ض] [د ر ي IV] অবগত হওয়া, জানা, IV–অবগত করান , دِرَايَةٌ জ্ঞান, অবগতি জানাবে তোমাকে	ح. استفهام - مبتدأ কিসে	ح.عطف অতঃপর
82|18|অতঃপর আপনি জানেন,		

ٱلدِّيْنِ ﴿18﴾	يَوْمُ	مَا
معرفة اسم مجرور - مضاف ،الجملة مفعول به «ادراك» [ض][د ي ن]স্বীকার করা, دِينٌ ج أديان ধর্ম, মত, বিশ্বাস, يوم الدين শেষ বিচার দিব	اسم مرفوع - خبر«ما» [ي و م]III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أيَّامٌ দিন, ঘন্টা	ح. استفهام - مبتدأ কি

বিচারের	দিন	
বিচার দিবস কি?		

تَمۡلِكُ	لَا	يَوۡمَ
فعل مضارع مرفوع بالضمة (مُلْك،مُلْك) [ض][م ل ك]অধিগ্রহণ করা, মালিক হওয়া , مَلَّاكٌ ج ملاكون অধিকারী, মালিক, مُلْكٌ ج مُلُوكٌরাজা, বাদশাহ, مَلَكٌ (مَلَأك)،ملائِكةٌ ফেরেশতাগণ সক্ষম হবে	ح. نفي না	اسم منصوب – مفعول به لفعل محذوف «الدين» [ي و م] III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أَيَّامٌদিন, ঘন্টা সেদিন
82|19|যেদিন কেউ কারও কোন উপকার করতে পারবে না		

شَيۡـًٔا ؕ	لِّنَفۡسٍ	نَفۡسٌ
اسم منصوب - مفعول به [ش ي ا] (مَشِيئة) [ف]চাওয়া, ইচ্ছা করা, شيءٌ ج أشياءٌকিছু, জিনিষ কিছু	جرّ +اسم مجرور – متعلق بالفعل [س] [ك][ن ف س V] মূল্যবান হওয়া [ك], প্রসূতি হওয়া [س], V- শ্বাস নেওয়া, نفْسٌ ج نُفوسٌআত্মা, মণ, মানুষ প্রত্যেক ব্যক্তি কারও জন্য	اسم مرفوع - فاعل [س] [ك][ن ف س]V] মূল্যবান হওয়া [ك], প্রসূতি হওয়া [س], V- শ্বাস নেওয়া, نفْسٌ ج نُفوسٌআত্মা, মণ, মানুষ প্রত্যেক ব্যক্তি কোন ব্যক্তি
82|19|যেদিন কেউ কারও কোন উপকার করতে পারবে না		

﴾19﴿ لِلّٰهِ	يَوْمَئِذٍ	وَالْأَمْرُ
جرّ +لفظ الجلالة مجرور - متعلق بخبر «الامر» [الہ]]ا॥ খোদা (উপাস্য) বানান, الهٌ،اِلاهٌ ج آلِهةٌ খোদা, উপাস্য, (ال+اله)الله আল্লাহ আল্লাহর জন্য	ظ. زمان منصوب «يوم» + «اِذٍ» بالكسر لإلتقاء السكينين ،سكونه و سكون التنوين – مضاف إليه ~ و هو مضاف،الجملة (لا تملك... شيئًا) محذوفة تقديره – مضاف إليه [المعوض بالتنوين«اذٍ» ~ " تنوين العِوَضِ"] সেদিন	ح.عطف +معرفة اسم – مبتدأ (أمْر) [ن][ا م ر] আদেশ করা, أمْرٌ ج أوامِرٌ আদেশ, أمْرٌ ج أُمورٌ কাজ। এবং কতৃত্ব

এবং সেদিন সব কতৃত্ত্ব হবে আল্লাহর।

।। সূরা আল্-ইনফিতার সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ

৮৩। সূরা মুতাফ্ ফিফীন : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:৩৬

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

﴿1﴾ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ	وَيْلٌ
جرّ +معرفة اسم مجرور ~متعلق بالخبر محذوف [ط ف ف	II] কৃপণ হওয়া, ওজনে কম দেওয়া, مُطَفِّفযে ওজনে কম দেয়। ঠকবাজদের	اسم مرفوع - مبتدأ ধ্বংস

83|1|যারা মাপে কম করে, তাদের জন্যে দুর্ভোগ,

اكْتَالُوْا	إِذَا	اَلَّذِيْنَ
فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة ~الجملة – جر بالإضافة (كيْل،مكال) [ض][ك ي لVIII] মাপ করা, মাপের দ্বারা তুলনা করা, كيْلٌ ج أكيالٌশুকনা বস্তুর মাপ, মেপে নেয়	ظ. زمان الشرط غير جازمة যখন	اسم موصول ~ صفة «للمطففين» যারা

83|2|যারা লোকের কাছ থেকে যখন মেপে নেয়,

﴿2﴾ يَسْتَوْفُوْنَ	اَلنَّاسِ	عَلَى
فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل ~الجملة جواب الشرط (وفاء)[ض][و ف ي]সম্পূর্ণ করা, তৃপ্ত করা পুরা নেয় তারা	معرفة اسم مجرور - متعلق بالفعل (نوْس) [ن][ن و س]দোল থাওয়া, সামনে পিছন যাওয়া, نـاسٌমানষ, জনগণ লোকদের	جرّ উপর

, তখন পূর্ণ মাত্রায় নেয়

يُخْسِرُوْنَ ﴿3﴾	وَّزَنُوْهُمْ	أَو	كَالُوْهُمْ	وَإِذَا
فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (خُسور،خسارةٌ) [س] [خ س ر]ক্ষতি হওয়া, ক্ষতি স্বীকার করা, ক্ষতি করা , خسارةَ ج خسائِرُক্ষতি। কম দেয় তারা	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل «و» فاعل +ضمير متصل الغائبين – مفعول به [و ز ن] [ض] (وزْن،زِنةٌ) ওজন করা, সমান করা, زِنةٌওজন। ওজন করে দেয় তাদের	ح.عطف অথবা	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل «و» فاعل +ضمير متصل الغائبين – مفعول به [ك ي ل] মেপে দেয় তারা তাদের	ح.عطف +ظ. زمان الشرط غير جازمة এবং যখন
83|3|এবং যখন লোকদেরকে মেপে দেয় কিংবা ওজন করে দেয়, তখন কম করে দেয়।				

مَّبْعُوْثُوْنَ ﴿4﴾	أَنَّهُم	أُولَٰٓئِكَ	يَظُنُّ	أَلَا
اسم مرفوع بالواو «و» لأنه جمع مذكر سلم، «ن» عوض عن التنوين المفرد - خبر «ان» [ب ع ث] [ف] (بعْث) পাঠান, উদ্বিগ্ন হওয়া, পুণঃরুত্থান করা, উদ্বিগ্ন করা পুনরুত্থিত হবে	ح. مشبه بفعل +ضمير متصل – اسم «ان» যে তারা	اسم اشارة، «ك» حرف خِطاب তারা	فعل مضارع مرفوع بالضمة [ظ ن ن] [ن] (ظنّ) চিন্তা করা, অনুমান করা চিন্তা করে	ح. استفهام +ح. نفي কি না
83|4|তারা কি চিন্তা করে না যে, তারা পুনরুত্থিত হবে।				

عَظِيمٍ ﴿5﴾	لِيَوْمٍ
صفة مجرورة (عظامة) [ك] [عظم] বড় হওয়া, عظمٌ ج أَظُمٌ হাড়, عظيمٌ ج عُظماءُ বড়, শক্তিশালী এক মহা	جرّ +اسم مجرور - بخبر متعلق «مبعوثون» [ي و م] III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أَيَّامٌ দিন, ঘন্টা দিনের জন্য
83|5|সেই মহাদিবসে,	

ٱلنَّاسُ	يَقُومُ	يَوْمَ
معرفة اسم مرفوع – فاعل (نَوْس) [ن][ن و س] দোল খাওয়া, সামনে পিছন যাওয়া, نَاسٌ মানুষ , জনগণ। মানুষ	فعل مضارع بالضمة (قَومة،قِيام) [ن][ق و م]IV, দাড়ান, IV–সোজা করা, দাঁড় করানো ,X–উঠা, দাড়া قَومٌ ج أقوامٌ জনতা, জাতি, গোত্র, قومةٌ দাঁড়ান, مَقامٌ ج مَقاماتٌ স্থান,অবস্থান, تقْوِيمٌ ج تقاويمُ পুনর্গঠন, গঠন, দাঁড়ানো, সংশোধন, পন্জিকা, قَيِّمٌ সঠিক, মূল্যবান, তত্বাবধায়ক, القَيِّمةٌ সঠিক বিশ্বাস, قِيامَةٌ পুণরউত্থান, বিপ্লব, অভিভাবকত্ব। অবস্থান। দাঁড়াবে	ظ. زمان منصوب (مبعوثون) [ي و م]III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أَيَّامٌ দিন, ঘন্টা যেদিন
83|6|যেদিন মানুষ দাঁড়াবে		

ٱلۡعَٰلَمِينَ ﴿6﴾	لِرَبِّ
معرفة اسم مجرور بالياء «ي» لأنه جمع مذكر سلم ،«ن» عوض عن التنوين المفرد (عِلْم) [س][ع ل م]জানা, ।।- শিখানো, শিক্ষিত করা, ج عِلمٌ عُلومٌজ্ঞান, عالِمٌ ج عُلماءُজ্ঞাণী, عالَمٌ ج عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া (عِلْم) [س][ع ل م] জানা, ج عُلومٌ عِلمٌজ্ঞান, عالِمٌ ج عُلماءُজ্ঞাণী, عالَمٌ ج عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া। বিশ্বজাহানের	جرّ +اسم مجرور – متعلق بالفعل (ربّ) [ن][ر ب ب] প্রভু হওয়া, رَبٌّ ج أربابٌরব, মালিক রবের
বিশ্ব পালনকর্তার সামনে।	

كِتَٰبَ	إِنَّ	كَلَّآ
اسم منصوب ـ اسم «ان» (كتْب،كِتبة) [ن][ك ت ب]লিখা, كِتابٌ ج كُتُوبٌবই, চিঠি, আমলনামা আমলনামা	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	ح. ردع ~ لا عمل له কক্ষণনা
83|7|কক্ষণনা , নিশ্চয় পাপাচারীদের আমলনামা সিজ্জীনে আছে।		

سِجِّينٖ ﴿7﴾	لَفِي	ٱلۡفُجَّارِ
اسم مجرور – متعلق بخبر «ان» (سجْن) [ن][س ج ن] কয়েদ করা, سِجْنٌ ج سُجونٌকয়েদ, سَجْنٌকয়েদখানা।	ل-تاكيد(المزحلقة) +جرّ অবশ্যই মধ্যে	معرفة اسم مجرور ـ مضاف إليه بالإضافة (فجْر،فُجور) [ن][ف ج ر]চৌচির হওয়া, ভেঙ্গে যাওয়া, পাপাচার

কয়েদখানার		করা, فَجْرٌসকাল, সকালের নামায, فُجُورٌপাপাচার, অনৈতিকতা পাপীদের
83|7|এটা কিছুতেই উচিত নয়, নিশ্চয় পাপাচারীদের আমলনামা সিজ্জীনে আছে।		

﴾8﴿ سِجِّيْنٌ	مَا	أَدْرٰكَ	وَمَآ
اسم مرفوع - خبر (سجْن) [ن][س ج ن]কয়েদ করা, سِجْنٌ ج سَجْنٌকয়েদ, سُجونٌকয়েদখানা। কয়েদখানার	ح. استفهام - مبتدأ কি	فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على «ا» للتعذر، فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل – مفعول به - الجملة – خبر [د ر ي IV] II–অব্যাহত রাখা, IV–পৌঁছা, বুঝান, অর্জন করা, دَرْكٌ ج أدراكٌঅর্জন, সম্পাদন - (ادراك) তলদেশ, তলা বুঝাবে তোমাকে	ح.عطف +ح. استفهام - مبتدأ এবং কিসে
83|8|আপনি জানেন, সিজ্জীন কি?			

﴾9﴿ مَّرْقُوْمٌ	كِتٰبٌ
اسم مرفوع – صفة مرفوعة (رقْم) [ن][ر ق م] লিখা, চিহ্নিত করা, رقِيمٌ ج رقائمُলিখা, খবর,চিঠি, مَرْقومٌ ج مراقيمُদাগনো(কম্বল) । চিহ্নিত	اسم مرفوع - بدل«سجن» (كتْب،كِتبة) [ن][ك ت ب]লিখা,كِتابٌ ج كُتُوبٌ বই, চিঠি খাতা
83|9|এটা লিপিবদ্ধ খাতা।	

لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿10﴾	يَوۡمَئِذٍ	وَيۡلٌ
جرّ +معرفة اسم مجرور بالياء «ي» لأنه جمع مذكر سلم ،«ن» عوض عن التنوين المفرد - خبر (كِذْب) [ض][ك ذ ب]IIমিথ্যা বলা, II-মিথ্যারোপ করা, مُكذِّبٌ ج مكذّبونমিথ্যারোপকারী মিথ্যারোপকারীদের দের জন্য	ظ. زمان - يومَ ظ.زمان منصوب متعلق «يقوم الناس » – مضاف + «اذٍ» – مبني على السكون، الكسرة لالتقاء السكنين (تنوين العِوَض) - مضاف إلَيهِ – و هو مضاف ،مضاف إليه – الجملة محذوفة المعوض بالتنوين«ذٍ» - تنوينُ العِوَضِ] সেদিন	اسم مرفوع - مبتدأ ধ্বংস
83|10|সেদিন দুর্ভোগ মিথ্যারোপকারীদের,		

ٱلدِّيۡنِ ﴿11﴾	بِيَوۡمِ	يُكَذِّبُوۡنَ	ٱلَّذِيۡنَ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه [ض][د ي ن] স্বীকার করা, دينٌ ج أديانধর্ম, মত, বিশ্বাস, يوم الدينশেষ বিচার দিবস বিচারের	جرّ +اسم مجرور- متعلق بالفعل «يكذبون» [ي و م]III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أيَّامٌদিন, ঘন্টা দিন সম্পর্কে	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل ~صلة«الذين» (كِذْب) [ض][ك ذ ب]IIমিথ্যা বলা, II-মিথ্যারোপ করা, مُكذِّبٌ ج مكذّبونমিথ্যারোপকারী মিথ্যারোপ করে	اسم موصول- صفة مجرورة - بالإضافة যারা
83|11|যারা প্রতিফল দিবসকে মিথ্যারোপ করে।			

بِهٖٓ	يُكَذِّبُ	وَمَا
جرّ +ضمير - متعلق بالفعل এর উপর	فعل مضارع بالضمة ،فاعل – مستتر «هو» [ض][د ي ن]স্বীকার করা, دينٌ ج أديانধর্ম, মত, বিশ্বাস, يوم الدينশেষ বিচার দিবস। মিথ্যারোপ করে	ح.عطف +ح. نفي এবং না
83|12|প্রত্যেক সীমালংঘনকারী পাপিষ্ঠই		

أَثِيمٍ ﴿12﴾	مُعْتَدٍ	كُلُّ	إِلَّا
اسم مجرور - صفة مجرورة [ا ث م][س] (إِثْم،أَثَم) পাপ করা,إِثْمٌ ج آثَامٌপাপ, أَثِيمٌ ج أُثَمَاءُপাপী পাপী	اسم مجرور – مضاف إليه،علامة جرّ – المقدرة على «ي» للثقل المحذوفة ،التنوين «دٍ» ~لأنه اسم منقوص(نكرة) [ع د و][ن VIII] দৌড়ান, VIII–অতিক্রম করা, অতিরিক্ত করা, বেআইনি করা, مُعتَدٍআগ্রাসী, সীমাতিক্রমকারী সীমালঙ্ঘনকারী	اسم مرفوع – فاعل [ك ل ل][ض] (كلٌّ) পরিশ্রান্ত হওয়া, كُلّসব, كَلّاকক্ষণও না প্রত্যেক	ح. حصر ছাড়া
কেবল একে মিথ্যারোপ করে।			

ءَايَٰتُنَا	عَلَيْهِ	تُتْلَىٰ	إِذَا
اسم مرفوع - فاعل +ضمير متصل - جر بالإضافة	جرّ +ضمير - متعلق بالفعل	فعل مضارع مجهول مرفوع بالضمة المقدرة على«ا» للتعذر	ظ. زمان الشرط – متعلق بجوابه مُتضمّن যখন

ج (آيةٌ)،آيٌ [ا ي ي] آياتٌনিদর্শণ, স্বাক্ষর, বিশ্বয়। আমাদের আয়াতসমূহ	তোমার কাছে	(تلْو, تلاوة) [ن][ت ل و]অনুসরন করা, পড়া, উচ্চস্বরে পড়ার, (جرّ)تِلْوَপরে, একের পর এক, تِلاوَةٌপাঠ করা(আল কোরআন) । তেলাওয়াত করা হয়	
83|13|তার কাছে আমার আয়াতসমূহ পাঠ করা হলে			

ٱلۡأَوَّلِينَ ﴿13﴾	أَسَاطِيرُ	قَالَ
اسم مجرور ـ مضاف إليه، بالياء «ي» لأنه جمع مذكر سلم ،«ن» عوض عن التنوين المفرد [س ط ر] উপকথা	اسم مرفوع-خبر ،لمبتدأ محذوف «تلك» [ن] [س ط ر] দাগ আঁকা (কাগজে), লিখা, ساطورٌ ج سواطيرُচালাক, أُسطورةٌ ج أساطيرُউপকথা, গল্প উপকথা	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» ~ الجملة جواب الشرط (قَوْل) [ن][ق و ل]কথা বলা, বলা, قَالَةٌকথা, বক্তৃতা, قَوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُশব্দ, কথা,বক্তব্য বলে
সে বলে, পুরাকালের উপকথা।		

مَّا	قُلُوبِهِم	عَلَىٰ	رَانَ	بَلۡ	كَلَّا
اسم موصول - فاعل যা	اسم مجرور +ضمير متصل - جر بالإضافة ~ متعلق بالفعل (قَلْب) [ض][ق ل ب]ঘোরা, উপরে উঠা, قَلْبٌ ج قُلُوبٌহৃদয়, কেন্দ্র, আত্মা তাদের অন্তরগুলির	جرّ উপর	فعل ماض مبني على الفتح، [ر ي ن] [ض][ن] (رَيْن)(رَوْن) অধিগ্রহন করা, দখল করা,মরিচা ধরানো [ض] ,তীব্র হওয়া, উত্তপ্ত হওয়া [ن] মরিচা ধরেছে	ح. إضراب বরং	ح. ردع কক্ষণনা

83|14|কখনও না, বরং তারা যা করে, তাই তাদের

﴾14﴿ يَكْسِبُوْنَ	كَانُوْا
فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل ~الجملة صلة «ما» (كسْب) [ض][ك س ب]অর্জন করা, كَسْبٌঅর্জন, مَكسبٌলাভ আর যা করে তারা	فعل ماض ناقص مبني على الضم لإتصاله +ضميرضمير – فاعل (كوْن،كِيان) [ن][ك و ن]হওয়া, ঘটা, থাকা, كوْنٌ ج أكوانঘটনা ছিল তারা
হৃদয় মরিচা ধরিয়ে দিয়েছে।	

عَنْ	إِنَّهُمْ	كَلَّآ
جرّ হতে	ح. مشبه بفعل +ضمير متصل - اسم «ان» নিশ্চয়ই তারা	ح. ردع কক্ষণনা
83|15|কখনও না, তারা সেদিন তাদের পালনকর্তার থেকে পর্দার অন্তরালে থাকবে।		

﴾15﴿ لَّمَحْجُوْبُوْنَ	يَوْمَئِذٍ	رَّبِّهِمْ
ل-تاكيد (المزحلقة) +اسم مرفوع – خبر «ان» (حجْب) [ن][ح ج ب] ঢাকা, গোপন করা, ج محجوبون مَحْجولٌঢাকা, আবরিত অবশ্যই দর্শন বঞ্চিত	ظ. زمان منصوب «يوم» + «اذٍ» بالكسر لإلتقاء السكينين ،سكونه و سكون التنوين – مضاف إليه ~ و هو مضاف،الجملة (توتلى عليهم...) محذوفة تقديره – مضاف إليه : [المعوض بالتنوين < ذٍ> ~ '' تنوين العِوَضِ'']	اسم مجرور +ضمير متصل – جر بالإضافة ~ متعلق بخبر «ان» (ربّ) [ن][ر ب ب]প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌ রব, মালিক

	সেদিন	তাদের রবের
83|15|কখনও না, তারা সেদিন তাদের পালনকর্তার থেকে পর্দার অন্তরালে থাকবে।		

ٱلْجَحِيمِ ﴿16﴾	لَصَالُوا۟	إِنَّهُمْ	ثُمَّ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه [ج ح م] جحِمٌ(م) জাহান্নামের আগুন। জাহান্নামে	ل-تاكيد(المزحلقة) +اسم مرفوع بالواو «و» ،حذفت النون-للإضفة (صلي) [ض] [ص ل ي]ভাজা, আগুনে উন্মুক্ত হওয়া অবশ্যই দগ্ধ হবে	ح. مشبه بفعل +ضمير متصل – اسم «ان» নিশ্চয়ই তারা	ح.عطف অতঃপর
83|16|অতঃপর তারা জাহান্নামে প্রবেশ করবে।			

كُنتُم	ٱلَّذِى	هَٰذَا	يُقَالُ	ثُمَّ
فعل ماض ناقص مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل لالمخاطبين – اسم «كان» (كوْن،كِيان) [ن][ك و ن]হওয়া, ঘটা, থাকা, كوْنٌ ج أكوان ঘটনা । ছিলে তোমরা	اسم موصول - خبر সেই	اسم اشارة- مبتدأ এই	فعل مضارع بالضمة ،فاعل – مستتر «هو» (قوْل) [ن][ق و ل]কথা বলা, বলা, قالَةٌকথা, বক্তৃতা, قوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُশব্দ, কথা,বক্তব্য বলা হবে	ح.عطف অতঃপর
83|17|এরপর বলা হবে, একেই তো				

﴾17﴿ تُكَذِّبُوْنَ	بِهٖ
فعل مضارع مرفوع بثبوت +ضمير متصل – فاعل ،الجملة – خبر «كان» (كِذْب) [ض][ك ذ ب]।। মিথ্যা বলা, ।।-মিথ্যারোপ করা, مكذّبون ج مُكذّبٌ মিথ্যারোপকারী, تَكْذِيبٌ অস্বীকার, মিথ্যা মিথ্যারোপ করতে	جرّ +ضمير – متعلق بخبر তা যা
তোমরা মিথ্যারোপ করতে।	

كِتٰبَ	إِنَّ	كَلَّآ
اسم منصوب - اسم «ان» (كتْب،كِتبة) [ن][ك ت ب] লিখা, كِتَابٌ ج كُتُوبٌ বই, চিঠি আমলনামা	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	ح. ردع কক্ষণনা
83|18|কখনও না, নিশ্চয় সৎলোকদের		

﴾18﴿ عِلِّيِّيْنَ	لَفِيْ	اْلأَبْرَارِ
اسم مجرور بالياء «ي» لأنه جمع مذكر سلم ،«ن» عوض عن التنوين – خبر «ان» [ن] [ع ل و /ي] উঁচু হওয়া, মহান হওয়া, عُلُو উচ্চ, উঁচু, বড়ত্ব,	ل-تاكيد(المزحلقة) +جرّ অবশ্যই মধ্যে	معرفة اسم مجرور - مضاف إليه (بِرّ) [ض] [ف][ب ر ر] নিষ্ঠাপূর্ণ হওয়া , নিবেদিত হওয়া , بِرٌّ ،بارٌ ج أبرار ধার্মিক, নিবেদিত । সৎকর্মশীলদের

عِلِيٌّ ج (جرّ)علٰى উপরে , عِلِّيُّونউচ্চমর্যাদার স্থান উচ্চমর্যাদা সম্পন্ন		
আমলনামা আছে ইল্লিয়্যীনে।		

وَمَآ	أَدْرٰكَ	مَا	عِلِّيُّوْنَ ﴿19﴾
ح.عطف +ح. استفهام - مبتدأ এবং কি	فعل ماض-مبني على الفتح المقدّر على «ا» للتعذر ،فاعل – مستتر «هو» +ضمير متصل المخاطَب – مفعول به – الجملة – خبر «ما» [د ر ي] বুঝাবে তোমাকে	ح. استفهام - مبتدأ কি	اسم مرفوع بالواو «و» لأنه جمع مذكر سلم ،«ن» عوض عن التنوين – خبر [ن] [ع ل و /ي]উঁচু হওয়া, মহান হওয়া, عُلُوউচ্চ, উঁচু, বড়ত্ব, (جرّ)علٰى উপরে , عِلِّيُّون ج عِلِيٌّউচ্চমর্যাদার স্থান উচ্চমর্যাদা
83|19|আপনি জানেন ইল্লিয়্যীন কি?			

كِتَابٌ	مَّرْقُوْمٌ ﴿20﴾
اسم مرفوع – بدل من «عليون» (كتْب،كِتبة) [ن][ك ت ب]লিখা,كُتُوبٌ ج كِتابٌ বই, চিঠি খাতা	صفة مرفوعة «كتب» (رقْم) [ن][ر ق م] লিখা, চিহ্নিত করা, رقِيمٌ ج رقائمُলিখা, খবর,চিঠি, مراقيمُ ج مَرْقومٌদাগনো (কম্বল) । লিপিবদ্ধ
83|20|এটা লিপিবদ্ধ খাতা।	

﴿21﴾ ٱلْمُقَرَّبُوْنَ	يَشْهَدُهُ
ممعرفة اسم مرفوع بالواو «و» لأنه جمع مذكر سلم ،«ن» عوض عن التنوين – فاعل (قُرْب،مقربة)(قُرْب،قُربان) [س][ك][ق ر ب] II কাছে আসা, II–কাছে আসতে দেওয়া, قُرْبٌনৈকট্য, قُربىসম্পর্ক, আত্মীয়তা, قريبٌনিকটেقريبٌনিকটে,مُقرّبون ج مُقَرَّبٌঘনিষ্ঠ। নৈকট্যপ্রাপ্ত	فعل مضارع بالضمة +ضمير متصل – مفعول به (شُهود) [س][ش ہ د]সাক্ষ্য দেওয়া, IV-أشْهَدَডাকা(সাক্ষী)- أُشْهِدَশহীদ হওয়া , شُهَدٌ ج شِهادٌমধু, মধুর চাক, شُهداءُ ج شَهيدٌসাক্ষী, শহীদ রক্ষণাবেক্ষণ করছে তা
83|21|আল্লাহর নৈকট্যপ্রাপ্ত ফেরেশতাগণ একে প্রত্যক্ষ করে।	

﴿22﴾ نَعِيْمٍ	لَفِيْ	ٱلْأَبْرَارَ	إِنَّ
اسم مجرور - خبر «ان» (نعْمة) [س] [ف] [ن] [ن ع م] আরাম আয়েশে বাস করা, نَعَمٌ ج أنْعامٌপশু, গৃহপালিত পশু। নিয়ামতের	ل- تاكيد(المز حلقة) +جرّ মধ্যে	معرفة اسم منصوب – اسم «ان» (بِرّ) بِرّ) [ض] [س][ب ر ر] কর্তব্যপরায়ণ হওয়া, নিষ্ঠাপূর্ণ হওয়া উপকার করা, بِرٌّসত্যপন্থী, আল্লাহ ভীরু, أبرارٌ ج بَرّকর্তব্যপরায়ণ, ধার্মিক। সৎকর্মশীলরা	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
83|22|নিশ্চয় সৎলোকগণ থাকবে পরম আরামে,			

﴿23﴾ يَنْظُرُوْنَ	ٱلْأَرَآئِكِ	عَلَى
فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل~الجملة حالية (نظَر،مَنْظر) [ن][ن ظ ر]দেখা , পর্যবেক্ষণ করা, أنظَرٌ ج نظَرٌদর্শন	معرفة اسم مجرور - خبر ثانٍ أرَيْكةٌ ج أرائِكُ، [ا ر ك] সোফা, চেয়ার, সিংহাসন উচ্চাসন সমূহের	جرّ উপর

দেখবে তারা		
83|23|সিংহাসনে বসে অবলোকন করবে।		

وُجُوْهِهِمْ	فِيْ	تَعْرِفُ
اسم مجرور +ضمير متصل – جر بالإضافة – متعلق (وجاهة) [ك] [و ج ه]বিশিষ্ট হওয়া, جِهَةٌ ج جِهاتٌদিক, এলাকা, وَجْهٌ ج وُجوهٌমুখমন্ডল, সামনে, বর্হিদেশ তাদের চেহারার	جرّ মধ্যে	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتر «انت» عُرْفٌ ج (مَعرِفة) [ض][ع ر ف] চিনা, চিনতে পারা, أعرافٌদয়া, প্রথা (ج), عريفٌ ج عُرَفاءُবিশেষজ্ঞ, শিক্ষক চিনবে তুমি
83|24|আপনি তাদের মুখমন্ডলে স্বাচ্ছন্দ্যের		

ٱلنَّعِيْمِ ﴿24﴾	نَضْرَةَ
معرفة اسم مجرور - مضاف إليه (نعْمة) [س] [ف] [ن] [ن ع م]আরাম আয়েশে বাস করা, نَعَمٌ ج أنْعامٌপশু, গৃহপালিত পশু। স্বাচ্ছন্দের	اسم منصوب-مفعول به نَضْرة [ك] [س] [ن][ن ض ر]সুন্ত্র হওয়া, উজ্জ্বল হওয়া, উজ্জ্বল্য, চাকচিক্য উজ্জ্বল্য
সজীবতা দেখতে পাবেন।	

مَّخْتُوْمٍ ﴿25﴾	رَّحِيْقٍ	مِنْ	يُسْقَوْنَ
اسم مجرور - صفة مجرورة (خَتْم،خِتام) [ض] [خ ت م] সিল মারা, মোহর অংকিত করা, خَتْمٌ ج	اسم مجرور – متعلق بالفعل	جرّ হতে	فعل مضارع مجهول مرفوع بثبوت،«و» ضمىر متصل – نائب فاعل

مَخْتُومٌসমাপ্ত, أَخْتام،خُتومٌসিল, মোহর, সীলমোহরকৃত মোহর করা	[ر ح ق], رحيقٌসুধা, মধু, সুস্বাদু পানীয় বিশুদ্ধ পানি		(سقْي) [ض] [س ق يIV] দেওয়া, পান করা, পানি দেওয়া(চাষে), سقْيসেঁচণ, سقاءٌ ج سقاءُونপানি বাহী। পান করান হবে তাদের

83|25|তাদেরকে মোহর করা বিশুদ্ধ পানীয় পান করানো হবে।

وَفِيْ	مِسْكٌ	خِتٰمُهُ
ح.عطف +جرّ এবং মধ্যে	اسم مرفوع – خبر (مسْك) [ض] [ن][م س ك] ধরা, দখল করা, مسْكদখল, ধরা, (م)مسْكٌ،مُسْكٌ কস্তুরী কস্তুরীর	اسم مرفوع - مبتدأ +ضمير متصل – جر بالإضافة (ختْم،خِتام) [ض] [خ ت م]সিল মারা, মোহর অংকিত করা, خَتْمٌ ج أَخْتام،خُتومٌসিল, মোহর, مَخْتومٌসমাপ্ত, সীলমোহরকৃত তার মোহর

83|26|তার মোহর হবে কস্তুরী। এ বিষয়ে প্রতিযোগীদের প্রতিযোগিতা করা উচিত।

ٱلْمُتَنٰفِسُوْنَ ﴿26﴾	فَلْيَتَنَافَسِ	ذٰلِكَ
معرفة اسم مرفوع [س] [ك][ن ف سVI] মূল্যবান হওয়া [ك], প্রসূতি হওয়া [س], V–শ্বাস নেওয়া,VI– প্রতিযোগিতা করা , نفْسٌ ج نُفوسٌআত্মা, মণ, মানুষ, مُتنافِسٌ ج مُتنافِسونَপ্রতিযোগী প্রতিযোগীকারীরা	ح. استئنافية +ل-أمر +فعل مضارع مجزوم بلام الأمر، الكسرة لالتقاء السكنين،فاعل مستتر «هو» [س] [ك][ن ف سVI] মূল্যবান হওয়া [ك], প্রসূতি হওয়া [س], V–শ্বাস নেওয়া,VI– প্রতিযোগিতা করা , نفْسٌ ج نُفوسٌআত্মা, মণ, মানুষ	اسم اشارة - مجرور متعلق «يتنافس» এই

	প্রতিযোগীতা করুক	
এ বিষয়ে প্রতিযোগীদের প্রতিযোগিতা করা উচিত।		

﴿27﴾ تَسْنِيمٍ	مِنْ	وَمِزَاجُهُ
اسم مجرور – خبر ~الجملة معطوفة [س ن م] V উপরে উঠা, দখল করা, ماء التسنيمِঅনুগৃহীতদের পানীয় (বেহেশতের) । তাসনীমের	جرّ হতে	ح.عطف +اسم مرفوع – مبتدأ +ضمير متصل – جر بالإضافة (مَزْج) [ان][م ز ج] মিশাণো, مَزْجٌমিশ্রণ করণ, أَمْزِجَةٌ ج مِزَاجٌমিশ্রণ এবং মিশ্রণ হবে
83|27|তার মিশ্রণ হবে তসনীমের পানি।		

﴿28﴾ الْمُقَرَّبُونَ	بِهَا	يَشْرَبُ	عَيْنًا
معرفة اسم مرفوع – فاعل مؤخر ~الجملة صفة «عينًا» (قُرْب،قُربان)(قُرْب،مقربة) [س][ك][ق ر ب II] কাছে আসা, II–কাছে আসতে দেওয়া, قُرْبٌনৈকট্য, قُربىসম্পর্ক, আত্মীয়তা, قريبٌনিকটে,مُقرّبون ج مُقرَّبٌঘনিষ্ঠ। নৈকট্যপ্রাপ্তগণ	جرّ +ضمير متعلق بالفعل তা থেকে	فعل مضارع مرفوع بالضمة [ش ر ب][س] (سُرْب)পান করা, شَرْبٌপান করণ, شربةٌপান পান করবে	اسم منصوب - مفعول به بالفعل محذوف تقديره «أمدحُ» [ع ي ن]IIনির্দ্দিষ্ট করা, চিহ্নিত করা, (م)عيْنٌ ج عُيونٌচোখ, বদ নযর, ঝর্ণা, উৎস একটি ঝর্ণা
83|28|এটা একটা ঝরণা, যার পানি পান করবে নৈকট্যশীলগণ।			

إِنَّ	ٱلَّذِينَ	أَجۡرَمُوا	كَانُوا	مِنَ
ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	اسم موصول ـ اسم «ان» যারা	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة (جرْم) [ض][ج ر م IV] অপরাধ করা, ক্ষতি করা, جُرْمٌ ج أجرامٌ অপরাধ, পাপ অপরাধ করেছে তারা	فعل ماض ناقص مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – اسم «كان» (كوْن،كِيان) [ن][ك و ن]হওয়া, ঘটা, থাকা, كَوْنٌ ج أكوان ঘটনা । ছিল তারা	جرّ হতে
83|29|যারা অপরাধী, তারা				

ٱلَّذِينَ	ءَامَنُوا	يَضۡحَكُونَ ﴿29﴾
اسم موصول ـ متعلق بخبر «يضحكون» যারা	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة [IVا م ن][ك] [س] (امانة) (أمْن، أمان) বিশ্বস্ত হওয়া [ك] , নিরাপদ হওয়া [س], IV-বিশ্বাস করা ঈমান এনেছে	فعل مضارع مرفوع بثبوت +ضمير متصل – فاعل ، الجملة ~خبر «كان» (ضحْك) [س] [ض ح ك]হাসা, উপহাস করা, ضَحْكَةٌউপহাস, বিদ্রূপ বিদ্রূপ করত
বিশ্বাসীদেরকে উপহাস করত।		

وَإِذَا	مَرُّوا	بِهِمۡ	يَتَغَامَزُونَ ﴿30﴾
ح.عطف +ظ. زمان الشرط غير جازم ـ متضمن بجوابه এবং যখন	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة	جرّ +ضمير ـ متعلق بالفعل	فعل مضارع مرفوع بثبوت +ضمير متصل – فاعل

(غمْز) [ض] [غ م ز VI] অনুভব করা, স্পর্শ করা, ইঙ্গিত করা, VI–পরষ্পর ইঙ্গিত করা, غمزةٌ ج غمزات ঈশারা, ইঙ্গিত কটাক্ষ করত তারা	তাদের পাশ দিয়ে	[1] (مرّ) [ن] [م ر ر] অতিক্রম করা, مرّةٌ ج مرّات সময়, مرّةً একবার। [2](مرارة) [ف] [ن] [م ر ر] বিদ্বেষী হওয়া, তিক্ত হওয়া, مرارة ج مرائِرُ তিক্ততা অতিক্রম করত	
83|30|এবং তারা যখন তাদের কাছ দিয়ে গমন করত তখন পরস্পরে চোখ টিপে ইশারা করত।			

إِلَىٰٓ	ٱنقَلَبُوٓا	وَإِذَا
جرّ প্রতি	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة [ض][ق ل ب VII] ঘোরা, মুখ ঘুড়ান, VII–ঘুরা, ফিরে আসা, قَلْبٌ উল্টাপাল্টা, পরিবর্তন ফিরে যেত	ح.عطف +ظ. زمان - الشرط غير جازم এবং যখন
83|31|তারা যখন তাদের পরিবার-পরিজনের কাছে ফিরত, তখনও হাসাহাসি করে ফিরত।		

فَكِهِينَ ﴿31﴾	ٱنقَلَبُوا	أَهْلِهِمُ
اسم منصوب - حال [ف ك ه][س] (فكَه) উৎফুল্ল হওয়া, খুশী হওয়া, فِكِهةٌ খুশী, আনন্দ উৎফুল্ল	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة ~ الجملة جواب الشرط غير جازم [ض][ق ل ب VII] ঘোরা, মুখ ঘুড়ান, VII–ঘুরা, ফিরে আসা, قَلْبٌ উল্টাপাল্টা, পরিবর্তন।	اسم مجرور - متعلق بالفعل +ضمير متصل – جر بالإضافة (أهول) [س] [ض] [ن] [ا ه ل] বিবাহ করা [ن [ض]], বসবাসে অভ্যস্থ হওয়া, পরিচিত হওয়া [س], أهْلٌ ج أهْلون আত্মীয়, পরিবার, أهَالٍ অধিবাসী তাদের পরিজনের

	ফিরে যেত	
83|31|তারা যখন তাদের পরিবার-পরিজনের কাছে ফিরত, তখনও হাসাহাসি করে ফিরত।		

قَالُوٓا	رَأَوۡهُمۡ	وَإِذَا
فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة (قَوْل) [ن][ق و ل]কথা বলা, বলা, قَالَةٌকথা, বক্তৃতা, قَوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُশব্দ, কথা,বক্তব্য বলত তারা	فعل ماض مبني على الضم المقدرة على «ا» المحذوفة لإلتقاء السكينين لإتصاله+صمير متصل – فاعل +ضمير متصل – مفعول به (دراية) [ض] [د ر ي IV] অবগত হওয়া, জানা, IV–অবগত করান , دِرَايَةٌজ্ঞান, অবগতি দেখত তাদের	ح.عطف +ظ. زمان - الشرط غير جازم এবং যখন
83|32|আর যখন তারা বিশ্বাসীদেরকে দেখত, তখন বলত,		

﴾32﴿	لَضَآلُّونَ	هَٰٓؤُلَآءِ	إِنَّ
	ل-تاكيد،المزحلقة +اسم مرفوع – خبر «ان» (ضلال،ضلالة) [ض] [ض ل ل] পথ হারানো, বিভ্রান্ত হওয়া, ضَلٌّভুল, ج ضالٌّ ضالّون বিভ্রান্ত, বিপথগামী । অবশ্যই বিভ্রান্ত	اسم اشارة ـ اسم «ان» এরা	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
83|32|আর যখন তারা বিশ্বাসীদেরকে দেখত, তখন বলত, নিশ্চয় এরা বিভ্রান্ত।			

حٰفِظِيۡنَ ﴿33﴾	عَلَيۡهِمۡ	أُرۡسِلُوۡا	وَمَآ
اسم منصوب-مفعول به بالياء «ي» لأنه جمع مذكر سلم «ن»، عوض عن التنوين (حِفْظ) [س] [ح ف ظ] সংরক্ষণ করা, حافِظٌ ج حافِظون সংরক্ষণকারী, ج محفوظات مَحْفوظٌ সংরক্ষীত, লিখিত। তত্বাবধায়ক	جرّ +ضمير - متعلق بالفعل তাদের উপর	فعل ماض مجهول مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة (رسَل) [س][ر س ل IV] লম্বাচুলের হওয়া, IV–পাঠান, رسولٌ ج رُسُلٌ বার্তা বাহক। পাঠান হয়েছে	ح.عطف +ح. نفي এবং না
83|33|অথচ তারা বিশ্বাসীদের তত্ত্বাবধায়করূপে প্রেরিত হয়নি।			

ءَامَنُوۡا	ٱلَّذِيۡنَ	فَٱلۡيَوۡمَ
فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل «ا» (أَمْن، أمان) (امانة) [س] [ك][ا م ن IV] বিশ্বস্ত হওয়া [ك] , নিরাপদ হওয়া [س], IV–বিশ্বাস করা ঈমান এনেছিল	اسم موصول - مبتدأ যারা	ح. استئنافية + ظ. زمان منصوب – متعلق «يضحكون» [ي و م] III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أَيَّامٌ দিন, ঘন্টা অতএব আজ
83|34|আজ যারা বিশ্বাসী, তারা কাফেরদেরকে উপহাস করছে।		

يَضۡحَكُوۡنَ ﴿34﴾	ٱلۡكُفَّارِ	مِنَ
فعل مضارع مرفوع بثبوت +ضمير متصل – فاعل	معرفة اسم مجرور – متعلق بخبر	جرّ সাথে

(ضحْك) [س] [ض ح ك]হাসা, উপহাস করা, ضَحْكَةٌউপহাস, বিদ্রূপ উপহাস করবে	IV (كفْر) [ض] [ك ف ر]ঢেঁকে রাখা, গোপন করা, বিদ্রোহী হওয়া,IV-বিদ্রোহী করা, বিদ্রোহী বলা, ج كافِرٌ كُفّارٌ،كافرونকাফের, বিদ্রোহী। কাফেরদের	
83|34|আজ যারা বিশ্বাসী, তারা কাফেরদেরকে উপহাস করছে।		

يَنظُرُونَ ﴿35﴾	ٱلْأَرَآئِكِ	عَلَى
فعل مضارع مرفوع بثبوت +ضمير متصل – فاعل ~الجملة حال (نظَر،مَنظَر) [ن][ن ظ ر]চোখে দেখা, পর্যবেক্ষণ করা, ج نظَرٌ أنظارٌদর্শণ, দেখা, চাহনি দেখবে তারা	معرفة اسم مجرور - متعلق «ينظرون» ج أرائِكُ أَرَيْكةٌ، [ا ر ك]সোফা, চেয়ার, সিংহাসন ج أرائِكُ أَرَيْكةٌ، [ا ر ك]] সোফা, চেয়ার, সিংহাসন উচ্চাসন সমূহের	جرّ উপর
83|35|সিংহাসনে বসে, তাদেরকে অবলোকন করছে,		

ٱلْكُفَّارُ	ثُوِّبَ	هَلْ
معرفة اسم مرفوع – نائب فاعل IV (كفْر) [ض] [ك ف ر]ঢেঁকে রাখা, গোপন করা, বিদ্রোহী হওয়া,IV- বিদ্রোহী করা, বিদ্রোহী বলা, كُفّارٌ،كافرون ج كافِرٌকাফের, বিদ্রোহী। কাফিরদের	فعل ماض مجهول مبني على الفتح II (ثوْب) [ن][ث و ب] ফিরে, II-পুরষ্কার দওয়া সওয়াব দেওয়া হল	ح. استفهام কি

83|36| তার প্রতিফল পেয়েছে তো?

يَفْعَلُوْنَ ﴿36﴾	كَانُوْا	مَا
فعل مضارع مرفوع بثبوت +ضمير متصل – فاعل (فعْل،فِعْل)[ف] [ف ع ل]করা,সম্পাদন করা, কাজ করা, فِعْلٌ ج أَفْعالٌ ،فِعالٌকাজ, কর্ম, প্রভাব সম্পাদন করে তারা	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – (كوْن،كِيان) [ك و ن][ن] «كان»اسمহওয়া, ঘটা, থাকা, كوْنٌ ج أكوانঘটনা । ছিল তারা	اسم موصول - مفعول به যা
83|36|কাফেররা যা করত		

।।সূরা আল – মুতাফফিফীন সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ الْإِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ

৮৪। সূরা ইনশিক্কাক : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:২৫

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

إِذَا	ٱلسَّمَآءُ	ٱنشَقَّتۡ ﴿1﴾
ظ. زمان الشرط غير جازم – الجملة في محل جرّ بالإضافة যখন	معرفة اسم مرفوع ـنائب فاعل ،لفعل محذوف– تقديره «انشقت» (سُموع) [ن][س م و]উঁচু হওয়া, উপরে হওয়া, II– سمّىনাম দেওয়া, ঢাকা, سُموعٌউচ্চতা, سَمنءٌ ج سموات(م)আকাশ, إسمٌ ج أسماءٌনাম আকাশ	فعل ماض VII (شقّ) [ن][ش ق ق] বিদীর্ণ করা, ফাটানো,VII– বিদীর্ণ হওয়া,VIII– নির্গত করা, নিষ্পন্ন করা , شقٌ ج شُقوقٌশরু ছিদ্র, ফাটা, চিরা, ফাঁক, شِقٌঅর্ধেক, একাংশ شقٌ ج شُقوقٌশরু ছিদ্র, ফাটা, চিরা, ফাঁক, شِقٌঅর্ধেক, একাংশ বিদীর্ণ হবে

84|1|যখন আকাশ বিদীর্ণ হবে,

وَأَذِنَتۡ	لِرَبِّهَا	وَحُقَّتۡ ﴿2﴾
ح.عطف+فعل ماض مبني على الفتح، «تْ» التأنيث ،فاعل – مستتر «هي» (إذْن) [س][ا ذ ن]শুনা, অনুমতি দেওয়া, إذْنٌ ج أُذونٌঅনুমতি এবংনির্দেশ পালন করবে সে	جرّ +اسم مجرور ـ متعلق بالفعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب] প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌরব, মালিক তার রবের	ح.عطف +فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،«تْ» التأنيث ،نائب فاعل – ضمير مستتر «هي» (حقّ) [ض] [ح ق ق] সত্য হওয়া, حقٌّসত্য, সঠিক ও বাধ্য সে

84|2|ও তার পালনকর্তার আদেশ পালন করবে এবং আকাশ এরই উপযুক্ত

وَإِذَا	ٱلۡأَرۡضُ	مُدَّتۡ ﴿3﴾
ح.عطف +ظ. زمان الشرط غير جازم – الجملة جر بالإضافة এবং যখন	معرفة اسم مرفوع ـنائب فاعل لفعل محذوف – تقديره «مدّتْ» [ا ر ض] III মাটিতে গাঁড়া, أرْضٌ(م) أراضٍ، أراضون ج পৃথিবী, জমিন যমীন	فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،«تْ» التأنيث ،نائب فاعل – مستتر «هي» (مدّ) [ن][م د د] সম্প্রসারিত করা, مدٌّ ج مَدودٌ সম্প্রসারণ। সম্প্রসারিত হবে

84|3|এবং যখন পৃথিবীকে সম্প্রসারিত করা হবে।

وَأَلۡقَتۡ	مَا	فِيهَا	وَتَخَلَّتۡ ﴿4﴾
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدر على «ا» للتعذر – محذوفة لإلتقاء السكينين لإتصاله – «تْ» التأنيث ، فاعل – مستتر «هي» (لِقاء،لُقًى) [س] [ل ق ي IV] সাক্ষাৎ করা, অবগত হওয়া, لُقِيَة পাওয়া এবং নিক্ষেপ করবে	اسم موصول - مفعول به যা	جرّ +ضمير - متعلق بالفعل মধ্যে যা	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح، «تْ» التأنيث ،فاعل – مستتر «هي» (خلّ) [ن] [خ ل ل V] ` ছিদ্র করা, خِلالٌ পিন, কাঁটা, ও শূন্য হবে

84|4|এবং পৃথিবী তার গর্ভস্থিত সবকিছু বাইরে নিক্ষেপ করবে ও শুন্যগর্ভ হয়ে যাবে।

وَأَذِنَتۡ	لِرَبِّهَا	وَحُقَّتۡ ﴿5﴾
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح، «تْ» التأنيث ،فاعل – مستتر «هي»	جرّ +اسم مجرور متعلق بالفعل +ضمير متصل مؤنث – جر بالإضافة	ح.عطف +فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،«تْ» التأنيث - نائب فاعل - مستتر «هي»

(حقّ) [ض] [ح ق ق] সত্য হওয়া,আবশ্যিক হওয়া,প্রয়োজনীয় হওয়া, حقٌّসত্য, সঠিক। বাধ্য সে	(ربّ) [ن][ر ب ب]প্রভু হওয়া, ربٌّ أربابٌ ج রব, মালিক তার রবের	(إذْن) [س][ا ذ ن]শুনা, অনুমতি দেওয়া, إذْنٌ ج أُذونٌঅনুমতি। নির্দেশ পালন করবে
84|5|এবং তার পালনকর্তার আদেশ পালন করবে এবং পৃথিবী এরই উপযুক্ত।		

إِلَىٰ	كَادِحٌ	إِنَّكَ	ٱلْإِنسَٰنُ	يَٰٓأَيُّهَا
جرّ প্রতি	اسم مرفوع - خبر «ان» (كدْح) [ف][ك د ح]পরিশ্রম করা, কঠোর কাজ করা,كدْحٌপরিশ্রম, কাজ পরিশ্রমকারী	ح. مشبه بفعل +ضمير المخاطب – اسم «ان» নিশ্চয়ই তূমি	معرفة اسم مرفوع – بدل «اي» [ا ن س] মানুষ	ح. نداء +اسم مرفوع في محل نصب+«ها» زائدة للتنبيه ওহে
84|6|হে মানুষ, তোমাকে তোমরা পালনকর্তা পর্যন্ত পৌছতে				

فَمُلَٰقِيهِ ﴿6﴾	كَدْحًا	رَبِّكَ
ح.عطف +اسم مرفوع بالضم المقدّر على «ي» للثقل +ضمير متصل جر بالإضافة (لِقاء،لُقًى) [س] [ل ق ي IV] সাক্ষাৎ করা, অবগত হওয়া, لُقِيَةপাওয়া, مُلاقاةٌসাক্ষাৎ, মুকাবিলা, مُلاقٍي،مُلاقٍ ج مُلاقُون সাক্ষাৎকারী । এবং তার সাক্ষাৎকারী	اسم منصوب – مفعول مطلق (كدْح) [ف][ك د ح]পরিশ্রম করা, কঠোর কাজ করা,كدْحٌপরিশ্রম, কাজ শ্রমসাধনা	اسم مجرور – متعلق بالفعل +ضمير متصل – جر بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب] প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌ রব, মালিক তোমার রবের

কষ্ট স্বীকার করতে হবে, অতঃপর তার সাক্ষাৎ ঘটবে

﴿7﴾ بِيَمِينِهِۦ	كِتَٰبَهُۥ	أُوتِيَ	مَنْ	فَأَمَّا
جرّ +اسم مجرور - متعلق بالفعل +ضمير متصل – جر بالإضافة [ي م ن][ن] [س] [ك] (يُمْن،ميمن)ভাগ্যবান হওয়া, II-ডানদিকে যাওয়া, يُمْن ভাগ্য, يَمَنٌ،يَمْنةٌডানপার্শ্ব, হাত। তার ডান হাতে	اسم منصوب مفعول به +ضمير متصل – جر بالإضافة [ك ت ب][ن] (كتْب،كِتبة)লিখা, كِتابٌ ج كُتُوبٌবই, চিঠি। তার কিতাব	فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،نائب فاعل – مستتر «هو» IV [ا ت ي][ض] (إتيان،أتي،مأتةً)আসা, আনা, দেওয়া, পাওয়া, IV-আনা, দেওয়া, أتيانকর্ম, কাজ, مأتًى ج مآتٍআসা, যাওয়ার স্থান। দেওয়া হবে	اسم موصول - مبتدأ যাকে	ح. استئنافية +ح. تفصيل অতঃপর জন্য যে

84|7|যাকে তার আমলনামা ডান হাতে দেয়া হবে

﴿8﴾ يَسِيرًا	حِسَابًا	يُحَاسَبُ	فَسَوْفَ
اسم منصوب - صفة منصوبة [ي س ر][س] [ك] (يسَر) (يُسْر)সহজ হওয়া [س], সামান্য হওয়া [ك], يُسْرٌসহজ, يَسرةٌবাম দিক সহজ	اسم منصوب مفعول مطلق III [ح س ب] [ن] (حسْب،حِسابٌ) হিসাব করা, III-হিসাব চূড়ান্ত করা, হিসাব গ্রহন করা حِسابٌ ج حِساباتٌহিসাব, বিল। হিসাব	فعل مضارع مرفوع مجهول بالضمة ، نائب فاعل – مستتر «هو» III[ح س ب] [ن] (حسْب،حِسابٌ) হিসাব করা, III-হিসাব চূড়ান্ত করা, হিসাব গ্রহন করা حِسابٌ ج حِساباتٌহিসাব, বিল হিসাব নেওয়া হবে	فا-واقعة (جواب الشرط) +ح. استقبال তবে শীঘ্রই

84|8|তার হিসাব-নিকাশ সহজে হয়ে যাবে

مَسْرُوْرًا ﴿9﴾	أَهْلِهِ	إِلَى	وَيَنْقَلِبُ
اسم منصوب ـ حال (سُرور) [ن][س ر ر] খুশী করা, سِرٌّ ج أسرارٌ গোপন, হৃদয়, مَسرورٌ খুশী, আনন্দিত। আনন্দচিত্তে	اسم مجرور ـ متعلق بالفعل +ضمير متصل ــ جر بالإضافة (أُهول) [س] [ض] [ن] [ا ه ل] বিবাহ করা [ض] [ن], বসবাসে অভ্যস্থ হওয়া, পরিচিত হওয়া [س], أهْلٌ ج أهْلون আত্মীয়, পরিবার, أهَالٍ অধিবাসী তার পরিজনদের	جرّ প্রতি	ح.عطف +فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل ــ مستتر «هو» [ض][ق ل بVII] ঘোরা, মুখ ঘুড়ান, VII-ঘুরা, ফিরে আসা, قَلْبٌ উল্টাপাল্টা, পরিবর্তন। এবং ফিরবে

84|9|এবং সে তার পরিবার-পরিজনের কাছে হৃষ্টচিত্তে ফিরে যাবে

أُوْتِيَ	مَنْ	وَأَمَّا
فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،نائب فاعل ــ مستتر «هو» ـ الجملة خبر «من» IV (إتيان،أتي،مأتةً) [ض][ا ت ي] আসা, আনা, দেওয়া, পাওয়া, IV-আনা, দেওয়া, أتيان কর্ম, কাজ, مأتًى ج مآتٍ আসা, যাওয়ার স্থান। দেওয়া হবে	اسم موصول ـ مبتدأ যাকে	ح.عطف +ح. تفصيل এবং জন্য যে

84|10|এবং যাকে তার আমলনামা পিঠের পশ্চাদ্দিক থেকে দেয়া, হবে,

﴾10﴿ ظَهْرِهِۦ	وَرَآءَ	كِتَٰبَهُۥ
اسم مجرور – مضاف إليه +ضمير متصل – جر بالإضافة (ظهور) [ف][ظ ه ر]দৃশ্যমান হওয়া, স্পষ্ট হওয়া, ظَهْرٌ ج ظُهورٌ أظهُرٌ،পিছন, পৃষ্ঠদেশ। তার পিঠের	ظ. مكان منصوب – متلعق بالفعل (ورْي) [ض][و ر ي]জ্বালান, আগুন, (جَر) وراءَপিছন, পশ্চাদ্দিক, পরে পিছনে	اسم منصوب - مفعول به كِتابٌ ج (كتْب،كِتبة) [ن][ك ت ب] লিখা, كُتُوبٌবই, চিঠি। তার আমলনামা
পশ্চাদ্দিক থেকে দেয়া, হবে,		

﴾11﴿ ثُبُورًا	يَدْعُوا۟	فَسَوْفَ
اسم منصوب مفعول به (ثُبور) [ن][ث ب ر] ধ্বংস করা, মুছে ফেলা, ثُبورٌধ্বংসাবশেষ ধ্বংস	فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدرة على «ا» للثقل المحذوفة لإلتقاء السكينين +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة (دعاء)[ن][د ع و/ي] ডাকা, আবেদন করা, دَعْوَةডাক, আহ্বান, دَعْوى ج دعاوى মামলা, অভিযোগ। ডাকবে সে	فا-واقعة (جواب الشرط) +ح. استقبال তবে শীঘ্রই
84|11|সে মৃত্যুকে আহবান করবে,		

﴾12﴿ سَعِيرًا	وَيَصْلَىٰ
اسم منصوب مفعول به (سعْر) [ف][س ع ر] জ্বালান, سِعْرٌ ج أسعارٌদাম, মূল্য	ح.عطف +فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدرة على «ا» للتعذر فاعل – مستتر «هو»،

প্রজ্বলিত আগুনে	(صلي) [ض] [ص ل ي]ভাজা, আগুনে উন্মুক্ত হওয়া প্রবেশ করবে
84|12|এবং জাহান্নামে প্রবেশ করবে।	

﴾13﴿ مَسْرُوْرًا	أَهْلِه	فِيْ	كَانَ	إِنَّهُ
اسم منصوب - خبر «كان» (سُرور) [ن][س ر ر] খুশী করা, سِرٌّ ج أسرارٌ গোপন, হৃদয়, مَسرورٌ খুশী, আনন্দিত আনন্দে	اسم مجرور - متعلق بحال +ضمير متصل > الذين< – جر بالإضافة তার পরিজনের	جرّ মধ্যে	فعل ماض ناقص مبني على الفتح ،اسم «كان» مستتر «هو» [ك و ن][ن] (كَوْن،كِيان) হওয়া, ঘটা, থাকা, كَوْنٌ ج أكوان ঘটনা । ছিল	ح. مشبه بفعل +ضمير - اسم«ان» নিশ্চয়ই সে
84|13|সে তার পরিবার-পরিজনের মধ্যে আনন্দিত ছিল				

﴾14﴿ يَحُوْرَ	لَّنْ	أَنْ	ظَنَّ	إِنَّهُ
فعل مضارع منصوب (حوْر) [ن][ح و ر] ফিরে আসা, কমে যাওয়া, حارةٌ ج حاراتٌ অংশ, এলাকা ফিরবে সে	ح. نفي نصب কক্ষণনা	ح. مخففة «انّ» - مشبه بالفعل ،اسمه مستتر «هو» নিশ্চয়ই সে	فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو» [ظ ن ن] মনে করেছিল	ح. مشبه بفعل +ضمير متصل – اسم «ان» নিশ্চয়ই সে
84|14|সে মনে করত যে, সে কখনও ফিরে যাবে না।				

رَبَّهُۥ	إِنَّ	بَلَىٰٓ
اسم منصوب - اسم «ان» +ضمير متصل – جر بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب] প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌ রব, তার রব	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	ح. جواب হ্যাঁ
84|15|কেন যাবে না, তার পালনকর্তা তো তাকে দেখতেন।		

بَصِيرًا ﴿15﴾	بِهِۦ	كَانَ
اسم منصوب – خبر «كان» (بصَر) [س] [ك] [ب ص ر] দেখা, অনুধাবন করা, بصَرٌ ج أبصارٌ দৃষ্টি, দর্শন بُصَراءُ ج بصيرٌ দৃষ্টিবান, সচেতন, অন্তদৃষ্টি সম্পন্ন । দৃষ্টবান	جرّ +ضمير – متعلق بخبر «كان» তাতে	فعل ماض مبني على الفتح، اسم «كان» مستتر (كوْن،كِيان) [ن][ك و ن] হওয়া, ঘটা, থাকা, كوْنٌ ج أكوان ঘটনা । ছিলেন
84|15|কেন যাবে না, তার পালনকর্তা তো তাকে দেখতেন।		

بِٱلشَّفَقِ ﴿16﴾	أُقۡسِمُ	فَلَآ
جرّ +معرفة اسم مجرور ـمتعلق بالفعل [ش ف ق] IV– সহানুভূতিশীল হওয়া,شفَقٌ সন্ধ্যার লালিমা, সন্ধার লালিমার, شفقةٌ সহানুভূতি	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتر «انا» (قسْم) [ض] [ق س م IV] ভাগ করা, বিতরন করা, IV–শপথ করা শপথ করছি আমি	ح. استئنافية +ج. زائدة অতএব না

84|16|আমি শপথ করি সন্ধ্যাকালীন লাল আভার

وَسَقَ ﴿17﴾	وَمَا	وَٱلَّيۡلِ
فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هو»~الجملة – صلة «ما» (وسْق) [ض][و س ق] ভরান,জমা করা, সমাবেশ করা, মালতোলা,VIII–সুসম হওয়া, পূর্ণ হওয়া, وسْقٌ ج وسوقٌভরা,বোঝা, মাল, সমাবেশ ঘটায়	ح.عطف +اسم موصول এবং যা	ح. عطف +معرفة اسم مجرور (ألقسم) ليلٌ، [ل ي ل]রাতের সময়, রাত, ليلةٌ ج ليلاتٌরাত, ليلاًরাতের বেলা। এবং রাতের
84|17|এবং রাত্রির, এবং তাতে যার সমাবেশ ঘটে		

ٱتَّسَقَ ﴿18﴾	إِذَا	وَٱلۡقَمَرِ
فعل ماض مبني على الفتح، فاعل – مستتر «هي» VIII (وسْق) [ض][و س ق] ভরান,জমা করা, সমাবেশ করা, মালতোলা,VIII–সুসম হওয়া, পূর্ণ হওয়া, وسْقٌ ج وسوقٌভরা,বোঝা, মাল পূর্ণ হয়	ظ. زمان في محل نصب متعلق بحال محذوفة«القمر» যখন	ح.عطف +معرفة اسم مجرور (قمْر) [س] [ن] [ض][ق م ر] জুয়া খেলা [ض] [ن] , তুষারন্ধ হওয়া, তুষার অন্ধতা)قمَرٌতুষার অন্ধতা أقمارٌ ج, চাঁদ,القَمَرُচাঁদ, القمرانচাঁদ ও সূর্য। এবং চাঁদের
84|18|এবং চন্দ্রের, যখন তা পূর্ণরূপ লাভ করে,		

طَبَقٍ ﴿19﴾	عَنْ	طَبَقًا	لَتَرْكَبُنَّ
اسم مجرور في محل نصب ِصفة منصوبة [ط ب ق]IIঢাকা, মিলযুক্ত করা, একত্র করা, طَبَقٌ ج أطباقٌঢাকনি, স্তর, طِباقًاএকের ঊপর এক, স্তর স্তরে	جرّ হতে	اسم منصوب – مفعول به [ط ب ق] IIঢাকা, মিলযুক্ত করা, একত্র করা, طَبَقٌ ج أطباقٌঢাকনি, স্তর, طِباقًاএকের ঊপর এক, স্তর স্তর	ل-تاكيد،جواب القسم +فعل مضارع مرفوع بثبوت النون ،حذفت «ن»،لإتصاله +ن-تاكيد + ضمير متصل «و» المحذوفة لإلتقاء السكينين «نّ» - فاعل مستتير «انت» [ر ك ب][س] (رُكوب) আরোহন করা, স্থাপন করা,II- আরোহন করানো, স্থাপন করা, তৈরী করা অবশ্যই আরোহন করবে তোমরা
84|19|নিশ্চয় তোমরা এক সিঁড়ি থেকে আরেক সিঁড়িতে আরোহণ করবে।			

يُؤْمِنُوْنَ ﴿20﴾	لَا	لَهُمْ	فَمَا
فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل مستتير «هو» (أمْن، أمان) (امانة) [س] [ك][ا م ن] IV] বিশ্বস্ত হওয়া [ك] , নিরাপদ হওয়া [س], IV-বিশ্বাস করা ঈমান আনে তারা	ح. نفي না	جرّ +ضمير - متعلق بخبر «ما» محذوفة তাদের জন্যে	ح. استئنافية +ح. استفهام - مبتدأ অতএব কি
84|20|অতএব, তাদের কি হল যে, তারা ঈমান আনে না?			

عَلَيْهِمُ	قُرِئَ	وَإِذَا
جرّ +ضمير - متعلق بالفعل	فعل ماض مجهول مبني على الفتح	ح.عطف +ظ. زمان الشرط غير جازم এবং যখন

তাদের কাছে	(قِرَاءَة) [ف][ق ر ا] তেলাওয়াত করা, পাঠ করা, قراءةٌ ج قراءاتপড়া, তেলাওয়াত, القرآنআল কোরআন পাঠ করা হয়	
84|21|যখন তাদের কাছে কোরআন পাঠ করা হয়, তখন সেজদা করে না।		

﴾21﴿ (ٱلسجدة) يَسۡجُدُونَ	لَا	ٱلۡقُرۡءَانُ
فعل مضارع مرفوع بثبوت +ضمير متصل – فاعل (سُجود) [ن] [س ج د] মাথা নত করা, সেজদা করা, سجَّادٌ ج سجّادونসিজদাকারী। সিজদা করে তারা	ح. نفي না	معرفة اسم مرفوع – نائب فاعل (قِرَاءَة) [ف][ق ر ا] তেলাওয়াত করা, পাঠ করা, قراءةٌ ج قراءاتপড়া, তেলাওয়াত, القرآنআল কোরআন কুরআন
84|21|যখন তাদের কাছে কোরআন পাঠ করা হয়, তখন সেজদা করে না।		

﴾22﴿ يُكَذِّبُونَ	كَفَرُوا۟	ٱلَّذِينَ	بَلِ
فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل – مستتر «هو» (كِذْب) [ض][ك ذ ب]IIমিথ্যা বলা, II–মিথ্যারোপ করা, مُكذِّبٌ ج مكذّبونমিথ্যারোপকারী। মিথ্যারোপ করেছে	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة (كفْر) [ض] [ك ف ر]ঢেকে রাখা, গোপন করা, বিদ্রোহী হওয়া,IV–বিদ্রোহী করা, বিদ্রোহী বলা, كافِرٌ ج كافرون،كُفّارٌকাফের, বিদ্রোহী। কুফরী করেছে	اسم موصول - مبتدأ যারা	ح. إضراب বরং
84|22|বরং কাফেররা এর প্রতি মিথ্যারোপ করে।			

وَٱللَّهُ	أَعۡلَمُ	بِمَا	يُوعُونَ ﴿23﴾
ح.عطف +لفظ الجلالة مرفوع - ميتدأ [لفظ الجلالة مجرور [اله] II খোদা বানান, الهٌ،إلاهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, الله (ال+اله)আল্লাহ। আল্লাহ	اسم مرفوع - خبر (عِلْم)[س] [ع ل م]জানা, অবহিত হওয়া, ج عُلومٌ عِلْمٌজ্ঞান, অবগতি, (ج) বিজ্ঞান, العُلومُপ্রাকৃতিক বিজ্ঞান, علَمٌ ج أعلامٌচিহ্ন, عليمٌ ج عُلماءُ জ্ঞানী, শিক্ষিত, عَالِمٌ ج عُلماءُ জ্ঞানী, বিশেষজ্ঞ, عَالَمٌ ج عالمونবিশ্ব, পৃথিবী, أعْلَمُসর্বাধিক জ্ঞানী। ভাল জানেন	جرّ +اسم موصول - متعلق بخبر «أعلم» তা যা	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل [و ع ي][ض] (وعْي) মনে করা, ধারন করা, وَعْيসতর্কতা, সচেতনতা পোষণ করছে তারা

84|23|তারা যা সংরক্ষণ করে, আল্লাহ তা জানেন।

فَبَشِّرۡهُم	بِعَذَابٍ	أَلِيمٍ ﴿24﴾
فا-واقعة (جواب الشرط) +فعل أمر مبني على السكون،فاعل – مستتر «انت» +ضمير متصل – مفعول به [II ب ش ر][ض] [س] (بِشْر) আনন্দিত হওয়া, X- প্রফুল্ল হওয়া, مُستَبشِرٌসুখী, প্রফুল্ল। তবে সুসংবাদ দাও তাদের	جرّ +اسم مجرور – متعلق بالفعل [ع ذ ب][ك] [ض] মিষ্টি হওয়া, আনন্দদায়ক হওয়া, [ض] বাধা দেওয়া, II-শাস্তি দেওয়া, عَذابٌ ج عذاباتٌ، أعذِبةٌশাস্তি, ব্যথা আযাবের	صفة مجرورة [ا ل م][س](أَلَم) ব্যথা পাওয়া, أَلَمٌ ج آلامٌব্যথা, أليمٌসাংঘাতিক, গভীর, মর্মন্তুদ, মর্মান্তিক মর্মন্তুদ

84|24|অতএব, তাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির সুসংবাদ দিন।

ءَامَنُوا	ٱلَّذِينَ	إِلَّا
فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة (أَمْن، أمان) (امانة) [س] [ك][س] [ا م ن] IV] বিশ্বস্ত হওয়া [ك] , নিরাপদ হওয়া [س], IV–বিশ্বাস করা। ঈমান এনেছে	اسم موصول- مستثنى منصوب যারা	ح. استثناء ব্যতীত
84|25|কিন্তু যারা বিশ্বাস স্থাপন করে ও সৎকর্ম করে,		

ٱلصَّٰلِحَٰتِ	وَعَمِلُوا
معرفة اسم مجرور (صلاح،صلاحية)، (صلاح،صُلوح،مَصلحة) [ك][ف][ن] [ص ل ح] ভাল হওয়া, সঠিক হওয়া, ধার্মিক হওয়া, মূল্যবান হওয়া, صالِحٌ ج صوالِحُভাল, ঠিক, সৎ, الصالِحاتভাল কাজ। সৎকাজের	ح.عطف +فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة (عمَل) [س][ع م ل]করা, কাজ করা, সম্পাদন করা , عمَلٌকাজ, অভ্যাস, কাজকর্ম। ও সম্পাদন করেছে
84|25|কিন্তু যারা বিশ্বাস স্থাপন করে ও সৎকর্ম করে,	

مَمْنُونٍ ﴿25﴾	غَيْرُ	أَجْرٌ	لَهُمْ
اسم مجرور مضاف إليه	صفة مرفوعة	اسم مرفوع - مبتدأ مؤخر	جرّ +ضمير - خبر مقدم

[ن][ن ن م]দয়ালু হওয়া, مَمْنونٌকৃতজ্ঞ, ঋণী, غيرُ منْنونঅশেষ, শেষ হবে না এমন। সমাপ্তি	(غيرة) [ف] [غ ي ر]হিংসুক হওয়া, غَيْرُএছাড়া, غَيْرَ (جَرّ)ব্যতীত, ছাড়া। ছাড়া	(اجْر) [ن][ا ج ر]পুরস্কার, ক্ষতিপূরণ, أَجْرٌ ج أُجورٌবেতন, ক্ষতিপূরণ, أُجْرةٌভাড়া । পুরস্কার	তাদের জন্য
তাদের জন্য রয়েছে অফুরন্ত পুরস্কার।			

।।সূরা ইনশিক্কাক সমাপ্ত ।।

سُورَةُ الْبُرُوجِ مَكِّيَّةٌ

৮৫। সূরা বুরূজ : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:২২

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

ٱلْبُرُوجِ ﴿1﴾	ذَاتِ	وَٱلسَّمَآءِ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه [ب ر ج] Vপ্রদর্শন করা, নিজের সৌন্দর্য্য দেখানো, بُرْجٌ أبراجٌ،গম্বুজ, দূর্গ, কেল্লা, নক্ষত্রপুন্জ, তারকারাজি বুরুজ	اسم مجرور- صفة مضافة ذُو،ذي،ذا ،ذات(م) ج ذوِو،أُولو،ذُوات(م) অধিকারী, মালিক বিশিষ্ট	ح. جرّ (القسم) + اسم مجرور – مقسم به، - متعلق بالفعل القسم محذوف«أقسم» (سُموع) [ن][س م و]উঁচু হওয়া, উপরে হওয়া, II- سمّىনাম দেওয়া,

		ঢাকা, سُموعٌউচ্চতা, ج سَمنٌ (م)سمواتٌআকাশ, ج أسماءٌ إسمٌنাম শপথ, আকাশের
85|1|শপথ গ্রহ-নক্ষত্র শোভিত আকাশের,		

وَمَشۡهُودٖ ﴿3﴾	وَشَاهِدٖ	ٱلۡمَوۡعُودِ ﴿2﴾	وَٱلۡيَوۡمِ
ح.عطف+اسم مجرور (شُهود) [س][ش ه د] সাক্ষ্য দেওয়া, IVأشْهَدَ-ডাকা(সাক্ষী)- أُشْهِدَশহীদ হওয়া , شُهْدٌ ج شِهادٌমধু, মধুর চাক, شُهداءُ ج شَهيدٌসাক্ষী, শহীদ, شُهود ج شاهِدٌউপস্থিত, সাক্ষী, مَشهودউত্তম উপস্থিতির ও যা পরিদৃষ্ট হয়	جرّ (القسم) +اسم مجرور – مقسم (شُهود) [س][ش ه د] সাক্ষ্য দেওয়া, IVأشْهَدَ-ডাকা(সাক্ষী)- أُشْهِدَশহীদ হওয়া , شُهْدٌ ج شِهادٌমধু, মধুর চাক, شُهداءُ ج شَهيدٌসাক্ষী, শহীদ, شُهود ج شاهِدٌউপস্থিত, সাক্ষী, مَشهودউত্তম উপস্থিতির শপথ দর্শকের	معرفة اسم مجرور – صفة مجرورة [و ع د][ض] (وعْد)প্রতিজ্ঞা করা, কথা দেওয়া, وعْدٌ ج وعُودٌপ্রতিজ্ঞা প্রতিশ্রুত	جرّ (القسم) +معرفة اسم مجرور-مقسم به [ي و م] III দিনের জন্য ভাড়া করা, يَوْمٌ ج أيَّامٌদিন, ঘন্টা । শপথ, দিনের
85|2|এবং প্রতিশ্রুত দিবসের, 85|3|এবং সেই দিবসের, যে উপস্থিত হয় ও যাতে উপস্থিত হয়			

ٱلۡأُخۡدُودِ ﴿4﴾	أَصۡحَٰبُ	قُتِلَ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه	اسم مرفوع – نائب فاعل	فعل ماض مجهول مبني على الفتح

[ن][خ د د] গর্ত করা, হাল চাষের গর্ত করা, أُخدودٌ ج أَجاديدُগর্ত, সুরঙ্গ, ট্রেন্স। গর্তের	(صُحبة) [س][ص ح ب] সাথী হওয়া, صاحِبٌ ج أصحابٌসাথী, সহকারী। কর্তারা	(قَتْل) [ن] [ق ت ل] হত্যা করা, দূর করা, قَتْلٌহত্যা, قِتْلٌ ج أقْتالٌশত্রু ধ্বংস হয়েছে
85|4|অভিশপ্ত হয়েছে গর্ত ওয়ালারা অর্থাৎ,		

ٱلۡوَقُوۡدِ ﴿5﴾	ذَاتِ	ٱلنَّارِ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه (وقْد) [ض][و ق د] আগুন নেওয়া, জ্বালান, পোড়া, وَقُودٌজ্বালানি। ইন্ধন	اسم مجرور- صفة مضافة ذُو،ذي،ذا ،ذات(م) ج ذوو،أُولو،ذُوات(م) অধিকারী, মালিক বিশিষ্ট	معرفة اسم مجرور – بدل من «أُخدود» [ن و ر] ॥ প্রস্ফুটিত হওয়া, প্রজ্বলিত করা, আলোয় পূর্ণ করা, نارٌ (م) ج نِران আগুন, রাইফেল গুলি, النارُজাহান্নাম। আগুনের
85|5|অনেক ইন্ধনের অগ্নিসংযোগকারীরা;		

قُعُوۡدٌ ﴿6﴾	عَلَيۡهَا	هُمۡ	إِذۡ
اسم مرفوع – خبر (قُعود) [ن] [ق ع د] বসা, আসন নেওয়া, قُعودٌঅধিবেশন, উপবিষ্ট উপবিষ্ট	جرّ +ضمير – متعلق بخبر তার পাশে	ضمير منفصل - مبتدأ তারা	ظ. زمان في محل نصبٍ – متعلق «قتل» যখন
85|6|যখন তারা তার কিনারায় বসেছিল।			

مَا	عَلٰى	وَهُمۡ
اسم موصول ـ مجرور متعلق – بخبر যা	جرّ উপর	ح.عطف +ضمير منفصل ـ مبتدأ এবং তারা
85|7|এবং তারা বিশ্বাসীদের সাথে যা করেছিল, তা নিরীক্ষণ করছিল।		

شُهُوۡدٌ ﴿7﴾	بِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ	يَفۡعَلُوۡنَ
اسم مرفوع ـ خبر [ش ه د] প্রত্যক্ষ কারী	جرّ +معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل (أمان ،أمْن) (امانة) [س] [ك][ا م ن] IV বিশ্বস্ত হওয়া [ك] , নিরাপদ হওয়া [س], IV-বিশ্বাস করা। مُؤۡمِنٌ ج مُؤۡمِنون বিশ্বাসী, বিশ্বস্ত, مُؤْتَمَنবিশ্বস্ত, নিশ্চিত মুমিনদের সাথে	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل, الجملة – صلة «ما» (فعْل،فِعْل) [ف][ف ع ل]করা,সম্পাদন করা, কাজ করা, فِعْلٌ ج أَفْعالٌ فِعالٌ،কাজ, কর্ম, প্রভাব সম্পাদন করিতেছিল
85|7|এবং তারা বিশ্বাসীদের সাথে যা করেছিল, তা নিরীক্ষণ করছিল।		

أَنۡ	إِلَّآ	مِنۡهُمۡ	نَقَمُوۡا	وَمَا
ح. مصدرية যে	ح. حصر ছাড়া	جرّ +ضمير متعلق بالفعل তাদের থেকে	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل،«ا» فارقة (نقَم) (نقْم) [س] [ض] [ن ق م]প্রতিশোধ নেওয়া, نقِمَةٌপ্রতিশোধ, শাস্তি প্রতিশোধ নিচ্ছে তারা	ح.عطف +ح. نفي এবং না
85|8|তারা তাদেরকে শাস্তি দিয়েছিল শুধু এ কারণে যে,				

الْحَمِيْدِ ﴿8﴾	الْعَزِيْزِ	بِاللّٰهِ	يُؤْمِنُوا
معرفة صفة مجرورة (حمْد) [س][ح م د] প্রশংসা করা, حمْدٌপ্রশংসা, حميدٌপ্রশংসিত, أحمدُঅধিক প্রশংসিত। প্রশংসিত	معرفة صفة مجرورة (عِزّ،عزازة) [ض][ع ز ز] শক্তি শালী হওয়া, পরাক্রমশালী হওয়া, عِزٌّশক্তি, ক্ষমতা, عزيزٌ ج أعِزّاءُপরাক্রমশালী। পরাক্রমশালী	جرّ +لفظ الجلالة مجرور - متعلق بالفعل [اله]II খোদা বানান, الهٌ،إلاهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, (ال+اله) اللهআল্লাহ। আল্লাহর উপর	فعل مضارع منصوب بحذف النون +ضمير متصل – فاعل «ا»، فارقة [ا م ن][ك] [س] (أمانة) IV (أمْن)বিশ্বাসী হওয়া [ك] ، নিরাপদ হওয়া [س],IV- বিশ্বাস করা, أمْنٌশান্তি, أمينٌ ج أُمناءُবিশ্বস্ত ঈমান এনেছে
তারা প্রশংসিত, পরাক্রান্ত আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করেছিল,			

وَالْاَرْضِ ؕ	السَّمٰوٰتِ	مُلْكُ	لَهٗ	الَّذِىْ
ح.عطف +معرفة اسم مجرور – معطوفة «السموات» [ر ض] II মাটিতে গাঁড়া, ج (م)أرْضٌ أراضٍ، أراضونপৃথিবী, জমিন ও পৃথিবীর	معرفة اسم مجرور – مضاف إليه (سُموع) [ن][س م و] উঁচু হওয়া, উপরে হওয়া, II- سمّىনাম দেওয়া, ঢাকা, سُموعٌউচ্চতা, ج سَمنءٌ (م)سمواتٌআকাশ, ج إسمٌ أسماءٌনাম। আকাশ মন্ডলীর	اسم مرفوع - مبتدأ مؤخر (مِلْك،مُلْك) [ض][م ل ك]অধিগ্রহণ করা, মালিক হওয়া , ج ملاّكٌ ملاكونঅধিকারী, মালিক, مُلكٌ مُلُوكٌ جরাজা, বাদশাহ, مَلَكٌ ملائِكةٌ،(مَلَأك)ফেরেশতাগণ। রাজত্ব	جرّ +ضمير - متعلق بخبر مقدم তাঁরই	اسم موصول- صفة «الله» যিনি
85|9|যিনি নভোমন্ডল ও ভূমন্ডলের ক্ষমতার মালিক,				

﴿9﴾ شَهِيدٌ	شَيْءٍ	كُلِّ	عَلَىٰ	وَاللَّهُ
اسم مرفوع ـ خبر (شُهود) [س] [ش ه د]সাক্ষ্য দেওয়া, IV-أَشْهَدَডাকা(সাক্ষী)– أُشْهِدَশহীদ হওয়া , شَهِيدٌ ج شِهادٌ شَهْدٌমধু, মধুর চাক, ج شُهَداءُসাক্ষী, শহীদ, ج شاهِدٌ شُهودউপস্থিত, সাক্ষী, مَشْهودউত্তম উপস্থিতির। শপথ দর্শকের সুক্ষ্মদর্শী	اسم مجرور ـ مضاف إليه [ف] [ش ي ا] (مَشِيئَة)চাওয়া, ইচ্ছা করা, شَيءٌ ج أَشياءُ কিছু, জিনিষ কিছুর	اسم مجرور – متعلق بخبر [ض][ك ل ل] (كَلٌّ)পরিশ্রান্ত হওয়া, كُلّসব, كَلّاকক্ষণও না সব	جرّ উপর	ح.عطف +لفظ الجلالة مرفوع – ميتدأ [اله]II খোদা বানান, الهٌ،إلاهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, الله (ال+اله)আল্লাহ। ও আল্লাহই
আল্লাহর সামনে রয়েছে সবকিছু।				

ٱلْمُؤْمِنِينَ	فَتَنُوا۟	ٱلَّذِينَ	إِنَّ
معرفة اسم منصوب بالياء «ي» لأنه جمع مذكر سلم ،«ن» عوض عن التنوين IV (أَمْن) (أَمانَة) [س] [ك][ا م ن] বিশ্বাসী হওয়া [ك] ، নিরাপদ হওয়া [س],IV–বিশ্বাস করা, أَمْنٌশান্তি, أَمينٌ ج أُمَناءُবিশ্বস্ত। মুমিনদের	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة (فَتْن،فُتون)[ض][ف ت ن]বিভ্রান্ত করা, প্রলোভিত করা, মোহগ্রস্থ করা, অত্যাচার করা, নিন্দা করা, فِتْنَة ج فِتَنٌপ্রলোভন, পরীক্ষা, আকর্ষন, فاتِن ج فواتِنُপ্রলুদ্ধক, পরীক্ষামূলক। নিপীড়ন করেছিল	اسم موصول -اسم «ان» যারা	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
85|10|যারা মুমিন পুরুষ ও নারীকে নিপীড়ন করেছে			

فَلَهُمْ	يَتُوْبُو	لَمْ	ثُمَّ	وَالْمُؤْمِنٰتِ
ح. استئنافية +جرّ +ضمير الغائبين - خبر مقدم অতঃপর তাদের জন্য	فعل مضارع مجزوم بحذف النون +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة (توب،توبة) [ت و ب][ن] অনুতাপ করা, প্রত্যাবর্তন করা, توبةٌঅনুতাপ, تائِبٌপ্রত্যাবর্তনকারী, অনুতাপকারী। তওবা করে	ح. نفي و جزم না	ح. عطف অতঃপর	ح.عطف +معرفة اسم منصوب بالكسرة «اتِ» بدلاً من الفتحة لأنها جمع مؤنث سالم [ا م ن][ك] [س] (أمانة) (أمْن) IV বিশ্বাসী হওয়া [ك] ، নিরাপদ হওয়া [س],IV-বিশ্বাস করা, أمْنٌশান্তি, أمينٌ ج أُمناءُবিশ্বস্ত। মুমিনাদের
, অতঃপর তওবা করেনি, তাদের জন্যে				

الْحَرِيْقِ ﴿10﴾	عَذَابُ	وَلَهُمْ	جَهَنَّمَ	عَذَابُ
معرفة اسم مجرور مضاف إليه - [ح ر ق][ك][ض] (حرْق) পোড়ান, দহন করা [ض] ,ঘর্ষণ করা [ك], حرَقٌআগুন, حريقٌ ج حرائِقُআগুন, অগ্নিকাণ্ড। দহনের	اسم مرفوع – مبتدأ مؤخر [ع ذ ب][ك] [ض] মিষ্টি হওয়া, আনন্দদায়ক হওয়া, [ض] বাধা দেওয়া, II-শাস্তি দেওয়া, عَذابٌ ج عذاباتٌ، أعذِبةٌশাস্তি, ব্যথা আযাব	ح.عطف +جرّ +ضمير الغائبين – خبر مقدم ও তাদের জন্য	اسم علم مجرور بالفتحة بدلًا من الكسرة (ممنوع) [ج ه ن م] جهنّم (م)] জাহান্নামের	اسم مرفوع – مبتدأ مؤخر [ع ذ ب][ك] [ض] মিষ্টি হওয়া, আনন্দদায়ক হওয়া, [ض] বাধা দেওয়া, II-শাস্তি দেওয়া, عَذابٌ ج عذاباتٌ، أعذِبةٌশাস্তি, ব্যথা। আযাব
আছে জাহান্নামের শাস্তি, আর আছে দহন যন্ত্রণা,				

وَعَمِلُوا	ءَامَنُوا	ٱلَّذِينَ	إِنَّ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة (عمَل) [س][ع م ل] করা, কাজ করা, সম্পাদন করা , عمَلٌকাজ, অভ্যাস, কাজকর্ম। সম্পাদন করেছে	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة IV (أمْن) (أمانة) [س] [ك][ا م ن]বিশ্বাসী হওয়া [ك] ، নিরাপদ হওয়া [س],IV-বিশ্বাস করা, أمْنٌশান্তি, أمينٌ ج أُمناءُবিশ্বস্ত। ঈমান এনেছে	اسم موصول – في محل نصبٍ،اسم «ان» যারা	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
85|11|যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদের জন্যে আছে			

مِنْ	تَجْرِي	جَنَّٰتٌ	لَهُمْ	ٱلصَّٰلِحَٰتِ
جرّ হতে	فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدرة على «ي» للثقل [ج ر ي][ض] (جرْي)প্রবাহিত করা, সংঘটিত হওয়া, جريগতিপথ, গতি। প্রবাহিত হচ্ছে	اسم مرفوع – مبتدأ مؤخر [ج ن ن][ن] (جنّ،جُنون) ঢাঁকা, গোপন করা, নামা,(م)جِنِّيةٌ جِنٌّজিন্ন, جَنَّةٌ ج جَنَّاتٌ، جِنانবেহেস্ত, বাগান। জান্নাত	جرّ +ضمير - خبر مقدم তাদের জন্য	معرفة اسم مجرور بالكاسرة لأنه جمع مؤنث سالم– مضاف إليه [ص ل ح][ن][ف][ك] (صلاح،صُلوح،مَصلحة)، (صلاح،صلاحية) ভাল হওয়া, সঠিক হওয়া, ধার্মিক হওয়া, মূল্যবান হওয়া, صالِحٌ ج صوالِحُভাল, ঠিক, সৎ, الصالِحاتভাল কাজ। সৎ কর্মের
জান্নাত, যার তলদেশে প্রবাহিত				

ذٰلِكَ	ٱلْأَنْهٰرُ ۚ	تَحْتِهَا
اسم اشارة - مبتدأ সেটাই	معرفة اسم مرفوع – فاعل (نَهْر) [ف][ن ه ر] প্রচুর প্রবাহিত হওয়া,তিরষ্কার করা, রাগে মুখ ফিরান, نَهَرٌ ج أنهُر،أنهَار নদী, প্রবাহ, نهارٌ ج أنهُرٌ،نُهُرٌ দিন, দিনের বেলা । ঝর্ণা সমূহ	اسم مجرور – متعلق بالفعل +ضمير متصل – جر بالإضافة تحتُ(ظرف) [ت ح ت]নিচে, تحْتَ، (جر) নিচ, নিচে, تَحتِي নিচে, من تحتِ নিচ হতে, নিচে। তার নীচ

হয় নির্ঝরিণীসমূহ। এটাই মহাসাফল্য।

ٱلْكَبِيْرُ ﴿11﴾	ٱلْفَوْزُ
معرفة صفة مرفوعة (كِبْر) [ك][ن][ك ب ر] বয়স হওয়া, বৃদ্ধ হওয়া [ن], বৃদ্ধি পাওয়া, বড় হওয়া [ك], كَبِيرٌ ج كِبارٌ،كُبْراءُ বড়, বিরাট । বিরাট	معرفة اسم مرفوع - خبر (فَوْز) [ن][ف و ز]কৃতকার্য হওয়া, লাভ করা, فَوْزٌ বিজয়, সাফল্য, مَفازٌ،مَفازَةٌ সাফল্য, مَفازةٌ ج مفازاتٌ মরুভূমি সাফল্য

এটাই মহাসাফল্য।

لَشَدِيْدٌ ﴿12﴾	رَبِّكَ	بَطْشَ	إِنَّ
ل-تاكيد ،المزحلقة +اسم مرفوع – خبر «ان» (شِدَّة) [ض] [ش د د] শক্ত হওয়া, শক্তি শালী হওয়া, أشَدُّ অধিক শক্ত।	اسم مجرور - مضاف إليه +ضمير متصل – جر بالإضافة	اسم منصوب - اسم «ان» (بطْش) [ن] [ض] [ب ط ش]আপতিত হওয়া, ভীষনভাবে আক্রমণ করা, بطْشٌ শক্তি, ক্ষমতা অত্যাচার, পাকড়াও	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই

অবশ্যই কঠিন	(ربّ) [ر ب ب][ن] প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌ রব, তোমার রবের		

85|12|নিশ্চয় তোমার পালনকর্তার পাকড়াও অত্যন্ত কঠিন।

﴿13﴾ وَيُعِيدُ	يُبْدِئُ	هُوَ	إِنَّهُۥ
ح. عطف +فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتر «هو» (عوْد،معاد) [ع و د][ن] IV পশ্চাৎদিকে ফিরানো, পূণরায় করা, প্রত্যাবর্তন করা , পুনরাবৃত্তি করা,IV- পুনরাবৃত্তি করানো, عوْدٌপ্রত্যাবর্তন, পুনরাবৃত্তি	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتر «هو» - الجملة خبر «ان» (بدء) [ب د أ][ف] শুরু করা, بدْءٌশুরু, بداْةٌশুরু। প্রথম অস্তিত্ব দেন	ضمير منفصل لالتكسد في محل نصبٍ তিনিই	ح. مشبه بالفعل +ضمير متصل – اسم «ان» নিশ্চয়ই তিনি

85|13|তিনিই প্রথমবার অস্তিত্ব দান করেন এবং পুনরায় জীবিত করেন।

﴿14﴾ ٱلْوَدُودُ	ٱلْغَفُورُ	وَهُوَ
معرفة اسم مرفوع (المبالغة) – خبر ثانٍ (وِدّ،وُدّ،ودّ) [و د د][ف] ভালবাসা, পছন্দ করা, وِدادٌবন্ধুত্ব, ভালবাসা, ودودٌনিবেদিত, প্রেমময়, একনিষ্ঠ। প্রেমময়	معرفة اسم مرفوع(المبالغة) - خبر (غفْر،مغفِرة) [غ ف ر][ض] ক্ষমা করা, লাঘব করা, غفْرٌক্ষমা, II-পাহারা দেওয়া, X-ক্ষমা চাওয়া , غفورٌক্ষমাপ্রবন(আল্লাহ তায়ালা)।	ح.عطف +ضمير منفصل - مبتدأ এবং তিনিই

	ক্ষমাশীল	
85|14|তিনি ক্ষমাশীল, প্রেমময়;		

ٱلۡمَجِيدُ ﴿15﴾	ٱلۡعَرۡشِ	ذُو
معرفة صفة مرفوعة [م ج د][ن] [ك] (مجْد) (مجادة) **মহিমান্বিত হওয়া , সম্মানিত হওয়া ,সমুচ্চ হওয়া, مجِدٌগৌরব, জাঁকজমক, مجيدٌমহিমান্বিত।** **সম্মানিত**	معرفة اسم مجرور -مضاف إليه [ع ر ش] [ض] [ن] **গাছ উঠানোর মাচা তৈরি করা,** عرْشٌ ج عُروش**সিংহাসন, আসন।** **আরশের**	اسم مرفوع – الاسماء الخمسة مضافٌ ذُو،ذي،ذا ،ذات(م) ج ذوِو،أُولو،ذُوات(م)**অধিকারী, মালিক** **মালিক**
85|15|মহান আরশের অধিকারী।		

يُرِيدُ ﴿16﴾	لِّمَا	فَعَّالٌ
فعل مضارع مرفوع بالضمة، فاعل – مستتر «هو» ~الجملة صلة الموصول «ما» [ر و د][ن] (روْد) **IV হাঁটা, দেখা, খোঁজা, IV-চাওয়া, ইচ্ছা করা,** إرادةٌ**ইচ্ছা** **চান তিনি**	جرّ +اسم موصول – جر بالإضافة **যা**	اسم مرفوع – خبر - لمبتدأ محذوف «هو» [ف ع ل] [ف](فعْل،فِعْل) **করা,সম্পাদন করা, কাজ করা,** فِعْلٌ ج أفْعالٌ ،فِعالٌ**কাজ, কর্ম, প্রভাব।** **সম্পন্নকারী**
85|16|তিনি যা চান, তাই করেন।		

﴿17﴾ ٱلۡجُنُوۡدِ	حَدِيۡثُ	أَتٰكَ	هَلۡ
معرفة اسم مجرور ـ مضاف إليه [ج ن د]IIখসড়া লিখা, তালিকা করা, جُنْدٌ ج جُنودٌ أَجْناد،সেনাবাহিনী, সেনা সৈন্যদের	اسم مرفوع – فاعل [ح د ث][ف][ك] (حُدوث،حَداثةٌ) II ঘটা, সংঘটিত হওয়া [ف] , নূতন [ك],II - বলা, আলোচনা করা, حدَثٌ ج أَحْداثٌ নূতন, খারাপ কাজ, حديثٌ ج أَحاديثُ،حِدْثان কথা, বক্তব্য। আলোচনা বৃত্তান্ত	فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على «ا» للتعذر +ضمير متصل ـ مفعول به (أتي،اتِيان،مأتاة) [ض] [ا ت ي]আসা, পৌঁছা, আনা, সম্পাদন করা, পাওয়া, أتيانসম্পাদন, آتٍপরবর্ত্তী, مأتًى ج مآتআসার স্থান পৌঁছেছে তোমার কাছে	ح. استفهام কি
85|17|আপনার কাছে সৈন্যবাহিনীর ইতিবৃত্ত পৌছেছে কি?			

﴿18﴾ وَثَمُوْدَ	فِرْعَوْنَ
ح.عطف +اسم مجرور بالفتحة (ممنوع) সামু দের	اسم علم مجرور بالفتحة بدلًا من الكسرة (ممنوع) ফিরাউনের
85|18|ফেরাউনের এবং সামুদের?	

﴿19﴾ تَكۡذِيۡبٍ	فِيۡ	كَفَرُوۡا	ٱلَّذِيۡنَ	بَلِ
اسم مجرور (كِذْب) [ض][ك ذ ب]II]মিথ্যা বলা, II–মিথ্যারোপ করা, مُكذِّبٌ ج مكذّبونমিথ্যারোপকারী। মিথ্যারোপে	جرّ মধ্যে	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،«ا» فارقة (كفْر) [ض] [ك ف ر]ঢেঁকে রাখা, গোপন করা, বিদ্রোহী হওয়া,IV–বিদ্রোহী করা, IV	اسم موصول যারা	ح. إضراب বরং

		বিদ্রোহী বলা, كُفّارٌ ج كافِرٌون،كافركাফের, বিদ্রোহী। কুফরী করেছে		

85|19|বরং যারা কাফের, তারা মিথ্যারোপে রত আছে।

مُّحِيْطٌ ﴿20﴾	وَرَآئِهِمْ	مِنْ	وَٱللَّهُ
اسم مرفوع – خبر IV (حوْط،حِيطة) [ن][ح و ط]রক্ষা করা, পাহাড়া দেওয়া, IV- ঘিড়া, পরিবেষ্টন করা , حيطةٌ،حطةٌসচেতনতা, مُحيطٌপরিবেষ্টনকারী। পরিবেষ্টন কারী	اسم مجرور – متعلق بخبر +ضمير متصل – جر بالإضافة (وري) [ض][و ر ي] স্খালান, وراءَ (جّر)পিছনে, এছাড়াও, تَوْرِية লুকিয়ে, গোপনে তাদের অলক্ষ্যে	جرّ হতে	ح.عطف +لفظ الجلالة مرفوع - ميتدأ [اله] II খোদা বানান, اِلاهٌ،الهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, الله (ال+اله) আল্লাহ। এবং আল্লাহ

85|20|আল্লাহ তাদেরকে চতুর্দিক থেকে পরিবেষ্টন করে রেখেছেন।

مَّجِيْدٌ ﴿21﴾	قُرْءَانٌ	هُوَ	بَلْ
صفة مرفوعة (مجادة) (مجْد) [ك] [ن][م ج د]মহিমান্বিত হওয়া , সম্মানিত হওয়া ,সমুচ্চ হওয়া, مجِدٌগৌরব, জাঁকজমক, مجيدٌমহিমান্বিত। সম্মানিত	اسم مرفوع - خبر (قِراءة) [ف][ق ر ا]তেলাওয়াত করা, পাঠ করা, قراءةٌ ج قراءات পড়া, তেলাওয়াত, القرآنআল কোরআন কুরআন	ضمير منفصل - مبتدأ তা	ح. إضراب বরং

85|21|বরং এটা মহান কোরআন,

مَّحۡفُوۡظٍ (22)	لَوۡحٍ	فِيْ
صفة مجرورة (حِفْظ) [س] [ح ف ظ]সংরক্ষণ করা, حافِظٌ ج حافِظون সংরক্ষণকারী, مَحْفوظٌ محفوظات সংরক্ষীত, লিখিত। সুরক্ষিত	اسم مجرورمجرور – متعلق بصفة «قرآن» (لوْح) [ن] [ل و ح] উদ্ভুত হওয়া, আর্বিভাব হওয়া, দৃশ্যমান হওয়া, لوْحٌ ج ألواحٌ ফলক, বোর্ড, লেখার বোর্ড। ফলকের	جرّ মধ্যে
85|22|লওহে মাহফুযে লিপিবদ্ধ।		

॥ সূরা আল বুরুজ ॥

سُوْرَةُ الأطَارِقِ مَكِّيَّةٌ

৭৮। সূরা আত্-তারিক : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:৪০

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

﴾1﴿ وَٱلسَّمَآءِ	وَٱلطَّارِقِ
ح.عطف +معرفة اسم مجرور – معطوفة (طَرْق) [ن][ط ر ب]আঘাত করা, শব্দ করা , আপতিত হওয়া, আগমন করা, طُروقاتٌ،طُروقٌ ج طريقٌরাস্তা, পথ, মহাসড়ক, طُرَّاقٌ ج طارِقٌরাতের দর্শনার্থী, শব্দকারী, আঘাতকারী। রাতে আগমনকারীর	جرّ (القسم) +معرفة اسم مجرور – مقسم به (سُموع) [ن][س م و] উঁচু হওয়া, উপরে হওয়া, II–سمّىনাম দেওয়া, ঢাকা, سُموعٌউচ্চতা, سَمٰءٌ ج سمواتٌ(م)আকাশ, أسماءٌ ج إسمٌনাম । শপথ, আসমানের
86|1|শপথ আকাশের এবং রাত্রিতে আগমনকারীর।	

﴾2﴿ ٱلطَّارِق	مَا	أَدۡرَىٰكَ	وَمَآ
معرفة اسم مرفوع [ط وُ ق]রাতে আত্মপ্রকাশ কারী	ح. استفهام কি	فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على «ا» للتعذر +ضمير متصل – مفعول به [د ر ي IV] II–অব্যাহত রাখা, চলমান থাকা, IV–পৌঁছা, পাওয়া, ধরা, অবগত করা, অবহিত হওয়া, أدْراكٌ ج دَرَكٌঅর্জন। জানাবে তোমাকে	ح.عطف +ح. استفهامএবং কি
86|2|আপনি জানেন, যে রাত্রিতে আসে সেটা কি?			

﴾3﴿ ٱلثَّاقِبُ	ٱلنَّجۡمُ
صفة مرفوعة – الجملة ~حال (ثقْب) [ن][ث ق ب] গর্ত করা, ছিদ্র করা, ثاقِبٌতীক্ষ্ম, উজ্বল । উজ্বল	معرفة اسم مرفوع – خبر ،مبتدأ محذوف «هو» (نُجوم) [ن] [ن ج م] আবির্ভূত হওয়া, দৃষ্টিগোচর হওয়া, نُجُومٌ ج نَجْمٌসৌর বস্তু, তারা

	নক্ষত্র
86|3|সেটা এক উজ্জ্বল নক্ষত্র।	

نَفْسٍ	كُلُّ	إِن
اسم مجرور – مضاف إليه [س] [ك][ن ف س] VI] মূল্যবান হওয়া [ك], প্রসূতি হওয়া [س], V-শ্বাস নেওয়া,VI- প্রতিযোগিতা করা , نَفْسٌ ج نُفوسٌআত্মা, মণ, মানুষ, مُتنافِسٌ ج مُتنافِسونَপ্রতিযোগী। কোন ব্যক্তি	اسم مرفوع - مبتدأ (كلٌّ) [ض][ك ل ل] পরিশ্রান্ত হওয়া, كُلّসব, كَلّاকক্ষণও না। কোন	ح. نفي – ما«ليس» ~الجملة جواب القسم নাই
86|4|প্রত্যেকের উপর একজন		

حَافِظٌ ﴿4﴾	عَلَيْهَا	لَّمَّا
اسم مرفوع – خبر لمبتدأ ، الجملة – جواب القسم [ح ف ظ] তত্বাবধায়ক	جرّ +ضمير - خبر مقدم তার উপর	ح. استثناء ছাড়া
তত্ত্বাবধায়ক রয়েছে।		

خُلِقَ ﴿5﴾	مِمَّ	ٱلْإِنسَانُ	فَلْيَنظُرِ
فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،نائب فاعل – مستتر «هو»	جرّ +اسم استفهام مبني على السكون المقدرة على «ا»	معرفة اسم مرفوع – فاعل (أُنْس) [ك] [س][ا ن س] সামাজিক হওয়া, ভদ্র হওয়া,, أُنْسঘনিষ্ঠতা,	ح.عطف +ل-أمر +فعل مضارع مجزوم

(خاْق) [ن][خ ل ق] গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خَلْقٌসৃষ্টি, خُلْقٌ ج أخلقٌপ্রকৃতি, স্বভাব । সৃষ্টি করা হয়ে ছে	حذفت لأنها جرت بحرف جرّ– متعلق «خلق» কি থেকে	বন্ধুত্বপূর্ণ, إِنْسٌমানুষ, মানবজাতি, ঘনিষ্ঠ বন্ধু, إِنسانমানুষ, الانسانকোন মানুষ, একজন। মানুষের	[ن ظ ر][ن] (نظَر،مَمظَر)চোখে দেখা, পর্যবেক্ষণ করা, نظَرٌ ج أنظارٌদর্শণ, দেখা, চাহনি এবং লক্ষ্য করা উচিৎ
86 | 5 | অতএব, মানুষের দেখা উচিত কি বস্তু থেকে সে সৃজিত হয়েছে।			

دَافِقٍ ﴿6﴾	مَّآءٍ	مِنْ	خُلِقَ
صفة مجرورة (دفْق) [ض] [ن][د ف ق]ঢালা, প্রবাহিত করা, ফেলা, স্ববেগে যাওয়া, স্খলিত, دافِقٌজোড়ে বের হওয়া, دافِقٌযে স্ববেগে প্রবাহিত ।	اسم مجرور - متعلق بالفعل [م و ه][ن][ف] [ك] (موْه، مُؤوه) মিশ্রিত করা, প্রচুর পানি হওয়া, ماءٌ ج مِياءٌপানি, তরল, রস। পানি পানি	جرّ হতে	فعل ماض مجهول مبني على الفتح،نائب فاعل – مستتر «هو» (خاْق) [ن][خ ل ق] গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خَلْقٌসৃষ্টি, خُلْقٌ ج أخلقٌপ্রকৃতি, স্বভাব। সৃষ্টি করা হয়েছে
86 | 6 | সে সৃজিত হয়েছে সবেগে স্খলিত পানি থেকে।			

بَيْنِ	مِنۢ	يَخْرُجُ
اسم مجرور – متعلق بالفعل (بيان) [ض][ب ي ن]স্পষ্ট হওয়া, বের হওয়া, পৃথক হওয়া, بيْنٌপৃথক, بيْنَ (جّر) ،ما بين، فما بينমাঝে, মধ্যে, بينَ يديهতার সামনে,-بين-و- باينঅথবা, (عطف)بينماযখন। মাঝ	جرّ হতে	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتر «هو» IV (خُروج) [ن] [خرج]বাহির হওয়া, IV–বাহির করা, আনা , خرجةٌ ج خرجاتٌবহিগমণ বের হয়
86 | 7 | এটা নির্গত হয় মেরুদন্ড ও বক্ষপাজরের মধ্য থেকে।		

وَٱلتَّرَآئِبِ ﴿7﴾	ٱلصُّلْبِ
ح.عطف +معرفة اسم مجرور - معطوف (ترِب) [س][ت ر ب]ধূলিমলিন হওয়া, ترِبٌ ج أترابٌসমসাময়িক, এক বয়সের, تريبةٌ ج ترائِبُবক্ষ। বক্ষপিঞ্জরের	معرفة اسم مجرور - مضاف إليه [ض][س] [ك][ص ل ب]শক্ত হওয়া [س] [ك] ,ক্রুশবিদ্ধ করা [ض], صُلْبٌ ج أصلُبٌশক্ত, কঠিণ, মেরুডন্ড, পিছনের হাড়, পিঠ। পিঠ
86 | 7 | এটা নির্গত হয় মেরুদন্ড ও বক্ষপাজরের মধ্য থেকে।	

لَقَادِرٌ ﴿8﴾	رَجْعِهِۦ	عَلَىٰ	إِنَّهُۥ
ل-تاكيد +اسم مرفوع - خبر «ان» (قدَر) (قُدرة) (قدْر)[س] [ض] [ن][ق د ر]আদেশ করা, সিদ্ধান্ত করা (আল্লাহ তায়ালার) [ض] [ن], শক্তি থাকা, ক্ষমতা	اسم مجرور – متعلق بخبر +ضمير متصل – جر بالإضافة	جرّ উপর	ح. مشبه بفعل +ضمير - اسم «ان»

রাখা [ض] [س], أقدارٌ ج قَدْرٌভাগ্য, (আল্লাহর) আদেশ, قديرٌশক্তিশালী, قادِرٌক্ষমতা রাখে যে, সক্ষম, ক্ষমতাবান। অবশ্যই সক্ষম	(رُجوع) [ض][ر ج ع] ফিরে আসা, رَجْعٌপ্রত্যাবর্তন, ফিরা । তার প্রত্যাবর্তন		নিশ্চয়ই তিনি
86|8|নিশ্চয় তিনি তাকে ফিরিয়ে নিতে সক্ষম।			

ٱلسَّرَآئِرُ ﴿9﴾	تُبْلَى	يَوْمَ
معرفة اسم مرفوع – نائب فاعل (سُرور) [ن][س ر ر] সুখী করা, আনন্দিত করা, سريرةٌ ج سرائِرُগোপন, গোপনীয় চিন্তা, মন, হৃদয়, أسِرَّةٌ ج سريرٌবিছানা, সিংহাসন গোপণ বিষয়াবলী	فعل مضارع مجهول مرفوع بالضمة المقدرة على «ا» للتعذر (بلًى) (بلْو،بلاء) [س] [ن][ب ل و] পরীক্ষা করা [ن] , পুরানো হওয়া, ব্যবহার করা [س], بلْوَى، بلاءٌপরীক্ষা, দুর্দশা। পরীক্ষা করা হবে	ظ. زمان منصوب متعلق «رجعه» [ي و م]III দিনের জন্য ভাড়া করা, أيَّامٌ ج يَوْمٌদিন, ঘন্টা। সেদিন
86|9|যেদিন গোপন বিষয়াদি পরীক্ষিত হবে,		

مِنْ	لَهُۥ	فَمَا
جرّ - زائد হতে	جرّ +ضمير - متعلق بخبر مقدم তার জন্য	ح.عطف +ح. نفي এবং না
86|10|সেদিন তার কোন শক্তি থাকবে না এবং সাহায্যকারীও থাকবে না।		

﴾10﴿ نَاصِرٍ	وَلَا	قُوَّةٍ
اسم مجرور – معطوفة «قوة» (نصْر،نُصُور) [ن][ن ص ر]সাহায্য করা, জয়ী করা, نَصْرٌসাহায্য, সহায়তা, نُصْرةٌসাহায্য, সহযোগীতা। কোন সাহায্যকারী	ح.عطف +ح. نفي এবং না	اسم مجرور لفظًا مرفوع – مبتدأ مؤخر (قوَّة) [س][ق و ي]শক্ত হওয়া, শক্তিশালী হওয়া, قُوَّةٌ ج قُوَّات،قُوًى শক্তি, ক্ষমতা। কোন শক্তি
থাকবে না এবং সাহায্যকারীও থাকবে না।		

﴾11﴿ ٱلرَّجۡعِ	ذَاتِ	وَٱلسَّمَآءِ
معرفة اسم مجرور – مضاف اليه (رُجوع) [ض][ر ج ع] ফিরে আসা, رَجْعٌপ্রত্যাবর্তন, ফিরা (المطرবৃষ্টি) । বৃষ্টি	اسم مجرور - صفة مجرورة «السماء» والمُضاف ذُو،ذي،ذا ،ذات(م) ج [ذو] ذوِو،أُولو،ذُوات(م) অধিকারী, মালিক ধারনকারী	جرّ (و-القسم) +معرفة اسم مجرور - مقسَم – متعلق بالفعل محذوف «أقسم» (سُموع) [ن][س م و] উঁচু হওয়া, উপরে হওয়া, II- سمّىনাম দেওয়া, ঢাকা, سُموعٌউচ্চতা, سَمنءٌ ج سموات(م)আকাশ, إسمٌ ج أسماءٌনাম । শপথ, আসমানের
86|11|শপথ চক্রশীল আকাশের		

﴾12﴿ ٱلصَّدۡعِ	ذَاتِ	وَٱلۡأَرۡضِ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه (صدْع) [ف][ص د ع]ফেটে যাওয়া, ভেঙ্গে যাওয়া, V- ভেঙ্গে যায়।	صفة مجرورة «الأرض» - مضاف ذُو،ذي،ذا ،ذات(م) ج [ذو] ذوِو،أُولو،ذُوات(م) অধিকারী	ح.عطف +معرفة اسم مجرور - معطوفة «السماء» ~بالفعل «يتصدَّع»

বিদীর্ণ		أَرْضٌ(م) [ا ر ض] ॥ মাটিতে গাঁড়া, ج أراضٍ ،أراضون পৃথিবী, জমিন। এবং যমীনের
86|12|এবং বিদারনশীল পৃথিবীর		

﴿13﴾ فَصۡلٌ	لَقَوۡلٌ	إِنَّهُۥ
اسم مرفوع-صفة مرفوعة (فصْل) [ض][فص ل] পৃথক করা, পরিত্যাগ করা, সিদ্ধান্ত করা, বিবাদ মিমাংসা করা, ج فُصولٌ فَصْلٌপৃথক করণ, সিদ্ধান্ত, বিচার, শ্রেনীকক্ষ, পত্রিকার কলাম মিমাংসাকারী	ل-تاكيد (المزحلقة) +اسم مرفوع – خبر «ان» (قوْل) [ن][ق و ل] কথা বলা, বলা, قَالَةٌকথা, বক্তৃতা, قَوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُশব্দ, কথা,বক্তব্য। অবশ্যই বাণী	ح. مشبه بفعل +ضمير متصل – اسم «ان» নিশ্চয়ই তা
86|13|নিশ্চয় কোরআন সত্য-মিথ্যার ফয়সালা।		

﴿14﴾ بِٱلۡهَزۡلِ	هُوَ	وَمَا
جرّ +معرفة اسم مجرور - لفظًا منصوب - خبر«ما» (هزَل) (هزْل) [س] [ض] [ه ز ل] ওজন কমে যাওয়া, শুকিয়ে যাওয়া [ض] [س] , হাসিঠাট্টা করা, ওজন কমানো [ض], هَزْلٌহাসি, কৌতুক।	ضمير منفصل-مبتدأ - بمنزلة«ليس» তা	ح.عطف +ح. نفي এবং না

হাসি-ঠাট্টার কথা		
86|14|এবং এটা উপহাস নয়।		

﴿15﴾ كَيْدًا	يَكِيدُونَ	إِنَّهُمْ
اسم منصوب ـ مفعول مطلق [ك ي د][ض] (كَيْد،مكيدة)প্রতারণা করা, ক্ষতি করা, كَيْدٌ كِيَادٌচালাকি, ধূর্ততা, প্রতারণা, ষড়যন্ত্র ষড়যন্ত্র	فعل مضارع مرفوع بثبوت +ضمير متصل – فاعل [ك ي د][ض] (كَيْد،مكيدة)প্রতারণা করা, ক্ষতি করা, كَيْدٌ كِيَادٌচালাকি, ধূর্ততা, প্রতারণা, ষড়যন্ত্র। ষড়যন্ত্র করছে	ح. مشبه بالفعل +ضمير متصل – اسم«ان» নিশ্চয়ই তারা
86|15|তারা ভীষণ চক্রান্ত করে,		

﴿16﴾ كَيْدًا	وَأَكِيدُ
اسم منصوب – مفعول مطلق [ك ي د][ض] (كَيْد،مكيدة) প্রতারণা করা, ক্ষতি করা, كَيْدٌ كِيَادٌচালাকি, ধূর্ততা, প্রতারণা, ষড়যন্ত্র। এক কৌশল	ح.عطف +فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتر «انا» [ك ي د][ض] (كَيْد،مكيدة)প্রতারণা করা, ক্ষতি করা, كَيْدٌ كِيَادٌচালাকি, ধূর্ততা, প্রতারণা, ষড়যন্ত্র। কৌশল করছি আমি
86|16|আর আমিও কৌশল করি।	

﴿17﴾ رُوَيْدًا	أَمْهِلْهُمْ	ٱلْكَٰفِرِينَ	فَمَهِّلِ
صفة منصوبة ـ المفعول مطلق	فعل أمر مبني على السكون ،فاعل – مستتر «انت» +ضمير متصل – مفعول به م م ه ل] [ف]	معرفة اسم منصوب بالياء «ي» لأنه جمع مذكر سلم المفرد – مفعول به	ح. استئنافية +فعل أمر مبني على السكون

(رْوْد) [ر و د][ان] IV হাঁটা, দেখা, খোঁজা, IV-চাওয়া, ইচ্ছা করা, إِرادةٌইচ্ছা, رَوْدٌঅনুসন্ধান , رُوَيدًاআস্তে আস্তে, ক্রমান্বয়ে। [কিছুক্ষনের	(مهْل،مُهلة) IV] বিলম্ব করা, সময় নেওয়া,II-সময় দেওয়া, IV- সময় দেওয়া , مهْلٌধীরতা, অলসতা, তাড়াহুড়ো ছাড়া, مهلةদেরী, নির্দিষ্ট সময়। অবকাশ দাও তাদের	IV (كفْر) [ض] [ك ف ر]ঢেঁকে রাখা, গোপন করা, বিদ্রোহী হওয়া,IV-বিদ্রোহী করা, বিদ্রোহী বলা, كافِرٌ ج كافرون،كُفّارٌকাফের, বিদ্রোহী। কাফেরদের	الكسرة لالتقاء السكنين، فاعل- مستتر «انت»، م ه ل] [ف] (مهْل،مُهلة) II] বিলম্ব করা, সময় নেওয়া,II-সময় দেওয়া, مهْلٌধীরতা, অলসতা, তাড়াহুড়ো ছাড়া, مهلةদেরী, নির্দিষ্ট সময়। অতএব অবকাশ দাও
86|17|অতএব, কাফেরদেরকে অবকাশ দিন, তাদেরকে অবকাশ দিন, কিছু দিনের জন্যে।			

।। সূরা আত্-তারিক সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ ٱلْأَعْلَىٰ مَكِّيَّةٌ

৮৭। সূরা আল-আ'লা : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:৪০

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿1﴾ ٱلۡأَعۡلَى	رَبِّكَ	ٱسۡمَ	سَبِّحِ
معرفة صفة مجرورة	اسم مجرور - مضاف اليه	اسم منصوب - مفعول به	فعل أمر مبني على السكون ،الكسر لالتقاء

[ن] [ع ل و /ي]উঁচু হওয়া, মহান হওয়া, عُلُوউচ্চ, উঁচু, বড়ত্ব, (جرّ)علٰىউপরে , عِلِّيٌّ ج عِلِّيُّونউচ্চমর্যাদার স্থান। সুমহান শ্রেষ্ঠ	ضمير متصل – +جرّ بالإضافة [ر ب ب][ن] (ربّ)প্রভু হওয়া, رَبٌّ ج أَرْبابٌরব, তার রবের	(سُموع) [ن][س م و]উঁচু হওয়া, উপরে হওয়া, II- سمّىনাম দেওয়া, ঢাকা, سُموعٌউচ্চতা, (م)سَمٰوٰتٌ ج سَمَنءٌআকাশ, إسمٌ ج أسماءٌনাম। নামের	الساكنين،فاعل – مستتير <ابت> [ف][س ب ح] (سبْح،سباحة)[II] সাঁতরানো, II–প্রশংসা করা, سُبحان اللهআল্লাহর প্রশংসা। পবিত্রতা বর্ণনা কর
87|1|আপনি আপনার মহান পালনকর্তার নামের পবিত্রতা বর্ণনা করুন			

فَسَوّٰى ﴿2﴾	خَلَقَ	اَلَّذِىْ
ح. عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ي> للتعذر ، فاعل – مستتير <هو> (سواء)[س][س و ي] সমান করা, II–নিয়মিত করা, মসৃন করা, বিন্যস্ত কর। এবং সম্পূর্ণ করেছেন	فعل ماض مبني على الفتح (خلْق) [ن][خ ل ق]গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خَلْقٌসৃষ্টি, خُلُقٌ ج أخلقٌপ্রকৃতি, স্বভাব। সৃষ্টি করেছেন	اسم موصول - صفة <ربك> যিনি
87|2|যিনি সৃষ্টি করেছেন ও সুবিন্যস্ত করেছেন।		

فَهَدٰى ﴿3﴾	قَدَّرَ	وَالَّذِىْ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ى>للتعذر	فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو>	ح.عطف +اسم موصول - صفة <ربك> এবং যিনি

(هدْي،هُدًى) [ض][ه د ي] পরিচালিত করা, পথ দেখান, هدىনির্দেশণা, هُدًىসঠিক নির্দেশণা। পথ দেখিয়েছেন	II (قُدرة) (قدْر) [س](قدْر) [ض] [ن][ق د ر] (قدَر)আদেশ করা, সিদ্ধান্ত করা (আল্লাহ তায়ালার) [ض] [ن], শক্তি থাকা, ক্ষমতা রাখা [ض] [س], II–সিদ্ধান্ত করা, নিয়োগ করা, আদেশ করা , قَدْرٌ ج أقدارٌভাগ্য, (আল্লাহর) আদেশ, قديرٌশক্তিশালী, قادِرٌক্ষমতা রাখে যে, সক্ষম, ক্ষমতাবান । নির্দিষ্ট করেছেন	
87|3|এবং যিনি সুপরিমিত করেছেন ও পথ প্রদর্শন করেছেন		

﴾4﴿ ٱلْمَرْعَىٰ	أَخْرَجَ	وَٱلَّذِىٓ
معرفة اسم منصوب- مفعول به (رعْي،مرعًى) [ف][ر ع ي] ঘাস খাওয়ানো, রক্ষা করা, مَرْعًى ج مَراعٍ, مَرعاةٌচারণক্ষেত্র, ঘাস, তৃণ। উদ্ভিদ	فعل ماض مبني على الفتح ، فاعل – مستتير <هو > (خُروج) [ن][خ ر ج IV] বাহির হওয়া, IV–বাহির করা, خَرْجٌখরচ। উৎপাদন করেছেন	ح.عطف +اسم موصول - صفة এবং যিনি
87|4|এবং যিনি তৃণাদি উৎপন্ন করেছেন,		

﴾5﴿ أَحْوَىٰ	غُثَآءً	فَجَعَلَهُۥ
صفة منصوبة	اسم منصوب - مفعول به ثانٍ	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح فاعل – مستتير <هو>+ضمير متصل – مفعول به،

[ض][ح و ي] সমবেত করা, জমা করা, حوّاءٌ ج حُوّ (مث)، أحْوي গাঢ় সবুজ, গাঢ় লাল, কাল। **কালো**	(غشاوةٌ) (غشْو) [س] [ن] [غ ش و] আসা [ن], গোপন করা, ঢাকা [س], غِشاءٌ ج أغشية ঢাকনা, আবরন। **আবর্জনায়**	(جعْل) [ف][جعل]] সৃষ্টি করা, جعْلٌ جعالٌ বেতন, পুরস্কার **এবং পরিণত করেছেন তা**
87|5|অতঃপর করেছেন তাকে কাল আবর্জনা।		

﴾6﴿ تَنسَىٰٓ	فَلَا	سَنُقۡرِئُكَ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ا> للتعذر ،فاعل – مستتير <انت> (نسْي) [س] [ن س ي] ভুলে যাওয়া, نَسْي،نِسيان ভুলার অভ্যাস, نسِي আত্মভোলা। **ভূলবে তুমি**	ح. استئنافية +ح. نفي **অতঃপর না**	ح. استقبال +فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير <نحن>+ضمير متصل – مفعول به [ق ر ا]IV পড়া, IV–পড়ানো, قِراءةٌ ج قِرائاتٌ পাঠ, القرآن আল কোরআন। **শীঘ্রই পড়িয়ে দিব আমরা**
87|6|আমি আপনাকে পাঠ করাতে থাকব, ফলে আপনি বিস্মৃত হবেন না		

ٱللَّهُۚ	شَآءَ	مَا	إِلَّا
لفظ الجلالة مرفوع – فاعل [اله] II খোদা বানান, الهٌ،اِلاهٌ ج آلِهةٌ খোদা, উপাস্য, الله (ال+اله) আল্লাহ। **আল্লাহ**	فعل ماض مبني على الفتح (مَشِيئة) [ف] [ش ي ا] চাওয়া, ইচ্ছা করা, شيءٌ ج أشياءٌ কিছু, জিনিষ **চান**	اسم موصول - مستثنى **যা**	ح. استثناء **ব্যতীত**
87|7|আল্লাহ যা ইচ্ছা করেন তা ব্যতীত।			

يَعۡلَمُ	إِنَّهُۥ
فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير<هو> (عِلْم)[س] [ع ل م] জানা, অবহিত হওয়া, عِلْمٌ ج عُلومٌ জ্ঞান, অবগতি, (ج) বিজ্ঞান, العُلومُ প্রাকৃতিক বিজ্ঞান, عَلَمٌ ج أعلامٌ চিহ্ন, عليمٌ ج عُلماءُ জ্ঞানী, শিক্ষিত, عَالِمٌ ج عُلماءُ জ্ঞানী, বিশেষজ্ঞ, عَالَمٌ ج عالمون বিশ্ব, পৃথিবী, أعْلَمُ সর্বাধিক জ্ঞানী **জানেন**	ح. مشبه بفعل +ضمير متصل اسم <ان> **নিশ্চয়ই তিনি**
নিশ্চয় তিনি জানেন	

يَخۡفَىٰ ﴿7﴾	وَمَا	ٱلۡجَهۡرَ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ا>للتعذر (خفْي) [س] [خ ف ي] গোপনীয় হওয়া, অপরিচিত হওয়া, خفِي গোপনীয়। **গোপণ করে**	ح.عطف +اسم موصول - معطوف مفعول به **এবং যা**	معرفة اسم منصوب – مفعول به (جهْر،جِهار) [ف] [ج ه ر] প্রকাশিত হওয়া , বেরিয়ে আসা, جهْرٌ ج جِهارٌ প্রকাশ্য, প্রচার। **প্রকাশ্য**
প্রকাশ্য ও গোপন বিষয়।		

لِلۡيُسۡرَىٰ ﴿8﴾	وَنُيَسِّرُكَ
جرّ +معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل (يُسْر) (يسَر) [ك] [س][ي س ر] সহজ হওয়া [س], সামান্য হওয়া [ك], يُسْرٌ সহজ, يَسرةٌ বাম দিক **সহজকে**	ح.عطف +فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير <نحن>+ضمير متصل – مفعول به II (يُسْر) (يسَر) [ك] [س][ي س ر] সহজ হওয়া [س], সামান্য হওয়া [ك], يُسْرٌ সহজ, II-দেওয়া, সহজলভ্য করা , يَسرةٌ বাম দিক । **সহজ করব আমরা তোমাকে**

87|8|আমি আপনার জন্যে সহজ শরীয়ত সহজতর করে দেবো।

﴿9﴾ ٱلذِّكْرَىٰ	نَّفَعَتِ	إِن	فَذَكِّرْ
معرفة اسم مرفوع بالضمة المقدر على ألألف <ا>للتعذر [ذ ك ر][ن] (ذِكْر) স্মরণ করা, II–স্মরণ করানো, V– স্মরণ করা , ذِكْرٌ ج أذكارٌ স্মরণ, تَذْكيرٌ স্মরণকারী, স্মারক,تَذَكُّرٌ স্মরণ, تذْكِرةٌ ج تذَاكِرٌ সংবাদ, অনুমতি, *تَذْكِرةٌ স্মারক, স্মরণকারী,* مُتذَكِّرٌ স্মরণকারী, উপদেশ গ্রহনকারী উপদেশ	فعل ماض مبني على الفتح في محل جزمٍ، <تْ>التأنيث – الكسرة لالتقاء السكينين [ن ف ع] [ف] (نفْع)উপকারী হওয়া, نفْعٌ উপকার । কল্যান করে	ح. شرط যদি	ح. استئنافية +فعل أمر مبني على السُكون <انت> فاعل- مستتير، II[ذ ك ر][ن] (ذِكْر) স্মরণ করা, II–স্মরণ করানো, V– স্মরণ করা , ذِكْرٌ ج أذكارٌ স্মরণ, تَذْكيرٌ স্মরণকারী, স্মারক,تَذَكُّرٌ স্মরণ, تذْكِرةٌ ج تذَاكِرٌ সংবাদ, অনুমতি, *تَذْكِرةٌ স্মারক, স্মরণকারী,* مُتذَكِّرٌ স্মরণকারী, উপদেশ গ্রহনকারী। অতঃপর উপদেশ দাও

87|9|উপদেশ ফলপ্রসূ হলে উপদেশ দান করুন,

﴿10﴾ يَخْشَىٰ	مَن	سَيَذَّكَّرُ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ا> للتعذر،فاعل – مستتير <هو> [خ ش ي][س] (خشْي،خشْية) ভয় করা, خشْيةٌ ভয়, خاشٍ উদ্বিগ্ন। ভয় করে	اسم موصول - فاعل যে	ح. استقبال +فعل مضارع مرفوع بالضمة V[ذ ك ر] ذ ك ر][ن] (ذِكْر) স্মরণ করা, II–স্মরণ করানো, V– স্মরণ করা , ذِكْرٌ ج أذكارٌ স্মরণ, تَذْكيرٌ স্মরণকারী, স্মারক,تَذَكُّرٌ স্মরণ, تذْكِرةٌ ج تذَاكِرٌ সংবাদ, অনুমতি, *تَذْكِرةٌ স্মারক, স্মরণকারী,* مُتذَكِّرٌ স্মরণকারী, উপদেশ গ্রহনকারী শীঘ্রই শিক্ষা নিবে সে

87|10|যে ভয় করে, সে উপদেশ গ্রহণ করবে,

ٱلۡأَشۡقَى ﴿11﴾	وَيَتَجَنَّبُهَا
معرفة اسم مرفوع بالضمة المقدر على <ى>- فاعل (شقاء) (شقْو) [س][ن] [ش ق و/ي] অসুখী করা, বিপদগ্রস্থ করা [ن] , অসুখী হওয়া [س], شَقًا،شقاءٌদুর্ভাগ্য, شَقِيٌّ ج أشقياءُদুর্ভাগা, অসুখী, أَشْقَىঅধিক হতভাগা। **হতভাগা**	ح.عطف +فعل مضارع مرفوع بالضمة + ضمير متصل – مفعول به V [ج ن ب]এড়নো, প্রতিহত করা, V–এড়িয়ে চলা, جَنْبٌ ج جُنوبٌপার্শ্ব, কিনারা, (جَر) جَنْبَপার্শে, নিকটে, পরবর্তী। **পাশ কাটাবে তা**
87|11|আর যে, হতভাগা, সে তা উপেক্ষা করবে,	

ٱلۡكُبۡرَىٰ ﴿12﴾	ٱلنَّارَ	يَصۡلَى	ٱلَّذِى
معرفة صفة منصوبة (كِبْر) [ك][ن][ك ب ر] বয়স হওয়া, বৃদ্ধ হওয়া [ن], বৃদ্ধি পাওয়া, বড় হওয়া [ك], كَبيرٌ ج كِبارٌ،كُبْراءُবড়, বিরাট। ভয়াবহ	معرفة اسم منصوب - مفعول به [ن و ر]II প্রস্ফুটিত হওয়া, প্রজ্বলিত করা, আলোয় পূর্ণ করা, نـارٌ (م) ج نِران আগুন, রাইফেল এর গুলি, النـارُজাহান্নাম আগুনে	فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على ألألف <ا>للتعذر (صلي) [س] [ض] [ص ل ي] ভাজা,পোড়ান [ض] , আগুনে উন্মুক্ত হওয়া[س] , مُصطلًىঅগ্নিকুন্ড, চুলা। পৌঁছবে	اسم موصول – صفة <الأشقى> যে
87|12|সে মহা-অগ্নিতে প্রবেশ করবে।			

يَمُوتُ	لَا	ثُمَّ
فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير <هو> (مَوْت) [ن][م و ت]মৃত্যু বরণ করা, মুছে যাওয়া, مَوتةٌ ،مَوْتমৃত্যু মরবে সে	ح. نفيনা	ح.عطفঅতঃপর
87|13|অতঃপর সেখানে সে মরবেও না, জীবিতও থাকবে না।		

يَحْيٰى ﴿13﴾	وَلَا	فِيهَا
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ا>للتعذر (حياة) [س][ح ي ي] বেঁচে থাকা, حَياةٌ ج حَيواتٌ জীবন। বাঁচবে সে	ح.عطف+ح.نفيএবং না	جرّ +ضمير - متعلق بالفعل তার মধ্যে
87|13|অতঃপর সেখানে সে মরবেও না, জীবিতও থাকবে না।		

تَزَكّٰى ﴿14﴾	مَنْ	أَفْلَحَ	قَدْ
فعل ماض مبني على الفتح المقدر على الألف <ا>للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> [V ذ ك ي] পবিত্র হল	اسم موصول - فاعل যে	فعل ماض مبني على الفتح (فَلْح) [ف][ف ل ح]IV ফেটে যাওয়া, চৌচির হওয়া, চাষ করা, IV–উন্নতি করা, সুখী হওয়া , فَلاحٌউন্নতি। কল্যান পেয়েছে সে	ح. تحقيق নিশ্চয়ই
87|14|নিশ্চয় সাফল্য লাভ করবে সে, যে শুদ্ধ হয়।			

﴿15﴾ فَصَلّٰى	رَبِّهٖ	اسْمَ	وَذَكَرَ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> [ص ل و](صلوة)II নামায আদায় করা, প্রার্থনা করা, صلوةٌ،صلاةٌ ج صلواتٌ নামায, ইসলামের আনুষ্ঠানিক প্রার্থনা। **এবং নামাজ আদায় করল**	اسم مجرور مضاف إليه +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ر ب ب][ن] (ربّ)**প্রভু হওয়া,** ربٌّ ج أربابٌ **রব।** **তার রবের**	اسم منصوب - مفعول به [س م و][ن] (سُموع)**উঁচু হওয়া, উপরে হওয়া, II-** سمّىনাম দেওয়া, ঢাকা, سُموعٌ**উচ্চতা,** سَمنءٌ ج سمواتٌ(م)**আকাশ,** إسمٌ ج أسماءٌনাম। **নাম**	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو> [ذ ك ر][ن] (ذِكْر) **স্মরণ করা, II–স্মরণ করানো, V–স্মরণ করা ,** ذِكْرٌ ج أذكارٌ**স্মরণ,** تَذَكُّرٌ**স্মরণকারী, স্মারক,** تَذْكيرٌ**স্মরণ,** تَذْكِرةٌ ج تذَاكِرٌ**সংবাদ, অনুমতি,** *تَذْكِرةٌস্মারক, স্মরণকারী,* مُتذَكِّرٌ**স্মরণকারী, উপদেশ** গ্রহনকার। **স্মরণ করল**

87|15|এবং তার পালনকর্তার নাম স্মরণ করে, অতঃপর নামায আদায় করে।

﴿16﴾ الدُّنْيَا	الْحَيٰوةَ	تُؤْثِرُوْنَ	بَلْ
صفة منصوبة [د ن و][ن]**নিকটে হওয়া, কাছে যাওয়া,** دَنِي ج أدنِياءُ**নিকট, নিচু, নিকৃষ্ট,** دُنيا ج دُنيَيات**পৃথিবী।** **দুনিয়ার**	معرفة اسم منصوب – مفعول به [ح ي ي][س] (حياة) **বেঁচে থাকা,** حَياةٌ ج حَيواتٌ**জীবন।** **জীবনকে**	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل [ا ث ر][ن] [ض] (أثْر،أثارة) IV **সম্প্রচার করা, অবহিত করা , IV–অগ্রাধিকার দেওয়া,** أثْرٌ**খোঁজ, অনুসন্ধান** **অগ্রাধিকার দিচ্ছ তোমরা**	ح. إضراب **বরং**

87|16|বস্তুতঃ তোমরা পার্থিব জীবনকে অগ্রাধিকার দাও,

﴾17﴿ وَأَبۡقَىٰٓ	خَيۡرٌ	وَٱلۡأٓخِرَةُ
ح.عطف +اسم مرفوع بالضم المقدر - على <ا> للتعذر (بقاء) [س][ب ق ئ] অবস্থান করা, অব্যাহত থাকা, বজায় রাখা, بقيةٌ ج بَقايا অবশিষ্টাংশ, স্থিতি, بقاءٌ অবশিষ্ট, বাকি, أبْقى অধিক স্থায়ী । **ও স্থায়ী**	اسم مرفوع – خبر (خيْر) [ض] [خ ي ر] পছন্দ করা, خيرٌ ج خِيارٌ، أخيار، خُيورٌ উত্তম, ভাল, বেশী উত্তম। **উত্তম**	ح.عطف +معرفة اسم مرفوع – مبتدأ II [ا خ ر] দেরী করা, স্থগিত করা, বাধা দেওয়া, بأخرةٍ، أخرةً পরিশেষে, পরবর্তীতে, الآخِرٌ আখির ج آخِرون،أواخِرُ শেষ, সর্বশেষ, الآخِرَةٌ পরকাল, আখেরাত, في أواخِرَ، أواخِرِ সব শেষে, অবশেষে। **অথচ আখেরাতের**

87|17|অথচ পরকালের জীবন উৎকৃষ্ট ও স্থায়ী।

﴾18﴿ ٱلۡأُولَىٰ	ٱلصُّحُفِ	لَفِي	هَٰذَا	إِنَّ
معرفة صفة مجرورة (أوْل) آلَ، [ن][ا و ل] **ফিরে আসা, آل পরিবার, آلة যন্ত্র,** أوّلٌ ،(م) أُولَى ج أولون،أوائِلُ ،(م) أليات أُوَل জ **প্রথম, শুরু, প্রথম অংশ,** أوّلاً প্রথম, **প্রথমে,** الأُلَىٰ **দুনিয়া।** **পূর্ববর্তী**	معرفة اسم مجرور - متعلق بخبر محذوف **[ص ح ف] II ভুল পড়া, বিকৃত করা,** صَحيفة ج صُحُفٌ **বইয়ের পাতা, কাগজ** **ছহীফা সমূহের**	ل-تاكيد +جرّ **অবশ্যই** **মধ্যে**	اسم اشارة - اسم <ان> **এটা**	ح. مشبه بفعل **নিশ্চয়ই**

87|18|এটা লিখিত রয়েছে পূর্ববতী কিতাবসমূহে;

وَمُوْسٰى ﴿19﴾	إِبْرٰهِيْمَ	صُحُفِ
ح.عطف +اسم علم مجروربالفتحة (ممنوع) – معطوفة مضاف إليه ও মুসার	اسم علم مجرور بالفتحة (ممنوع) - مضاف إليه بالإضافة ইব্রাহীমের	اسم مجرور - بدل <الصحف> [ص ح ف]II ভুল পড়া, বিকৃত করা, صُحُفٌ ج صَحِيفة বইয়ের পাতা, কাগজ সহিফা সমূহে
87|19|ইব্রাহীম ও মূসার কিতাবসমূহে।		

।। সূরা আল – আ'লা সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ

৮৮। সূরা আল-গাশিয়া : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:২৬

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

ٱلۡغَٰشِيَةِ ﴿1﴾	حَدِيۡثُ	أَتٰكَ	هَلۡ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه	اسم مرفوع – فاعل [ح د ث][ف][ك] II (حُدوث،حَداثةٌ)ঘটা,	فعل ماض مبني على الفتح +ضمير متصل – مفعول به [ا ت ي] [ض] (أتي،اِتيان،مأتاة)আসা,	ح. استفهام কি

(غشْو) [س] [ن] [غ ش و] (غشاوةٌ)আসা [ن], গোপন করা, ঢাকা [س], غِشاءٌ ج أغشيةঢাকনা, আবরন। আচ্ছন্নকারী	সংঘটিত হওয়া [ف] , নূতন [ك],ll - বলা, আলোচনা করা, حدَثٌ ج أحْداثٌ নূতন, খারাপ কাজ, حديثٌ ج أحاديثٌ،حِدْثان কথা, বক্তব্য। বৃত্তান্ত	পৌঁছা, আনা, সম্পাদন করা, পাওয়া, أتيانসম্পাদন, آتٍপরবর্ত্তী, مأتًى ج مآتআসার স্থান । পৌঁছেছে তোমার কাছে	

88|1|আপনার কাছে আচ্ছন্নকারী কেয়ামতের বৃত্তান্ত পৌঁছেছে কি?

خٰشِعَةٌ ﴿2﴾	يَوْمَئِذٍ	وُجُوْهٌ
اسم مرفوع – خبر (خُشوع) [ف] [خ ش ع] বিণীত হওয়া , অবনত হওয়া , خُشوعٌনম্রতা, বিনয়, خاشِعٌবিণয়ী, নম্র ভীত সন্ত্রস্থ	ظ. زمان منصوب «يوم» + «إذٍ» بالكسر لإلتقاء السكينين ،سكونه و سكون التنوين – مضاف إليه ~ و هو مضاف،الجملة محذوفة تقدير (.. حديث الغشية) – مضاف إليه : [المعوض بالتنوين < ذٍ> ~ " تنوين العِوَضِ"] সেদিন	اسم مرفوع – مبتدأ (وجاهة) [ك] [و ج ه]বিশিষ্ট হওয়া, وجْهٌ ج وجوهٌ জিহাতٌ ج جِهَةٌদিক, এলাকা, وُجوهٌমুখমন্ডল, সামনে, বর্হিদেশ । মুখমন্ডল

88|2|অনেক মুখমন্ডল সেদিন হবে লাঞ্ছিত,

نَّاصِبَةٌ ﴿3﴾	عَامِلَةٌ
اسم مرفوع صفة مرفوعة	اسم مرفوع

(نصَب) (نصْب) [س][كُ] [ن][ن ص ب] দাঁড় করানো, তৈরী করা, স্থাপন করা [ن], যন্ত্রণা করা, ক্লান্ত করা [كُ], ক্লান্ত হওয়া, পরিশ্রান্ত হওয়াহওয়া [س], نصْبٌ ج أنصابٌমাটিতে স্থাপন করা, أنصابٌ ج نُصُبٌমূর্তি, (جَرٌ) نُصْبَসামনে, বিপরীতে। **ক্লান্ত শ্রান্ত**	(عمَل) [س][ع م ل] **করা, কাজ করা, সম্পাদন করা , عمَلٌকাজ, অভ্যাস, কাজকর্ম। কঠোর শ্রম**
88|3|ক্লিষ্ট, ক্লান্ত।	

تَصْلَىٰ	نَارًا	حَامِيَةً ﴿4﴾
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ا>، فاعل – مستتير <هي> (صلي) [س][ض] [ص ل ي] **ভাজা,পোড়ান [ض] , আগুনে উন্মুক্ত হওয়া[س] , مُصطلًىঅগ্নিকুন্ড, চুলা। ভস্মিভূত হবে**	اسم منصوب-مفعول به [ن و ر]॥ **প্রস্ফুটিত হওয়া, প্রজ্জ্বলিত করা, আলোয় পূর্ণ করা,** (م) ج نِران نَارٌআগুন, **রাইফেল এর গুলি, النَارُজাহান্নাম। আগুনে**	صفة منصوبة [ح م ي/و][س] উত্তপ্ত হওয়া, **গলানো,**حمْوউত্তাপ। **উত্তপ্ত**
88|4|তারা জ্বলন্ত আগুনে পতিত হবে।		

تُسْقَىٰ	مِنْ	عَيْنٍ	ءَانِيَةٍ ﴿5﴾
فعل مضارع مجهول مرفوع بالضمة المقدر على <ا>للتعذر ،نائب فاعل – مستتير <هي> (سقْي) [ض] [س ق ي] **IV দেওয়া, পান করা, পানি দেওয়া(চাষে),IV-পান করতে দেওয়া, পান করা ,سقْيসেঁচণ, سقاءٌ ج سقاءُونপানি বাহী।**	جرّ **হতে**	اسم مجرور – متعلق بفعْل [ع ي ن]॥**নির্দ্দিষ্ট করা, চিহ্নিত করা, ج (م)عيْنٌ عُيونٌচোখ, বদ নযর, ঝর্ণা, উৎস ঝর্ণা**	اسم مجرور [ا ن ي][ض]পরিপক্ক হওয়া, পেটে যাওয়া, কাছাকাছি আসা, أنًى ج آناءٌ ،(م) آنٍসময়, কাল, آنِيةٌফুটন্ত, গরম। **ফুটন্ত**

			পান করান হবে
88|5|তাদেরকে ফুটন্ত নহর থেকে পান করানো হবে।			

طَعَامٌ	لَهُمْ	لَّيْسَ
اسم مرفوع – اسم <ايس> مؤخر (طعَم) [س][ط ع م]খাওয়া, স্বাদ নেওয়া, طعامٌ ج أطْعِمَةখাদ্য, পুষ্ট খাদ্য	جرّ +ضمير-متعلق بخبر مقدم <ليس> তাদের জন্য	فعل ماض ناقص «كان» [ل ي س] না, একে বারে অস্তিত্বহীন। নও তুমি নেই
88|6|কন্টকপূর্ণ ঝাড় ব্যতীত তাদের		

﴾6﴿ ضَرِيعٍ	مِنْ	إِلَّا
اسم مجرور – متعلق بصفة <طعام> (ضرَع) (ضراعة) [س] [ك] [ف][ض ر ع] বিণীত হওয়া, ভদ্র হওয়া, ضارِعٌবিণয়ী,ضرْعٌস্তনবৃন্ত, ضريعةٌ،ضريعٌবড় স্তন বৃন্ত, ضريعٌখারাপ তৃণ, ঘাস, কাঁটাযুক্ত ঝাড়, কাঁটা গাছ। কাঁটাযুক্ত ঝাড়	جرّ হতে	ح. استثناء ব্যতীত
জন্যে কোন খাদ্য নেই।		

وَلَا	يُسْمِنُ	لَّا
ح.عطف +ح. نفي এবং না	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير <هو> IV (سِمَن) [س] [س م ن]মোটা হওয়া, IV – মোটা করা, মাংশল করা, سِمَنٌমোটা, মাংশল, বলিষ্ঠ।	ح. نفي না

	পুষ্ট করবে	
88|7|এটা তাদেরকে পুষ্ট করবে না এবং ক্ষুধায়ও উপকার করবে না।		

﴾7﴿ جُوْعٍ	مِنْ	يُغْنِيْ
اسم مجرور (جوْع) [ن][ج و ع] ক্ষুধার্ত হওয়া, অভূক্ত থাকা, جُوعٌঅভূক্ত, ক্ষুধা। **ক্ষুধা**	جرّ **হতে**	فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ي>للثقل ،فاعل – مستتير <هو> (غِنًى،غناء) [س][غ ن ي IV] অভাবমুক্ত হওয়া, ধণী হওয়া, IV–ধণী করা, X–ধণী হওয়া, غِنًىসম্পদ, প্রাচুর্য, اِستغناءٌ**আত্মত্যাগ,** غانيةٌ ج غانيات**সুন্দরী** মহিলা। **উপশম করবে**
88|7|এটা তাদেরকে পুষ্ট করবে না এবং ক্ষুধায়ও উপকার করবে না।		

﴾8﴿ نَّاعِمَةٌ	يَوْمَئِذٍ	وُجُوْهٌ
اسم مرفوع – خبر (نعْمة) [س] [ف] [ن] [ن ع م] **আরাম আয়েশে বাস করা,** نَعَمٌ ج أنْعامٌ**পশু, গৃহপালিত পশু।** **আয়েশে বাস করা,খুশী হওয়া,** نَاعِمٌউৎফুল্ল, উজ্জ্বল, نَاعَمٌ ج أنْعامٌ**পশু, গৃহপালিত পশু।** **উজ্জ্বল**	ظ. زمان منصوب «يوم» + «اذٍ» بالكسر لإلتقاء السكينين ،سكونه و سكون التنوين – مضاف إليه ~ و هو مضاف،الجملة محذوفة تقديره – مضاف إليه[المعوض بالتنوين«اذٍ»] **সেদিন**	اسم مرفوع – مبتدأ (وجاهة) [ك] [و ج ه]] **বিশিষ্ট হওয়া,** جِهَةٌ ج جِهاتٌ**দিক, এলাকা,** وجْهٌ ج وُجوهٌ**মুখমন্ডল, সামনে, বর্হিদেশ।** **মুখমন্ডল**

88|8|অনেক মুখমন্ডল সেদিন হবে, সজীব,

رَاضِيَةٌ ﴿9﴾	لِّسَعْيِهَا
اسم مرفوع – مبتدأ مؤخر (رِضًى،رِضْوان) [س][ر ض و]সন্তুষ্ট হওয়া, একমত হওয়া, رَضِيٌ ج أَرْضِياءُসন্তুষ্ট, খুশী। সন্তুষ্ট	جرّ +اسم مجرور-خبر مقدم +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (سعْي)][ف][س ع ي]হাঁটা, দৌড়া, চেষ্টা করা, سَعْيٌ হাঁটা, দৌড়, السعْيসা'য়ী । তার প্রচেষ্টার জন্য
88|9|তাদের কর্মের কারণে সন্তুষ্ট।	

عَالِيَةٍ ﴿10﴾	جَنَّةٍ	فِيْ
صفة مجرورة [ن] [ع ل و /ي]উঁচু হওয়া, মহান হওয়া, عُلُوউচ্চ, উঁচু, বড়ত্ব, (جرّ)علىউপরে , عِلِّيٌّ ج عِلِّيُّونউচ্চমর্যাদার স্থান। সুমহান শ্রেষ্ঠ উচ্চমর্যাদা সম্পন্ন	اسم مجرور - متعلق بخبر <ناعمة> (جنّ،جُنون) [ن][ج ن ن]ঢাঁকা, গোপন করা, নামা,(م)جِنِّيةٌ جَنَّةٌ ج جَنَّاتٌ، جِنان ,جِنٌّজ্বিন, বেহেস্ত, বাগান । জান্নাতের	جرّ মধ্যে
88|10|তারা থাকবে, সুউচ্চ জান্নাতে।		

لَّا	تَسۡمَعُ	فِيۡهَا	لٰغِيَةً ﴿11﴾
ح. نفي না	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير <هي> [س م ع] [ي] (سمَع)শুনা, سمْعٌ ج أسماعٌকান। শুনবে	جرّ +ضمير – متعلق بالفعل তার মধ্যে	اسم منصوب - مفعول به (لغْو) [ن][ل غ و]কথা বলা, لغْوবাজেকথা । কোন অর্থহীন কথা
88|11|তথায় শুনবে না কোন অসার কথাবার্তা।			

فِيۡهَا	عَيۡنٌ	جَارِيَةٌ ﴿12﴾
جرّ +ضمير – خبر مقدم তার মধ্যে	اسم مرفوع - مبتدأ [ع ي ن]।।নির্দিষ্ট করা, চিহ্নিত করা, عيْنٌ(م) ج عُيونٌচোখ, বদ নযর, ঝর্ণা, উৎস। ঝর্ণা	صفة مرفوعة (جرْي) [ض][ج ر ي]প্রবাহিত করা, সংঘটিত হওয়া, جريগতিপথ, গতি । প্রবাহমান
88|12|তথায় থাকবে প্রবাহিত ঝরণা।		

فِيۡهَا	سُرُرٌ	مَّرۡفُوۡعَةٌ ﴿13﴾
جرّ +ضمير – خبر مقدم তার মধ্যে	اسم مرفوع – مبتدأ مؤخر	صفة مرفوعة

(رَفْع) [ف] [ر ف ع]তুলে ধরা, উপরে উঠান, مرفوعة উত্তোলিত। সুউচ্চ	(سُرُور) [ن][س ر ر] সুখী করা, আনন্দিত করা, سريرةٌ ج سرائِرُগোপন, গোপনীয় চিন্তা, মন, হৃদয়, سريرٌ ج أَسِرَّةٌবিছানা, সিংহাসন। আসন সমূহ	
88|13|তথায় থাকবে উন্নত সুসজ্জিত আসন।		

مَّوْضُوْعَةٌ ﴿14﴾	وَّاَكْوَابٌ
صفة مرفوعة (وَضْع) [ف][و ض ع]স্থাপন করা, দাঁড় করা,وَضْعٌ ج أوضاعٌস্থাপন,পরিস্থিতি, গঠন, ضِعْةٌনীচতা,وضَعَةٌঅবস্থান, পরিস্থিতি, مَوْضُوعةٌস্থাপিত। সুসজ্জিত	ح.عطف +اسم مرفوع – مبتدأ مؤخر (كَوْب) [ن][ك و ب]পান করা, كُوْبٌ ج أكوابٌমগ, পানপাত্র, হাতল বিহীন পানপাত্র। পানপাত্রগুলি
88|14|এবং সংরক্ষিত পানপাত্র	

مَبْثُوْثَةٌ ﴿16﴾	وَزَرَابِيُّ	مَصْفُوْفَةٌ ﴿15﴾	وَنَمَارِقُ
صفة مرفوعة (بثّ) [ن][ب ث ث] ছড়ান, খোলা,বিছানো,بثٌّছাড়ানো, مَبْثوثةছড়ানো, বিছানো । বিছান	ح.عطف +اسم مرفوع – مبتدأ مؤخر [ز ر ب][س] (زَرَب)প্রবাহিত হওয়া, زُرْبِيَّةٌ ج زَرَابِيُّনরম কার্পেট, কম্বল। নরম শয্যা	صفة مرفوعة (صفّ) [ن][ص ف ف]সারিবদ্ধ করা, صفٌّ ج صُفوفٌসারি করণ, مَصفوفةٌ ج مَصْفوفةٌসারিবদ্ধ, مصفوفاتমৌল, উপাদান। সারিবদ্ধ	ح.عطف +اسم مرفوع – مبتدأ مؤخر، معطوف ن م ر ق]، نُمْرُقٌ، [نُمْرُقَةٌ ج نَمارِقُ গদি, বালিশ, জিনের গদি এবং গদি সমূহ
88|15|এবং সারি সারি গালিচা 88|16|এবং বিস্তৃত বিছানো কার্পেট।			

أَفَلَا	يَنظُرُونَ	إِلَى
ح. استفهام +ح. زائدة +ح. نفي তবে কি না	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (نظَر،منْظَر) [ن][ن ظ ر]দেখা, نَظَرٌ ج أنظارٌদেখার কাজ, নযর, দর্শন। লক্ষ্য করে তারা	جرّপ্রতি
88|17|তারা কি উষ্ট্রের প্রতি লক্ষ্য করে না যে, তা কিভাবে সৃষ্টি করা হয়েছে?		

ٱلۡإِبِلِ	كَيۡفَ	خُلِقَتۡ ﴿17﴾
معرفة اسم مجرور – متعلق بالخبر إبلٌ، [ا ب ل] উঠ, إبالةٌবান্ডিল, أبلةٌচাচী উঠের	ح. استفهام – حال কেমন	فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،<تْ>التأنيث،نائب فاعل – مستتير <هي> (خلْق) [ن][خ ل ق] গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خلْقٌসৃষ্টি, خُلْقٌ ج أخلقٌপ্রকৃতি, স্বভাব। সৃষ্টি করা হয়েছে
88|17|তারা কি উষ্ট্রের প্রতি লক্ষ্য করে না যে, তা কিভাবে সৃষ্টি করা হয়েছে?		

وَإِلَى	ٱلسَّمَآءِ	كَيۡفَ	رُفِعَتۡ ﴿18﴾
ح.عطف جرّ+এবং দিকে	معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل ، معطوفة (سُموع) [ن][س م و]উঁচু হওয়া, উপরে হওয়া, II- سمّىনাম দেওয়া, ঢাকা, سُموعٌউচ্চতা, سَمنءٌ ج سمواتٌ(م)আকাশ, إسمٌ ج أسماءٌনাম। আকাশের	ح. استفهام – حال কেমন	فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،<تْ>التأنيث ،نائب فاعل – مستتير <هي> (رعْف) [ف] [ر ف ع]তুলে ধরা, উপরে উঠান, مرفوعة উত্তোলিত।

উঁচু করা হয়েছে			

88|18|এবং আকাশের প্রতি লক্ষ্য করে না যে, তা কিভাবে উচ্চ করা হয়েছে?

نُصِبَتْ ﴿19﴾	كَيْفَ	ٱلْجِبَالِ	وَإِلَى
فعل ماض مجهول مبني على الفتح ‹تْ›التأنيث ،نائب فاعل – مستتير ‹هي› **(نصْب) [س][ك] [ن][ن ص ب]** **(نصَبَ)দাঁড় করানো, তৈরী করা, স্থাপন করা [ن], যন্ত্রণা করা, ক্লান্ত করা [ك], ক্লান্ত হওয়া, পরিশ্রান্ত হওয়াহওয়া [س], نصْبٌমাটিতে স্থাপন করা, ج أنصابٌ نُصْبٌ মূর্তি, ج أنصابٌ (جّر) نُصْبَসামনে, বিপরীতে।** **স্থাপন করা হয়েছে**	**ح. استئنافية – حال** **কেমন**	**معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل ،معطوفة** **(جبْل) [ض] [ن][ج ب ل]আকার দেওয়া,جبَلٌ ج جِبالٌ، أجْبَلٌপাহাড়, পর্বতমালা।** **পর্বতমালার**	**ح.عطف +جرّ** **এবং দিকে**

سُطِحَتْ ﴿20﴾	كَيْفَ	ٱلْأَرْضِ	وَإِلَى
فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،‹تْ›التأنيث ‹هي› فاعل – مستتير، **(سطْح) [ف][س ط ح]ছড়িয়ে দেওয়া, বিছায়ে দেওয়া, সমান করা, سطْحٌ سُطوح পৃষ্ঠতল, ভূপৃষ্ঠ।** **বিছান হয়েছে**	**ح. استفهام – حالকেমন**	**معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل** **[ا ر ض]॥ মাটিতে গাঁড়া, أرْضٌ(م) ج أراضٍ ،أراضون পৃথিবী, জমিন।** **যমীনের**	**ح.عطف +جرّ** **এবং দিকে**

88|20|এবং পৃথিবীর দিকে যে, তা কিভাবে সমতল বিছানো হয়েছে?

مُذَكِّرٌ ﴿21﴾	أَنتَ	إِنَّمَآ	فَذَكِّرْ
اسم مرفوع [II ذ ك ر] ذ ك ر][ن] (ذِكْر) **স্মরণ করা, II–স্মরণ করানো, V– স্মরণ করা , ذِكْرٌ ج أذكارٌ স্মরণ, تَذْكِيرٌ স্মরণকারী, স্মারক,تَذَكُّرٌ স্মরণ, تَذْكِرَةٌ ج تذَاكِرٌ সংবাদ, অনুমতি,** *تَذْكِرَةٌ স্মারক, স্মরণকারী,* **مُتذَكِّرٌ স্মরণকারী, উপদেশ** গ্রহনকারী। **উপদেশদাতা**	ضمير منفصل – مبتدأ **তুমি**	ح. مشبه بفعل +ما- كافة و مكفوفة **প্রকৃত পক্ষে**	ح. استئنافية(الفضيحة) +فعل أمر مبني على السُكون ،فاعل – مستتير <انت> [II ذ ك ر] ذ ك ر][ن] (ذِكْر) **স্মরণ করা, II–স্মরণ করানো, V– স্মরণ করা , ذِكْرٌ ج أذكارٌ স্মরণ, تَذْكِيرٌ স্মরণকারী, স্মারক,تَذَكُّرٌ স্মরণ, تَذْكِرَةٌ ج تذَاكِرٌ সংবাদ, অনুমতি,** *تَذْكِرَةٌ স্মারক, স্মরণকারী,* **مُتذَكِّرٌ স্মরণকারী, উপদেশ** গ্রহনকারী । **অতএব উপদেশ দাও**
88|21|অতএব, আপনি উপদেশ দিন, আপনি তো কেবল একজন উপদেশদাতা,			

بِمُصَيۡطِرٍ ﴿22﴾	عَلَيۡهِمۡ	لَّسۡتَ
جرّ (زائد) +اسم مجرور – لفظًا منصوب خبر <ليس>، [ص ي ط ر] / [س ي ط ر] **QI**আদেশ করা, নিয়ন্ত্রণ করা, سيطرة**আদেশ,** আইন, **مُسَيطِرٌشাসসক,** নিয়ন্ত্রণকারী। *[মাসহাফে* ওসমানীতে *`ص' – অভিধানে 'মাদ্দা' য় 'س']* । **জবরদস্তিকারী**	جرّ +ضمير – متعلق بخبر <ايس> **তাদের উপর**	فعل ماض ناقص مبني على السُكون لإتصاله +ضمير المُخاطب متصل - اسم <ليس> [ل ي س]না, একে বারে অস্তিত্বহীন। **নও তুমি।**
88|22|আপনি তাদের শাসক নন,		

﴾23﴿ وَكَفَرَ	تَوَلَّىٰ	مَنْ	إِلَّا
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو> IV (كفْر) [ض] [ك ف ر]ঢেকে রাখা, গোপন করা, বিদ্রোহী হওয়া,IV-বিদ্রোহী করা, বিদ্রোহী বলা, كافِرٌ ج كافرون،كُفّارٌকাফের, বিদ্রোহী। অস্বীকার করে	فعل ماض مبني على الفتح على <ا>للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> (ولاء،ولاية) [س] [و ل ي V] কাছে হওয়া, নিকটে হওয়া, V-দখল করা, বাধা দেওয়া, বিরত থাকা, وَلِيٌّ ج أولياءُনিকট, নিকটে, সাহায্যকারী, বন্ধু। মুখ ফিরায়	اسم موصول - مستثنى যে	ح. استثناء ব্যতীত

88|23|কিন্তু যে মুখ ফিরিয়ে নেয় ও কাফের হয়ে যায়,

﴾24﴿ ٱلْأَكْبَرَ	ٱلْعَذَابَ	ٱللَّهُ	فَيُعَذِّبُهُ
معرفة صفة منصوبة (كِبْر) [ك][ن][ك ب ر]বয়স হওয়া, বৃদ্ধ হওয়া [ن], বৃদ্ধি পাওয়া, বড় হওয়া [ك], كَبيرٌ ج كِبارٌ،كُبْراءُবড়, বিরাট। কঠিন	معرفة اسم منصوب – مفعول به [ض] [ك][ع ذ ب] মিষ্টি হওয়া, আনন্দদায়ক হওয়া, [ض] বাধা দেওয়া, II-শাস্তি দেওয়া, عَذابٌ ج أعذِبةٌ، عذاباتٌশাস্তি, ব্যথা। আযাব	لفظ الجلالة مرفوع – فاعل [اله]II খোদা বানান, إلاهٌ،إلهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, الله (ال+اله) আল্লাহ। আল্লাহ	ح. استئنافية +فعل مضارع مرفوع بالضمة +ضمير متصل – مفعول به [ض] [ك][ع ذ ب]II মিষ্টি হওয়া, আনন্দদায়ক হওয়া, [ض] বাধা দেওয়া, II-শাস্তি দেওয়া, عَذابٌ ج أعذِبةٌ، عذاباتٌশাস্তি, ব্যথা। আযাব দিবেন তাকে অতঃপর

88|24|আল্লাহ তাকে মহা আযাব দেবেন।

(25) إِيَابَهُمْ	إِلَيْنَآ	إِنَّ
اسم منصوب - اسم <ان> +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (أوْب،أوْبة)آبَ(ا و ب][ن]ফিরে আসা,مآبٌ প্রত্যাবর্তন স্থল। **প্রত্যাবর্তন তাদের**	جرّ +ضمير – متعلق بخبر <ان>مقدر **আমাদের দিকে**	ح. مشبه بفعل **নিশ্চয়ই**
88|25|নিশ্চয় তাদের প্রত্যাবর্তন আমারই নিকট,		

(26) حِسَابَهُمْ	عَلَيْنَا	إِنَّ	ثُمَّ
اسم منصوب - اسم<ان> +ضمير متصل – جرّ مرحبا (حسْب،حِسابٌ) [ن] [ح س ب] III হিসাব করা, III–হিসাব চুড়ান্ত করা, হিসাব গ্রহন করা ج حِسابٌ ,حِساباتٌহিসাব, বিল। **তাদের হিসাব**	جرّ +ضمير – خبر <ان>مقدر **আমাদের উপর**	ح. مشبه بفعل **নিশ্চয়ই**	ح.عطف **অতঃপর**
88|26|অতঃপর তাদের হিসাব-নিকাশ আমারই দায়িত্ব।			

।।সূরা আল্-গাশিয়া সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ

৮৯। সূরা আল্-ফযর : মাক্কী

রুকু: ০১　　　　আয়াত:৩০

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

عَشۡرٖ (2)	وَلَيَالٍ	وَٱلۡفَجۡرِ (1)
صفة مجرورة (عُشْر) [ن][ع ش ر] দশমাংশ সংগ্রহ করা, عُشْر ج أشارٌ،عُشورٌএক দশমাংশ, عَشْرٌদশ। **দশ**	جرّ +(و-القشم) +اسم مجرور-بالفتح، حذفت <ي> ~ الاصل<ليالي>، لأنه ممنوع من الصرف – فاختصرت الفتحة النائبة عن الكسرة لثقلها ، و عِوَض التنوين - مقسم به ليلٌ ج ليالي، [ل ي ل]রাতের সময়, রাত,، ليلةٌ ج ليلاتٌ ليالٍ রাত, ليلًا রাতের বেলা। **রাতের শপথ**	جرّ (و-القشم) +اسم مجرور- مقسم به (فجْر،فُجور) [ن][ف ج ر] পরিষ্কার করা, খনন করা, বিচ্ছিন্ন করা, ব্যভিচার করা, فَجْرٌপ্রাতঃকাল, সকাল, فاجِرٌ ج فُجَّارٌ ব্যভিচারী , فُجورٌঅনৈতিক কাজ। **ফযরের কশম**
89|1|শপথ ফজরের, 89|2|শপথ দশ রাত্রির, শপথ তার,		

وَٱلۡوَتۡرِ (3).	وَٱلشَّفۡعِ
(وتَر) [س][و ت ر] معطوف-معرفة اسم مجرور+ جرّدড়ি বাঁধা,ভূল করা, ক্ষতি করা, وِترٌ، وتْرٌবেজোড় সংখ্যা, একে একে। **বেজোড়ের**	جرّ (و-القشم) +معرفة اسم مجرور – معطوف (شفْع) [ف] [ش ف ع] সংযুক্ত করা, যোগ করা , شفْعٌ جأشفاعٌজোড় সংখ্যা।

	জোড়ের
89|3|যা জোড় ও যা বিজোড়	

يَسۡرِ ﴿4﴾	إِذَا	وَٱلَّيۡلِ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ي>ا محذوف،خطًا الكسرة لتشابه الآيات (سُرًى) [ض][س ر ي]রাতে ভ্রমণ করা,রাতে চলে যাওয়া, سَرِي ج أسرِيةٌ، سُريان গাড়ি, ছোট নদী। **চলে যায়**	ظ. زمان – متعلق بحال <الليل> محذوف **যখন**	جرّ (القسم) +معرفة اسم مجرور – مقسم به ليالي ج ليلٌ، [ل ي ل]রাতের সময়, রাত,، ليالٍ ج ليلاتٌ ليلةٌরাত, ليلاًরাতের বেলা। **শপথ, রাতের**
89|4|এবং শপথ রাত্রির যখন তা গত হতে থাকে		

قَسَمٌ	ذَٰلِكَ	فِي	هَلۡ
اسم مرفوع – مبتدأ (قَسْم) [ض] [ق س م] IV] ভাগ করা, বিতরন করা, IV–শপথ কর। **কোন শপথ**	اسم اشارة (ل - للبعد، ك - حرف الخطاب) ، جر والمجرور - خبر مقدم এর	جرّ মধ্যে	ح. استفهام কি
89|5|এর মধ্যে আছে শপথ			

حِجْرٍ ﴿5﴾	لِّذِىْ
اسم مجرور – مضاف اليه (حجْرانِ،حِجْر،حِجْر) [ن][ح ج ر] থামানো, অনুমতি না দেওয়া, حَجْرٌ ،حِجْر ج أحجار،حُجور**বাধা,** নিষেধ,কোল, ঘোটকী, **বক্ষ, মন,বুদ্ধিমত্তা, সাপের গর্ত , حَجَرٌপাথর,** حُجْرةٌ**ঘর,** হুজরা। **বিবেক সম্পন্নদের**	جرّ +اسم مجرور ذُو،ذي،ذا ،ذات(م) ج [ذو] ذوِو،أُولو،ذُوات(م) অধিকারী, মালিক **জন্য তাদের**
জ্ঞানী ব্যক্তির জন্যে।	

بِعَادٍ ﴿6﴾	رَبُّكَ	فَعَلَ	كَيْفَ	أَلَمْ تَرَ
جرّ +اسم علم مجرور আদের **সাথে**	اسم مرفوع - فاعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب] **প্রভু হওয়া,** ربٌّ ج أربابٌ**রব ।** **তোমার রব**	فعل ماض مبني على الفتح (فِعْل،فَعْل)[ف] [ف ع ل]**করা,সম্পাদন করা, কাজ করা,** فِعْلٌ ج أفْعالٌ فِعالٌ،**কাজ, কর্ম, প্রভাব।** **করেছেন**	ح. استفهام- حال**কেমন**	ح. استفهام +ح. نفي +فعل مضارع مجزوم بحذفت <ي> [ر ا ي] **নাই কি দেখ তুমি**
89|6|আপনি কি লক্ষ্য করেননি, আপনার পালনকর্তা আদ বংশের ইরাম গোত্রের সাথে কি আচরণ করেছিলেন,				

ٱلْعِمَادِ ﴿7﴾	ذَاتِ	إِرَمَ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه (عمْد) [ض][ع م د]সহায়তা করা, ইচ্ছা করা, খ্রীষ্টান করা, عمْدٌ**অভিপ্রায়,** عِمادٌ ج عُمُدٌ**সহায়তা,** স্তম্ভ, খুঁটি।	صفة مجرورة – مضاف ذُو،ذي،ذا ،ذات(م) ج [ذو] ذوِو،أُولو،ذُوات(م) অধিকারী, মালিক।	اسم علم مجرور بالفتحة (ممنوع) – مضاف ،مضاف المقدر <أهل> **এরামের**

স্তম্ভের	অধিকারী	
89|7|যাদের দৈহিক গঠন স্তম্ভ ও খুঁটির ন্যায় দীর্ঘ ছিল এবং		

ٱلۡبِلَٰدِ﴿8﴾	فِي	مِثۡلُهَا	يُخۡلَقۡ	لَمۡ	ٱلَّتِي
معرفة اسم مجرور – متعلق بفعْل (بلادك) [ك][ب ل د] বোকা হওয়া, بلدٌ ج بِلادٌদেশ, স্থান, গ্রাম। **দেশ সমূহে**	جرّ **মধ্যে**	اسم مرفوع – نائب فاعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (مُثُول) [ن] [م ث ل]অনুরুপ হওয়া, অনুকরণ করা, مِثْلٌ ج أمثالٌঅনুরূপ, সমান। **তার মত**	فعل مضارع مجهول مجزوم بالسكون (خاْق) [ن][خ ل ق] গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خَلْقٌসৃষ্টি, خُلْقٌ ج أخلقٌপ্রকৃতি। **সৃষ্টি করা হয়**	ح. نفي **নাই**	اسم موصول **যা**
89|8|যাদের সমান শক্তি ও বলবীর্যে সারা বিশ্বের শহরসমূহে কোন লোক সৃজিত হয়নি					

بِٱلۡوَادِ﴿9﴾	ٱلصَّخۡرَ	جَابُوا۟	ٱلَّذِينَ	وَثَمُودَ
جرّ +معرفة اسم مجرور – متعلق يالفعل [ض][و د ي] হত্যার ক্ষতিপূরণ দেওয়া, রক্ত মূল্য দেওয়া, دِيةٌ ج دِياتٌক্ষতিপরণ, وادٍ ج أودِيةٌ উপত্যকা, নদী, নদীর তলদেশ। **উপত্যকায়**	معرفة اسم منصوب – مفعول به [ص خ ر]،صخْرٌ(ة) ج صُخورٌ،صُخورةٌ،صُخورات প্রস্তর, পাথর **প্রস্তর**	فعل ماض مبني على الضم لاتصالة +ضمر متصل – فاعل ،<ان> فارقة [ج و ب] [ن] (جوْب، (تجوابভ্রমন করা, ভেদ করা, কাটা, جوْبةٌ **খোদাই করেছিল** جوْباتٌ ج ছিদ্র, গর্ত, جوابٌ ج أجوِيةٌউত্তর।	اسم موصول **যারা**	ح.عطف +اسم علم مجرور بالفتحة (ممنوع) এবং **সামুদের**
89|9|এবং সামুদ গোত্রের সাথে, যারা উপত্যকায় পাথর কেটে গৃহ নির্মাণ করেছিল।				

وَفِرۡعَوۡنَ	ذِی	ٱلۡأَوۡتَادِ ﴿10﴾
ح.عطف +اسم علم -معطوف <ثمود> مجرور بالفتحة (ممنوع) **এবং ফেরাউনের**	اسم مجرور – صفة مجرورة ذُو،ذي،ذا ،ذات(م) ج [ذو] ذوِو،أُولو،ذُوات(م) অধিকারী, মালিক। **অধিপতি**	معرفة اسم مجرور -مضاف إليه [و ت د] ॥ পেরাক পোঁতা, বাঁধা, নিরাপদ করা, أوتادٌ ج وتِدٌ، وَتَدٌপেরাক, পিন। **লৌহ শলাকার**
89|10|এবং বহু কীলকের অধিপতি ফেরাউনের সাথে		

ٱلَّذِينَ	طَغَوۡاْ	فِي	ٱلۡبِلَٰدِ ﴿11﴾
اسم موصول-صفة <عاد وثمود> **যারা**	فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا> حذفت لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،<ا>فارقة [ط غ ي][ن] [ف][س] (طغْي،طغًى) **সীমালঙ্ঘণ করা,** طاغٍ ج طُغاةٌবিদ্রোহী, طُغوانবন্যা, **নিপীড়ন, অত্যাচার ।** **সীমালঙ্ঘন করেছিল**	جرّ **মধ্যে**	معرفة اسم مجرور-متعلق بالفعل (بلادك) [ك][ب ل د] বোকা হওয়া, بلدٌ بِلادٌ جদেশ, স্থান, গ্রাম। **দেশে**
89|11|যারা দেশে সীমালঙ্ঘন করেছিল।			

فَأَكۡثَرُواْ	فِيهَا	ٱلۡفَسَادَ ﴿12﴾
ح.عطف +فعل ماض مبني على الضم لاتصالة +ضمير متصل – فاعل ،<ا>فارقة	جرّ +ضمير – مجرور متعلق بالفعل	معرفة اسم منصوب – مفعول به

(فساد،فسود) [ض] [ن] [ف س د] খারাপ হওয়া, পচে যাওয়া, فسادٌপচণ, দুষ্টামি, অনৈতিকতা, فاسِدٌদুর্নিতীগ্রস্থ, খারাপ। **বিপর্যয়**	**তার মধ্যে**	(كثُر) [ك][ن][ك ث رIV] অতিরিক্ত গণনা করা [ن] ,বৃদ্ধি করা, অনেক হওয়া [ك], كُثْرٌবেশী পরিমান, كثْرةٌঅনেক সংখ্যক, أكثارٌ،كثيرون ج كثيرٌঅনেক, বেশী। **এবং বৃদ্ধি করেছিল**
89|12|অতঃপর সেখানে বিস্তর অশান্তি সৃষ্টি করেছিল।		

رَبُّكَ	عَلَيْهِمْ	فَصَبَّ
اسم مرفوع – فاعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب]প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌরব । **রব**	جرّ +ضمير متصل – متعلق بالفعل **তাদের উপর**	ح.عطف فعل ماض مبني على الفتح (صبّ) [ن] [ص ب ب]অপমান করা, দোষারোপ করা, سبٌّগালাগালি, অপমান, سبّةٌসময় কাল, অনেক আগে। **এবং আঘাত করলেন**
89|13|অতঃপর আপনার পালনকর্তা		

عَذَابٍ ﴿13﴾	سَوْطَ
اسم مجرور-مضاف إليه [ض] [ك][ب][ع ذ ب] II মিষ্টি হওয়া, আনন্দদায়ক হওয়া, [ض] বাধা দেওয়া, II-শাস্তি দেওয়া, أعذِبةٌ، عذاباتٌ ج عَذَابٌশাস্তি, ব্যথা। **আযাবের**	اسم منصوب – مفعول به (سوْط) [ن] [س و ط] চাবুক মারা, سوْطٌচাবুক, ছড়ি। **চাবুকের**
তাদেরকে শাস্তির কশাঘাত করলেন।	

لَبِٱلۡمِرۡصَادِ ﴿14﴾	رَبَّكَ	إِنَّ
ل-تاكيد (مزحلقة) +جرّ + معرفة اسم مجرور – متعلق بخبر<ان>محذوف (رصْد) [ن][ر ص د]অপেক্ষা করা, পর্যবেক্ষণ করা, مِرصادٌপরিদর্শণ ঘাঁটি, راصِدٌপর্যবেক্ষণকারী, رَصَدٌ ج أرصادٌগয়েন্দা, পর্যবেক্ষণকারী। **ঘাঁটিতে**	اسم منصوب – اسم <ان> +ضمير متصل – جر بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب]প্রভু হওয়া, رَبٌّ ج أربابٌরব। **তোমার রব**	ح. مشبه بفعل **নিশ্চয়ই**
89|14|নিশ্চয় আপনার পালকর্তা সতর্ক দৃষ্টি রাখেন।		

إِذَا	ٱلۡإِنسَٰنُ	فَأَمَّا
ظ. زمان **যখন**	معرفة اسم مرفوع – مبتدأ (أُنْس)[ك] [س][ا ن س]সামাজিক হওয়া, ভদ্র হওয়া,, أُنْسঘনিষ্ঠতা, বন্ধুত্বপূর্ণ, إِنْسٌমানুষ, মানবজাতি, ঘনিষ্ঠ বন্ধু, إنسانমানুষ, الانسانকোন মানুষ, একজন। মানুষ	ح. استئنافية +ح. تفصيلঅতঃপর জন্য যে
89|15|মানুষ এরূপ যে, যখন		

رَبُّهُۥ	ٱبۡتَلَٰهُ	مَا
اسم مرفوع – فاعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب]প্রভু হওয়া, رَبٌّ ج أربابٌরব । **তার রব**	فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر +ضمير متصل – مفعول به (بلَى) (بلْو،بلاء) [س] [ن][ب ل و]পরীক্ষা করা [ন] , পুরানো হওয়া, VIII ব্যবহার করা [স], VIII-পরীক্ষায় ফেলা, চেষ্টা করা , بلْوَى، بلاءٌপরীক্ষা, দুর্দশা। **পরীক্ষা করেন তাকে**	ح. زائدة **হয়**
তার পালনকর্তা তাকে পরীক্ষা করেন,		

فَأَكْرَمَهُ	وَنَعَّمَهُ	فَيَقُوْلُ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو> +ضمير متصل – مفعول به IV [كَ] [ك ر م] (كرَمة،كرامة) আদর্শ হওয়া, II–আদর্শ বলা, সম্মান করা IV–সম্মান করা, আদর্শ বলা , مُكرَّمٌসম্মানিত। সম্মান দেন তাকে	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو>+ضمير متصل – مفعول به (نعْمة) [س]II আরাম আয়েশে বাস করা,খুশী হওয়া, II–সুখী জীবন দেওয়া , نَاعِمٌউৎফুল্ল, উজ্জ্বল, نَاعَمٌ ج أَنْعامٌপশু, গৃহপালিত পশু। ও নিয়ামত দেন তাকে	فا–واقعة (جواب الشرط - أمّا) + فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير <هو> (قوْل) [ن][ق و ل]কথা বলা, বলা, قَوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُ،قالَةٌশব্দ, কথা, বক্তৃতা, কথা,বক্তব্য । তবে বলে
অতঃপর সম্মান ও অনুগ্রহ দান করেন, তখন বলে,		

رَبِّيٓ	أَكْرَمَنِ ﴿15﴾
اسم مرفوع بالضم على <ب> حذفت الياء<ي>المتكلم وعوض عن الكسرة +ضمير متصل المتكلم – مفعول به (ربّ) [ن][ر ب ب]প্রভু হওয়া, رَبٌّ ج أربابٌরব । আমরা রব	فعل ماض مبني على الفتح،فاعل – مستتير <هو> + ن–وقية +ضمير متصل المتكلم مفعول به – حذفت وعوض عن الكسرة IV [كَ] [ك ر م] (كرَمة،كرامة) আদর্শ হওয়া, II–আদর্শ বলা, সম্মান করা, IV–সম্মান করা, আদর্শ বলা , مُكرَّمٌসম্মানিত। সম্মান দিয়েছেন আমাকে
আমার পালনকর্তা আমাকে সম্মান দান করেছেন।	

عَلَيْهِ	فَقَدَرَ	ٱبْتَلَٰهُ	مَا	إِذَا	وَأَمَّآ
جرّ +ضمير – متعلق بالفعل তার উপর	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل <هو> - مستتير [ق د ر][ن][ض] [س](قَدْر) (قُدرة) (قدَر) II আদেশ করা, সিদ্ধান্ত করা (আল্লাহ তায়ালার) [ض] [ن], শক্তি থাকা, ক্ষমতা রাখা [ض] [س], II–সিদ্ধান্ত করা, নিয়োগ করা, আদেশ করা , قَدْرٌ أقدارٌ جভাগ্য, (আল্লাহর) আদেশ, قديرٌশক্তিশালী, قادِرٌক্ষমতা রাখে যে, সক্ষম, ক্ষমতাবান । এবং সংকীর্ণ করেন	فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا> للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> +ضمير متصل – مفعول به [ب ل و][ن] [س] VIII (بَلًى) (بلْو،بلاء)পরীক্ষা করা [ن] , পুরানো হওয়া, ব্যবহার করা [س], VIII–পরীক্ষায় ফেলা, চেষ্টা করা , بلْوَى، بلاءٌপরীক্ষা, দুর্দশা । পরীক্ষা করেন তাকে	ح. زائدة হয়	ظ. زمان – الشرط غير جازِمٍ যখন	ح.عطف +ح. تفصيل و شرط কিন্তু জন্য যে
89|16|এবং যখন তাকে পরীক্ষা করেন, অতঃপর রিযিক					

أَهَانَنِ ﴿16﴾	رَبِّيٓ	فَيَقُولُ	رِزْقَهُۥ
فعل ماض مبني على الفتح + ن-وقية +ضمير متصل المتكلم مفعول به – حذفت وعوض عن الكسرة [ه و ن][ن] (هوْن) IV সহজ হওয়া, অনুল্লেখ্য হওয়া, IV – অবজ্ঞা করা, হেয় করা, অশ্রদ্ধা করা, هوْنٌসুবিধা, অবসর, هُونٌঅবজ্ঞা, লজ্জা ।	اسم مرفوع بالضم على <ب> حذفت الياء<ي>المتكلم وعوض عن الكسرة +ضمير متصل المتكلم – مفعول به [ر ب ب][ن] (ربّ)প্রভু হওয়া, رَبٌّ ج أربابٌরব । আমরা রব	فا-واقعة (جواب الشرط - أمّا) + فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل <هو> – مستتير [ق و ل][ن] (قوْل)কথা বলা, বলা, قَالَةٌকথা, বক্তৃতা, قَوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُশব্দ, কথা,বক্তব্য । তবে বলে	اسم منصوب – مفعول به +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ر ز ق][ن] (رِزْق) জীবন সামগ্রী দেওয়া, رِزْقٌ ج أرزقٌজীবনের উপকরণ। তার রিযিক

হেয় করেছেন আমাকে			
সংকুচিত করে দেন, তখন বলেঃ আমার পালনকর্তা আমাকে হেয় করেছেন।			

﴿17﴾ ٱلْيَتِيْمَ	تُكْرِمُوْنَ	لَّا	بَلْ	كَلَّا
معرفة اسم منصوب – مفعول به (يتْم،يتُم،يتَ)[س][ك] [ض][ي ت م] এতম হওয়া, يتْم،يتُم،،يتَمٌ**অভিভাবকহীনত্ব,** ইয়তীমত্ব, يتيمٌ ج أيتامٌ،يتامى**এতিম,** ইয়াতীম। **ইয়াতীমের**	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل IV [ك] [ك ر م] (كرَمة،كرامة) **আদর্শ হওয়া, II–আদর্শ বলা, সম্মান করা, IV–সম্মান করা, আদর্শ বলা ,** مُكرَّمٌ**সম্মানিত।** **সম্মান কর তোমরা**	ح. نفي **না**	ح. إضراب **বরং**	ح. ردع **কক্ষণনা**
89|17|এটা অমূলক, বরং তোমরা এতীমকে সম্মান কর না।				

﴿18﴾ ٱلْمِسْكِيْنِ	طَعَامِ	عَلٰى	تَحَاضُّوْنَ	وَلَا
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه [س ك ن][ن](سكَن) শান্ত হওয়া, বিশ্রাম করা, سكَنٌ**বিশ্রামের** সময়, বসতি, বাড়ি ঘর। [م س ك ن] II গরীব হওয়া, গরীব হওয়ার ভান করা, নমনীয় হওয়া, مَسكَنة**দারিদ্র,** مِسكينٌ ج مِسكونَ، مساكينُ**গরীব,** ভিক্ষুক। **অভাবগ্রস্থদের**	اسم مجرور – متعلق بالفعل [ط ع م][س] (طعَم) **খাওয়া, স্বাদ নেওয়া,** طعامٌ ج أطْعِمَة**খাদ্য, পুষ্টি।** **খাদ্য দানের**	جرّ **উপর**	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (خضّ)[ح ض ض]ঝাঁকুনি, দেওয়া, নাড়া দেওয়া, ভীত করা, خصّةٌ**ধাক্কা, ঝাকুনি।** **উৎসাহিত কর তোমরা**	ح.عطف +ح. نفي **এবং না**
89|18|এবং মিসকীনকে অন্নদানে পরস্পরকে উৎসাহিত কর না।				

﴾19﴿ لَّمًّا	أَكْلًا	ٱلتُّرَاثَ	وَتَأْكُلُوْنَ
صفة منصوبة (لَمّ) [ن] [ل م م]সংগ্রহ করা, একত্রিত করা, ঠিক করা, لَمَّةٌসংগ্রহ, জমায়েত। **একসাথে সব**	اسم منصوب – مفعول مطلق (اكْل،مأكل) [ن][ا ك ل]খাওয়া, গ্রহন করা, গলধঃকরণ করা, শেষ করা, أَكْلٌখাদ্য, খাবার, أُكُلٌখাদ্য, ফল। **গ্রাস**	معرفة اسم منصوب – مفعول به (وِرْث،تراث) [س][و ر ث] উত্তরাধিকারী হওয়া, تُرَاثٌউত্তরাধিকার । **মীরাসের মাল**	ح.عطف +فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (اكْل،مأكل) [ن][ا ك ل] খাওয়া, গ্রহন করা, গলধঃকরণ করা, শেষ করা, أَكْلٌখাদ্য, খাবার, أُكُلٌখাদ্য, ফল। **এবং খাও তোমরা**

89\|19\|এবং তোমরা মৃতের ত্যাজ্য সম্পত্তি সম্পূর্ণরূপে কুক্ষিগত করে ফেল

﴾20﴿ جَمًّا	حُبًّا	ٱلْمَالَ	وَتُحِبُّوْنَ
صفة منصوبة [ن] [ض][ج م م] (جَنّ)সমবেত করা, সংগ্রহ করা, جَمٌّপ্রচুর, দল (মানুষের)। **খুব বেশী**	اسم منصوب – مفعول مطلق (حُبّ) [ض][ح ب ب] ভালবাসা, পছন্দ করা,احبّ।বীজ তৈরী করা,حَبٌّ،حَبَّةٌ ج حُبوبٌশস্য, حُبٌّভালবাসা, স্নেহ, ج حِبٌّ أحبابٌপ্রিয়, প্রিয়তম। **ভালবাসা**	معرفة اسم منصوب – مفعول به [م و ل] ॥ধণী করা, অর্থ সরবরাহ করা, مالٌ ج أموالٌসম্পদ, মাল, موّالٌ ج موّالون সম্পদের অধিকারী, অর্থ দাতা। **ধনমাল**	ح.عطف +فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (حُبّ) [ض][ح ب ب]ভালবাসা, পছন্দ করা,احبّ।বীজ তৈরী করা,حَبٌّ،حَبَّةٌ ج حُبوبٌশস্য, حُبٌّভালবাসা, স্নেহ, ج حِبٌّ أحبابٌপ্রিয়, প্রিয়তম। **এবং ভালবাস তোমরা**

89\|20\|এবং তোমরা ধন-সম্পদকে প্রাণভরে ভালবাস।

كَلَّآ	إِذَا	دُكَّتِ	ٱلۡأَرۡضُ
ج. ردع না	ظ. زمان – الشرط غير جازمٍ যখন	فعل ماض مجهول مبني على الفتح ،ثُ<>،الكسرة لإلتقاء السكينين (دكّ) [ن][د ك ك]সমান করা, মসৃণ করা, ধ্বংস করা, دكٌّ دُكوكٌভাংগা, ধ্বংস । চুর্ণ-বিচুর্ণ করা হবে	معرفة اسم مرفوع – نائب فاعل أرْضٌ(م) ج গাঁড়া, মাটিতে ‖ [ا ر ض] أراضٍ، أراضون পৃথিবী, জমিন। পৃথিবী

89|21|এটা অনুচিত। যখন পৃথিবী চুর্ণ-বিচুর্ণ হবে

دَكّٗا	دَكّٗا (21)
اسم منصوب -مفعول مطلق (دكّ) [ن][د ك ك]সমান করা, মসৃণ করা, ধ্বংস করা, دكٌّ دُكوكٌভাংগা, ধ্বংস । চুর্ণ-বিচুর্ণ	اسم منصوب – مفعول مطلق توكيد (دكّ) [ن][د ك ك]সমান করা, মসৃণ করা, ধ্বংস করা, دكٌّ دُكوكٌভাংগা, ধ্বংস । চুর্ণ-বিচুর্ণ

চুর্ণ-বিচুর্ণ।

وَجَآءَ	رَبُّكَ	وَٱلۡمَلَكُ	صَفّٗا	صَفّٗا (22)
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح [ج ي ا][ض] (مجئ)আসা, পৌঁছা, جيئةপৌঁছা	اسم مرفوع - فاعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ر ب ب][ن] (ربّ)প্রভু	ح. عطف +معرفة اسم مرفوع - معطوف(فاعل) [م ل ك][ض] (مِلْك،مُلْك) অধিগ্রহণ করা, মালিক হওয়া , ملاكٌ ج ملاكون অধিকারী, মালিক, مُلكٌ ج	اسم منصوب – حال [ص ف ف][ن] (صفّ) সারিবদ্ধ হওয়া, গঠণ করা, صفٌّ ج صُفوفٌ সারি করণ,	اسم منصوب – حال [ص ف ف][ن] (صفّ) সারিবদ্ধ হওয়া, গঠণ করা, صفٌّ ج صُفوفٌ সারি করণ,

সারি,লাইন, صُفافٌটাইপ কারী। **সারি**	সারি,লাইন, صُفافٌটাইপ কারী। **সারি**	مُلُوكٌরাজা, বাদশাহ, مَلَكٌ مَلَائِكَةٌ،(مَلْأَكٌ)ফেরেশতাগণ। **ফেরেশতারা**	হওয়া, رَبٌّ ج أَرْبابٌ রব । **তোমার রব**	**এবং** **আসবেন**

89|22|এবং আপনার পালনকর্তা ও ফেরেশতাগণ সারিবদ্ধভাবে উপস্থিত হবেন,

يَوْمَئِذٍ	بِجَهَنَّمَ	يَوْمَئِذٍ	وَجِاْيٓءَ
ظ. زمان منصوب «يوم» + «إذٍ» بالكسر لإلتقاء السكينين ،سكونه و سكون التنوين – مضاف إليه ~ و هو مضاف،الجملة محذوفة تقدير (دكت الأرض...) – مضاف إليه : [المعوض بالتنوين < ذٍ> ~ '' تنوين العِوَضِ''] **সেদিন**	جرّ +اسم مجرور بالفتحة (ممنوع) **জাহান্নামকে**	ظ. زمان منصوب «يوم» + «إذٍ» بالكسر لإلتقاء السكينين ،سكونه و سكون التنوين – مضاف إليه ~ و هو مضاف،الجملة محذوفة تقدير (دكت الأرض..) – مضاف إليه :[المعوض بالتنوين < ذٍ> ~ '' تنوين العِوَضِ''] **সেদিন**	ح.عطف +فعل ماض مجهول مبني على الفتح [ج ي ا]ض (مجئ)আসা, পৌঁছা, جيئةপৌঁছা। **এবং আনা হবে**

89|23|এবং সেদিন জাহান্নামকে আনা হবে,

ٱلْإِنسَانُ	يَتَذَكَّرُ
معرفة اسم مرفوع -فاعل (أُنْس)[ك] [س][ا ن س]সামাজিক হওয়া, ভদ্র হওয়া,, أُنْسঘনিষ্ঠতা, বন্ধুত্বপূর্ণ, إِنْسٌমানুষ,	فعل مضارع مرفوع بالضمة V[ذ ك ر] ذ ك ر][ن] (ذِكْر) স্মরণ করা, II–স্মরণ করানো, V– স্মরণ করা , ذِكْرٌ ج أذكارٌস্মরণ, تَذْكيرٌস্মরণকারী, স্মারক,تَذَكُّرٌস্মরণ, تذْكِرةٌ ج

মানবজাতি, ঘনিষ্ঠ বন্ধু, إنسانমানুষ, الانسانকোন মানুষ, একজন । মানুষ	تذَاكِرٌসংবাদ, অনুমতি, *تَذْكِرَةٌস্মারক, স্মরণকারী,* مُتذَكِّرٌস্মরণকারী, উপদেশ গ্রহনকারী । স্মরণ করবে
সেদিন মানুষ স্মরণ করবে, কিন্তু	

﴿23﴾ ٱلذِّكۡرَىٰ	لَهُ	وَأَنَّىٰ
معرفة اسم مرفوع بالضمة المقدر على <ا> للتعذر – مبتدأ مؤخر V[ذ ك ر] ذ ك ر][ن] (ذِكْر) স্মরণ করা, II–স্মরণ করানো, V– স্মরণ করা , ذِكْرٌ ج أذكارٌস্মরণ, تَذْكِيرٌস্মরণকারী, স্মারক,تَذَكُّرٌস্মরণ, تَذْكِرَةٌ ج تذَاكِرٌ সংবাদ, অনুমতি, *تَذْكِرَةٌস্মারক, স্মরণকারী,* مُتذَكِّرٌস্মরণকারী, উপদেশ গ্রহনকারী । এ স্মরণ	جرّ +ضمير – متعلق بالخبر المحذوفতার জন্য	استفهام ح. عطف +اسم – في محل ظ. مكان ،متعلق- بخبر مقدم محذوف এবং কোথায়
এই স্মরণ তার কি কাজে আসবে?		

﴿24﴾ لِحَيَاتِيۚ	قَدَّمۡتُ	يَٰلَيۡتَنِي	يَقُولُ
جرّ +اسم مجرور – متعلق بفعل +ضمير المتكلم – جرّ بالإضافة [ح ي ي][س] (حياة)বেঁচে থাকা, حَياةٌ ج حَيواتٌ জীবন। আমার জীবনের জন্য	فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير المتكلم متصل -فاعل II[ق د م][س] (قُدوم) পৌঁছা, আসা, II–যেতে দেওয়া, قَدَمٌ ج أقدامٌপদক্ষেপ, মাপের একক ফুট । আমি আগে পাঠাতাম	ح. نداء ، منادى – محذوف + ح. مشبه بفعل +ن-وقاية +ضمير متصل – اسم <ليت> হায়, আফসোস আমার	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير <هو> (قَوْل) [ن][ق و ل]কথা বলা, বলা, قَالَةٌকথা, বক্তৃতা, قَوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُশব্দ, কথা,বক্তব্য । বলবে সে

89|24|সে বলবেঃ হায়, এ জীবনের জন্যে আমি যদি কিছু অগ্রে প্রেরণ করতাম!

يُعَذِّبُ	لَّا	فَيَوْمَئِذٍ
فعل مضارع مرفوع بالضمة [ض] [ك][ع ذ ب] II মিষ্টি হওয়া, আনন্দদায়ক হওয়া, [ض] বাধা দেওয়া, II-শাস্তি দেওয়া, عَذَابٌ ج عذاباتٌ، أعذِبةٌশাস্তি, ব্যথা। আযাব দিতে পারবে	ح. نفي না	ح. استئنافية + ظ. زمان منصوب «يوم» + «إذٍ» بالكسر لإلتقاء السكينين سكونه و سكون التنوين – مضاف إليه ~ و هو مضاف،الجملة محذوفة تقديره، – مضاف إليه[المعوض بالتنوين < ذٍ> ~ " تنوين العِوَضِ"] অতঃপর সেদিন
89|25|সেদিন তার শাস্তির মত		

أَحَدٌ ﴿25﴾	عَذَابَهٗٓ
اسم مرفوع - فاعل [ا ح د] II একত্রিত করা,أَحَدٌ ج إِحْدى এক, একজন। কেউ	اسم منصوب – مفعول به +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ض] [ك][ع ذ ب] মিষ্টি হওয়া, আনন্দদায়ক হওয়া, [ض] বাধা দেওয়া, II-শাস্তি দেওয়া, عَذَابٌ ج عذاباتٌ، أعذِبةٌশাস্তি, ব্যথা। তাঁর আযাবের মত
শাস্তি কেউ দিবে না।	

أَحَدٌ ﴿26﴾	وَثَاقَهٗٓ	يُوثِقُ	وَلَا
اسم مرفوع – فاعل	ح.عطف +اسم منصوب – مفعول به +ضمير متصل – جرّ	فعل مضارع مرفوع بالضمة	ح.عطف +ح. نفي

[ا ح د]II একত্রিত করা, أَحَدٌ ج إِحْدى এক, একজন। **কেউ**	(ثِقَة،وُثوق) [س][و ث ق] IV– বিশ্বাস রাখা, নির্ভর করা, আশ্বস্ত হওয়া, IV - বাঁধা, ثِقَةٌ বিশ্বাস, আস্থা, وُثُقٌ ج وَثاقٌ বন্ধন, শিকল **তাঁর বাধনের**	(ثِقَة،وُثوق) [س][و ث ق] IV– বিশ্বাস রাখা, নির্ভর করা, আশ্বস্ত হওয়া, IV - বাঁধা, ثِقَةٌ বিশ্বাস, আস্থা, وُثُقٌ ج وَثاقٌ বন্ধন, শিকল। **বাঁধতে পারবে**	**এবং না**

89|26|এবং তার বন্ধনের মত বন্ধন কেউ দিবে না।

ٱلْمُطْمَئِنَّةُ ﴿27﴾	ٱلنَّفْسُ	يَٰٓأَيَّتُهَا
صفة مرفوعة [ط م أ ن QIV] শান্ত হওয়া, প্রশান্তি লাভ করা, IV–শান্ত থাকা, প্রশান্ত থাকা, طُمأنِيْنَةٌ শান্ত, স্থির, مُطْمَئِنٌّ শান্ত প্রশান্ত (مُطمَئِنَّةٌ প্রশান্ত বিশ্বাসী আত্মা)	معرفة اسم مرفوع – فاعل [س] [ك][ن ف س] মূল্যবান হওয়া [ك], প্রসূতি হওয়া [س], V– শ্বাস নেওয়া,VI– প্রতিযোগিতা করা , نَفْسٌ ج نُفوسٌ আত্মা, মণ, মানুষ, مُتَنافِسٌ ج مُتَنافِسونَ প্রতিযোগী। **আত্মা**	ح. نداء+اسم مرفوع منادى مبني علي الضم في محل بصب +<ها> للتبييه ، زائدة **ওহে**

89|27|হে প্রশান্ত মন,

مَّرْضِيَّةً ﴿28﴾	رَاضِيَةً	رَبِّكِ	إِلَىٰ	ٱرْجِعِىٓ
اسم منصوب – حال ثانٍ [ر ض و][س] (رِضًى،رِضْوان) সন্তুষ্ট হওয়া, একমত হওয়া, رِضِي ج أَرْضِياءُ সন্তুষ্ট, খুশী, تَرضيةٌ সন্তুষ্টী,	اسم منصوب – حال [ر ض و][س] (رِضًى،رِضْوان) সন্তুষ্ট হওয়া, একমত হওয়া,	اسم مجرور – متعلق بفعل +ضمير متصل – جر بالإضافة [ر ب ب][ن] (ربّ) প্রভু	جرّ প্রতি	فعل أمر بحذف النون – واحد مؤنث<تَرْجَعِيْنَ> +ضمير متصل المخاطَب <ي> - فاعل [ر ج ع][ض] (رُجوع) ফিরে আসা,

তৃপ্তি, رَضًى، رِضًا সন্তুষ্টি, ج رَاضٍ رُضاةٌ সন্তুষ্ট, مَرْضِيَّةٌ সন্তুষ্ট চিত্ত। সন্তুষ্ট চিত্ত	رَضِي ج أَرْضِياءُ সন্তুষ্ট, খুশী। সন্তুষ্ট	হওয়া, ج ربٌّ أرْبابٌ রব। তোমার রবের		رَجْعٌ প্রত্যাবর্তন, ফিরা । ফিরে আস তুমি
89|28|তুমি তোমার পালনকর্তার নিকট ফিরে যাও সন্তুষ্ট ও সন্তোষভাজন হয়ে।				

﴿29﴾ عِبَادِىْ	فِىْ	فَٱدْخُلِىْ
اسم مجرور – متعلق بفعل +ضمير متصل المتكلم-جر بالإضافة (عِبَدة،عُبودة) [ع ب د][ن] সেবা করা, এবাদত করা, عَبْدٌ ج عبيدٌ, عِبادٌ গোলাম, বান্দা। আমার বান্দাদের	جرّ মধ্যে	ح.عطف + فعل أمر بحذف النون – واحد مؤنث<تَرْجَعِيْنَ> +ضمير متصل المخاطَب <ي> - فاعل (دُخول) [د خ ل][ن] প্রবেশ করা,دخْلٌ আয়, মুনাফা, دخَلٌ বিশৃঙ্খলা। অতঃপর প্রবেশ কর
89|29|অতঃপর আমার বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাও। 89|30|এবং আমার জান্নাতে প্রবেশ কর।		

﴿30﴾ جَنَّتِىْ	وَٱدْخُلِىْ
اسم منصوب لبافتحة منع من ظهورها ما قبل <ي>المتكلم -مفعول به +ضمير متصل المتكلم <ي> (جنّ،جُنون) [ج ن ن][ن] ঢাঁকা, গোপন করা, নামা, (م)جِنٌّ جِنِّيةٌ জিন, جَنَّةٌ ج جَنَّاتٌ، جِنان বেহেস্ত, বাগান । জান্নাতে	ح.عطف + ح.عطف + فعل أمر بحذف النون – واحد مؤنث<تَرْجِعِيْنَ> +ضمير متصل المخاطَب <ي> - فاعل (دُخول) [د خ ل][ن] প্রবেশ করা,دخْلٌ আয়, মুনাফা, دخَلٌ বিশৃঙ্খলা। এবং প্রবেশ কর
89|29|অতঃপর আমার বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাও। 89|30|এবং আমার জান্নাতে প্রবেশ কর।	

।।সূরা আল–ফজর সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ

৯০। সূরা আল্-বালাদ : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:২০

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴾1﴿ ٱلْبَلَدِ	بِهَٰذَا	أُقْسِمُ	لَآ
معرفة اسم مجرور – بدل <هاذا> (بلادك) [ك][ب ل د] বোকা হওয়া, بلدٌ بِلادٌ ج দেশ, স্থান, গ্রাম । **শহরের**	جرّ +اسم اشراة مجرور – متعلق بالفعل **এই**	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل مستتير <انت> (قسْم) [ض] [ق س م] IV] ভাগ করা, বিতরন করা, IV–শপথ করা। **শপথ করছি আমি**	ح. نفي **না**
90|1|আমি এই নগরীর শপথ করি			

﴿2﴾ ٱلْبَلَدِ	بِهَٰذَا	حِلٌّ	وَأَنتَ
معرفة اسم مجرور – بدل <هاذا> (بلادك) [ك][ب ل د]বোকা হওয়া, بَلَدٌ ج بِلَادٌ**দেশ,** স্থান, গ্রাম। **শহরে**	جرّ +اسم اشراة - مجرور متعلق بخبر **এই**	اسم مرفوع – خبر (حلّ) [ن][ح ل ل]খোলা, বাঁধন খোলা, حِلٌّ**মুক্ত,** স্বাধীন, حُلَّةٌ**পোষাক,** ড্রেস, حَلَالٌ**অনুমোদিত।** **হালাল**	ح.عطف +ضمير منفصل – مبتدأ এবং **তুমি**
90|2|এবং এই নগরীতে আপনার উপর কোন প্রতিবন্ধকতা নেই।			

﴿3﴾ وَلَدَ	وَمَا	وَوَالِدٍ
فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو> (ولادة) [ض][و ل د]জন্ম দেওয়া, উৎপাদন করা, لِدَةٌ ج لِدون**জন্ম** দান, জন্ম, সমবয়সী, وَلَدٌ ج أولادٌ**সন্তান,** প্রজন্ম, وِلدَةٌ**জন্মদান।** **জন্ম দিয়েছেন**	ح.عطف +اسم موصول **এবং যা**	(جرّ ،و-القشم) +اسم مجرور – مقسم به (ولادة) [ض][و ل د]জন্ম দেওয়া, উৎপাদন করা, لِدَةٌ ج لِدون**জন্ম** দান, জন্ম, সমবয়সী, وَلَدٌ ج أولادٌ**সন্তান,** প্রজন্ম, وِلدَةٌ**জন্মদান।** **শপথ, পিতা**
90|3|শপথك জনকেككর ও যা জন্ম দেয়।		

﴿4﴾ كَبَدٍ	فِىْ	ٱلْإِنسَانَ	خَلَقْنَا	لَقَدْ
اسم مجرور – متعلق بفعْل [ك ب د]	جرّ **মধ্যে**	معرفة اسم منصوب – مفعول به (أُنْس)[ك] [س][ا ن س]**সামাজিক হওয়া, ভদ্র হওয়া,,** أُنْس**ঘনিষ্ঠতা, বন্ধুত্বপূর্ণ,** إِنْسٌ**মানুষ, মানবজাতি,**	فعل ماض مبني على السكون لأتصاله +ضمير متصل – فاعل <انا>	ل-تاكيد +ح. تحقيق **নিশ্চয়ই**

(كَبْدٌ)[ض] [ن]মারাত্মক ক্ষতি করা, বেশী আক্রান্ত করা, ج كَبْدٌ،كَبِدٌ،كِبْدٌ أكبادٌঅভ্যন্তর, হৃদয়, যকৃত কষ্টের		ঘনিষ্ঠ বন্ধু, إنسانমানুষ, الانسانকোন মানুষ, একজন । মানুষকে	(خَلْق) [ن][خ ل ق]গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خَلْقٌসৃষ্টি, أخلاقٌ ج خُلُقٌপ্রকৃতি। সৃষ্টি করেছি আমি	
90|4|নিশ্চয় আমি মানুষকে শ্রমনির্ভররূপে সৃষ্টি করেছি।ও				

يَقْدِرَ	لَّنْ	أَنْ	أَيَحْسَبُ
فعل مضارع منصوب II (قَدَر) (قُدرة) (قَدْر)[س][ض] [ن][ق د ر]আদেশ করা, সিদ্ধান্ত করা (আল্লাহ তায়ালার) [ض] [ن], শক্তি থাকা, ক্ষমতা রাখা [ض] [س], II-সিদ্ধান্ত করা, নিয়োগ করা, আদেশ করা , أقدارٌ ج قَدْرٌভাগ্য, (আল্লাহর) আদেশ, قديرٌশক্তিশালী, قادِرٌক্ষমতা রাখে যে, সক্ষম, ক্ষমতাবান । ক্ষমতাবান হবে	ح. نفي نصب কক্ষণনা না	ح. مصدرية যে	ح. استفهام +فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل- مستتير <هو> (حسْب،حِسابٌ) [ن] [ح س ب] III হিসাব করা, III-হিসাব চুড়ান্ত করা, হিসাব গ্রহন করা حِسابٌ ج حِساباتٌ, হিসাব, বিল । কি মনে করেছ সে
90|5|সে কি মনে করে যে, তার উপর কেউ ক্ষমতাবান হবে না ?			

﴿5﴾ أَحَدٌ	عَلَيْهِ
اسم مرفوع – فاعل	جرّ +ضمير – متعلق بالفعل তার উপর

II (قَدَر) (قُدرة) (قَدْر)[س] [ض] [ن][ق د ر]আদেশ করা, সিদ্ধান্ত করা (আল্লাহ তায়ালার) [ن [ض]], শক্তি থাকা, ক্ষমতা রাখা [ض] [س], II-সিদ্ধান্ত করা, নিয়োগ করা, আদেশ করা , أقدارٌ ج قَدْرٌভাগ্য, (আল্লাহর) আদেশ, قدِيرٌশক্তিশালী, قادِرٌক্ষমতা রাখে যে, সক্ষম, ক্ষমতাবান। কেউ	

90|5|সে কি মনে করে যে, তার উপর কেউ ক্ষমতাবান হবে না ?

﴾6﴿ لُّبَدًا	مَالًا	أَهْلَكْتُ	يَقُوْلُ
اسم منصوب - صفة منصوبة (لبود) [ن][ل ب د] লেগে থাকা, অবস্থান করা, لِبْدٌজমাটকৃত, لَبَدٌতুলা, لَبِدٌসংকুচিত, সংলগ্ন, সম্মিলিত । স্তুপ	اسم منصوب – مفعول به [م و ل]IIধণী করা, অর্থ সরবরাহ করা, مالٌ ج أموالٌসম্পদ, মাল, موّالٌ ج موّالون সম্পদের অধিকারী, অর্থ দাতা। ধনমাল	فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل (هلْك) [ض] [ه ل ك]মুছে যাওয়া, মরা, নিহত হওয়া, هُلْكٌমৃত্যু, ধ্বংস, هلْكةٌসম্পূর্ণ ক্ষতি, সব ধ্বংস। নিঃশেষ করেছি আমি	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير <هو> (قوْل) [ن][ق و ل]কথা বলা, বলা, قالَةٌকথা, বক্তৃতা, قوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُশব্দ, কথা,বক্তব্য । বলে সে

90|6|সে বলেঃ আমি প্রচুর ধন-সম্পদ ব্যয় করেছি।

﴾7﴿ أَحَدٌ	يَرَهٗٓ	لَّمْ	أَنْ	أَيَحْسَبُ
اسم مرفوع – فاعل [ا ح د] II একত্রিত করা, أحَدٌ ج إِحْدى এক, একজন।	فعل مضارع مجزوم بحذف <ي>+ضمير متصل - مفعول به مقدم	ح. نفي নাই	ح. مصدرية যে	ح. استفهام +فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير <هو> (حسْب،حِسابٌ) [ن] [ح س ب] III হিসাব করা, III-হিসাব চুড়ান্ত করা, হিসাব

একত্রিত করা, أَحَدٌ ج إِحْدى এক, একজন। কেউ	(رأْي) [ف][ر ا ي]দেখা, رَأْي ج آراءٌমতামত, দর্শন । দেখে তাকে			গ্রহন করা ,حِسابٌ ج حِساباتٌহিসাব, বিল । মনে করে কি সে
90|7|সে কি মনে করে যে, তাকে কেউ দেখেনি?				

<table>
<tr><td colspan="2">﴿8﴾ عَيْنَيْنِ   لَّهُۥ</td><td>نَجْعَلْ</td><td>أَلَمْ</td></tr>
<tr>
<td>اسم منصوب بالياء <ي> لأنه مُثْنى ، <ن>عوض عن تنوين - مفعول به
[ع ي ن]।।নির্দ্দিষ্ট করা, চিহ্নিত করা, ج (م)عَيْنٌ عُيونٌচোখ, বদ নযর, ঝর্ণা, উৎস।
দু'চোখ</td>
<td>جرّ +ضمير - متعلق بفعْل
তার জন্য</td>
<td>فعل مضارع مجزوم
(جعْل) [ف][ج ع ل] তৈরী করা, রাখা, সৃষ্টি করা, আইন করা, নিয়োগ করা, চিন্তা করা, বিশ্বাস করা, প্রতিনিধিত্ব করা, দেওয়া, আস্থা রাখা, উৎসাহিত করা, جُعْلٌ ج أجعالٌবেতন, মজুরি, পুরস্কার, جُعَلٌ ج جِعْلًا গবরে পোকা।
দিই আমরা</td>
<td>ح. استفهام
+ح. نفي
নাই কি</td>
</tr>
<tr><td colspan="4">90|8|আমি কি তাকে দেইনি চক্ষুদ্বয়,</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>﴿9﴾   وَشَفَتَيْنِ</td><td>وَلِسَانًا</td></tr>
<tr>
<td>ح.عطف +اسم منصوب, بالياء <ي>لانه مثنىٰ،<ن>عوض عن التنوين
[ش ف ة]، شَفَةٌ ج شِفاهٌ،شِفاوات ঠোঁট, কিনারা।
দু'ঠোট</td>
<td>ح.عطف +جرّ +اسم منصوب
(لَسَن) [س] [ل س ن] বাকপটু হওয়া, সাবলিল কথা বলা, لَسَنٌসাফলিল, স্পষ্ট, لُسنٌ ج لَسناءُ (م)، لَسِنٌবাকপটু, لِسانٌ ج السِنةٌ،السُنٌজিহবা, ভাষা।
জিহ্বা</td>
</tr>
<tr><td colspan="2">90|9|জিহবা ও ওষ্ঠদ্বয় ?</td></tr>
</table>

﴾10﴿ ٱلنَّجْدَيْنِ	وَهَدَيْنَٰهُ
معرفة اسم منصوب ، بالياء<ي>لانه مثنى، <ن>عوض عن التنوين – مفعول به ثانٍ (نَجَد)(نَجْد) [س] [ن][ن ج د]সাহায্য করা [ন] , ঘামা [স], نَجْدٌউঁচু ভূমি, মাল ভূমি, আরবী উঁচু ভূমি। **দুই পথের**	ح.عطف +فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل +ضمير متصل – مفعول به (هُدًى،هَدْي) [ض][ه د ي]পরিচালিত করা, পথ দেখান, هدىনির্দেশণা, هُدًىসঠিক নির্দেশণা । **প্রদর্শন করেছি আমরা তাকে**
90|10|বস্তুতঃ আমি তাকে দু'টি পথ প্রদর্শন করেছি।	

﴾11﴿ ٱلْعَقَبَةَ	ٱقْتَحَمَ	فَلَا
معرفة اسم منصوب – مفعول به [ن][ع ق ب]অনুসরন করা, عُقْبٌফলাফল, عَقَبَةٌ ج عِقَابٌপথ, খাড়া রাস্তা। খাড়া গিরিপথ। **বন্ধুর গিরিপথ**	فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو> [ق ح م] VIII I V–টানা, ঠেলা, অন্তর্ভুক্ত করা, পরিবেশন করা, VIII–ঝাঁপ দেওয়া, লাফ দেওয়া, قُحمةٌবিপদজনক, বিপত্তিকর, اِقتحامٌঅন্তর্ভূক্তি। **অবলম্বন করেছে সে**	ح. استئنافية +ح. نفي **অতঃপর না**
90|11|অতঃপর সে ধর্মের ঘাঁটিতে প্রবেশ করেনি।		

﴾12﴿ ٱلْعَقَبَةُ	مَا	أَدْرٰكَ	وَمَآ
معرفة اسم مرفوع – خبر ~الجملة مفعول به ثانٍ [ن][ع ق ب]অনুসরন করা, عُقْبٌফলাফল, عَقَبَةٌ ج عِقَابٌপথ, খাড়া রাস্তা। খাড়া গিরিপথ।	ح. اسم موصول – مبتدأ **কি**	فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر،فاعل – مستتير <هو> +ضمير متصل – مفعول به	ح.عطف +ح. استفهام **এবং কিসে**

বন্ধুর গিরিপথ		IV (دري) [ض][د ر ي]জানা, সচেতন হওয়া, IV–জানতে দেওয়া, জানানো, অবহিত করা , دِرايةٌ**জ্ঞান, সচেতনতা।** **জানাবে তোমাকে**	
90|12|আপনি জানেন, সে ঘাঁটি কি?			

﴾13﴿ رَقَبَةٍ	فَكُّ
اسم مجرور – مضاف إليه (رُقوب،رقابة) [ن][ر ق ب]পর্যবেক্ষণ করা, তদারকি করা, رِقبةٌ**পর্যবেক্ষণ,** رِقابٌ ،رَقَباتٌ ج رَقبةٌ**দাস,** গোলাম, رِقابٌ**গলা।** **দাস**	**اسم مرفوع – خبر، مبتدأ محذوف** (فكّ) [ن] [ف ك ك]পৃথক করা, বিচ্ছিন্ন করা, فَكَّةٌ**ছোট** পয়সা, فكٌّ**মুক্তি,** বিমোচন, فِكَكٌ**মুক্তি,** ছারা, মুক্তিপণ। **মুক্তি**
90|13|তা হচ্ছে দাসমুক্তি	

﴾14﴿ مَسْغَبَةٍ	ذِىْ	يَوْمٍ	فِى	إِطْعٰمٌ	أَوْ
اسم مجرور – مضاف إليه (سغَب) [س][س غ ب]ক্ষুধার্ত হওয়া, سغَبٌ**ক্ষুধা,** অনাহার, مسْغبةٌ**দুর্ভিক্ষ,** অভাব। **অভাব**	**اسم مجرور- صفة** **مجرورة** **অবস্থার**	**اسم مجرور – متعلق بفعْل** **[ي و م] III দিনের জন্য ভাড়া করা,** يَوْمٌ ج أَيَّامٌ**দিন, ঘন্টা ।দিনে**	**جرّ** **মধ্যে**	**اسم مرفوع – خبر** **معطوف<فك>،** **(طعَم) [س][ط ع م]** **খাওয়া, স্বাদ নেওয়া,** طعامٌ ج أطْعِمَة**খাদ্য, পুষ্টি ।** **খাদ্য খাওয়া**	**ح.عطف** **অথবা**
90|14|অথবা দুর্ভিক্ষের দিনে অন্নদান।					

﴿15﴾ مَقْرَبَةٍ	ذَا	يَتِيمًا
اسم مجرور II [ق ر ب][ك][س] (قُرْب،مقربة)(قُرْب،قُربان) কাছে আসা, II–কাছে আসতে দেওয়া, قُرْبٌনৈকট্য, قُربىসম্পর্ক, আত্মীয়তা, قَرِيبٌনিকটেقَرِيبٌনিকটে,مُقرّبون ج مُقرَّبٌঘনিষ্ঠ। নিকট আত্মীয়ের	اسم منصوب ذُو،ذي،ذا - [ذو] ذات(م) ج، ذوِو،أُولو،ذُوات(م) অধিকারী, মালিক। অধিকারী	اسم منصوب – مفعول به للمصدر <اطعام> لأنه يعمل عمل فعله [ي ت م][ض] [ك] [س](يتْم،يتُم،يتَ) এতিম হওয়া, يَتَمٌ،،يتُم،يتْمঅভিভাবকহীনত্ব, ইয়তীমত্ব, يتامى،أيتامٌ ج يتيمٌএতিম, ইয়াতীম। ইয়াতীমকে
90|15|এতীম আত্বীয়কে		

﴿16﴾ مَتْرَبَةٍ	ذَا	مِسْكِينًا	أَوْ
اسم مجرور – مضاف إليه (ترِب) [س][ت ر ب]ধূলিমলিন হওয়া, تَرِبٌ ج تَرِبٌধলিময় أترِبَ, সমবয়সী। ধূলিমলিন	اسم منصوب – صفة منصوبة ذُو،ذي،ذا - [ذو] ذات(م) ج، ذوِو،أُولو،ذُوات(م) অধিকারী, মালিক। অবস্থা	اسم منصوب – مفعول به معطوف <ستيما> [م س ك ن] II গরীব হওয়া, গরীব হওয়ার ভান করা, নমনীয় হওয়া, مَسَكَنةদারিদ্র, مِسكينٌ ج مساكينُ، مِسكونَগরীব, ভিক্ষুক । মিসকীনকে	ح.عطف অথবা
90|16|অথবা ধুলি-ধুসরিত মিসকীনকে			

ٱلَّذِيْنَ	مِنَ	كَانَ	ثُمَّ
اسم موصول - في محل مجرور – متعلق بخبر <كان>محذوف – الجملة معطوف যারা	جرّ হত	فعل ماض ناقص مبني على الفتح،اسم<كان> مستتير <هو>	ح.عطف অতঃপর

		(كَوْن،كِيان) [ن][ك و ن] হওয়া, ঘটা, থাকা, كَوْنٌ ج أكوانঘটনা । হল সে	
।90|17|অতঃপর তাদের অন্তর্ভুক্ত হওয়া,			

وَتَوَاصَوْا	ءَامَنُوا
ح.عطف +فعل ماض مبني على السكون على <ي>، حذفت <ي> لإلتقاء السكينين <تواصيُوْا>+ضمير متصل – فاعل ،<ا> فارقة [و ص يVI], II– আস্থা রাখা, অনুমোদন করা,VI– একে অপরকে অবলম্বন করতে বলা, গ্রহন করা, পোষ্য গ্রহন করা,وصِي ج أوصياءُঅভিভাবক, প্রতিনিধি, وصيَةٌ ج وصايَةٌউপদেশ, নির্দেশনা, وصاة،وصايةউপদেশ, আদেশ, নির্দেশনা । পরষ্পর উপদেশ দিয়েছে তারা	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،<ا>فارقة IV (أمْن) (أمانة) [س] [ك][ا م ن]বিশ্বাসী হওয়া [ك] ، নিরাপদ হওয়া [س],IV– বিশ্বাস করা, أمْنٌশান্তি, أمينٌ ج أُمناءُবিশ্বস্ত । ঈমান এনেছে
যারা ঈমান আনে এবং পরস্পরকে উপদেশ দেয়	

بِالْمَرْحَمَةِ ﴿17﴾	وَتَوَاصَوْا	بِالصَّبْرِ
جرّ +معرفة اسم مجرور -متعلق بفغل (رحْمة) [س][ر ح م]ক্ষমা থাকা , ক্ষমাশীল হওয়া, رحيمٌ ج رُحماءُদয়ামময়, الرَّحْمَٰنِদয়ামময় (মহান আল্লাহ), مرحمةٌ ج مراحِمُদয়া, সমবেদনা, مَرحومٌমৃত ।	ح.عطف +فعل ماض مبني على السكون على <ي>، حذفت <ي> لإلتقاء السكينين <تواصيُوْا>+ضمير متصل – فاعل ،<ا> فارقة [و ص يVI], II– আস্থা রাখা, অনুমোদন করা,VI– একে অপরকে অবলম্বন করতে বলা, গ্রহন করা, পোষ্য গ্রহন করা,وصِي ج أوصياءُঅভিভাবক, প্রতিনিধি,	جرّ +معرفة اسم مجرور – متعلق بفغل <تواصوا> [ص ب ر][ض] (صبْر) বাঁধা, ধৈর্য ধরা, সহনশীল হওয়া, বিরত থাকা, بصْرٌ

দয়া প্রদর্শনের	وصيّةٌ ج وصايَةٌউপদেশ, নির্দেশনা, وصاية،وصاةউপদেশ, আদেশ, নির্দেশনা । পরষ্পর উপদেশ দিয়েছে তারা	ধৈর্য, দৃঢ়তা, নিয়ন্ত্রন, صَرّةٌঅতি ঠান্ডা। সবরের
সবরের ও উপদেশ দেয় দয়ার।		

﴾18﴿ ٱلْمَيْمَنَةِ	أَصْحٰبُ	أُو۟لٰٓئِكَ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه (يُمْن،ميمن) [ك] [س] [ن][ي م ن] ভাগ্যবান হওয়া, II-ডানদিকে যাওয়া, يُمْنভাগ্য, يَمَنٌ،يَمْنةٌডানপার্শ্ব, হাত। ডান দিকের	اسم مرفوع - خبر (صُحبة) [س][ص ح ب] সাথী হওয়া, صاحِبٌ ج أصحابٌসাথী, সহকারী। লোক	اسم اشارة - مبتدأ তারা
90|18|তারাই সৌভাগ্যশালী।		

بِـَٔايٰتِنَا	كَفَرُوْا	وَٱلَّذِيْنَ
جرّ +اسم مجرور-متعلق بالفعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة, الجملة صلة <الذين> آيَ(آية) ج آياتٌ، [ا ي ي] নিদর্শণ, স্বাক্ষর, বিশ্বয়। [আমাদের আয়াতগূলি কে	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،<ا> فارقة IV (كفْر) [ض] [ك ف ر]ঢেঁকে রাখা, গোপন করা, বিদ্রোহী হওয়া,IV-বিদ্রোহী করা, বিদ্রোহী বলা, كافِرٌ ج كافِرون،كُفّارٌকাফের, বিদ্রোহী। কুফরী করেছে	ح.عطف +اسم موصول – مبتدأ এবং যারা
90|19|আর যারা আমার আয়াতসমূহ অস্বীকার করে		

﴾19﴿ ٱلۡمَشۡـَٔمَةِ	أَصۡحَٰبُ	هُمۡ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه ،الجملة – خبر <الذين> [ش ا م]VIঅশুভ লক্ষন পাওয়া, কুসংস্কারচ্ছন্ন হওয়া, مشئمةٌঅশুভ, বাম, الشامসিরিয়া। **বাম দিকের**	اسم مرفوع – خبر <هم> [ص ح ب][س] (صُحْبة،صَحابة)সাথী হওয়া, (م) ج أصحابٌ ،صاحِبٌ،صاحِبةٌ(م)সঙ্গী। **লোক**	ضمير منفصل – مبتدأ **তারাই**
তারাই হতভাগা।		

﴾20﴿ مُّؤۡصَدَةٌۢ	نَارٞ	عَلَيۡهِمۡ
اسم مرفوع صفة مرفوعة [و ص د][ض] (وصَد) দৃঢ় ভাবে দাঁড়ান, وصيدٌ ج وصُدٌদোরগোড়া, বারান্দা, مُؤصدةٌপরিবেষ্টনকারী, প্রতিবন্ধ। **পরিবেষ্টনকারী**	اسم مرفوع – مبتدأ مؤخر [ن و ر]II প্রষ্ফুটিত হওয়া, প্রজ্জ্বলিত করা, আলোয় পূর্ণ করা, نارٌ (م) ج نِران আগুন, রাইফেল এর গুলি, النارُজাহান্নাম। **আগুন**	جرّ +ضمير – مجرور ،خبر مقدم **তাদের উপর**
90|20|তারা অগ্নিপরিবেষ্টিত অবস্থায় বন্দী থাকবে।		

।। সূরা আল – বালাদ সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ

৯১। সূরা আস্-শামস : মাক্কী

রুকু:০১ আয়াত:১৫

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَضُحٰهَا ﴿1﴾	وَالشَّمْسِ
جرّ (و-القشم) +اسم مجرور بالياء <ي>المقدر على <ا>للتعذر +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (ضَحًا)(ضحْو،ضُحُوّ) [س] [ن]] (ي) و ح ض]রোদ পোহান, দৃশ্যমান হওয়া,, হাজির হওয়া, ضحوات ج ضحْوَةٌ**পূর্বাহ্ন**, সকাল বেলা, ضُحًى**সকাল** বেলা, ضحاء**প্রথম** প্রহর, সকাল, ضحِيَة ضحايا ج সকাল, জবাই করা পশু (ج) , আক্রান্ত (ج) , أضحًى (أصحاةٌ)জবাই করা পশু, উৎসর্গ, ضاحٍ**রৌদতাপ।** **তার রোদের**	جرّ (و-القشم) +معرفة اسم مجرور – مقسم به (شمَس) (شُموس،شِماس) [س] [ض] [ن] [ش م س]] **রৌদ্রদীপ্ত হওয়া,** شُموس ج (م)شمْسٌ**সূর্য।** **শপথ সূর্যের**
91|1|শপথ সূর্যের ও তার কিরণের,	

تَلَىٰهَا ﴿2﴾	إِذَا	وَٱلْقَمَرِ
فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (تلْو, تلاوة) [ن][ت ل و]অনুসরন করা, পড়া, উচ্চস্বরে পড়ার, (جرّ)تِلْوَপরে, একের পর এক, تِلاوَةٌপাঠ করা(আল কোরআন)। তার পশ্চাতে আসে	ظ. زمان - الشرط غير جازمٍ যখন	جرّ (و-القشم) +اسم مجرور – مقسم به (قمْر) [س] [ن] [ض][ق م ر]জুয়া খেলা [ض] [ن] , তুষারন্ধ হওয়া, তুষার অন্ধতা)قَمَرٌতুষার অন্ধতা ج أقمارٌ, চাঁদ,القَمَرُচাঁদ, القمرانচাঁদ ও সূর্য। শপথ চন্দ্রের
91|2|শপথ চন্দ্রের যখন তা সূর্যের পশ্চাতে আসে,		

جَلَّىٰهَا ﴿3﴾	إِذَا	وَٱلنَّهَارِ
فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا> للتعذر +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ج ل و][ن] [ض]II মশৃন করা, পুলিশ করা, পরিষ্কার করা, II–স্পষ্ট করা, ব্যাখ্যা করা, পরিষ্কার করা, جِلِيপরিষ্কার, স্পষ্ট, جِلاءٌস্পষ্টতা।	ظ. زمان – الشرط غير جازمٍ যখন	جرّ (و-القشم) +اسم مجرور – مقسم به (نـهْر) [ف][ن ه ر]প্রচুর প্রবাহিত হওয়া,তিরষ্কার করা, রাগে মুখ ফিরান, نـهْرٌ ج أنـهُر،أنـهَرনদী, প্রবাহ, نـهارٌ ج أنـهرٌ،نُـهُرٌদিন, দিনের বেলা । শপথ দিনের
91|3|শপথ দিবসের যখন সে সূর্যকে প্রখরভাবে প্রকাশ করে,		

يَغْشَىٰهَا ﴿4﴾	إِذَا	وَٱلَّيْلِ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ا> للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> +ضمير متصل – مفعول به	ظ. زمان – الشرط جازمٍ	جرّ (و-القشم) +اسم مجرور – مقسم به

(غشاوةٌ) (غشْو) [س] [ن] [غ ش و] আসা [ن], গোপন করা, ঢাকা [س], أغشية ج غِشاءٌঢাকনা, আবরন। **আচ্ছাদিত করে তাকে**	**যখন**	ليالي ج ليلٌ، [ل ي ل]রাতের সময়, রাত,، ليالٍ ج ليلاتٌ ليلةٌরাত, ليلًاরাতের বেলা। **শপথ, রাতের**
91|4|শপথ রাত্রির যখন সে সূর্যকে আচ্ছাদিত করে,		

﴾5﴿ بَنٰهَا	وَمَا	وَالسَّمَآءِ
فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر +ضمير متصل – مفعول به (بِنا،بُنيان) [ض][ب ن ي]তৈরী করা, بِناءٌদালান, أبناءُ ، بنون ج بُنَيةٌমেয়ে, بُنَيছেলে, إبنٌঅধিবাসী،সন্তান। **বানিয়েছেন তা**	ح.عطف +اسم موصول – مصدرية **যা**	جرّ (و-القشم) +اسم مجرور – مقسم به (سُموع) [ن][س م و]উঁচু হওয়া, উপরে হওয়া, ll– سمّىনাম দেওয়া, ঢাকা, سُموعٌউচ্চতা, (م)سموات ج سَمٰءٌআকাশ, أسماءٌ ج إسمٌনাম। **শপথ, আকাশের**
91|5|শপথ আকাশের এবং যিনি তা নির্মাণ করেছেন, তাঁর।		

﴾6﴿ طَحٰهَا	وَمَا	وَالْأَرْضِ
فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا> للتعذر فاعل مستتير <هو>+ضمير متصل – مفعول به، [ط ح و][**বিস্তৃত করেছেন তা**	ح.عطف +اسم موصول – مصدرية **যা**	جرّ (و-القشم) +معرفة اسم مجرور – مقسم به أرْضٌ(م) ج ,গাঁড়া মাটিতে ll[ا ر ض] أراضون ،أراضٍপৃথিবী, জমিন। **শপথ, পৃথিবীর**
91|6|শপথ পৃথিবীর এবং যিনি তা বিস্তৃত করেছেন, তাঁর,		

سَوّٰهَا ﴿7﴾	وَمَا	وَنَفْسٍ
فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر ،فاعل – مستتير <هو>+ضمير (سواء)[س][س و ي] **সমান করা, II- নিয়মিত করা, মসৃন করা, বিন্যস্ত কর।** **সম্পূর্ণ করেছেন**	ح.عطف +اسم موصول – مصدرية **এবং যা**	جرّ (و-القشم) +اسم مجرور – مقسم به (نَفْس،نِفاس) [ن] [ن ف س]**অমূল্য হওয়া, মূল্যবান হওয়া,** نُفوسٌ،أَنْفسٌ ج (م)نَفْسٌ**আত্মা, মন, ব্যক্তি, সত্বা ।** **শপথ , মানুষের**
91|7|শপথ প্রাণের এবং যিনি তা সুবিন্যস্ত করেছেন, তাঁর,		

وَتَقْوٰهَا ﴿8﴾	فُجُوْرَهَا	فَأَلْهَمَهَا
ح.عطف +اسم منصوب بالفتحة المقدر على <ا>للتعذر ـ مفعول به ،معطوف +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (وقْي،وقاية) [ض][و ق ي] VIII পাহার দেওয়া, যত্ন করা, রক্ষা করা, রাখা, VIII - সাবধান থাকা, রক্ষা করা, রক্ষাকারী হওয়া, تقوى**ভক্তি,** তাকওয়া, ধার্মিকতা। **ও তার তাকওয়া**	اسم منصوب – مفعول به ثانٍ +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (فجْر،فُجور) [ن][ف ج ر] পরিষ্কার করা, খনন করা, বিছিন্ন করা, ব্যভিচার করা, فَجْرٌ**প্রাতঃকাল,** সকাল, فاجِرٌ ج فُجَّارٌ ব্যভিচারী , فُجورٌ**অনৈতিক** কাজ। **তার পাপ**	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو> +ضمير متصل – مفعول به (لهَم،لهْم) [س] [IV ل ه م] গিলা, খরচ করা, গ্রাস করা, IV–গ্রাস করানো, উৎসাহিত করা, لهِمٌ،لهومٌ**লোভী,** الهامٌ ااهاماتٌ**প্রবৃত্তি,** উৎসাহ, مُلهِمةٌ**উৎসাহ।** **অতঃপর এহলাম করলেন তাকে**
91|8|অতঃপর তাকে তার অসৎকর্ম ও সৎকর্মের জ্ঞান দান করেছেন,		

زَكّٰهَا ﴿9﴾	مَنْ	أَفْلَحَ	قَدْ
فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا> للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> +ضمير متصل – مفعول به (زكاء) [ن] [ز ك و /ي] সাফল্য লাভ করা, পবিত্র হওয়া, زَكِيٌّ ج أزكياءُ**পবিত্র**, বিশুদ্ধ, زكاءٌ**সমৃদ্ধি**, সততা, বিশুদ্ধতা, زكاةٌ (زكوة) ج زكاوات**পবিত্রতা**, দান, ট্যাক্স, যাকাত। **পবিত্র করল তাকে**	اسم موصول - فاعل **যে**	فعل ماض مبني على الفتح (فَلْح) [ف][ف ل ح] IV ফেটে যাওয়া, চৌচির হওয়া, চাষ করা, IV–উন্নতি করা, সুখী হওয়া , فلاحٌউন্নতি।IV] **সফল হল**	ح. تحقيق **নিশ্চয়ই**
91|9|যে নিজেকে শুদ্ধ করে, সেই সফলকাম হয়।			

دَسّٰهَا ﴿10﴾	مَنْ	خَابَ	وَقَدْ
فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> +ضمير متصل – مفعول به (تَدْسِيَة)[د س ي] II ভ্রষ্ট করা, বিভ্রান্ত করা, মাটিতে পুঁতে ফেলা। **কলুষিত করল তাকে**	اسم موصول – فاعل **যে**	فعل ماض مبني على الفتح (خَوْب) [ن] [خ و ب]গরিব হওয়া, হীনাবস্থ হওয়া, خَوْبةٌ**সম্বলহীন** **ব্যর্থ হল**	ح.عطف +ح. تحقيق **এবং নিশ্চয়ই**
91|10|এবং যে নিজেকে কলুষিত করে, সে ব্যর্থ মনোরথ হয়।			

بِطَغْوٰهَآ ﴿11﴾	ثَمُوْدُ	كَذَّبَتْ
جرّ +اسم مجرور بالكسر المقدر على <ى>للتعذر +ضمير متصل – جرّ بالإضافة	اسم علم مرفوع – فاعل	فعل ماض مبني على الفتح ،<تْ>التأنيث

[س] [ف] [ن][ظ غ ي / و] সীমালঙ্ঘন করা, অসভ্য হওয়া, ، طَاغٍ طاغِيةٌজালেম, অত্যাচারী অবাধ্যতায় তার	সামুদ	(كِذْب) [ض][ك ذ ب]I|IIমিথ্যা বলা, II-মিথ্যারোপ করা, مُكذِّبٌ ج مكذّبونমিথ্যারোপকারী। মিথ্যারোপ করেছিল
91|11|সামুদ সম্প্রদায় অবাধ্যতা বশতঃ মিথ্যারোপ করেছিল।		

أَشْقٰهَا ﴿12﴾	انْبَعَثَ	إِذِ
اسم مرفوع بالضم المقدر على <ا> للتعذر +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (شقاء) [ف][ش ق و]দুর্ভাগ্যবান হওয়া, অসুখী হওয়া, ব্যর্থ হওয়া, شقاوةٌঅসফলতা, পর্যুদস্থতা, أشقَىঅধিক শ্রান্ত, অধিক ব্যর্থ, অধিক পর্যুদস্থ। অতি দুষ্টব্যক্তি তার	فعل ماض مبني على الفتح (بعْث) [ف] [ب ع ث] VII] পাঠান, প্রেরন করা, VII–উদ্দিপ্ত হওয়া, প্রেরিত হওয়া, উত্থিত হওয়া, مُنْبَعَثٌকেন্দ্র, উৎস। ক্ষিপ্ত হয়ে উঠল	ظ. زمان – الشرط غير جازمٍ যখন
91|12|যখন তাদের সর্বাধিক হতভাগ্য ব্যক্তি তৎপর হয়ে উঠেছিল।		

اللّٰهِ	رَسُوْلُ	لَهُمْ	فَقَالَ
لفظ الجلالة مجرور – مضاف إليه [اله]II খোদা বানান, الهٌ،اِلاهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, (ال+اله) الله আল্লাহ ।	اسم مرفوع – فاعل (رسَل) [س][ر س ل] IV] লম্বাচুলের হওয়া, IV-পাঠান, رسولٌ ج رُسُلٌবার্তা বাহক । রসুল	جرّ +ضمير – متعلق بالفعل তাদেরকে	ح. استئنافية +فعل ماض مبني على الفتح (قوْل) [ن][ق و ل]কথা বলা, বলা, مَقَالَةٌকথা, বক্তৃতা, قوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُশব্দ, কথা,বক্তব্য । অতঃপর বলল

আল্লাহর			
91|13|অতঃপর আল্লাহর রসূল তাদেরকে বলেছিলেনঃ আল্লাহর উষ্ট্রী			

نَاقَةَ	ٱللَّهِ	وَسُقْيَٰهَا ﴿13﴾
اسم منصوب – مفعول به بفعل محذوف [ن و ق] Vপ্রচন্ড রুচিসম্পন্ন হওয়া , পছন্দপ্রিয় হওয়া, ناقة ج نوقٌ، ناقات স্ত্রী-উঠ উষ্ট্রী	لفظ الجلالة مجرور [اله]II খোদা বানান, الهٌ،اِلاهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, الله (ال+اله) আল্লাহ। আল্লাহর	ح.عطف +اسم منصوب بالفتحة المقدر على <ا> للتعذر +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [س ق ي] [ض] (سقْي) দেওয়া, পান করা, পানি দেওয়া(চাষে),IV–পান করতে দেওয়া, পান করা ,سقْيসেঁচণ, سقاءٌ ج سقاءُون পানি বাহী। পানি পান করায় তাকে
ও তাকে পানি পান করানোর ব্যাপারে সতর্ক থাক।		

فَكَذَّبُوهُ	فَعَقَرُوهَا	فَدَمْدَمَ	عَلَيْهِمْ
ح. استئنافية +فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل +ضمير متصل – مفعول به [ك ذ ب][ض] (كِذْب)I/IIমিথ্যা বলা, II–মিথ্যারোপ করা, مُكذّبٌ ج مكذّبون মিথ্যারোপকারী। অতঃপর মিথ্যা ভাবল তারা তাকে	ح. عطف +فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل +ضمير متصل – مفعول به [ع ق ر] [ض][ك] (عقْر) ক্ষত করা [ن], বন্ধ্যা হওয়া [ن] [ض], عُقْرٌ،عقْرٌ বন্ধ্যাত্ব। এবং হত্যা করল তারা তা	فا-واقعة (جواب الشرط) +فعل ماض مبني على الفتح +فاعل – مستتير <هو>، [د م د م QI] বির বির করা, গর গর করা(রাগে) , دمْدمةٌ বিরবির শব্দ ফলে ধ্বংস করে দিলেন	جرّ +ضمير – متعلق بالفعل তাদের

91|14|অতঃপর ওরা তার প্রতি মিথ্যারোপ করেছিল এবং উষ্ট্রীর পা কর্তন করেছিল।

﴿14﴾ فَسَوَّىٰهَا	بِذَنۢبِهِمۡ	رَبُّهُم
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا> للتعذر،فاعل – مستتير <هو> +ضمير متصل – مفعول به [س و ي][س](سواء) **সমান করা, II-নিয়মিত করা, মসৃন করা, বিন্যস্ত করা।** **এবং সমান করে দিলেন তাদের**	جرّ +اسم مجرور-متعلق بفعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ذ ن ب]I পাপ করা, ভুল করা, অপরাধী হওয়া, ج ذَنْبٌ ذُنوبٌ**অপরাধ,** পাপ। **তাদের পাপের কারনে**	اسم مرفوع - فاعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ر ب ب][ن] (ربّ) **প্রভু হওয়া,** ج ربٌّ أرْبابٌ**রব।** **তাদের রব**
তাদের পাপের কারণে তাদের পালনকর্তা তাদের উপর ধ্বংস নাযিল করে একাকার করে দিলেন।		

﴿15﴾ عُقۡبَٰهَا	يَخَافُ	وَلَا
اسم منصوب – مفعول به +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ع ق ب][ن]অনুসরন করা, عُقْبٌ**ফলাফল,** عَقَبَةٌ ج عِقابٌ**পথ,** খাড়া রাস্তা। খাড়া গিরিপথ। **তার পরিণতির**	فعل مضارع مرفوع بالضمة،فاعل – مستتير <هو> (خَوْف) [ف][خ و ف]**ভীত হওয়া,** خَوْفٌ**ভয়।** **ভয় করেন তিনির**	ح.عطف+ح. نفي **এবং না**
91|15|আল্লাহ তা'আলা এই ধ্বংসের কোন বিরূপ পরিণতির আশংকা করেন না।		

।। সূরা আশ্-শামস সমাপ্ত।।

سُوۡرَةُ الَّيۡلِ مَكِّيَّةٌ

৯২। সূরা আল্-লাইল : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:২১

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

يَغۡشَىٰ (1)	إِذَا	وَٱلَّيۡلِ
فعل مضارع مرفوع بالضمة بالضم على <ا> للتعذر مفعول به محذوف، (غشاوةٌ) (غشْو) [س] [ن] [غ ش و]আসা [ن], গোপন করা, ঢাকা [س], غِشاءٌ ج أغشية ঢাকনা, আবরন। **আচ্ছন্ন করে**	ظ. زمان – الشرط غير جازمٍ **যখন**	جرّ (و-القشم) +اسم مجرور – مقسم به ،متعلق بالفعل محذوف <قسم> [ل ي ل] ،ليلٌ ج ليالي রাতের সময়, রাত,، ليلةٌ ج ليلاتٌ ليالٍ রাত, ليلًا রাতের বেলা। **শপথ রাতের**
92|1|শপথ রাত্রির, যখন সে আচ্ছন্ন করে, 92|2|শপথ দিনের, যখন সে আলোকিত হয়		

تَجَلَّىٰ (2)	إِذَا	وَٱلنَّهَارِ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ا> للتعذر، مفعول به – محذوف [ج ل و][ن] [ض]	ظ. زمان – الشرط غير **যখন**	جرّ (و-القشم) +اسم مجرور – مقسم به ،متعلق بالفعل محذوف <قسم >

মশৃন করা, পুলিশ করা, পরিষ্কার করা, II–স্পষ্ট করা, ব্যাখ্যা করা, পরিষ্কার করা, جِلِي পরিষ্কার, স্পষ্ট, جلاءٌ স্পষ্টতা। **আলোকিত হয়**		(نَهْر) [ف][ن ه ر] প্রচুর প্রবাহিত হওয়া,তিরষ্কার করা, রাগে মুখ ফিরান, نَهْرٌ ج أنهُر،أنهَر নদী, প্রবাহ, نهارٌ ج أنهرٌ،نُهُرٌ দিন, দিনের বেলা । **শপথ দিনের**
92|1|শপথ রাত্রির, যখন সে আচ্ছন্ন করে, 92|2|শপথ দিনের, যখন সে আলোকিত হয়		

وَٱلْأُنثَىٰٓ ﴿3﴾	ٱلذَّكَرَ	خَلَقَ	وَمَا
ح.عطف +معرفة اسم منصوب بالفتحة المقدر على <ا>للتعذر (أُنوثَة) [ك][ا ت ث]নারী হওয়া, মহিলাসুলভ হওয়া, أُنثى ج إناثٌ،أناثى মহিলা, নারীসুলভ, الأُنثَيان অন্ডকোষ, مُؤنَّثٌ নারীসুলভ, স্ত্রী লিঙ্গ । **ও স্ত্রী**	معرفة اسم منصوب – مفعول به (ذِكْر) [ن] [ذ ك ر]V স্মরণ করা, II–স্মরণ করানো, V– স্মরণ করা , ذِكْرٌ ج أذكارٌ স্মরণ, تَذْكيرٌ স্মরণকারী, স্মারক, تَذَكُّرٌ স্মরণ, تَذْكِرةٌ ج تذَاكِرٌ সংবাদ, অনুমতি, *تَذْكِرَةٌ স্মারক, স্মরণকারী,* مُتَذَكِّرٌ স্মরণকারী, উপদেশ গ্রহনকারী, ذكَرَ ج ذُكورٌ পুরুষ, ذُكور পুরুষাঙ্গ । **পুরুষ**	فعل ماض مبني على الفتح،فاعل – مستتير <هو> (خلْق) [ن][خ ل ق] গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خَلْقٌ সৃষ্টি, خُلْقٌ ج أخلقٌ প্রকৃতি । **সৃষ্টি করেছেন**	ح. عطف +اسم موصول **শপথ, তাঁর**
92|3|এবং তাঁর, যিনি নর ও নারী সৃষ্টি করেছেন,			

لَشَتَّىٰ ﴿4﴾	سَعْيَكُمْ	إِنَّ
ل-تاكيد +اسم مرفوع بالضم على <ا>المقدّر للتعذر - (شتّ،شتات ،شتيت) [ض] [ش ت ت]বিচ্ছিন্ন হওয়া, ছড়ান, দ্রবিভূত হওয়া, شتٌّ ج أشتاتٌ ছড়ানো, বিক্ষিপ্ত, شتيتٌ ج شتّى বিক্ষিপ্ত (شتَّى বহুমুখী, বিভিন্ন, অন্যান্য। **অবশ্যই বহুমুখী**	اسم منصوب – اسم <ان> +ضمير متصل – جر مرحبا (سعْي) [ف][س ع ي]হাঁটা, দৌড়া, চেষ্টা করা, سَعْيٌ হাঁটা, দৌড়, السعْي সা'য়ী ।	ح. مشبه بفعل **নিশ্চয়ই**

	তোমাদের প্রচেষ্টা	

92|4|নিশ্চয় তোমাদের কর্ম প্রচেষ্টা বিভিন্ন ধরনের।

وَاتَّقَىٰ ﴿5﴾	أَعْطَىٰ	مَنْ	فَأَمَّا
فعل ماض مبني على الفتح <ا> المقدّر للتعذر، فاعل – مستتير <هو>،حذفت – مفعول به (وقْي،وقاية) [ض] [و ق ي] VIII পাহার দেওয়া, যত্ন করা, রক্ষা করা, রাখা, VIII - সাবধান থাকা, রক্ষা করা, রক্ষাকারী হওয়া, تقوىভক্তি, তাকওয়া, ধার্মিকতা। ও খোদাভীরু হল	فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر ،فاعل - مستتير <هو> [ع ط و]IV, III– দেওয়া, IV–দান করা, উপহার দেওয়া, অনুমোদন করা, عطاًদান, উপহার, عِطِيَةٌ ج عطاياউপহার, দান। দান কর	اسم موصول / اسم الشرط – مبتدأ যে	ح. استئنافية +ح. تفصيلঅতঃপর জন্য যে

92|5|অতএব, যে দান করে এবং খোদাভীরু হয়,

بِٱلْحُسْنَىٰ ﴿6﴾	وَصَدَّقَ
جرّ +معرفة اسم مجرور بالياء المقدر على <ا> للتعذر (حُسْن) [ك][ح س ن]সুন্দর হওয়া, উপযুক্ত হওয়া, حُسْنٌসৌন্দর্য্য,শ্রেষ্ঠত্ব, প্রাধান্যতা, (م)، الحُسنى ج الحُسنات الأحسنউত্তম ফলাফল। উত্তমকে	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو> II (صدْق،صِدْق) [ن] [ص د ق]সত্য বলা, নিষ্ঠাপূর্ণ হওয়া, সঠিক হওয়া, II– সত্য বলে মানা, বিশ্বাস করা, صِدْقٌসত্য, صدقَةٌ ج صدقاتٌদান। সত্য মানল

92|6|এবং উত্তম বিষয়কে সত্য মনে করে,

لِلْيُسْرَىٰ ﴿7﴾	فَسَنُيَسِّرُهُۥ
جرّ +معرفة اسم مجرور بالكسر المقدر على <ا> للتعذر – [ي س ر][س] [ك] (يسَر) (يُسْر) -II সহজ হওয়া [س], সামান্য হওয়া [ك], يُسْرٌসহজ, II-দেওয়া, সহজলভ্য করা , يَسرةٌবাম দিক । সহজের জন্য	فا-واقعة (جواب الشرط) +ح. استقبال +فعل مضارع مرفوع بالضمة،فاعل – مستتير <نحن>+ضمير متصل – مفعول به II (يُسْر) (يسَر) [ك] [س][ي س ر] সহজ হওয়া [س], সামান্য হওয়া [ك], يُسْرٌসহজ, II-দেওয়া, সহজলভ্য করা , يَسرةٌবাম দিক । তবে সহজ করে দিব আমারা তাকে
92|7|আমি তাকে সুখের বিষয়ের জন্যে সহজ পথ দান করব।	

وَٱسْتَغْنَىٰ ﴿8﴾	بَخِلَ	مَنۢ	وَأَمَّا
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا> للتعذر (غِنًى،غناء) [س][غ ن ي X] অভাবমুক্ত হওয়া, ধণী হওয়া, IV–ধণী করা, X–ধণী হওয়া, غِنًىসম্পদ, প্রাচুর্য, اِستغناءٌআত্মত্যাগ, প্রয়োজনহীন, غانيةٌ ج غانياتসুন্দরী মহিলা। বেপরোয়া হল	فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو> ،حذفت مفعول به [ب خ ل] [س] [ك] (بُخْل)(بخَل)কৃপণ হওয়া, بُخْلٌলোভ, অর্থলিপ্সা, مَبْخلةলোভের কারণ। কৃপণতা করল	اسم شرط – مبتدأ যে	ح.عطف +ح. تفصيل এবং জন্য যে
92|8|আর যে কৃপণতা করে ও বেপরওয়া হয়			

بِٱلۡحُسۡنَىٰ ﴿9﴾	وَكَذَّبَ
جرّ +معرفة اسم مجرور بالكسر المقدر على <ا> للتعذر - متعلق بفعل (حُسْن) [ك][ح س ن]সুন্দর হওয়া, উপযুক্ত হওয়া, حُسْنٌ**সৌন্দর্য্য,**শ্রেষ্ঠত্ব, প্রাধান্যতা, (م)، الحُسنى ج الحُسنات الأحسن**উত্তম** ফলাফল। **উত্তম কে**	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو> (كِذْب) [ض][ك ذ ب]II|**মিথ্যা বলা, II-মিথ্যারোপ করা,** مُكذّبٌ ج مكذّبون **মিথ্যারোপকারী।** **ও অমান্য করল**
92|9|এবং উত্তম বিষয়কে মিথ্যা মনে করে,	

لِلۡعُسۡرَىٰ ﴿10﴾	فَسَنُيَسِّرُهُۥ
جرّ +معرفة اسم مجرور بالكسر المقدر على <ا>للتعذر – متعلق بفعل (عُسْر) (عسَر) (عسُر)(عُسْر،عُسُر) [ن] [ض] [س][ك][ع س ر]কঠিন হওয়া, বিরূপ হওয়া [س] [ك] , চাপ দেওয়া, জোড় করা [ن][ض], عسَرٌ،عُسرَى،عسارةٌ،عُسُرٌ،عُسْرٌ**কাঠিন্য,**কঠিন অবস্থা, عسِرٌ**কঠিন,** বিরূপ। **কঠোরের জন্য**	فا-واقعة +ح. استقبال +فعل مضارع مرفوع بالضمة،فاعل – مستتير <نحن> +ضمير متصل – مفعول به II (يُسْر) (يسَر) [ك] [س][س][ي س ر]**সহজ হওয়া** [س], **সামান্য হওয়া** [ك], يُسْرٌ**সহজ, II-দেওয়া, সহজলভ্য করা ,** يَسرةٌ**বাম দিক ।** **তবে সহজ করে দিব**
92|10|আমি তাকে কষ্টের বিষয়ের জন্যে সহজ পথ দান করব।	

مَالُهُۥٓ	عَنۡهُ	يُغۡنِي	وَمَا
اسم مرفوع – فاعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [م و ل]IIধণী করা, অর্থ সরবরাহ করা, مالٌ ج أموالٌসম্পদ, মাল,	جرّ +ضمير- متعلق بالفعل **তার জন্য**	فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ي>للثقل (غِنًى،غناء) [س][غ ن ي IV] অভাবমুক্ত হওয়া, ধণী হওয়া, IV-ধণী করা, X-ধণী হওয়া, غِنًىসম্পদ, প্রাচুর্য,	ح.عطف +ح. نفي **এবং না**

مَوّالٌ ج مَوّالون সম্পদের অধিকারী, অর্থ দাতা। **তার মাল**		اِستغناءٌ **আত্মত্যাগ, প্রয়োজনহীন,** غانيةٌ ج غانيات **সুন্দরী** মহিলা। **কাজে আসবে**	
92|11|যখন সে অধঃপতিত হবে, তখন তার সম্পদ তার কোনই কাজে আসবে না।			

﴿11﴾ تَرَدَّىٰ	إِذَا
فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر ،فاعل – مستتير <هي> **V (ردّ) [ن] [ر د د]ফিরে আনা, رَدٌّপ্রত্যাবর্তন,V-ফিরে আসা, প্রতিফলিত হওয়া,** **مَرْدودون প্রত্যাবর্তনকারী।** **ধ্বংস হবে সে**	**ظ. زمان – الشرط غير جازِمٍ** **যখন**
কোনই কাজে আসবে না।	

﴿12﴾ لَلْهُدَىٰ	عَلَيْنَا	إِنَّ
ل-تاكيد +معرفة اسم منصوب – اسم <ان> مؤخر **(هدْي،هُدًى) [ض][ه د ي]পরিচালিত করা, পথ দেখান, هدى নির্দেশণা, هُدًى সঠিক নির্দেশণা।** **পথ প্রদর্শন**	**جرّ +ضمير – مجرور متعلق بخبر <ان> محذوف** **আমাদের উপর**	**ح. مشبه بفعل** **নিশ্চয়ই**
92|12|আমার দায়িত্ব পথ প্রদর্শন করা।		

وَٱلْأُولَىٰ ﴿13﴾	لَلْءَاخِرَةَ	لَنَا	وَإِنَّ
ح.عطف +معرفة اسم منصوب – معطوف اسم<ان> [ا و ل][ن] آلَ، (أوْل) **ফিরে আসা, آلপরিবার, آلَةযন্ত্র,** أوَّلٌ ،(م) أُولَى ج أولون،أوائِلُ ،(م) أُليات ج أُوَلপ্রথম, শুরু, প্রথম অংশ,أوْلًاপ্রথম, প্রথমে, الأُلَىদুনিয়া। **ইহকালের**	ل-تاكيد +معرفة اسم منصوب - اسم <ان> [ا خ ر]আখেরাতের	جرّ +ضمير – مجرور متعلق بخبر <ان> محذوف **আমরা মালিক**	ح.عطف +ح. مشبه بفعلএবং নিশ্চয়ই
92|13|আর আমি মালিক ইহকালের ও পরকালের।			

تَلَظَّىٰ ﴿14﴾	نَارًا	فَأَنذَرْتُكُمْ
فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر ،فاعل – مستتير <هي> ~ في محل صفة <نارا> [ل ظ ي V][س] (لظًى) জ্বল জ্বল করে প্রজ্জ্বলিত হওয়া, পুড়ে যাওয়া,لَظًى গগনে আগুন, আগুন। **জলতে থাকা**	اسم منصوب مفعول به ثانٍ - [ن و ر]II প্রস্ফুটিত হওয়া, প্রজ্জ্বলিত করা, আলোয় পূর্ণ করা, نـارٌ (م) ج نِران আগুন, রাইফেল এর গুলি, النـارُজাহান্নাম। **আগুনের**	ح. استئنافية +فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل +ضمير متصل – مفعول به [ن ذ ر][ن] [ض] (نذْر) IV উৎসর্গ করা, শপথ করা, IV-সতর্ক করা, ঘোষনা করা, مُنذِرٌসতর্ককারী। **অতএব সতর্ক করছি আমি তোমাদের**
92|14|অতএব, আমি তোমাদেরকে প্রজ্বলিত অগ্নি সম্পর্কে সতর্ক করে দিয়েছি।		

﴿15﴾ ٱلۡأَشۡقَى	إِلَّا	يَصۡلَىٰهَآ	لَا
معرفة اسم مجرور – فاعل ، الجملة صفة ثانٍ <نارا> (شقَاء) (شقْو) [س] [ن][س] [ش ق ي / و] অসুখী করা, দুর্দশাগ্রস্থ করা [ن],অসুখী হওয়া, বিপদগ্রস্থ হওয়া [س], شقاءٌ**দুর্ভাগ্য,** দুঃখ, أشْقَى**অধিক** দুর্ভাগা , شقِيٌّ ج اشقياءُ**অসুখী,** দুর্দশাগ্রস্থ, খারাপ, অশুভ, পাপী। **চরম পাপী**	ح. حصر **ছাড়া**	فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ي> للثقل +ضمير متصل – مفعول مقدم (صلي) [س][ض] [ص ل ي] **ভাজা,পোড়ান [ض] , আগুনে উন্মুক্ত হওয়া[س]** , مُصطلًى**অগ্নিকুন্ড,** চুলা। ভস্মীভূত **হবে**	ح. نفي **না**

92|15|এতে নিতান্ত হতভাগ্য ব্যক্তিই প্রবেশ করবে,

﴿16﴾ وَتَوَلَّىٰ	كَذَّبَ	ٱلَّذِىٓ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا> للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> (ولاء،ولاية) [س] [و ل يV] **কাছে হওয়া, নিকটে হওয়া, V-দখল করা, বাধা দেওয়া, বিরত থাকা,** وَلِيٌّ ج أولياءُ**নিকট, নিকটে, সাহায্যকারী, বন্ধু।** **এবং মুখ ফিরাল**	فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو> الجملة ـ صلة (كِذْب) [ض] [ك ذ بII]**মিথ্যা বলা, II-মিথ্যারোপ করা,** مُكذّبٌ ج مكذّبون**মিথ্যারোপকারী।** **মিথ্যারোপ করল**	اسم موصول – صفة <الأشقى> **যারা**

92|16|যে মিথ্যারোপ করে ও মুখ ফিরিয়ে নেয়।

﴿17﴾ ٱلۡأَتۡقَى	وَسَيُجَنَّبُهَا
معرفة اسم مرفوع – نائب فاعل	ح.عطف +ح. استقبال +فعل مضارع مرفوع مجهول بالضمة +ضمير متصل – مفعول به

II [ج ن ب]এড়নো, প্রতিহত করা, II–দূরে রাখা, ফিরে দেওয়া, V–এড়িয়ে চলা, جَنْبٌ ج جُنوبٌ পার্শ্ব, কিনারা, جَنْبَ (جَرّ)পার্শে, নিকটে, পরবর্তী। **দূর রাখা হবে এ থেকে**	(وقْي،وقاية) [ض][و ق ي] VIII পাহার দেওয়া, যত্ন করা, রক্ষা করা, রাখা, VIII - সাবধান থাকা, রক্ষা করা, রক্ষাকারী হওয়া, تقوىভক্তি, তাকওয়া, ধার্মিকতা। **মুত্তাকীকে**
92|17|এ থেকে দূরে রাখা হবে খোদাভীরু ব্যক্তিকে,	

اَلَّذِىْ	يُؤْتِىْ	مَالَهٗ	يَتَزَكّٰى ﴿18﴾
اسم موصول – صفة <الأتقى> **যারা**	فعل مضارع مرفوع بالضمة على <ي> للثقل <هو> فاعل – مستتير، IV (إتيان،أتي،مأتةً) [ض][ا ت ي] আসা, আনা, দেওয়া, পাওয়া, IV–আনা, দেওয়া, أتيانকর্ম, কাজ, مأتًى ج مآتٍ আসা, যাওয়ার স্থান। **দান করে**	اسم منصوب مفعول به +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [م و ل]IIধণী করা, অর্থ সরবরাহ করা, مالٌ ج أموالٌ সম্পদ, মাল, موّالٌ ج موّالون সম্পদের অধিকারী, অর্থ দাতা। **তার মাল**	فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ا>للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> ،الجملة حال~ [از ك ي]II [ن] [س] (زكاء) বড় হওয়া, বৃদ্ধি পাওয়া, V–পবিত্র হওয়া, I I–পবিত্র করা। **আত্মশুদ্ধি করে সে**
92|18|যে আত্মশুদ্ধির জন্যে তার ধন-সম্পদ দান করে।			

وَمَا	لِأَحَدٍ	عِنْدَهٗ	مِنْ	نِّعْمَةٍ	تُجْزٰىٓ ﴿19﴾
ح.عطف +ح. نفي **এবং নাই**	جرّ +اسم مجرور – بخبر مقدم [ا ح د] **কারও জন্য**	ظ. مكان منصوب +ضمير متصل – متعلق <نعمة> ،مضاف + ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ع ن د] [ن] [ض] [س] [ك] (عَنْد) (عُنود)বিচ্যুত করা,	جرّ – زائد **হতে**	اسم مجرور – لفظًا مرفوع – مبتدأ مؤخر [ن ع م] [ن] [ف] [س] (نعْمة)আরাম আয়েশে বাস করা,	فعل مضارع مجهول مرفوع بالضمة المقدرة على <ا> للتعذر ،نائب فاعل - <انت> [ج ز ي] [ض] (جزاء)বদলা দেওয়া, পুরস্কার দেওয়া, শাস্তি দেওয়া, جزاءٌপূরণ, প্রতিদান,

পুরষ্কার, শাস্তি, تَجزِيَةٌপুরষ্কার। **বদলা দিতে হবে**	نَعَمٌ ج أَنْعامٌপশু, **গৃহপালিত পশু।** **অনুগ্রহ**		চলে যাওয়া, বাধা দেওয়া, একগুয়ে হওয়া, (جرّ) عِنْدَ নিকটে, দ্বারা, সহ, উপর, মতে, عِنْدماযত শীঘ্র সম্ভব, যখন। **তার উপর**		
92|19|এবং তার উপর কারও কোন প্রতিদানযোগ্য অনুগ্রহ থাকে না।					

ٱلْأَعْلَىٰ ﴿20﴾	رَبِّهِ	وَجْهِ	ٱبْتِغَآءَ	إِلَّا
معرفة صفة مجرورة – بالكسر المقدر على <ا>للتعذر [ع ل و /ي] [ن]**উঁচু হওয়া,** **মহান হওয়া,** عُلُو**উচ্চ,** **উঁচু, বড়ত্ব,** (جرّ)على **উপরে ,** عَلِيٌّ ج عِلِّيُّون**উচ্চমর্যাদার স্থান।** **সর্ব শ্রেষ্ঠ**	اسم مجرور – مضاف إليه +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ر ب ب][ن] (ربّ)**প্রভু** **হওয়া,** ربٌّ ج أربابٌ **রব।** **তার** **রবের**	اسم مجرور - مضاف إليه [و ج ه] [ك] (وجاهة)**বিশিষ্ট হওয়া,** جِهَةٌ ج جِهاتٌ**দিক,** **এলাকা,** وجْهٌ ج وُجوهٌ**মুখমন্ডল,** **সামনে, বর্হিদেশ।** **সন্তুষ্টি**	اسم منصوب - مستثنى منقطعًا [VIII ب غ ي] [ض] (بُغاء) চাওয়া, ইচ্ছা করা, লোভ করা, ভূল করা, অন্যায় করা, VIII - ইচ্ছা করা, চেষ্টা করা, VII– প্রয়োজনীয় হওয়া, بَغِيٌّ ج بَغايا**বেশ্যা ,** بَغْيٌ**অত্যচার,** **জুলুম,** بُغيةٌ**লোভের** বস্তু, إبتِغاءٌ**ইচ্ছা, ।** **অন্বষণ করে সে**	ح. استثناء **ব্যতীত**
92|20|তার মহান পালনকর্তার সন্তুষ্টি অন্বেষণ ব্যতীত।				

يَرْضٰى ﴿21﴾	وَلَسَوْفَ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ا> للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> (رِضًى،رِضْوان) [س][ر ض و]সন্তুষ্ট হওয়া, একমত হওয়া, رضِي ج أرْضِياءُসন্তুষ্ট, খুশী। **সন্তুষ্ট হবেন তিনি**	ح.عطف +ل-تاكيد +ح. استقبال **এবং শীঘ্রই অবশ্যই**
92|21|সে সত্বরই সন্তুষ্টি লাভ করবে।	

।।সূরা আল – লাইল সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ

৯৩। সূরা আদ্-দোহা : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:১১

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَجٰى ﴿2﴾	إِذَا	وَالَّيْلِ	وَالضُّحٰى ﴿1﴾
فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا> للتعذر	ظ. زمان – الشرط	جرّ (و-القشم) +اسم مجرور – مقسم به	جرّ (و-القشم) +اسم مجرور-مقسم به بالكسرة المقدر على <ا> للتعذر

[ض ح و (ي)][ن] [س] (ضحْو،ضُحُوّ)(ضَحًا)রোদ পোহান, দৃশ্যমান হওয়া,, হাজির হওয়া, ضَحْوَةٌ ج ضحوات**পূর্বাহ্ন**, সকাল বেলা, ضُحًى**সকাল** বেলা, ضحاء**প্রথম** প্রহর, সকাল, ضَحِيَة ج ضحايا সকাল, জবাই করা পশু (ج) , আক্রান্ত (ج) , (أصحاةٌ) أضحًىজবাই করা পশু, উৎসর্গ, ضاحٍ**রৌদতাপ।** **শপথ উজ্জ্বল দিনের**	[ل ي ل] ،ليلٌ ج ليالي**রাতের সময়,** **রাত,**، ليلةٌ ج ليالٍ ليلاتٌ**রাত,** ليلًا**রাতের বেলা।** **শপথ রাতের**	جازِمٍ **যখন**	[س ج و][ن] (سجْو،سُجُو) শান্ত হওয়া, নিরিবিলি হওয়া,, سجيةٌ**মেজাজ,** প্রকৃতি, **স্বভাব,** ساجٍ**শান্ত,** অন্ধকার । **অন্ধকাচ্ছন্ন হয়**

93|1|শপথ পূর্বাহ্নের, 93|2|শপথ রাত্রির যখন তা গভীর হয়,

قَلَىٰ ﴿3﴾	وَمَا	رَبُّكَ	وَدَّعَكَ	مَا
فعل ماض مبني على الفتح المقدر على الألف للتعذر [ق ل ي][ن] [ض] [س] (بلْو،قِلًا) (قَلْي)(قِلًى،مقْلية)ভাজা [ن], ঘৃণা করা,অনিআ করা, নারাজ হওয়া [س] [ض] [ن] , قلّاية،مِقبًى**কড়াই,** মাজার পাত্র। **নারাজ হয়েছেন**	ح.عطف +ح. نفي **এবং না**	اسم مرفوع - فاعل +ضمير متصل – جرّ [ر ب ب][ن] (ربّ) **প্রভু হওয়া,** ربٌّ ج أربابٌ**রব।** **তোমার রব**	فعل ماض مبني على الفتح +ضمير متصل – مفعول مقدم [و د ع][ف] (ودْع) [II রাখা,ত্যাগ করা,, থামা, বাদ দেওয়া, II– বিদায় দেওয়া , বাদ দেওয়া, وداعٌ**বিদায়।** **ত্যাগ করেছেন তোমাকে**	ح. نفي **না**

93|3|আপনার পালনকর্তা আপনাকে ত্যাগ করেনি এবং আপনার প্রতি বিরূপও হননি।

خَيْرٌ	وَلَلْـَٔاخِرَةُ
اسم مرفوع بالضم ،حذفت <أ> إختصرًا <أخير> – خبر	ح.عطف +ل-تاكيد +اسم مرفوع – مبتدأ

(خيْر) [ض] [خ ي ر]পছন্দ করা, خيرٌ خِيارٌ ج উত্তম, ভাল, বেশী أخيار، خُيورٌ উত্তম। **উত্তম**	II [ا خ ر] দেরী করা, স্থগিত করা, বাধা দেওয়া, بأخرةٍ، أخرةً পরিশেষে, পরবর্তীতে, أواخِرَ، في آخِرٌ ج آخِرون،أواخِرُ শেষ, সর্বশেষ, الآخِرَةُ ،الآخِرٌ الآ পরকাল, আখেরাত, أواخِرِ সব শেষে, অবশেষে। **এবং নিশ্চয়ই পরবর্তী**
93|4|আপনার জন্যে পরকাল ইহকাল অপেক্ষা শ্রেয়।	

﴾4﴿ ٱلْأُولَىٰ	مِنَ	لَّكَ
معرفة اسم مجرور بالكسر المقدر على <ا> للتعذر – متعلق بخبر (أوْل) آلَ، [ن][ا و ل]ফিরে আসা, آلপরিবার, آلةযন্ত্র, أوَّلٌ، (م) أُلَى ج أولون،أوائِلُ، (م) أليات প্রথম, শুরু, প্রথম অংশ, الأُلَىদুনিয়া। **পূর্ববর্ত্তী**	جرّ হতে	جرّ +ضمير – متعلق بالخبر তোমার জন্য
93|4|আপনার জন্যে পরকাল ইহকাল অপেক্ষা শ্রেয়।		

﴾5﴿ فَتَرْضَىٰٓ	رَبُّكَ	يُعْطِيكَ	وَلَسَوْفَ
ح.عطف +فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ا>للتعذر فاعل – مستتير <انت>، (رِضًى،رِضْوان) [س] [ر ض و] সন্তুষ্ট হওয়া, একমত হওয়া, رِضِي أرْضِياءُ ج সন্তুষ্ট, খুশী। **এবং খুশী হবে তুমি**	اسم مرفوع - فاعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (ربّ) [ن] [ر ب ب] প্রভু হওয়া, ربٌّ أرْبابٌ ج রব। **তোমার রব**	فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ي>للثقل +ضمير متصل – مفعول به [ع ط و IV] , III– দেওয়া, IV–দান করা, উপহার দেওয়া, অনুমোদন করা, عطًا দান, উপহার, عطِيَةٌ ج عطايا উপহার, দান। **দান করবেন তোমাকে**	ح.عطف +ل-تاكيد +ح. استقبال এবং **শীঘ্রই অবশ্যই**
93|5|আপনার পালনকর্তা সত্বরই আপনাকে দান করবেন, অতঃপর আপনি সন্তুষ্ট হবেন।			

فَـَٔاوٰى ﴿6﴾	يَتِيمًا	يَجِدْكَ	أَلَمْ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا> للتعذر [ا و ي][ض]আশ্রয় চাওয়া, أيواء আশ্রয়, مأوًى ج مآوٍ আশ্রয়স্থল । এবং আশ্রয় দিয়েছেন তিনিল	اسم منصوب – مفعول به ثانٍ [ي ت م][ض] [ك] [س](يتْم،يتُم،يتَ)এতিম হওয়া, يتْم،يتُم،،يتَمٌ অভিভাবকহীনত্ব, ইয়তীমত্ব, يتيمٌ ج أيتامٌ،يتامى এতিম, ইয়াতীম। ইয়াতীম	فعل مضارع مجزوم بالسكون +ضمير متصل – مفعولمفعو [و ج د] [ض] (وجود)পাওয়া, অবগত হওয়া, আবিষ্কার করা, وُجودٌ উপস্থিতি, বৃত্তান্ত, অবস্থান, অনুসন্ধান, আবিষ্কার । পান তিনি	ح. استفهام +ح. نفي কি নাই

93|6|তিনি কি আপনাকে এতীমরূপে পাননি? অতঃপর তিনি আশ্রয় দিয়েছেন।

فَهَدٰى ﴿7﴾	ضَآلًّا	وَوَجَدَكَ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر [ه د ي][ض] (هدْي،هُدًى) পরিচালিত করা, পথ দেখান, هدىনির্দেশণা, هُدًى সঠিক নির্দেশণা । অতঃপর পথ দেখিয়েছেন তানি	اسم منصوب – مفعول به ثانٍ [ض ل ل] [ض] (ضلال،ضلالة) পথ হারানো, বিভ্রান্ত হওয়া, ضلٌّ ভুল, ضالٌّ ج ضالّون বিভ্রান্ত, বিপথগামী । পথ হারা	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو>+ضمير متصل – مفعول به [و ج د] [ض] (وجود)পাওয়া, অবগত হওয়া, আবিষ্কার করা, وُجودٌ উপস্থিতি, বৃত্তান্ত, অবস্থান, অনুসন্ধান, আবিষ্কার । এবং পেয়েছেন তিনি তোমাকে

93|7|তিনি আপনাকে পেয়েছেন পথহারা, অতঃপর পথপ্রদর্শন করেছেন।

فَأَغۡنَىٰ ﴿8﴾	عَآئِلٗا	وَوَجَدَكَ
ح. عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> (غِنًى،غناء) [س][غ ن ي IV] অভাবমুক্ত হওয়া, ধণী হওয়া, IV–ধণী করা, X–ধণী হওয়া, غِنًىসম্পদ, প্রাচুর্য, اِستغناءٌআত্মত্যাগ, প্রয়োজনহীন, غانيةٌ ج غانياتসুন্দরী মহিলা। এবং স্বচ্ছল বানিয়েছেন	اسم منصوب – مفعول به ثانٍ (عيلة) [ض] [ع ي ل] গরীব, নিঃস্ব, عائِلٌউপার্নকারী, সরবরাহকারী, عائلةٌ ج عوائِلُপরিবার । নিঃস্ব	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح – فاعل- مستتير<هو>+ضمير متصل ،مفعول به (وجود) [ض] [و ج د]পাওয়া, অবগত হওয়া, আবিষ্কার করা, وُجودٌউপস্থিতি, বৃত্তান্ত, অবস্থান, অনুসন্ধান, আবিষ্কার । পেয়েছেন তিনি
93|8|তিনি আপনাকে পেয়েছেন নিঃস্ব, অতঃপর অভাবমুক্ত করেছেন।		

تَقۡهَرۡ ﴿9﴾	فَلَا	ٱلۡيَتِيمَ	فَأَمَّا
فعل مضارع مجزوم بالسكون،فاعل – مستتير <انت> (قهْر) [ف] [ق ه ر]আয়ত্ত করা, জয় করা, পরাজিত করা, নিঃশেষ করা, قهْرٌআয়ত্ত, জোড়, বাধ্যবাধকতা। কঠোর হইও না	ح.عطف +ح. نهيএবং না	معرفة اسم منصوب – مفعول به مقدّم [ي ت م] ইয়াতীমের	ح. استئنافية +ح. تفصيلঅতঃপর এজন্য
93|9|সুতরাং আপনি এতীমের প্রতি কঠোর হবেন না;			

تَنۡهَرۡ ﴿10﴾	فَلَا	ٱلسَّآئِلَ	وَأَمَّا
فعل مضارع مجزوم بالسكون، فاعل – مستتير <انت> (نهْر) [ف][ن ه ر]প্রচুর প্রবাহিত হওয়া,তিরষ্কার করা, রাগে মুখ ফিরান, نهْرٌ	ح.عطف +ح. نهيএবং না	معرفة اسم منصوب – مفعول به مقدم [س ا ل][ض][ف] (سُؤال)(سِأْل) জিজ্ঞাসা করা, سؤلة،سُؤْلٌইচ্ছা, অনুরোধ, سؤال ج أسئِلٌজিজ্ঞাসা ।	ح.عطف +ح. تفصيل এবং এজন্য

أنهَر،أنهُر ج أنهرٌ،نُهُرٌ ج نـهارٌنদী, প্রবাহ, দিন, দিনের বেলা । **তিরস্কার কর**		**প্রার্থী র**	

93|10|সওয়ালকারীকে ধমক দেবেন না।

فَحَدِّثْ ﴿11﴾	رَبِّكَ	بِنِعْمَةِ	وَأَمَّا
ح. واقعة +فعل أمر مبني على السكون ،فاعل – مستتير <انت> II (حُدوث،حَداثةٌ) [ك][ف][ح د ث]ঘটা, সংঘটিত হওয়া [ف] , নূতন [ك],II - বলা, আলোচনা করা, ج حدَثٌ أحْداثٌ নূতন, খারাপ কাজ, ج حديثٌ أحاديثٌ،حِدْثان কথা, বক্তব্য। **অতঃপর প্রকাশ কর**	اسم مجرور – مضاف إليه +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ر ب ب][ن] (ربّ) প্রভু হওয়া, ج ربٌّ أربابٌরব। **তোমার রবের**	جرّ +اسم مجرور – مضاف ،متعلق <حدث> [ن ع م] [ن] [ف] [س] (نعْمة) আরাম আয়েশে বাস করা, نَعَمٌ ج أنْعامٌপশু, গৃহপালিত পশু। **নিয়ামতের**	ح.عطف +ح. تفصيلএবং এজন্য

93|11|এবং আপনার পালনকর্তার নেয়ামতের কথা প্রকাশ করুন।

II সূরা আদ্‌-দোহা সমাপ্ত II

سُوْرَةُ اَلَمْ نَشْرَحْ مَكِّيَّةٌ

৯৪। সূরা আল্‌-ইনশিরাহ : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:৮

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿1﴾ صَدۡرَكَ	لَكَ	نَشۡرَحۡ	أَلَمۡ
اسم منصوب – مفعول به +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (صُدور) [ض] [ن][ص د ر]সামনে যাওয়া, যাওয়া, উঠা, বের হওয়া, উদ্ভুত হওয়া, প্রকাশিত হওয়া, صدْرٌ ج صُدورٌ**বক্ষ,** স্তন, লিজা, হৃদয়, সামনের দিক, নেতা, সেনাপতি, صدرة**গেন্জি,** মেয়েদের গেঞ্জি। **তোমার বক্ষকে**	جرّ +ضمير – متعلق بالفعل **তোমার জন্য**	فعل مضارع مجزوم بالسكون ،فاعل – مستتير <نحن> (سبْح) [ف][ش ر ح] টুকরা করে কাটা, কাটা, প্রকাশ করা, উন্মুক্ত করা, ব্যাখ্যা করা, প্রসস্ত করা, মন্তব্য করা, شرْحٌ**ব্যাখ্য,** বিশদ বর্ণনা, شريحةٌ ج شرائِحُ**টুকরা।** **প্রসস্ত করি আমরা**	ح. استفهام +ح. نفي **কি নাই**

94|1|আমি কি আপনার বক্ষ উন্মুক্ত করে দেইনি?

﴿2﴾ وِزۡرَكَ	عَنكَ	وَوَضَعۡنَا
اسم منصوب – مفعول به +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (وَزَر)(وِزْر) [س][ض][و ز ر]বহন করা,দায়িত্ব নেওয়া [ض], পাপ করা [س] [ض] ، V মন্ত্রী হওয়া, وَزيرٌ ج وزراءُ**মন্ত্রী,** দাবার রাণী, وِزْرٌ ج أوزارٌ ভাড়ি বোঝা, পাপ, দায়িত্ব । **বোঝা তোমার**	جرّ +ضمير – متعلق بالفعل **তোমার থেকে**	ح.عطف +فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل (وضْع) [ف][و ض ع]স্থাপন করা, দাঁড় করা, وضْعٌ ج أوضاعٌ**স্থাপন,**পরিস্থিতি, গঠন, ضِعْةٌ**নীচতা,**وضَعَةٌ**অবস্থান,** পরিস্থিতি, مَوْضُوعةٌ**স্থাপিত।** **নামিয়েছি**

94|2|আমি লাঘব করেছি আপনার বোঝা,

ظَهْرَكَ ﴿3﴾	أَنقَضَ	ٱلَّذِىٓ
اسم منصوب – مفعول به +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (ظهور) [ف][ظ ه ر]দৃশ্যমান হওয়া, স্পষ্ট হওয়া, ظَهْرٌ ج ظُهورٌ أظهُرٌ،পিছন, পৃষ্ঠদেশ। তোমার পিঠ	فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو> IV(نقْض) [ن] [ن ق ض] ভেঙ্গে দেওয়া, ছিঁড়া, IV–ভাড়ি বোঝা দেওয়া, نقْضٌধ্বংস, أنقاضٌঝুটা, ময়লা। ভেঙ্গে দিচ্ছিল	اسم موصول – صفة (وزر) যারা
94|3|যা ছিল আপনার জন্যে অতিশয় দুঃসহ।		

ذِكْرَكَ ﴿4﴾	لَكَ	وَرَفَعْنَا
اسم منصوب – مفعول به +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (ذِكْر) [ن] [ذ ك ر]V স্মরণ করা, II–স্মরণ করানো, V–স্মরণ করা , ذِكْرٌ ج أذكارٌস্মরণ, تَذْكيرٌস্মরণকারী, স্মারক,تَذَكُّرٌস্মরণ, تذْكِرةٌ ج تذَاكِرٌসংবাদ, অনুমতি, *تَذْكِرةٌস্মারক, স্মরণকারী,* مُتذَكِّرٌস্মরণকারী, উপদেশ গ্রহনকারী, ذكَرَ ج ذُكورٌপুরুষ,ذُكورপুরুষাঙ্গ । তোমার উল্লেখ	جرّ +ضمير – مجرور متعلق بالفعل তোমার জন্য	ح.عطف +فعل ماض مبني على السكوون +ضمير متصل – فاعل (رفْع) [ف] [ر ف ع]তুলে ধরা, উপরে উঠান, مرفوعةউত্তোলিত। সুউচ্চ করছি আমরা
94|4|আমি আপনার আলোচনাকে সমুচ্চ করেছি।		

يُسْرًا ﴿5﴾	ٱلْعُسْرِ	مَعَ	فَإِنَّ
اسم منصوب – اسم <ان> [ي س ر][س] [ك] (يسَر) ll (يُسْر)সহজ হওয়া [س], সামান্য হওয়া [ك], يُسْرٌসহজ, ll-দেওয়া, সহজলভ্য করা , يَسرةٌবাম দিক । স্বস্তি	معرفة اسم مجرور – مضاف إليه ،متعلق بخبر <ان> محذوف [ع س ر][ك][س] [ض] [ن] (عُسْر،عُسُر)(عسَر) (عُسْر)কঠিন হওয়া, বিরুপ হওয়া [س] [ك] , চাপ দেওয়া, জোড় করা [ن][ض], عُسْرٌ،عُسُرٌ،عسارةٌ،عُسرَی،عسَرٌকাঠিন্য,কঠিন অবস্থা, عسِرٌকঠিন, বিরুপ। কষ্টের	ظ. مكان منصوب – مضاف সাথে	ح.عطف +ح. مشبه بفعل এবং নিশ্চয়ই
94|5|নিশ্চয় কষ্টের সাথে স্বস্তি রয়েছে।			

يُسْرًا ﴿5﴾	ٱلْعُسْرِ	مَعَ	إِنَّ
اسم منصوب – اسم <ان> [ي س ر][س] [ك] (يسَر) ll (يُسْر)সহজ হওয়া [س], সামান্য হওয়া [ك], يُسْرٌসহজ, ll-দেওয়া, সহজলভ্য করা , يَسرةٌবাম দিক । স্বস্তি	معرفة اسم مجرور – مضاف إليه ،متعلق بخبر <ان> محذوف [ع س ر][ك][س] [ض] [ن] (عُسْر،عُسُر)(عسَر) (عُسْر)কঠিন হওয়া, বিরুপ হওয়া [س] [ك] , চাপ দেওয়া, জোড় করা [ن][ض], عُسْرٌ،عُسُرٌ،عسارةٌ،عُسرَی،عسَرٌকাঠিন্য,কঠিন অবস্থা, عسِرٌকঠিন, বিরুপ। কষ্টের	ظ. مكان منصوب – مضاف সাথে	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
94|5|নিশ্চয় কষ্টের সাথে স্বস্তি রয়েছে।			

فَٱنْصَبْ ﴿7﴾	فَرَغْتَ	فَإِذَا

فا-واقعة (جواب الشرط) +فعل أمر مبني على السكون ،فاعل – مستتير <انت> (نصَب) (نصْب) [س][ك] [ن][ن ص ب] দাঁড় করানো, তৈরী করা, স্থাপন করা [ن], যন্ত্রণা করা, ক্লান্ত করা [ك], ক্লান্ত হওয়া, পরিশ্রান্ত হওয়াহওয়া [س], نصْبٌ ج أنصابٌমাটিতে স্থাপন করা, بُصْبٌ ج أنصابٌমূর্তি, (جَر) نُصْبَসামনে, বিপরীতে। **তবে ইবাদত কর তুমি**	فعل ماض مبني على السُكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل (فَراغ،فُروغ) [س] [ن] [ف ر غ]খালি হওয়া, শেষ করা, মুক্ত হওয়া , ব্যস্ত থাকা, فرِغٌখলি, فراغٌশূন্যতা। **অবসর হও তুমি**	ح. استئنافية +ظ. زمان – الشرط غير جازِمٍ **অতএব যখন**
94|7|অতএব, যখন অবসর পান পরিশ্রম করুন।		

فَٱرْغَبْ ﴿8﴾	رَبِّكَ	وَإِلَىٰ
ح.عطف +فعل أمر مبني على السُكون ،فاعل – مستتير <انت> (رغْبة،رغَب) [س][ر غ ب]ইচ্ছা করা, লোভ করা, অগ্রাধিকার দেওয়া , رغَبٌলোভ, رِغابٌ،رغباتٌ ج رغْبةٌইচ্ছা, আকাঙ্ক্ষা। **এবং মনোনিবেশ কর**	اسم مجرور - متعلق بالفعل <ارغب> +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب]প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌরব। **তোমার রবের**	ح.عطف +جرّ -متعلق بالفعل <ارغب> **এবং প্রতি**
94|8|এবং আপনার পালনকর্তার প্রতি মনোনিবেশ করুন।		

।।সূরা আল – ইনশিরাহ ।।

سُورَةُ التِّينِ مَكِّيَّةٌ

৯৫। সূরা আত্-ত্বীন : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:০৮

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

﴾2﴿ سِينِينَ	وَطُورِ	وَالزَّيْتُونِ ﴾1﴿	وَالتِّينِ
اسم علم مجرور بالفتحة (ممنوع) **সিনাই**	[ط و ا‌ا ح.عطف +اسم مجرور - معطوفة [رউন্নত করা, অগ্রসর হওয়া, طورٌ ج أطوارٌ**অবস্থা,** সীমা, এক সময়, طورٌ أطوارٌ**পাহাড়,**تطوِيرٌ **উন্নতি ।** **তুর পর্বতের**	ح.عطف +معرفة اسم مجرور – معطوفة [ز ي ت]‌ااতেল দেওয়া(যন্ত্র) , তেল যোগ করা (খাবার), (ة) زيتونজলপাই গাছ, زيتونة ج زيتوناتٌ**জলপাই** গাছ। **এবং যয়তুনের**	جرّ (و-القشم) +معرفة اسم مجرور- مقسم به تِينٌ (ة) , [ت ي ن] তিন(ডুমুর) গাছ, ফল, تَيّانٌ**ডুমুর** বিক্রেতা। **শপথ ডুমুরের**
95|1|শপথ আঞ্জীর (ডুমুর) ও যয়তুনের, 95|2|এবং সিনাই প্রান্তরস্থ তূর পর্বতের,			

وَهَٰذَا	ٱلۡبَلَدِ	ٱلۡأَمِينِ ﴿3﴾
ح.عطف +اسم اشارة معطوفة – في محل جرّ এবং এই	معرفة اسم مجرور – بدل بلدٌ ج (بلادك) [ك][ب ل د]বোকা হওয়া, بِلاَدٌদেশ, স্থান, শহরের	معرفة صفة مجرورة IV (أمْن) (أمانة) [س] [ك][ا م ن] বিশ্বাসী হওয়া [ك] ، নিরাপদ হওয়া [س],IV-বিশ্বাস করা, أمْنٌশান্তি, أمينٌ ج أُمناءُবিশ্বস্ত । নিরাপদ

95|3|এবং এই নিরাপদ নগরীর।

لَقَدۡ	خَلَقۡنَا	ٱلۡإِنسَانَ
ل-تاكيد +ح. تحقيق নিশ্চয়ই	فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل (خَلْق) [ن][خ ل ق]গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خَلْقٌসৃষ্টি, خُلُقٌ ج أخلقٌপ্রকৃতি । সৃষ্টি করেছি আমরা	معرفة اسم منصوب – مفعول به (أُنْس)[ك] [س][ا ن س] সামাজিক হওয়া, ভদ্র হওয়া,, أُنْسঘনিষ্ঠতা, বন্ধুত্বপূর্ণ, إنْسٌমানুষ, মানবজাতি, ঘনিষ্ঠ বন্ধু, إنسانমানুষ, الانسানকোন মানুষ, একজন । মানুষকে

95|4|আমি সৃষ্টি করেছি মানুষকে সুন্দরতর অবয়বে।

فِيٓ	أَحۡسَنِ	تَقۡوِيمٖ ﴿4﴾
جرّ মধ্যে	اسم تفضيل مجرور – مضاف، متعلق بالفعل অতি উত্তম	اسم مجرور ـ مضاف إليه (قَومة،قِيام) [ن][ق و م]IV, দাড়ান, IV-সোজা করা, দাঁড় করানো ,X-উঠা, দাড়া

قَوْمٌ ج أَقْوَامٌجনতা, জাতি, গোত্র, قَوْمَةٌদাঁড়ান, مَقَامٌ ج مَقَامَاتٌস্থান,অবস্থান, تَقْوِيمٌ ج تَقَاوِيمُপুনর্গঠন, গঠন, দাঁড়ানো, সংশোধন, পন্জিকা, قَيِّمٌসঠিক, মূল্যবান, তত্বাবধায়ক, الْقَيِّمَةٌসঠিক বিশ্বাস, قِيَامَةٌপূণরউত্থান, বিপ্লব, অভিভাবকত্ব। কাঠামোর		

95\|4\|আমি সৃষ্টি করেছি মানুষকে সুন্দরতর অবয়বে।

سَٰفِلِينَ ﴿5﴾	أَسْفَلَ	رَدَدْنَٰهُ	ثُمَّ
اسم مجرور بالياء <ي> لانه جمع مذكر سالم ،<ن>عوض عن تنوين المفرد – مضاف إليه [س ف ل][ن] [س] [ك] (سُفول،سفا،سفْل) (سفَل) (سفالة) নিচু হওয়া, নিকৃষ্ট হওয়া অতি নীচে, سُفلٌতলদেশ, أسْفَلُ ،(م)سُفلى ج أسافِلُঅধিক নিচু, সবচেয়ে নিচু, سافِل ج سافلونনিচু । সব নীচুর	ظ. مكان منصوب – مضاف [س ف ل][ن] [س] [ك] (سُفول،سفا،سفْل) (سفَل) (سفالة) নিচু হওয়া, নিকৃষ্ট হওয়া অতি নীচে, سُفلٌতলদেশ, أسْفَلُ ،(م)سُفلى ج أسافِلُঅধিক নিচু, সবচেয়ে নিচু, سافِل ج سافلونনিচু ।	فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل +ضمير متصل – مفعول به [ر د د] [ن] (ردّ)ফিরে আনা, رَدٌّপ্রত্যাবর্তন, مرْدودونপ্রত্যাবর্তনকারী। ফিরিয়ে দিয়েছি আমরা তাকে	ح.عطف অতঃপর

95\|5\|অতঃপর তাকে ফিরিয়ে দিয়েছি নীচ থেকে নীচে।

وَعَمِلُوا۟	ءَامَنُوا۟	ٱلَّذِينَ	إِلَّا
ح.عطف +فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،<ا>	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،<ا>فارقة	اسم موصول - مستثنى যারা	ح. استثناء ব্যতীত

(عمَل) [س][ع م ل]করা, কাজ করা, সম্পাদন করা , عمَلٌকাজ, অভ্যাস, কাজকর্ম। এবং সম্পাদন করেছে	IV (أمْن) (أمانة) [س] [ك][ا م ن]বিশ্বাসী হওয়া [ك] ، নিরাপদ হওয়া [س],IV-বিশ্বাস করা, أمْنٌশান্তি, أمينٌ ج أُمناءُবিশ্বস্ত । ঈমান এনেছে		

95|6|কিন্তু যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে ও

أَجْرٌ	فَلَهُمْ	ٱلصَّٰلِحَٰتِ
اسم مرفوع – مبتدأ مؤخر (اجْر) [ن][ا ج ر] পুরস্কার, ক্ষতিপূরণ, أَجْرٌ ج أُجورٌবেতন, ক্ষতিপূরণ, أُجْرةٌভাড়া । পুরস্কার	ح. استئنافية +جرّ +ضمير – مجرور، بخبر مقدم অতঃপর তাদের জন্য	معرفة اسم مجرور – مضاف إليه [ص ل ح][ن][ف][ك] (صلاح،صُلوح،مَصلحة)، (صلاح،صلاحية) ভাল হওয়া, সঠিক হওয়া, ধার্মিক হওয়া, মূল্যবান হওয়া, صالِحٌ ج صوالِحُভাল, ঠিক, সৎ, الصالِحاتভাল কাজ। সৎকর্মের

সৎকর্ম করেছে, তাদেরজন্যে রয়েছে

مَمْنُوْنٍ ﴿6﴾	غَيْرُ
اسم مجرور – مضاف إليه [ن][م ن ن]দয়ালু হওয়া, مَمْنونٌকৃতজ্ঞ, ঋণী, غيرُ ممنونअশেষ, শেষ হবে না এমন। বিরতি	اسم مرفوع – صفة ،مضاف (غيرة) [ف] [غ ي ر] হিংসুক হওয়া, غَيْرُএছাড়া, (جَر) غَيْرَব্যতীত, ছাড়া। ছাড়া

অশেষ পুরস্কার।

فَمَا	يُكَذِّبُكَ	بَعْدُ	بِٱلدِّينِ ﴿7﴾
ح. استئنافية +ح. استفهام অতঃপর কি	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير <هو>+ضمير متصل – مفعول به (كِذْب) [ض][ك ذ ب]!!মিথ্যা বলা, !!-মিথ্যারোপ করা, ج مُكَذِّبٌ مكذّبونমিথ্যারোপকারী। মিথ্যারোপ করতে পারে তোমাকে	ظ. زمان [ب ع د] [ك][س] (بعْد)দূরে হওয়া, أبْعَاد ج بَعْدٌদূরত্ব, بَعْدُপরে,তখন, (جرّ) بَعْدَপরে, অধিকন্তু। পরে	جرّ +معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل [د ي ن][ض] স্বীকার করা, ج دينٌ أديانধর্ম, মত, বিশ্বাস, يوم الدينশেষ বিচার দিবস। বিচার দিবসের

95|7|অতঃপর কেন তুমি অবিশ্বাস করছ কেয়ামতকে?

أَلَيْسَ	ٱللَّهُ	بِأَحْكَمِ	ٱلْحَٰكِمِينَ ﴿8﴾
ح. استفهام +فعل ماض ناقص «كان» [ل ي س] না, একে বারে অস্তিত্বহীন। নন কি	لفظ الجلالة مرفوع - شاسم <ليس>[[اله]!! খোদা বানান, آلِهةٌ ج اِلاهٌ،الهٌখোদা, উপাস্য, (ال+اله) الله আল্লাহ। [আল্লাহ	جرّ – زائد +معرفة اسم مجرور،التفضيل، لفظًا منصوب – خبر <ليس>] বড় বিচারক	معرفة اسم مجرور بالياء <ي>لانه جمع مذكر سالم،<ن>عوض عن تنوين – مضاف إليه (حُكْم) [ن] [ح ك م] বিচার করা, সিদ্ধান্ত নেওয়া, রায় দেওয়া ج حُكْمٌ أحْكَمٌবিচার, সিদ্ধান্ত, রায়, أحْكَمُঅধিক জ্ঞানী, حُكّامٌ،حاكِمون ج حاكِمٌবিচারক, শাসক, অধিপতি, اِحْكَامٌসঠিকতা, পূর্ণতা। সব বিচারকের

95|8|আল্লাহ কি বিচারকদের মধ্যে শ্রেষ্ঠতম বিচারক নন?

!!সূরা আত্-ত্বীন সমাপ্ত !!

سُورَةُ العَلَقِ مَكِّيَّةٌ

৯৬। সূরা আল্-আলাক : মাক্কী.

রুকু: ০১ আয়াত:১৯

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

خَلَقَ ﴿1﴾	ٱلَّذِى	رَبِّكَ	بِٱسۡمِ	اِقۡرَأۡ
فعل ماض مبني على الفتح فاعل – مستتير <هو>، (خلْق) [ن][خ ل ق]গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خلْقٌসৃষ্টি, خُلْقٌ ج أخلقٌপ্রকৃতি । সৃষ্টি করেছেন	اسم موصول - صفة যিনি	اسم مجرور - مضاف إليه – ضمير متصل+ جرّ بالإضافة [ر ب ب][ن] (ربّ)প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌরব। তোমার রবের	جرّ (زائد) +اسم مجرور -مضاف [س م و][II] নাম দেওয়া, উপাধী দেওয়া, اِسمٌ ج أسماءٌ ، أسامٍনাম, সুনাম, সম্মান, বিশেষ্য। নামে	فعل أمر مبني على السكون ،فاعل – مستتير <انت> (قِراءة) [ف][ق ر ا]উচ্চারণ করা, পড়া, চেষ্টা করা, অধ্যয়ন করা, শুভেচ্ছা বিনিময় করা,VI–পড়ানো, শেখানো, قراءةٌ ج قراءاتআবৃতি, পড়া, পঠন, القرآنআল কোরআন । পড়

96|1|পাঠ করুন পালনকর্তার নামে যিনি সৃষ্টি করেছেন

مِنْ عَلَقٍ ﴿2﴾		ٱلْإِنسَانَ	خَلَقَ
اسم مجرور – متعلق بالفعل (علَق) [س][ق ل ع] ঝুলান, লাগা,বিদ্ধ করা বিদীর্ণ করা, ধরা, সংযুক্ত থাকা, عِلْقٌমূল্যবান বস্তু, علقات ج (ة) عَلَقٌরক্ত, জমাট রক্ত, জোঁক । জমাট রক্ত	جرّ হতে	معرفة اسم منصوب – مفعول به (أنس)[ك] [س][س ن ا]সামাজিক হওয়া, ভদ্র হওয়া,, أُنْسঘনিষ্ঠতা, বন্ধুত্বপূর্ণ, إِنْسٌমানুষ, মানবজাতি, ঘনিষ্ঠ বন্ধু, إنسانমানুষ, الانسانকোন মানুষ, একজন । মানুষকে	فعل ماض مبني على الفتح فاعل – مستتير <هو>، (خاْق) [ن][ق ل خ]গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خَلْقٌসৃষ্টি, خُلْقٌ أخلق ج প্রকৃতি । সৃষ্টি করেছেন

96|1 সৃষ্টি করেছে মানুষকে জমাট রক্ত হতে।

ٱلْأَكْرَمُ ﴿3﴾	وَرَبُّكَ	ٱقْرَأْ
معرفة اسم مرفوع [ك ر م]বড়ই অনুগ্রহশীল	ح.اتتئنافية +اسم مرفوع [ر ب ب]+ضمير এবং তোমার রব	فعل أمر مبني على السكون ،فاعل – مستتير <انت> (قِراءة) [ف][ق ر ا]উচ্চারণ করা, পড়া, চেষ্টা করা, অধ্যয়ন করা, শুভেচ্ছা বিনিময় করা,VI–পড়ানো, শেখানো, قراءةٌ ج قراءاتআবৃতি, পড়া, পঠন, القرآنআল কোরআন । পড়

96|3|পাঠ করুন, আপনার পালনকর্তা মহা দয়ালু,

بِٱلْقَلَمِ ﴿4﴾	عَلَّمَ	ٱلَّذِىْ
جرّ +معرفة اسم مجرور [ق ل م]কলম দিয়ে	فعل ماض مبني على الفتح [ع ل م]II শিখিয়েছেন	اسم موصول – صفة <رب> যারা

96|4|যিনি কলমের সাহায্যে শিক্ষা দিয়েছেন,

ٱلْإِنسَٰنَ	عَلَّمَ
معرفة اسم منصوب – مفعول به (أنْس)[ك] [س][ا ن س]সামাজিক হওয়া, ভদ্র হওয়া,, أُنْسঘনিষ্ঠতা, বন্ধুত্বপূর্ণ, إِنْسٌমানুষ, মানবজাতি, ঘনিষ্ঠ বন্ধু, إنسانমানুষ, الانسانকোন মানুষ। একজন মানুষকে	فعل ماض II (عِلْم) [س][ع ل م]জানা, II- শিখানো, শিক্ষিত করা, ج عالَمٌ ج عالَمونَ،عوالِمُعالِمٌ ج عُلماءُজ্ঞানী, عِلمٌ عُلومٌজ্ঞান, বিশ্ব, দুনিয়া (عِلْم) [س][ع ل م] জানা, عِلمٌ ج عُلومٌজ্ঞান, عالِمٌ ج عُلماءُজ্ঞানী, عالَمٌ ج عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া। শিখিয়েছেন
96|5|শিক্ষা দিয়েছেন মানুষকে	

﴿5﴾ يَعْلَمْ	لَمْ	مَا
فعل مضارع مجزوم بالسكون ،فاعل – مستتير <هو> (عِلْم)[س][ع ل م]জানা, অবহিত হওয়া, عِلْمٌ ج عُلومٌজ্ঞান, অবগতি, (ج) বিজ্ঞান, العُلومُপ্রাকৃতিক বিজ্ঞান, عَلَمٌ ج أعلامٌচিহ্ন, عليمٌ ج عُلماءُ জ্ঞানী, শিক্ষিত, عَالِمٌ ج عُلماءُ জ্ঞানী, বিশেষজ্ঞ, عَالَمٌ ج عالمونবিশ্ব, পৃথিবী, أعْلَمُসর্বাধিক জ্ঞানী ।জানে সে	ح. نفي না	اسم موصول – مفعول به ثانٍ যা
যা সে জানত না।		

لَيَطْغَىٰٓ ﴿6﴾	ٱلْإِنسَٰنَ	إِنَّ	كَلَّآ
ل-تاكيد +فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ا>للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> (طغَى،طغْي) [س][ف] [ن][ط غ ي] সীমালঙ্ঘণ করা, ج طاغٍ طُغاةٌবিদ্রোহী, طُغوانবন্যা, নিপীড়ন, অত্যাচার ।	معرفة اسم منصوب - اسم <ان> (أنْس)[ك] সামাজিক হওয়া, ভদ্র হওয়া,, أُنْسঘনিষ্ঠতা, বন্ধুত্বপূর্ণ, إِنْسٌমানুষ, মানবজাতি, ঘনিষ্ঠ বন্ধু, إنسانমানুষ, الانسانকোন মানুষ। মানুষ	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	ح. ردع কক্ষণনা

অবশ্যই সীমালংঘন করে			
96|6|সত্যি সত্যি মানুষ সীমালংঘন করে,			

ٱسۡتَغۡنَىٰٓ ﴿7﴾	رَّءَاهُ	أَن
فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> (غِنًى،غناء) [س][غ ن ي IV] অভাবমুক্ত হওয়া, ধণী হওয়া, IV–ধণী করা, X–ধণী হওয়া, غِنًىসম্পদ, প্রাচুর্য, اِستغناءٌআত্মত্যাগ, প্রয়োজনহীন, غانيةٌ ج غانياتসুন্দরী মহিলা। অভাবমুক্ত	فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على <ا> للتعذر +ضمير متصل – مفعول به (رأْي) [ف][ر ا ي]দেখা, رَأْي ج آراءٌমতামত, দর্শন । দেখে সে তাকে	ح. مصدرية যে
96|7|এ কারণে যে, সে নিজেকে অভাবমুক্ত মনে করে।		

الرُّجۡعَىٰٓ ﴿8﴾	رَبِّكَ	إِلَىٰ	إِنَّ
معرفة اسم منصوب بالفتح المقدر على <ا>للتعذر – اسم <ان> مؤخر (رُجوع) [ض][ر ج ع] ফিরে আসা, رُجْعٌপ্রত্যাবর্তন, ফিরা । প্রত্যাবর্তন	اسم مجرور – متعلق بالخبر <ان> المقدم +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب]প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌরব। তোমার রবের	جرّ প্রতি	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
96|8|নিশ্চয় আপনার পালনকর্তার দিকেই প্রত্যাবর্তন হবে।			

﴿9﴾ يَنْهَىٰ	ٱلَّذِى	أَرَءَيْتَ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ا> للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> (نَـهْي) (نَـهْو) [ن ه ي / و][ن] VIII] **নিষেধ করা, VIII–শেষ হওয়া, চুড়ান্ত হওয়া, نَـهْوٌশেষ, সমাপ্তি, نَـهْيٌনিষেধ, مُنْتَهىনিখুত, চুড়ান্ত, সম্পূর্ণ ।** **নিষেধ করে**	اسم موصول – مفعول به **যে**	ح. استفهام +فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمىر متصل – فاعل (رأْي) [ف][ر ا ي]**দেখা,** رَأْي ج آراءٌ**মতামত, দর্শন।** **কি দেখেছ তুমি**
96|9|আপনি কি তাকে দেখেছেন, যে নিষেধ করে		

﴿10﴾ صَلَّىٰٓ	إِذَا	عَبْدًا
فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> (صلوة)[ص ل و]II নামায আদায় করা, প্রার্থনা করা, صلوةٌ،صلاةٌ ج صلواتٌনামায, ইসলামের আনুষ্ঠানিক প্রার্থনা। **নামায পড়ে সে**	ظ. زمان – الشرط غير جازمٍ **যখন**	اسم منصوب – مفعول به <نـهى> (عِبَدة،عُبودة) [ن][ع ب د]] সেবা করা, এবাদত করা, عَبْدٌ ج عبيدٌ, عِبادٌগোলাম, বান্দা। **এক বান্দাকে**
96|10|এক বান্দাকে যখন সে নামায পড়ে?		

ٱلْهُدَىٰٓ ﴿11﴾	عَلَىٰ	كَانَ	إِنْ	أَرَءَيْتَ
معرفة اسم مجرور بالكسرة على<ي> المقدر للتعذر – مجرور متعلق بخبر <كان>محذوف (هدْي،هُدًى) [ض][ه د ي]পরিচালিত করা, পথ দেখান, هدىনির্দেশণা, هُدًىসঠিক নির্দেশণা । সঠিক পথের	جرّ উপর	فعل ماض ناقص ، اسم <كان>مستتير (كوْن،كِيان) [ن][ك و ن] হওয়া, ঘটা, থাকা, كوْنٌ ج أكوانঘটনা । হয় সে	ح. شرط جازمٍ যদি	ح. استفهام +فعل ماض مبني على السُكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل (رأْي) [ف][ر ا ي] দেখা, رَأْيٌ ج آراءٌমতামত, দর্শন । কি দেখেছ তুমি
96|11|আপনি কি দেখেছেন যদি সে সৎপথে থাকে।				

بِٱلتَّقْوَىٰٓ ﴿12﴾	أَمَرَ	أَوْ
جرّ +معرفة اسم مجرور بالكسرة المقدر على <ا> للتعذر – متعلق بالفعل (وقْي،وقاية) [ض][و ق ي] VIII পাহার দেওয়া, যত্ন করা, রক্ষা করা, রাখা, VIII - সাবধান থাকা, রক্ষা করা, রক্ষাকারী হওয়া, تقوىভক্তি, তাকওয়া, ধার্মিকতা। আল্লাহভীতির	فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو> (أمْر) [ن][ا م ر]আদেশ করা, أمْرٌ ج أُمورٌকাজ। أمْرٌ ج أوامِرٌআদেশ, নির্দেশ দেয়	ح.عطف
96|12|অথবা খোদাভীতি শিক্ষা দেয়।		

وَتَوَلَّىٰٓ ﴿13﴾	كَذَّبَ	إِن	أَرَءَيْتَ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا> للتعذر	فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو>	ح. شرط جازمٍ যদি	ح. استفهام +فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل

(ولاء،ولاية) [س] [و ل يV] কাছে হওয়া, নিকটে হওয়া, V-দখল করা, বাধা দেওয়া, বিরত থাকা, وِلِيٌّ ج أولياءُনিকট, নিকটে, সাহায্যকারী, বন্ধু। ও মুখ ফিরায়	(كِذْب) [ض][ك ذ بII] মিথ্যা বলা, II-মিথ্যারোপ করা, مُكذّبٌ ج مكذّبونমিথ্যারোপকারী। অমান্য করে সে		(رأي،رُؤية) [ف][ر اي]দেখা, অনুধাবন করা, رأي ج آراءমতামত, দৃষ্টিভঙ্গি। কি দেখেছ তুমি
96|13|আপনি কি দেখেছেন, যদি সে মিথ্যারোপ করে ও মুখ ফিরিয়ে নেয়।			

يَرَىٰ ﴿14﴾	ٱللَّهَ	بِأَنَّ	يَعْلَمْ	أَلَمْ
فعل مضارع مرفوع بالضمة على المقدّر للتعذر<ا> فاعل – مستتير <هو>، (رأْي) [ف][ر ا ي] দেখা, رَأْي ج آراءٌমতামত, দর্শন । দেখছেন	لفظ الجلالة مجرور – اسم <ان> [اله]II খোদা বানান, الهٌ،اِلاهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, الله (ال+اله)আল্লাহ। আল্লাহ	جرّ +ح. مشبه بفعل যে	فعل مضارع مجزوم بالسكون ،فاعل – مستتير <هو > (عِلْم) [س][ع ل م]জানা, II- শিখানো, শিক্ষিত করা, عِلمٌ ج عُلومٌজ্ঞান, عالِمٌ ج عُلماءُজ্ঞানী, عالَمٌ ج عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া ع (عِلْم) [س][ل م]জানা, عِلمٌ ج عُلومٌজ্ঞান, عالِمٌ ج عُلماءُজ্ঞানী, عالَمٌ ج عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া। জানে সে	ح. استفهام +ح. نفي কি না
96|14|সে কি জানে না যে, আল্লাহ দেখেন?				

﴿15﴾ بِٱلنَّاصِيَةِ	لَنَسۡفَعًۢا	يَنتَهِ	لَّمۡ	لَئِن	كَلَّا
جرّ +معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل [ن ص ي / و]V চুলের গোছা ধরে টানা, যুক্ত করা, ماصيةٌ ج نَواصٍ চুলের ঝুঁটি, মাথার সামনের দিক, রাস্তার কিনারা । **সামনের কেশগুচ্ছ**	ل-تاكيد (جواب القسم) + فعل مضارع مبني على الفتح لإتصاله +ن-تاكيد(رسمت ألفاً) ،فاعل – مستتير <نحن> [س ف ع] [ف] (شَفْع) ঝলসান, পাখা ঝাপটানো, কশাঘাত করা, আঘাত করা, سُفْعةٌ ج سُفَعٌ কাল দাগ। **অবশ্যই ধরে টানব আমরা**	فعل مضارع مجزوم بحذف <ي> ،فاعل – مستتير <هو > **[ن ه ي / و][ن] (نَهْو) (نَهْي)VIII] নিষেধ করা, VIII-শেষ হওয়া, চূড়ান্ত হওয়া, نَهْوٌ শেষ, সমাপ্তি, نَهْيٌ নিষেধ, مُنْتهى নিখুত, চূড়ান্ত, সম্পূর্ণ ।** **বির। হয় সে**	ح. نفي **না**	ل-تاكيد (موطئة للقسم) +ح. شرط جازِمٍ **অবশ্যই যদি**	ك. ردع **কক্ষণনা**

96|15|কখনই নয়, যদি সে বিরত না হয়, তবে আমি মস্তকের সামনের কেশগুচ্ছ ধরে হেঁচড়াবই-

﴿16﴾ خَاطِئَةٍ	كَٰذِبَةٍ	نَاصِيَةٍ
اسم مجرور – صفة مجرورة [خ ط ا][س] (خطأ) ভুল করা, পাপ করা, خَطَأٌ **অপরাধ,** ভূল, خطاءٌ ،خِطْءٌ ত্রুটি, ভূল, অপরাধ । **পাপীর**	اسم مجرور – صفة مجرورة **[ك ذ ب][ض] (كِذْب) II] মিথ্যা বলা, II-মিথ্যারোপ করা, مُكَذِّبٌ ج مكذّبون মিথ্যারোপকারী।** **মিথ্যুকের**	اسم مجرور – بدل <ناصية> [ن ص ي / و]V চুলের গোছা ধরে টানা, যুক্ত করা, ماصيةٌ ج نَواصٍ **চুলের** ঝুঁটি, মাথার সামনের দিক, রাস্তার কিনারা । **সামনের কেশগুচ্ছ**

96|16|মিথ্যাচারী, পাপীর কেশগুচ্ছ।

ٱلزَّبَانِيَةَ ﴿18﴾	سَنَدْعُ	نَادِيَهُ ﴿17﴾	فَلْيَدْعُ
معرفة اسم منصوب -مفعول به (زَبْن) [ض][ز ب ن]ধাক্কা মারা, ঠেলে দেওয়া, زِبْنٌ،زَبَنٌপার্শ্ব, زِبْنِيةٌ ج زَبانيةٌসৈন্য, ফেরেশতাগন, প্রহরীগন(ধাক্কা দিয়ে জাহান্নামে নিক্ষেপকারী) । **জাহান্নামের প্রহরীদের**	ح. استقبال +فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <و>للثقل المحذوفة (بقيت الضمة عليه) (دعاء)[ن][د ع و/ي] ডাকা, আবেদন করা, دعْوَةٌডাক, আহ্বান, دعْوى ج دعاوىমামলা, অভিযোগ। [**শীঘ্রই ডাকব আমরা**	اسم منصوب - مفعول به +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ن د و][ن][س] (نَدًى)(نَدْو)ডাকা [ن], মিজান [س], نَدْوَةٌসভা, কাউন্সিল। **তার পরিষদ বর্গকে**	ح. استئنافية +ل-أمر +فعل مضارع مجزوم بحذف <و>،(بقيت الضمة عليه) [د ع و/ي][ن](دعاء) ডাকা, আবেদন করা, دعْوَةٌডাক, আহ্বান, دعْوى ج دعاوىমামলা, অভিযোগ। **অতঃপর যেন ডাকে সে**
96|17|অতএব, সে তার সভাসদদেরকে আহবান করুক। 96|18|আমিও আহবান করব জাহান্নামের প্রহরীদেরকে			

وَٱقْتَرِبْ السجدة﴿19﴾	وَٱسْجُدْ	تُطِعْهُ	لَا	كَلَّا
ح.عطف +فعل أمر مبني على السكون ،فاعل – مستتير <انت> [اا ق ر ب][ك][س] (قُرْب)(قُرْب،مقربة،قُربان) **কাছে আসা, II–কাছে আসতে দেওয়া, قُرْبٌনৈকট্য, قُربىসম্পর্ক, আত্মীয়তা, قريبٌনিকটে, مُقَرَّبٌ ج مُقرّبونনিকটে, ঘনিষ্ঠ।** **ও নৈকট্য লাভ কর**	ح.عطف +فعل أمر مبني على السكون ،فاعل – مستتير <انت> [س ج د] [ن] (سُجود) **মাথা নত করা, সেজদা করা,** سجَّادٌ ج سجّادون **সিজদাকারী।**	فعل مضارع مجزوم بالسكون ،وحذفت <ي > لإلتقاء السكينين ،فاعل – مستتير <انت> +ضمير متصل – مفعول به [IVط و ع][ن] (طوْع) **মান্য করা, طوْعٌবাধ্যতা, অনুগত, স্বেচ্ছা আনুগত্য, طوعًاস্বেচ্ছায়।**	ح. نهي **না**	ح. ردع **কক্ষণনা**

	এবং সিজদা কর তুমি	মানবে তাকে		
96|19|কখনই নয়, আপনি তার আনুগত্য করবেন না। আপনি সেজদা করুন ও আমার নৈকট্য অর্জন করুন।				

।।সূরা আল্-আলাক সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ

৯৭। সূরা আল্-ক্বাদর : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:০৫

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

فِيْ	أَنزَلْنَٰهُ	إِنَّآ
جرّ মধ্যে	فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير – فاعل – مستتير <هو >+ضمير متصل – مفعول به (نُزول) [ض][ان ز لIV] নামানো, নিচে নামা, পরা,IV-নিচে আনা, নিচে নামানো, অবতরন করান, দান করা, অনুমোদন করা, দেওয়া , نزْلٌ ج نُزولٌকোয়ার্টার, বাসা। নাযিল করেছি আমরা তা	ح. مشبه بفعل ضمير+নিশ্চয়ই আমরা
97|1|আমি একে নাযিল করেছি শবে-কদরে।		

﴾1﴿ ٱلْقَدْرِ	لَيْلَةِ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه II (قَدَر) (قُدرة) (قَدْر)[س] [ض] [ن][ق د ر]আদেশ করা, সিদ্ধান্ত করা (আল্লাহ তায়ালার) [ض] [ن], শক্তি থাকা, ক্ষমতা রাখা [ض] [س], II–সিদ্ধান্ত করা, নিয়োগ করা, আদেশ করা , قَدْرٌ ج أقدارٌভাগ্য, (আল্লাহর) আদেশ, قديرٌশক্তিশালী, قادِرٌক্ষমতা রাখে যে, সক্ষম, ক্ষমতাবান। ক্বদরের	اسم مجرور – متعلق بالفعل [ل ي ل]রাতের لیلٌ ج لیالي সময়, রাত,، لیلةٌ ج لیالٍ لیلاتٌরাত, لیلًاরাতের বেলা। রাতের
97|1|আমি একে নাযিল করেছি শবে-কদরে।	

مَا	أَدْرَىٰكَ	وَمَآ
ح. استفهام -مبتدأ কি	فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر،فاعل – مستتير +ضمير متصل – مفعول به ~الجملة خبر <ما> [د ر ي IV] II– অব্যাহত রাখা, চলমান রাখা, IV–অর্জন করা, অনুধাবন করান, বোঝান, পাওয়া, পৌঁছা, হঠাৎ আসা, ধরা, دَرَكٌঅর্জন, পাওয়া, ধরা, পুলিশ, دَرَكةٌ درکاتٌনিম্ন স্থান, নামার ধাপ। জানাবে তোমাকে	ح.عطف +ح،استفهام – مبتدأ এবং কি
97|2|শবে-কদর সমন্ধে আপনি কি জানেন?		

﴾2﴿ ٱلْقَدْرِ	لَيْلَةُ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه]II (قَدَر) (قُدرة) (قَدْر)[س] [ض] [ن][ق د ر]আদেশ করা, সিদ্ধান্ত করা (আল্লাহ তায়ালার) [ض] [ن], শক্তি থাকা, ক্ষমতা রাখা [ض] [س], II–সিদ্ধান্ত করা,	اسم مرفوع – خبر [ل ي ل]রাতের لیلٌ ج لیالي সময়, রাত,، لیلةٌ ج لیالٍ لیلاتٌরাত, لیلًاরাতের বেলা।

নিয়োগ করা, আদেশ করা , قَدْرٌ ج أقدارٌভাগ্য, (আল্লাহর) আদেশ, قديرٌশক্তিশালী, قَادِرٌক্ষমতা রাখে যে, সক্ষম। ক্বদরের	রাত
97|2|শবে-কদর সমন্ধে আপনি কি জানেন?	

خَيۡرٌ	ٱلۡقَدۡرِ	لَيۡلَةُ
اسم مرفوع - خبر (خَيْر) [ض] [خ ي ر]পছন্দ করা, خيرٌ ج خِيارٌ، أخيار، خُيورٌউত্তম, ভাল, বেশী উত্তম। উত্তম	معرفة اسم مجرور – مضاف إليه بالإضافة [ق د ر][ن] [ض] [س](قَدْر) (قُدرة) II] (قَدَر)আদেশ করা, সিদ্ধান্ত করা (আল্লাহ তায়ালার) [ض] [ن], শক্তি থাকা, ক্ষমতা রাখা [ض] [س], II- সিদ্ধান্ত করা, নিয়োগ করা, আদেশ করা , قَدْرٌ ج أقدارٌভাগ্য, (আল্লাহর) আদেশ, قديرٌশক্তিশালী, قَادِرٌক্ষমতা রাখে যে, সক্ষম। ক্বদরের	اسم مرفوع - مبتدأ [ل ي ل] ليلٌ ج ليالي، রাতের সময়, রাত,، ليلةٌ ج ليلاتٌ ليالٍরাত, ليلًاরাতের বেলা। রাত
97|3|শবে-কদর হল এক হাজার মাস অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ।		

شَهۡرٖ ﴿3﴾	أَلۡفِ	مِّنۡ
اسم مجرور – مضاف إليه (شَهْر) [ف][ش ه ر] সুপরিচিত করা, ছড়ান ঘোষনা করা, شَهْرٌঘোষনা, شَهْرٌ ج أشْهُر،شُهور নতুন চাঁদ, মাস।	اسم مجرور - متعلق بخبر (ألْف) [س] [ا ل ف]পরিচিত হওয়া, অভ্যস্ত হওয়া, أُلْفَةٌঘনিষ্ঠতা, أَلْفٌ ج اِلِيفٌপরিচিত,	جرّ হতে

মাস	أُلوفٌ،آلافٌহাজার, সহস্র বসর, أَلِفٌঅক্ষরের নাম। হাজার	
97|3|শবে-কদর হল এক হাজার মাস অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ।		

وَٱلرُّوحُ	ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ	تَنَزَّلُ
ح.عطف +معرفة اسم مرفوع – معطوف فاعل (رواح) [ن][ر و ح / ر ي ح] রাতে যাওয়া, চলে যাওয়া, ج (م) رِيحٌ رِياحٌগন্ধ, বাতাস, رُوحٌ ج أَرواحٌজীবনের নিঃশ্বাস, আত্ম, জীবন, জীবনের সারাংশ এবং রুহ	معرفة اسم مرفوع – فاعل (مِلْك،مُلْك) [ض][م ل ك] অধিগ্রহণ করা, মালিক হওয়া , ج مِلاكٌ ملاكون مُلْكٌ অধিকারী, মালিক, ج مُلُوكٌ রাজা, বাদশাহ, مَلَكٌ ملائِكةٌ،(مَلَأك)ফেরেশতাগণ । ফেরেশতারা	فعل مضارع مرفوع بالضمة (حذفت إحدى التاءين <تتنزل> IV (نُزول) [ض][ن ز ل]নামানো, নিচে নামা, পরা,IV-নিচে আনা, নিচে নামানো, অবতরন করান, দান করা, অনুমোদন করা, দেওয়া , نَزْلٌ ج نُزولٌকোয়ার্টার, বাসা। অবতীর্ণ হয়
97|4|এতে প্রত্যেক কাজের জন্যে ফেরেশতাগণ ও রুহ অবতীর্ণ হয়		

بِإِذْنِ	فِيهَا
جرّ +اسم مجرور – متعلق بفعل (إِذْن) [س][ا ذ ن] শুনা, অনুমতি দেওয়া, إِذْنٌ ج أُذونٌঅনুমতি। অনুমতিক্রমে	جرّ +ضمير – متعلق بالفعل তার মধ্যে
97|4|এতে প্রত্যেক কাজের জন্যে ফেরেশতাগণ ও রুহ অবতীর্ণ হয়	

أَمۡرٍ ﴿4﴾	كُلِّ	مِّنۡ	رَبِّهِمۡ
اسم مجرور – مضاف إليه (أمْر) [ا م ر][ن] আদেশ করা, أمْرٌ ج أوامِرٌআদেশ, أمْرٌ ج أُمورٌকাজ। **হুকুম**	اسم مجرور – متعلق بالفعل (كلٌّ) [ك ل ل][ض] পরিশ্রান্ত হওয়া, كُلّসব, كلّاকক্ষণও না। **সব**	جرّ হতে	اسم مجرور – مضاف إليه ضمير متصل – جرّ+ بالإضافة (ربّ) [ر ب ب][ن] প্রভু হওয়া, رَبٌّ ج أربابٌরব। **তাদের রবের**
তাদের পালনকর্তার নির্দেশক্রমে।			

ٱلۡفَجۡرِ ﴿5﴾	مَطۡلَعِ	حَتَّىٰ	هِيَ	سَلَٰمٌ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه (فَجْر،فُجور) [ف ج ر][ن] পরিষ্কার করা, খনন করা, বিছিন্ন করা, ব্যভিচার করা, فَجْرٌপ্রাতঃকাল, সকাল, فاجِرٌ ج فُجَّارٌ ব্যভিচারী , فُجورٌঅনৈতিক কাজ। **ফজরের**	اسم مجرور متعلق – بالفعل (طُلوع،مطلع) [ط ل ع][ف] [ن] উঠা, দৃশ্যমান হওয়া, উপরে আসা, طلْعةٌসৌন্দর্য, বাহ্যিক দর্শন, مطْلَعٌ ج مطالِعُউদয়, উদয়ের সময়,, উদয়ের স্থান। **উদয়**	جرّ **পর্যন্ত**	ضمير منفصل – مبتدأ مؤخر **সেই**	اسم مرفوع – خبر مقدم (سلامة،سلام) [س ل م][س] নিরাপদ হওয়া, প্রতিষ্ঠিত হওয়া , سلْمٌশান্তি, سِلْمٌশান্তি, ইসলাম ধর্ম। **শান্তির**
97|5|এটা নিরাপত্তা, যা ফজরের উদয় পর্যন্ত অব্যাহত থাকে।				

।।সূরা আল্-ক্বদর সমাপ্ত

سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ

৯৮। সূরা আল্-বাইয়্যেনাহ : মাদানী

রুকু: ০১ আয়াত:০৮

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

لَمۡ	يَكُنِ	ٱلَّذِينَ
ح. نفي না	فعل مضارع ناقص مجزوم بالسكون ،الكسرة لإلتقاء السكينين (كوْن،كِيان) [ن][ك و ن]হওয়া, ঘটা, থাকা, أكوان ج كوْنٌঘটনা । ছিল	اسم موصول – اسم <كان> যারা
98|1|আহলে-কিতাব ও মুশরেকদের মধ্যে		

كَفَرُوا۟	مِنۡ	أَهۡلِ	ٱلۡكِتَٰبِ
فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،<ا>فارقة IV (كفْر) [ض] [ك ف ر]ঢেঁকে রাখা, গোপন করা, বিদ্রোহী হওয়া,IV–	جرّ হতে	اسم مجرور – متعلق بحال محذوفة <الذين> (أُهول) [س] [ض] [ن] [ا ه ل]বিবাহ করা [ض] [ن], বসবাসে অভ্যস্থ হওয়া, পরিচিত হওয়া [س], أهْلٌ ج	معرفة اسم مجرور – مضاف إليه [ك ت ب][ن] (كتْب،كِتبة)লিখা, كِتابٌ جবই, চিঠি। كُتُوبٌ

কিতাবের	أَهْلُونআত্মীয়, পরিবার, أَهَالٍঅধিবাসী। আহলি		বিদ্রোহী করা, বিদ্রোহী বলা, كافِرٌ ج كافرون،كُفَّارٌকাফের, বিদ্রোহী। কুফরী করেছে
যারা কাফের ছিল, তারা প্রত্যাবর্তন করত না			

مُنفَكِّيْنَ	وَالْمُشْرِكِيْنَ
اسم منصوب بالياء <ي> لانه جمع مذكر سالم ،<ن>عوض عن التنوين المفرد - خبر <يكو> VII (فكٌّ) [ن] [ف ك ك]পৃথক করা, বিচ্ছিন্ন করা, VII - বিচ্ছিন্ন হওয়া, বিরত হওয়া , فكَّةٌছোট পয়সা, فكٌّমুক্তি, বিমোচন, فِكَاكٌমুক্তি, ছারা, মুক্তিপণ, مُنفكٌّ ج مُنفكُّون বিচ্ছিন্ন, বিরত। বিরত	ح.عطف +معرفة اسم مجرور بالياء <ي>لانه جمع مذكر سالم <ن>عوض عن تنوين – معطوفة <اهل>، (شِرْك،شِركة) [س][ش ر ك]IV, অংশ নেওয়া, অংশীদার হওয়া, IV–অংশীদার করা , شِركةٌঅংশীদারিত্ব, مُشارِكٌঅংশীদার, مُشرِكٌ ج مُشرِكون বহুত্ববাদী। মুশরিকদের
যতক্ষণ না তাদের কাছে সুস্পষ্ট প্রমাণ আসত।	

الْبَيِّنَةُ ﴿1﴾	تَأْتِيَهُمُ	حَتّٰى
معرفة اسم مرفوع – فاعل (بيان) [ض][ب ي ن] স্পষ্ট হওয়া, বের হওয়া, পৃথক হওয়া, بيْنٌপৃথক, بيْنَ (جَرّ) ،ما بين، فما بين মাঝে, মধ্যে, بينَ يديه তার সামনে,-و-بين ابين অথবা, (عطف)بينما যখন। অকাট্য দলিল	فعل مضارع منصوب+ضمير متصل – مفعول به مقدّم (إتيان،أتي،مأتةً) [ض][ا ت ي] আসা, আনা, দেওয়া, পাওয়া, IV–আনা, দেওয়া, أتيان কর্ম, কাজ, مأتًى ج مآتٍ আসা, যাওয়ার স্থান। আসবে কাছে তাদের	جرّ যতক্ষণ না
যতক্ষণ না তাদের কাছে সুস্পষ্ট প্রমাণ আসত।		

يَتْلُوْا	ٱللّٰهِ	مِّنَ	رَسُوْلٌ
فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <و>للثقل ،حذفت وبقت الضمة +ضمير متصل <ا>، فاعل – فارقة (تلاوة ,تلْو) [ن][ت ل و]অনুসরন করা, পড়া, উচ্চস্বরে পড়ার, (جرّ)تِلْوَপরে, একের পর এক, تِلَاوَةٌপাঠ করা(আল কোরআন) । পড়বে	لفظ الجلالة مجرور – متعلق بصفة <رسول> [اله]II খোদা বানান, اِلٰهٌ،اِلاهٌ ج آلِهَةٌখোদা, উপাস্য, (ال+اله) اللهআল্লাহ। [আল্লাহর	جرّ হতে	اسم مرفوع – بدل <البينة> IV] [ر س ل][س] (رسَل) লম্বাচুলের হওয়া, IV- পাঠান, رَسُوْلٌ ج رُسُلٌবার্তা বাহক । একজন রসুল
98|2|অর্থাৎ আল্লাহর একজন রসূল, যিনি আবৃত্তি করতেন পবিত্র সহীফা,			

مُّطَهَّرَةً ﴿2﴾	صُحُفًا
صفة منصوبة II (طُهْر،طهارة) [ك] [ط ه ر] পবিত্র হওয়া, II - পবিত্র করা, مُطَهَّرٌপবিত্র। পবিত্র	اسم منصوب – مفعول به [ص ح ف]II ভুল পড়া, ভুল উচ্চারণ করা, বিকৃত করা, صَحِيفَةٌ ج صُحُفٌ، صُحائفُপাতা, পৃষ্ঠা, খবরের কাগজ। সহাফা সমূহ
98|2|অর্থাৎ আল্লাহর একজন রসূল, যিনি আবৃত্তি করতেন পবিত্র সহীফা,	

﴾3﴿ قَيِّمَةٌ	كُتُبٌ	فِيهَا
صفة مرفوعة (قَومة،قِيام) [ق و م][ن] IV, দাড়ান, IV-সোজা করা, দাঁড় করানো ,X-উঠা, দাড়া قَومٌ ج أقوامٌজনতা, জাতি, গোত্র, قومةٌদাঁড়ান, مَقامٌ ج مَقاماتٌস্থান,অবস্থান,تقويمٌ ج تقاويمُপুনর্গঠন, গঠন, দাঁড়ানো, সংশোধন, পন্জিকা, قَيِّمٌসঠিক, মূল্যবান, তত্বাবধায়ক, القَيِّمةُসঠিক বিশ্বাস, قِيامَةٌপূণরউত্থান, বিপ্লব, অভিভাবকত্ব। সঠিক	اسم مرفوع - مبتدأ مؤخر الجملة صفة ثانٍ~ [ك ت ب][ن] كِتابٌ ج ,(كَتْب،كِتبة)লিখা كُتُوبٌবই, চিঠি। বিধানাবলী	جرّ +ضمير - متعلق خبر مقدم তার মধ্যে
98|3|যাতে আছে, সঠিক বিষয়বস্তু।		

ٱلَّذِينَ	تَفَرَّقَ	وَمَا
اسم موصول – فاعل যারা	فعل ماض مبني على الفتح ف ر ق] [ن][س] (فَرْق،فُرْبان)(غَرَق) V] পৃথক করা, ভাগ করা [ن] , ভীত হওয়া, আতঙ্কিত হওয়া, فِرقٌঅংশ, বিভাগ, فَرَقٌভয়, আতঙ্ক। বিভেদে লিপ্ত হয়েছে	ح.عطف +ح. نفي এবং না
98|4|অপর কিতাব প্রাপ্তরা যে বিভ্রান্ত হয়েছে, তা হয়েছে তাদের		

أُوتُوا	ٱلْكِتَٰبِ	إِلَّا
فعل ماض مجهول مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ، <ا>فارقة IV(إتيان،أتي،مأتاةً) [ض][ا ت ي] আসা, আনা, দেওয়া, পাওয়া, IV–আনা, দেওয়া, أتيانকর্ম, কাজ, مأتًى ج مآتٍ আসা, যাওয়ার স্থান। দওয়া হয়েছিল	معرفة اسم منصوب – مفعول به كِتابٌ ج ,লিখা[ك ت ب][ن] (كتْب،كِتبة) كُتُوبٌবই, চিঠি। কিতাব	ح. تحقيق (بعد النفي) যতক্ষণ না
তা হয়েছে তাদের কাছে		

مِنْ	بَعْدِ	مَا	جَآءَتْهُمُ	الْبَيِّنَةُ (4)
جرّ হতে	اسم مجرور (بعْد) [س][ك] [ب ع د] দূরে হওয়া, بَعْدٌ ج أبْعاد দূরত্ব, بعْدُপরে,তখন, بَعْدَ (جرّ)পরে, অধিকন্তু। পরে	اسم موصول যা	فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – مفعول به (مجئ) [ض][ج ي ا] আসা, পৌঁছা, جيئةপৌঁছা। এসেছিল তাদের কাছে	معرفة اسم مرفوع – فاعل (بيان) [ض][ب ي ن] স্পষ্ট হওয়া, বের হওয়া, পৃথক হওয়া, بيْنٌপৃথক, بينَ (جّر)মাঝে, মধ্যে, بينَ ،ما بين، فما بين يديهতার সামনে,-و-بين باينঅথবা, بينما(عطف)যখন। সুস্পষ্ট প্রমান
সুস্পষ্ট প্রমাণ আসার পরেই।				

لِيَعۡبُدُوٓا	إِلَّا	أُمِرُوٓا	وَمَآ
ل-تعليل +فعل مضارع منصوب بحذف النون +ضمير متصل – فاعل ،<ا>فارقة (عِبَدة،عُبودة) [ن][ع ب د] সেবা করা, এবাদত করা, عِبادٌ ,عبيدٌ ج عبْدٌগোলাম, বান্দা। **ইবাদত করে**	ح. تحقيق (بعد النفي) এছাড়া **যে**	فعل ماض مجهول مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،<ا>فارقة (أَمْر) [ن][ا م ر]**আদেশ করা,** أَمْرٌ ج أوامِرٌ**আদেশ,** أُمورٌ ج أَمْرٌ**কাজ।** **আদিষ্ট হয়েছে তারা**	ح.عطف +ح. نفي **এবং না**
98|5|তাদেরকে এছাড়া কোন নির্দেশ করা হয়নি যে, তারা			

مُخۡلِصِيۡنَ	ٱللَّهَ
اسم منصوب بالياء <ي> لانه جمع مذكر سالم ،<ن>عوض عن التنوين – حال <يعبدوا> IV (خُلود) [ن][خ ل ص]পবিত্র হওয়া, অমিশ্রত হওয়া, অকুণ্ঠ হওয়া,।– অনুগত হওয়া, একনিষ্ঠ হওয়া, বিশ্বস্ত হওয়া , خلاصٌ **মুক্তি, নিষ্পত্তি,** خُلَّصٌ ج خالِصٌ**পবিত্র,** مُخلِصٌ**নিবেদিত,** নিষ্ঠাবান। **একনিষ্ঠ**	لفظ الجلالة منصوب – مفعول به **[اله] II খোদা বানান,** آلِهةٌ ج اِلاهٌ،الهٌ**খোদা,** **উপাস্য,** (ال+اله) الله**আল্লাহ। [আল্লাহর**
খাঁটি মনে একনিষ্ঠভাবে আল্লাহর	

حُنَفَآءَ	ٱلدِّيۡنَ	لَهُ
اسم منصوب (ممنوع ،لأنه لم تنوين) – حال [ض][ح ن ف]ভাঁজ করা, حنيفٌ ج حُنفاءُ**প্রকৃত** বিশ্বাসী, নিষ্ঠাবান। **একমুখী**	معرفة اسم منصوب – مفعول به [ض][د ي ن] **স্বীকার করা,** أديان ج دينٌ**ধর্ম, মত,** **বিশ্বাস,** يوم الدين**শেষ বিচার দিবস।** **আনুগত্যকে**	جرّ +ضمير – مجرور متعلق <مخلسين> **তাঁরই জন্য**

এবাদত করবে,

وَيُؤْتُوا	ٱلصَّلٰوةَ	وَيُقِيمُوا
ح.عطف +فعل مضارع منصوب بحذف النون +ضمير متصل – فاعل IV [ا ت ي][ض] (إتيان،أتي،مأتةً)আসা, আনা, দেওয়া, পাওয়া, IV–আনা, দেওয়া, أتيانকর্ম, কাজ, مأتًى ج مآتٍআসা, যাওয়ার স্থান। ও দিবে তারা	معرفة اسم منصوب – مفعول به II[ص ل و](صلوة) নামায আদায় করা, প্রার্থনা করা, صلوةٌ،صلاةٌ ج صلواتٌনামায, ইসলামের আনুষ্ঠানিক প্রার্থনা। নামায	ح.عطف +فعل مضارع منصوب بحذف النون +ضمير متصل – فاعل (قَومة،قِيام) [ن][ق و م] IV, দাড়ান, IV–সোজা করা, দাঁড় করানো ,X–উঠা, দাড়া قَومٌ ج أقوامٌজনতা, জাতি, গোত্র, قومةٌদাঁড়ান, مَقامٌ ج مَقاماتٌস্থান,অবস্থান,تقْوِيمٌ ج تقاويمُপুনর্গঠন, গঠন, দাঁড়ানো, সংশোধন, পন্জিকা, قَيِّمٌসঠিক, মূল্যবান, তত্বাবধায়ক, القَيِّمةٌসঠিক বিশ্বাস, قِيامَةٌপূণরউত্থান, বিপ্লব, অভিভাবকত্ব। এবং কায়েম করবে তারা
, নামায কায়েম করবে এবং যাকাত দেবে।		

ٱلْقَيِّمَةِ ﴿5﴾	دِينُ	وَذٰلِكَ	ٱلزَّكٰوةَ ۚ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه (قَومة،قِيام) [ن][ق و م], দাড়ান, IV–সোজা করা, দাঁড় করানো ,X–উঠা, দাড়া قَومٌ ج أقوامٌজনতা, জাতি, গোত্র, قومةٌদাঁড়ান, مَقامٌ ج مَقاماتٌস্থান,অবস্থান, تقْوِيمٌ ج تقاويمُপুনর্গঠন, গঠন, দাঁড়ানো, সংশোধন,	اسم مرفوع – خبر [د ي ن][ض] স্বীকার করা, دينٌ ج أديانধর্ম, মত, বিশ্বাস, يوم الدينশেষ বিচার দিবস। দ্বীন	ح.عطف +اسم اشارة - مبتدأ এটাই	معرفة اسم منصوب – مفعول به (زكاء) [ن] [ز ك و /ي] সাফল্য লাভ করা, পবিত্র হওয়া, زكِيٌّ ج أزكياءُপবিত্র, বিশুদ্ধ, زكاءٌসমৃদ্ধি, সততা, বিশুদ্ধতা, زكاةٌ (زكوة) ج زكاواتপবিত্রতা, দান, ট্যাক্স, যাকাত।

পনিজকা, قَيِّمٌসঠিক, মূল্যবান, তত্বাবধায়ক, الْقَيِّمَةٌসঠিক বিশ্বাস, قِيَامَةٌপূণরউত্থান, বিপ্লব, অভিভাবকত্ব। সঠিক			যাকাত
এটাই সঠিক ধর্ম।			

كَفَرُوْا	ٱلَّذِيْنَ	إِنَّ
فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،<ا>فارقة (كفْر) [ض] [ك ف ر]ঢেঁকে রাখা, গোপন করা, বিদ্রোহী হওয়া,IV-বিদ্রোহী করা, বিদ্রোহী বলা, كُفَّارٌ،كافرِون ج كافِرٌকাফের, বিদ্রোহী। কুফরী করেছে	اسم موصول – اسم <ان> যারা	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
98|6|আহলে-কিতাব ও মুশরেকদের মধ্যে যারা		

ٱلْكِتٰبِ	أَهْلِ	مِنْ
معرفة اسم مجرور [ك ت ب][ن] (كتْب،كِتبة)লিখা,كُتُوبٌ ج كِتابٌ বই, চিঠি। কিতাব দের	اسم مجرور – متعلق بحال <الذين> (أُهول) [س] [ض] [ن] [ا ه ل]বিবাহ করা [ض] [ن], বসবাসে অভ্যস্থ হওয়া, পরিচিত হওয়া [س], أهْلون ج أهْلٌআত্মীয়, পরিবার, أهَالٍঅধিবাসী। আহলি	جرّ হতে
98|6|আহলে-কিতাব ও মুশরেকদের মধ্যে যারা		

وَالْمُشْرِكِيْنَ	فِيْ	نَارِ
ح.عطف +معرفة اسم مجرور بالياء <ي>لانه جمع مذكر سالم <ن>عوض عن التنوين، (شِرْك،شِركة) [س][ش ر ك] IV, অংশ নেওয়া, অংশীদার হওয়া, IV–অংশীদার করা , شِركةٌঅংশীদারিত্ব, مُشارِكٌঅংশীদার, مُشرِكٌ ج مُشرِكون বহুত্ববাদী। **মুশরিকদের**	جرّ **মধ্যে**	اسم مجرور – خبر <ان> **[ن و ر] II প্রস্ফুটিত হওয়া, প্রজ্বলিত করা, আলোয় পূর্ণ করা, نارٌ (م) ج نِران আগুন, রাইফেল এর গুলি, النارُ জাহান্নাম।** **আগুনের**
কাফের, তারা জাহান্নামের আগুনে		

جَهَنَّمَ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَآ ۚ
اسم علم مجرور – مضاف إليه بالفتحة (ممنوع) [ج ه ن م] جهنّم (م) **জাহান্নামের**	اسم منصوب بالياء <ي>لانه جمع مذكر سالم ،<ن>عوض عن التنوين – حال (خُلود) [ن][خ ل د] অবস্থান অব্যাহত রাখা, চির স্থায়ী হওয়া, خُلْدٌ **চিরকাল সময়**, خالِدٌ ج خوالِدُ،خالِدون **চিরস্থায়ী**, অমর, (ج) পর্বতমালা। **চির স্থায়ী ।**	جرّ +ضمير -متعلق <خالدين> **তার মধ্যে**
আগুনে স্থায়ীভাবে থাকবে।		

ٱلْبَرِيَّةِ ﴿6﴾	شَرُّ	هُمْ	أُو۟لَٰٓئِكَ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه ~الجملة خبر <الئك> (بَرْء) [ف][ب ر ا]সৃষ্টি করা(আল্লাহর), برِيةٌ ج برياتٌ، সৃষ্টি, بَرْءٌ برايا সৃষ্ট(জিনিষ)। সৃষ্টির	اسم مرفوع – خبر <هم> [س][ك][ف] [ش ر ر] (شَرّ)(شِرّة) খারাপ হওয়া, অসাধু হওয়া, شرٌّ جشُرُور খারাপ, অমঙ্গল, অন্যায়, নিকৃষ্ট। নিকৃষ্ট	ضمير منفصل – مبتدأ ثانٍ তারাই	اسم اشارة – مبتدأ তারা
তারাই সৃষ্টির অধম।			

ٱلصَّٰلِحَٰتِ	وَعَمِلُوا۟	ءَامَنُوا۟	ٱلَّذِينَ	إِنَّ
معرفة اسم منصوب باالكسرة لأنه جمع مؤنث سالم – مفعول به [ص ل ح][ن][ف][ك] (صلاح،صُلوح،مَصلحة) (صلاح،صلاحية) ভাল হওয়া, সঠিক হওয়া, ধার্মিক হওয়া, মূল্যবান হওয়া, صالِحٌ ج صوالِحُ ভাল, ঠিক, সৎ, الصالِحات ভাল কাজ। সৎকর্মের	ح.عطف +فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،<ا> [ع م ل][س] (عمَل) করা, কাজ করা, সম্পাদন করা , عمَلٌ কাজ, অভ্যাস, কাজকর্ম। সম্পাদন করেছে	فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل ،<ا>فارقة IV (أمانة) [س] [ك][ا م ن] (أمْن)বিশ্বাসী হওয়া [ك]، নিরাপদ হওয়া [س],IV-বিশ্বাস করা, أمْنٌ শান্তি, أمينٌ ج أُمناءُ বিশ্বস্ত । ঈমান এনেছে	اسم موصول যারা	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
98|7|যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে				

ٱلۡبَرِيَّةِ ﴿7﴾	خَيۡرُ	هُمۡ	أُوْلَٰٓئِكَ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه (بَرْء) [ف][ب ر ا] সৃষ্টি করা(আল্লাহর), بَرْءٌসৃষ্টি, برايا، بريّاتٌ ج بريةٌসৃষ্ট(জিনিষ)। সৃষ্টি	اسم مرفوع – خبر <هم> (خَيْر) [ض] [خ ي ر] পছন্দ করা, خيرٌ ج خُيورٌ، أخيار، خِيارٌউত্তম, ভাল, বেশী উত্তম। উত্তম	ضمير منفصل – مبتدأ ثانٍ তারাই	اسم اشارة - مبتدأ তারা
স্থায়ীভাবে থাকবে। তারাই সৃষ্টির অধম।			

عَدۡنٍ	جَنَّٰتُ	رَبِّهِمۡ	عِندَ	جَزَآؤُهُمۡ
اسم مجرور – مضاف إليه ~ [ع د ن][ض] [ن] (عدْن،عُدون)অবস্থান করা, عدانٌস্থান, عدْنচিরস্থায়ী বাসস্থান। চির স্থায়ী	اسم مرفوع – خبر <خزآؤُ> [ج ن ن][ن] (جنّ،جُنون) ঢাঁকা, গোপন করা, নামা,(م)جِنِّيةٌ جِنٌّজ্বিন, جِنانٌ، جَنَّاتٌ ج جَنَّةٌবেহেস্ত, বাগান। জান্নাত	اسم مجرور – مضاف إليه +ضمير [ر ب (ربّ) [ن]بপ্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌরব। তাদের রবের	ظ. زمان – منصوب – متلعق بخبر কাছে	اسم مرفوع – مبتدأ +ضمير متصل – جرّ (جزاء) [ض] [ج ز ي] বদলা দেওয়া, পুরস্কার দেওয়া, শাস্তি দেওয়া, جزاءٌপূরণ, প্রতিদান, পুরস্কার, শাস্তি, تجزيةٌপুরস্কার। তাদের পুরস্কার
98|8|তাদের পালনকর্তার কাছে রয়েছে তাদের প্রতিদান চিরকাল বসবাসের জান্নাত,				

تَحۡتِهَا	مِن	تَجۡرِي
اسم مجرور – متعلق بالفعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (جر) تَحْتَ، [ت ح ت]নিচে, (ظرف)تحتُনিচ, নিচে, تَحْتِيনিচে, مِن تحتِনিচ হতে, নিচে। তার পাদদেশে	جرّ হতে	فعل مضارع مرفوع بالضمة المقدر على <ي>للثقل (جرْي) [ض][ج ر ي]প্রবাহিত করা, সংঘটিত হওয়া, جريগতিপথ, গতি । প্রবাহিত হয়

যার তলদেশে নির্ঝরিণী প্রবাহিত। তারা সেখানে থাকবে অনন্তকাল।

فِيْهَآ	خٰلِدِيْنَ	الْأَنْهٰرُ
جرّ +ضمير – متعلق <خالدين> তার মধ্যে	اسم منصوب بالياء <ي> لانه جمع مذكر سالم ،<ن>عوض عن التنوين – مفعول به (خُلود) [ن][خ ل د] অবস্থান অব্যাহত রাখা, চির স্থায়ী হওয়া, خُلْدٌচিরকাল সময়, ج خَالِدٌ خَالِدُون،خَوالِدُচিরস্থায়ী, অমর, (ج) পর্বতমালা। চির স্থায়ী	معرفة اسم مرفوع – فاعل (نَهْر) [ف][ن ه ر]প্রচুর প্রবাহিত হওয়া,তিরষ্কার করা, রাগে মুখ ফিরান, نَهْرٌ ج أنهُر،أنهَرনদী, প্রবাহ, نَهارٌ ج أنهرٌ،نُهُرٌদিন, দিনের বেলা । ঝর্ণা ধারা
যার তলদেশে নির্ঝরিণী প্রবাহিত। তারা সেখানে থাকবে অনন্তকাল।		

اللّٰهُ	رَّضِيَ	أَبَدًا
لفظ الجلالة مرفوع - فاعل [اله]।। খোদা বানান, الهٌ،اِلاهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, (ال+اله) الله আল্লাহ। আল্লাহ	فعل ماض مبني على الفتح (رِضًى،رِضوان،مَرضاة) [س][ر ض ي] খুশী হওয়া,রাজি হওয়া, গ্রহন করা, ইচ্ছা করা, رِضًىসন্তুষ্টি, সম্মতি, رَضِي ج أرضياءُখুশী, তৃপ্ত, رِضوانসম্মতি, গ্রহন। রাজি রয়েছেন	اسم منصوب - بدل <خالدين> (ابود) [ن][ض][ا ب د] অবস্থান করা , স্থায়ী হওয়া [ض] , বন্য হওয়া, লাজুক হওয়া [ض] [ن], اَبَدٌ ج آبادٌঅশেষ, অসীম সময়, أبدًاসব সময়। সর্বদা
আল্লাহ তাদের প্রতি সন্তুষ্ট এবং		

عَنْهُ ۚ	وَرَضُوْا	عَنْهُمْ	
جرّ +ضمير مجرور متعلق - بالفعل، الجملة ~حال **তাঁর প্রতি**	ح.عطف +فعل ماض مبني على الضم لإتصاله ،بحذفي <ي>لإلتقاء السكينين،بعد نقلت الضم إلى ما قبل +ضمير متصل – فاعل ،<ا>فارقة (رِضًى،رِضوان،مَرضاة) [س][ر ض ي]খুশী হওয়া,রাজি হওয়া, গ্রহন করা, ইচ্ছা করা, رِضًى**সন্তুষ্টি,** সম্মতি, رضِي ج أرضياءُ**খুশী,** তৃপ্ত, رِضوان**সম্মতি,** গ্রহন। **রাজি হয়েছে তারা**	جرّ +ضمير – مجرور متعلق بالفعل ~ الجملة حال من الضمير في <جزاؤهم> **তাদের প্রতি**	
এবং তারা আল্লাহর প্রতি সন্তুষ্ট			

رَبَّهٗ ﴿8﴾	خَشِيَ	لِمَنْ	ذٰلِكَ
اسم منصوب – مفعول به +ضمير متصل-جرّ بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب] **প্রভু হওয়া,** ربٌّ ج أربابٌ**রব।** **রবকে**	فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو> (خشْي،خشْية) [س][خ ش ي]**ভয় করা,** خشْيةٌ**ভয়,** خاشٍ**উদ্বিগ্ন।** **ভয় করে**	جرّ +اسم موصول – متعلق بخبر محذوف তাঁর **জন্য**	اسم اشارة – مبتدأ **এটা**
এটা তার জন্যে, যে তার পালনকর্তাকে ভয় কর।			

।।সূরা আল্-বাইয়্যেনাহ সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ

৯৯। সূরা আল্-যিল্ যাল :মাদানী

রুকু:০১ আয়াত:০৮

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

زِلْزَالَهَا (1)	ٱلْأَرْضُ	زُلْزِلَتِ	إِذَا
اسم منصوب – مفعول به +ضمير – جرّ بالإضافة [ز ل ز ل QI] নাড়া দেওয়া, ঝাঁকুনি দেওয়া, زَلْزَلةٌ ج زَلازِلٌ**ভূমিকম্প,** زِلزالٌ**কম্পন,** ভূমিকম্পন। **তার কম্পনে**	معرفة اسم مرفوع – نائب فاعل [ا ر ض]II **মাটিতে গাঁড়া,** أرْضٌ(م) ج أراضٍ ،أراضون**পৃথিবী, জমিন।** **পৃথিবী**	فعل ماض مجهول مبني على الفتح التأنيث<تْ>، [ز ل ز ل QI] নাড়া দেওয়া, ঝাঁকুনি দেওয়া, زَلْزَلةٌ ج زَلازِلٌ**ভূমিকম্প,** زِلزالٌ**কম্পন,** ভূমিকম্পন। **কম্পিত করা হবে**	ظ. زمان – الشرط غير جازمٍ **যখন**

99|1|যখন পৃথিবী তার কম্পনে প্রকম্পিত হবে,

أَثْقَالَهَا ﴿2﴾	ٱلْأَرْضُ	وَأَخْرَجَتِ
اسم منصوب – مفعول به +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (ثِقْل،ثقالة) [ك][ث ق ل]ভাড়ী হওয়া, দুঃসাধ্য হওয়া, ثِقْلٌ ج أثقالٌভাড়, বোঝা, ثِقَلٌভাড়, বোঝা। **তার বোঝা সমূহ**	معرفة اسم مرفوع – فاعل [ا ر ض]**II মাটিতে গাঁড়া,** أرْضٌ(م) ج أراضٍ ،أراضون**পৃথিবী, জমিন।** **পৃথিবী**	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح (خُروج) [ن][خ ر ج] **IV** বাহির হওয়া, **IV**–বাহির করা, خرْجٌখরচ। **এবং বের হবে**
99|2|যখন সে তার বোঝা বের করে দেবে।		

مَا لَهَا ﴿3﴾		ٱلْإِنسَانُ	وَقَالَ
جرّ +ضمير **হয়েছে** **তার**	ح. استفهام **কি**	معرفة اسم مرفوع – فاعل (أُنْس)[ك] [س][ا ن س] **সামাজিক হওয়া, ভদ্র হওয়া,,** أُنْس**ঘনিষ্ঠতা, বন্ধুত্বপূর্ণ,** إِنْسٌ**মানুষ, মানবজাতি, ঘনিষ্ঠ বন্ধু,** إنسان**মানুষ,** الانسان**কোন মানুষ।** **মানুষ**	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح (قَوْل) [ن][ق و ل]**কথা বলা, বলা,** قَالَةٌ**কথা, বক্তৃতা,** قَوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُ**শব্দ, কথা,বক্তব্য।** **এবং বলবে**
99|3|এবং মানুষ বলবে, এর কি হল ?			

أَخْبَارَهَا ﴿4﴾	تُحَدِّثُ	يَوْمَئِذٍ
اسم منصوب – مفعول به +ضمير – جرّ بالإضافة	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير <هي>	ظ. زمان منصوب «يوم» + «إذٍ» بالكسر لإلتقاء السكينين ،سكونه و سكون التنوين – مضاف إليه

(خُبر،خِبرة) [ن][خ ب ر]চেষ্টা করা, পরীক্ষা করা, خبَرٌ ج خُبْرٌঅভিজ্ঞতা, أخبارٌখবর, তথ্য, خبيرٌঅভিজ্ঞ। **তার খবরাদি**	II] (حُدوث،حَداثةٌ) [ك][ف][ح د ث] ঘটা, সংঘটিত হওয়া [ف] , নূতন [ك],II - বলা, আলোচনা করা, حدَثٌ ج أحْداثٌ নূতন, খারাপ কাজ, حديثٌ ج أحاديثٌ،حِدْثان কথা, বক্তব্য। **II] বর্ণনা করবে সে**	~ و هو مضاف،الجملة (زلزلت الارض...) محذوفة تقديره – مضاف إليه[المعوض بالتنوين«اذٍ»] **সে দিন**
99|4|সেদিন সে তার বৃত্তান্ত বর্ণনা করবে,		

لَهَا ﴿5﴾	أَوْحَىٰ	رَبَّكَ	بِأَنَّ
جرّ +ضمير – مجرور متعلق بالفعل **তার**	فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر ،فاعل – مستتير <هو> (وحي) [ض] [و ح ي IV] উৎসাহ দেওয়া, বার্তা পাঠান, অবতরন করান, IV–উৎসাহ দেওয়া, বিকশিত কযরা, ব্যক্ত করা, وحِيٌপ্রত্যাদেশ, উৎসাহ। **হুকুম করবেন**	اسم منصوب – اسم <ان> +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب]প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌ রব। **তোমার রব**	جرّ +ح. مشبه بفعل **জন্য যে**
99|5|কারণ, আপনার পালনকর্তা তাকে আদেশ করবেন।			

ٱلنَّاسُ	يَصْدُرُ	يَوْمَئِذٍ
معرفة اسم مرفوع – فاعل (نوْس) [ن][ن و س]দোল খাওয়া, সামনে	فعل مضارع مرفوع بالضمة (صُدور) [ض] [ن][ص د ر]সামনে যাওয়া, যাওয়া, উঠা, বের হওয়া, উদ্ভুত হওয়া, প্রকাশিত হওয়া, صدْرٌ ج صُدورٌবক্ষ, স্তন, লিজা, হৃদয়,	ظ. زمان منصوب «يوم» + «اذٍ» بالكسر لإلتقاء السكينين ،سكونه و سكون التنوين – مضاف إليه ~ و هو مضاف،الجملة (زلزلت

পিছন যাওয়া, نَّاسُমানুষ , জনগণ। মানুষ	সামনের দিক, নেতা, সেনাপতি, صدرةগেন্জি, মেয়েদের গেঞ্জি। ফিরে আসবে	الارض ...) محذوفة تقديره – مضاف إليه[المعوض بالتنوين«اذٍ»] সে দিন

99|6|সেদিন মানুষ বিভিন্ন দলে প্রকাশ পাবে,

أَعۡمَٰلَهُمۡ ﴿6﴾	لِّيُرَوۡاْ	أَشۡتَاتٗا
اسم منصوب – مفعول به +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (عمَل) [س][ع م ل]করা, তৈরী করা, عَمَلَকরা, কাজ, শ্রম, অর্জন, عمليةٌ جعملياتকাজ,পদ্ধতি, عمْلةٌখারাপ কাজ। তাদের আমল	ل-تعليل +فعل مضارع مجهول منصوب بحذف النون +ضمير متصل – فاعل فارقة<ا>، (رأْي) [ف][ر ا ي]দেখা, رَأْيٌ ج آراءٌমতামত, দর্শন । দেখানোর জন্য	اسم منصوب – مفعول به [ش ت ت] [ض] (شتّ،شتات ،شتيت)বিচ্ছিন্ন হওয়া, ছড়ান, দ্রবিভূত হওয়া, شتٌّ ج أشتاتٌছড়ানো, বিক্ষিপ্ত, شتيتٌ ج شتّىবিক্ষিপ্ত (شتَّىবহুমুখী, বিভিন্ন, অন্যান্য । বিচ্ছিন্ন

যাতে তাদেরকে তাদের কৃতকর্ম দেখানো হয়।

مِثۡقَالَ	يَعۡمَلۡ	فَمَن
اسم منصوب – مفعول به (ثِقْل،ثقالة) [ك][ث ق ل]ভাড়ী হওয়া, দুঃসাধ্য হওয়া, ثِقْلٌ ج أثقالٌভাড়, বোঝা, ثِقَلٌভাড়, বোঝা, مثْقالٌ ج مثاقيلُওজন (পরিমাণ) । পরিমাণ	فعل مضارع مجزوم بالسكون (عمَل) [س][ع م ل] করা, তৈরী করা, عَمَلَকরা, কাজ, শ্রম, অর্জন, عمليةٌ جعملياتকাজ,পদ্ধতি, عمْلةٌখারাপ কাজ। সম্পাদন করবে	ح. استئنافية +اسم الشرط جازِم অতঃপর যে

99|7|অতঃপর কেউ অণু

﴾7﴿ يَرَهُۥ	خَيْرًا	ذَرَّةٍ
فعل مضارع مجزوم بحذف <ى>،فاعل – مستتير <هو> +ضمير متصل – مفعول به (رأي) [ف][ر ا ي]দেখা, رَأْي ج آراءٌমতামত, দর্শন । দেখবে তা সে	اسم منصوب – تمييز / بدل<مثقال> (خَيْر) [ض] [خ ي ر]পছন্দ করা, خَيْرٌ ج خِيارٌ، أخيار، خُيورٌউত্তম, ভাল, বেশী উত্তম। উত্তম	اسم مجرور – مضاف إليه (ذُرور)(ذَرّ) [ك][ن][ذ ر ر]ছড়ান, প্রসারিত করা [ن], উঠা, আসা [ك], ذَرٌّছড়ানো, ذَرَّةٌ ج ذَرّاتٌ ক্ষুদ্র, অনু, অনু, ক্ষুদ্র বস্তু।
পরিমাণ সৎকর্ম করলে তা দেখতে পাবে		

مِثْقَالَ	يَعْمَلْ	وَمَنْ
اسم منصوب – مفعول به (ثِقْل،ثقالة) [ك][ث ق ل]ভাড়ী হওয়া, দুঃসাধ্য হওয়া, ثِقْلٌ ج أثقالٌভাড়, বোঝা, ثِقَلٌভাড়, বোঝা, مِثْقالٌ ج مثاقيلُওজন (পরিমাণ) । পরিমাণ	فعل مضارع مجزوم بالسكون (عمَل) [س][ع م ل]করা, তৈরী করা, عَمَلَকরা, কাজ, শ্রম, অর্জন, عمليةٌ جعمليات কাজ,পদ্ধতি, عمْلةٌখারাপ কাজ। সম্পাদন করবে	ح.عطف +اسم الشرط جازمٍ এবং যে
99|8|এবং কেউ অণু পরিমাণ অসৎকর্ম		

﴾8﴿ يَرَهُۥ	شَرًّا	ذَرَّةٍ
فعل مضارع مجزوم بحذف <ى> العلة +ضمير متصل – مفعول به (رأي) [ف][ر ا ي]দেখা, رَأْي ج آراءٌমতামত, দর্শন ।	اسم منصوب – تمييز / بدل <مثقال> (شَرّ)(شِرّة) [ش ر ر] [ف][ك][س] খারাপ হওয়া, অসাধু হওয়া, شرٌّ	اسم مجرور – مضاف إليه (ثِقْل،ثقالة) [ك][ث ق ل]ভাড়ী হওয়া, দুঃসাধ্য হওয়া, ثِقْلٌ ج أثقالٌভাড়, বোঝা,

দেখবে তা সে	شُرور ج খারাপ, অমঙ্গল, অন্যায়, নিকৃষ্ট। মন্দ	ثِقَلٌ ভাড়, বোঝা, مثاقيلُ ج مثْقالٌ ওজন (পরিমাণ) । অনু
করলে তাও দেখতে পাবে।		

।।সূরা আল্-যিল্ যাল সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ ٱلْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ

১০০। সূরা আল্-আদিয়াত : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:২০

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

ضَبۡحًا ﴿1﴾	وَٱلۡعٰدِيٰتِ
اسم منصوب ـ مفعول مطلق (ضَبْح) [ف][ض ب ح]কাল করা, হ্রেসাধবনি করা, **উর্ধ্বশ্বাসে**	ح.جرّ(و-القشم) +معرفة اسم مجرور – مقسم به، متعلق بالفعل محذوف (عدْو) [ن][ع د و] দৌড়ান, লাফিয়ে চলা, عادٍ،عادِية(م) ج عاديات অন্যায়, ধাবমান অশ্ব, সংবাদ বাহক। **শপথ, ধাবমান**
100|1|শপথ উর্ধবশ্বাসে চলমান অশ্বসমূহের,	

فَالْمُورِيٰتِ	قَدْحًا ﴿2﴾
ح.عطف +معرفة اسم مجرور – معطوفة القسم, متعلق بالفعل محذوف (وَرْي) [ض] [و ر ي IV] আগুন জ্বালান, IV–আগুন জ্বালান,وَرِيَة،وَرْيٌ،وُرِيٌّজ্বালানো, مُورِيَةٌ ج مُورِيات প্রজ্জ্বলনকারী, বিচ্ছুরন কারী। অতঃপর বিচ্ছুরণ কারীরা	اسم منصوب – مفعول مطلق (قَدْح) [ف][ق د ح]ফুটা করা, অপবাদ দেওয়া, আগুন জ্বালান(পাথর স্ফুলিংগের) ,قَدْحٌঅপবাদ, স্ফুলিংগ। অগ্নি স্ফুলিংগ
100|2|অতঃপর ক্ষুরাঘাতে অগ্নিবিচ্ছুরক অশ্বসমূহের	

فَالْمُغِيْرٰتِ	صُبْحًا ﴿3﴾
ح.عطف +معرفة اسم مجرور – مقسم به معطوفة , متعلق بالفعل محذوف (غيرة) [ف][غ ي ر IV] ঈর্ষাণ্বীত হওয়া(প্রতিদ্বন্দ্বী) , ঈর্ষা প্রকাশ করা, IV–ঈর্ষাণ্বীত করা, غيرٌএছাড়া, غَيرَةٌঈর্ষাপরায়নতা, উৎসাহ, مُغَيِّرٌপরিবর্তীত, مُغيرٌদ্রুত ধাবমান কারী, আক্রমণ কারী, المُغِيرات আক্রমনকারী অশ্বসমূহ। এবং অভিযাত্রীরা	ظ. زمان منصوب متعلق بالفعل محذوف (صباحة) (صبْح) [ك] [ف][ص ب ح] সকালের পানীয় দেওয়া [ف], সুন্দর হওয়া [ك] أصباحٌ ج صُبْحٌ،সকাল। প্রভাতে
100|3|অতঃপর প্রভাতকালে আক্রমণকারী অশ্বসমূহের 100|4|ও যারা সে সময়ে ধুলি উৎক্ষিপ্ত করে	

فَأَثَرْنَ	بِهٖ	نَقْعًا ﴿4﴾
ح.عطف +فعل ماض مبني على السكون لإتصاله + ضمير (الخيل) – فاعل [ث و ر IV] এবং উড়ায়	جرّ +ضمير – مجرور متعلق بالفعل এভাবে	اسم منصوب – مفعول به [ن ق ع]ধূলাবালি
100|4|ও যারা সে সময়ে ধুলি উৎক্ষিপ্ত করে		

جَمْعًا (5)	بِهِ	فَوَسَطْنَ
اسم منصوب – مفعول به (جمْع) [ف][ج م ع]একত্রিত করা, সংগ্রহ করা,جُموعٌ ج جَمْعٌসংগ্রহ, একত্রিত করন, একত্রকারী,একত্রে রাখা, (ج) সমাবেশ, সেনাদল৻জনতা। **দলে**	جرّ +ضمير – متعلق بالفعل **এভাবে**	ح.عطف +فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير (اخيل) – فاعل [و س ط]II রাখা, স্থাপন করা (মধ্যে), أوساطٌ ج وسَطٌمধ্য, কেন্দ্র, (جرّ)وَسَطَ মধ্যে। **এবং অভ্যন্তরে**
100|5|অতঃপর যারা শত্রুদলের অভ্যন্তরে ঢুকে পড়ে-		

لَكَنُودٌ (6)	لِرَبِّهِ	ٱلْإِنسَانَ	إِنَّ
ل-تاكيد +اسم مرفوع – خبر <ان> [ك ن د]=كُنودٌ অকৃতজ্ঞতা, كَنُودٌঅকৃতজ্ঞ। **অবশ্যই অকৃতজ্ঞ**	جرّ +اسم مجرور – متعلق بالخبر <لكنود> +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ر ب ب][ن] (ربّ) প্রভু হওয়া, رَبٌّ ج أربابٌরব। **তার রবের প্রতি**	معرفة اسم منصوب - اسم <ان> (أنْس)[ك] [س][ا ن س] সামাজিক হওয়া, ভদ্র হওয়া,, أُنْسঘনিষ্ঠতা, বন্ধুত্বপূর্ণ, إِنْسٌমানুষ, মানবজাতি, ঘনিষ্ঠ বন্ধু, إنسانমানুষ, الانسانকোন মানুষ। **মানুষ**	ح. مشبه بفعل **নিশ্চয়ই**
100|6|নিশ্চয় মানুষ তার পালনকর্তার প্রতি অকৃতজ্ঞ			

لَشَهِيدٌ (7)	ذَٰلِكَ	عَلَىٰ	وَإِنَّهُ
ل-تاكيد +اسم مرفوع – خبر <ان> (شُهود) [س][ش ه د]সাক্ষ্য দেওয়া, IVأَشْهَدَ-ডাকা(সাক্ষী)-أُشْهِدَশহীদ হওয়া , شِهادٌ ج شَهْدٌশমধু, মধুর চাক, شهيدٌ ج	اسم اشارة – مجرور متعلق بخبر <ان>	جرّ উপর	ح.عطف +ح. مشبه بفعل +ضمير متصل– اسم <ان>

شُهداءُসাক্ষী, শহীদ, شُهود ج شاهِدٌউপস্থিত, সাক্ষী, مَشهودউত্তম উপস্থিতির। অবশ্যই সাক্ষী	এর		এবং নিশ্চয়ই সে
100|7|এবং সে অবশ্য এ বিষয়ে অবহিত			

لَشَدِيْدٌ ﴿8﴾	الْخَيْرِ	لِحُبِّ	وَإِنَّهُ
ل-تاكيد +اسم مرفوع – خبر <ان> (شِدَّة) [ض] [ش د د] শক্ত হওয়া, শক্তি শালী হওয়া, أشَدُّঅধিক শক্ত। বড়ই প্রবল	معرفة اسم مجرور – مضاف إليه (خيْر) [ض] [خ ي ر]পছন্দ করা, خيرٌউত্তম, ج خِيارٌ، أخيار، خُيُورٌ ভাল, বেশী উত্তম, خُيُورٌভাল বস্তু, মাল সম্পদ। মালের	جرّ +اسم مجرور – متعلق بالخبر <ان> (حُبّ) [ض][ح ب ب]পছন্দ করা, حُبٌّভালবাসা, স্নেহ, حَبٌّ/حَبَّةٌ ج حُبوبٌ ،حَبَّاتٌশস্য। ভালবাসার ক্ষেত্রে	ح.عطف +ح. مشبه بفعل +ضمير متصل – اسم <ان> এবং নিশ্চয়ই সে
100|8|এবং সে নিশ্চিতই ধন-সম্পদের ভালবাসায় মত্ত।			

إِذَا	يَعْلَمُ	أَفَلَا
ظ. زمان – الشرط غير جازمٍ যখন	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير <هو> II (عِلْم) [س][ع ل م]জানা, II- শিখানো, শিক্ষিত করা, عالِمٌ ج عِلمٌ ج عُلومٌজ্ঞান, عُلماءُজ্ঞানী, عوالِمُ،عالَمون ج عالَمٌবিশ্ব, দুনিয়া (عِلْم) [س][ع ل م জানা, ج عُلومٌ عِلمٌজ্ঞান, عُلماءُ ج عالِمٌজ্ঞানী, عوالِمُ،عالَمون ج عالَمٌবিশ্ব, দুনিয়া। জানে সে	ح. استفهام +ح. زائدة +ح. نفي তবে কি না
100|9|সে কি জানে না, যখন		

ٱلْقُبُورِ ﴿9﴾	فِي	مَا	بُعْثِرَ
معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل (قَبْر،مقبر) [ض] [ن] [ق ب ر] **কবর** দেওয়া, قَبْرٌ ج قُبور**কবর** । **[কবরগুলির**	جرّ **মধ্যে**	اسم موصول – نائب فاعل **যা**	فعل ماض مجهول مبني على الفتح [ب ع ث ر QI]বিক্ষিপ্ত করা, অসংলগ্ন করা, مُبعثَرٌ**বিক্ষিপ্ত,** ছড়ানো। **উত্থিত হবে**
কবরে যা আছে, তা উত্থিত হবে			

ٱلصُّدُورِ ﴿10﴾	فِي	مَا	وَحُصِّلَ
معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل (صُدور) [ض] [ن][ص د ر] সামনে যাওয়া, যাওয়া, উঠা, বের হওয়া, উদ্ভূত হওয়া, প্রকাশিত হওয়া, صدْرٌ ج صُدورٌ**বক্ষ,** স্তন, লিজা, হৃদয়, সামনের দিক, নেতা, সেনাপতি, صدرة**গেন্জি,** মেয়েদের গেঞ্জি। **বক্ষ সমূহের**	جرّ **মধ্যে**	اسم موصول - نائب فاعل **যা**	ح.عطف +فعل ماض مجهول – مبني على الفتح (حُصُول) [ن] [ح ص ل II] অবস্থান করা, উঠা, ঘটা, II–ঘটান, অর্জন করা, সংগ্রহ করা, حُصُولٌ**ঘটনা,** حصيلةٌ ج حصائِلُ**ফল,** সংগৃহীত প্রমাণ। **প্রকাশ করা হবে**
100|10|এবং অন্তরে যা আছে, তা অর্জন করা হবে?			

لَّخَبِيرٌ ﴿11﴾	يَوْمَئِذٍ	بِهِمْ	رَبَّهُم	إِنَّ
ل-تاكيد +اسم مرفوع – خبر <ان> (خُبر،خِبرة) [ن][خ ب ر]চেষ্টা করা, পরীক্ষা করা, خُبْرٌ ج خبَرٌ**অভিজ্ঞতা,**	ظ. زمان منصوب «يوم» + «اِذٍ» بالكسر لإلتقاء السكينين ،سكونه و سكون التنوين – مضاف إليه ~ و هو مضاف،الجملة (بُعْثِرَ. .) محذوفة تقديره – مضاف إليه	جرّ +ضمير – مجرور متعلق بخبر <ان>	اسم منصوب – اسم <ان>+ضمير متصل – جرّ بالإضافة	ح. مشبه بفعل **নিশ্চয়ই**

أخبارٌ**খবর,** তথ্য, خبيرٌ**অভিজ্ঞ।** **অবশ্যই খুব অবহিত**	المعوض بالتنوين«اذٍ» ~] ["تنوين العِوَضِ " **সেদিন**	**তাদের** **সাথে**	[ر ب ب][ن] (ربّ) **প্রভু হওয়া,** ربٌّ أربابٌ ج**রব।** **তাদের রব**	
100|11|সেদিন তাদের কি হবে, সে সম্পর্কে তাদের পালনকর্তা সবিশেষ জ্ঞাত।				

।।সূরা আল-আদিয়াত ।।

سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ

১০১। সূরা আল্-ক্বারিয়াহ : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:১১

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴿2﴾ ٱلۡقَارِعَةُ	مَا	ٱلۡقَارِعَةُ ﴿1﴾
معرفة اسم مرفوع - خبر (قَرْع) [ف] [ق ر ع]ঠোকা দেওয়া, ধাক্কা দেওয়া, আঘাত করা, قَرْعٌ**ধাক্কা,** ঠোকা, قَارِعٌ**আঘাতকারী,** قَارِعة قوارِعُ**বিপদ,** প্রলয়।	ح. استفهام - مبتدأ **কি**	معرفة اسم مرفوع – مبتدأ (قَرْع) [ف] [ق ر ع] ঠোকা দেওয়া, ধাক্কা দেওয়া, আঘাত করা, قَرْعٌ**ধাক্কা,** ঠোকা, قَارِعٌ**আঘাতকারী,** قَارِعة قوارِعُ**বিপদ,** প্রলয়।

ভয়াবহ দূর্ঘটনা		ভয়াবহ দূর্ঘটনা
101|1|করাঘাতকারী, 101|2|করাঘাতকারী কি?		

ٱلْقَارِعَةُ ﴿3﴾	مَا	أَدْرَىٰكَ	وَمَآ
معرفة اسم مرفوع – خبر (قَرْع) [ف] [ق ر ع]ঠোকা দেওয়া, ধাক্কা দেওয়া, আঘাত করা, قَرْعٌধাক্কা, ঠোকা, قَارِعٌআঘাতকারী, قَارِعة قوارِعُবিপদ, প্রলয়। **ভয়াবহ দূর্ঘটনা**	ح. استفهام – مبتدأ **কি**	فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر +ضمير متصل – مفعول به [د ر ي][IV] II– অব্যাহত রাখা, চলমান রাখা, IV–অর্জন করা, অনুধাবন করান, বোঝান, পাওয়া, পৌঁছা, হঠাৎ আসা, ধরা, دَرَكٌঅর্জন, পাওয়া, ধরা, পুলিশ, دَرَكةٌ دركاتٌনিম্ন স্থান, নামার ধাপ। **জানাবে তোমাকে**	ح.عطف +ح. استفهام – مبتدأ **এবং কি**
101|3|করাঘাতকারী সম্পর্কে আপনি কি জানেন ?			

ٱلْمَبْثُوثِ ﴿4﴾	كَٱلْفَرَاشِ	ٱلنَّاسُ	يَكُونُ	يَوْمَ
معرفة صفة مجرورة [ب ث ث][ن] (بثّ) ছড়ান, উন্মুক্ত করা, مَبْثُوثবিক্ষিপ্ত, সম্প্রচারিত। **বিক্ষিপ্ত**	جرّ +معرفة اسم مجرور - خبر <<كان> [ف ر ش][ن][ض] (فَرْش)(فَوْش،فِراشٌ)ছড়ান [ن] , আবৃত করা [ن] [ض], فَرْشَةٌ ج فَرْشاتٌবিছানা, তোষক, فَراشٌপতঙ্গ, প্রজাপতি। **পতঙ্গের মত**	معرفة اسم مرفوع – اسم <كان> [ن و س][ن] (نَوْس)দোল খাওয়া, সামনে পিছন যাওয়া, نَاسٌমানুষ , জনগণ। **মানুষ**	فعل مضارع ناقص مرفوع بالضمة ~الجملة في محل خبر بالإضافة [ك و ن][ن] (كَوْن،كِيان) হওয়া, ঘটা, থাকা, كَوْنٌ ج أكوانঘটনা । **হবে**	ظ. زمان منصوب – متعلق بالفعل [ي و م]IIIদিনের ভাড়া, يومٌ ج أيامٌদিন, সময়, বয়স। **সেদিন**

101|4|যেদিন মানুষ হবে বিক্ষিপ্ত পতংগের মত

ٱلْمَنفُوشِ ﴿5﴾	كَٱلْعِهْنِ	ٱلْجِبَالُ	وَتَكُونُ
معرفة صفة مجرورة (نفْش)[ن][ن ف ش] আঁচরান, তন্তু বাহির করা, আঁশ বাহির করা ধূনা	جرّ +معرفة اسم مجرور – خبر <كان> (عَهْن،عُهون) [ن][ع ه ن] অবস্থান করা, বাস করা,চলে যাওয়া, ج عِهْنٌ، عُهونٌপশম, (রঙ্গিন), عِهْنةٌথোকা, গুচ্ছ(পশমের) । পশমের মত	معرفة اسم مرفوع – اسم <كان> (جبْل) [ض] [ن][ج ب ل] আকার দেওয়া,جبَلٌ أجْبَلٌ ج جِبالٌ، পাহাড়, পর্বতমালা। পাহাড় সমূহ	ح.عطف +فعل مضارع ناقص مرفوع بالضمة [ن][ك و ن] (كوْن،كِيان)হওয়া, ঘটা, থাকা, كوْنٌ ج أكوانঘটনা । এবং হবে

101|5|এবং পর্বতমালা হবে ধুনিত রঙ্গীন পশমের মত।

مَوَٰزِينُهُۥ ﴿6﴾	ثَقُلَتْ	مَنْ	فَأَمَّا
اسم مرفوع – فاعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (وزْن،زِنة) [ض] [و ز ن] ওজন করা, সমান করা, زِنةٌওজন। তার ওজন	فعل ماض مبني على الفتح ،<تْ>التأنيث (ثِقْل،ثقالة) [ك][ث ق ل]ভাড়ী হওয়া, দুঃসাধ্য হওয়া, ثِقْلٌ ج أثقالٌভাড়, বোঝা, ثَقَلٌভাড়, বোঝা। ভারি হবে	اسم شرط جازِم – مبتدأ যার	ح.اتئنافية +ح. تفصيل অতঃপর এ জন্য

101|6|অতএব যার পাল্লা ভারী হবে,

فَهُوَ	فِيْ	عِيْشَةٍ	رَّاضِيَةٍ ﴿7﴾
فا-واقعة (جواب الشرط) +ضمير منفصل - مبتدأ **তবে সে**	جرّ **মধ্যে**	اسم مجرور – خبر (عيْش،عِيشَة،معِيشة) [ض][ع ي ش]বেঁচে থাকা, খরচ করা, অভিজ্ঞতা নেওয়া, عَيشٌ**জীবন,** জীবনাচার, পদ্ধতি, عِيشَةٌ**জীবন** যাপনের পদ্ধতি । **জীবনের**	صفة مجرورة (رِضًى،رِضْوان) [س][ر ض و] সন্তুষ্ট হওয়া, একমত হওয়া, رضِي ج أَرْضِياءُসন্তুষ্ট, খুশী। **সন্তোষজনক**

101|7|সে সুখীজীবন যাপন করবে।

وَأَمَّا	مَنْ	خَفَّتْ	مَوٰزِيْنُهٗ ﴿8﴾
ح.عطف +ح. تفصيل এবং **জন্য যে**	اسم شرط جازِم – مبتدأ **যার**	فعل ماض مبني على الفتح ،<تْ> التأنيث (خفّ) [ض] [خ ف ف]পাতলা হওয়া, সামান্য হওয়া, خُفٌّ ج خِفافٌ،أخفافٌএক জোড়া জুতা, সেন্ডেল, خِفَّةٌ**পাতলা(**ওজন), সামান্য। **হালকা হবে**	اسم مرفوع – فاعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (وزْن،زِنة) [ض] [و ز ن]**ওজন করা, সমান করা,** زِنةٌ**ওজন।** **তার ওজন সমূহ**

101|8|আর যার পাল্লা হালকা হবে,

فَأُمُّهٗ	هَاوِيَةٌ ﴿9﴾
فا-واقعة (جواب الشرط) +اسم مرفوع – مبتدأ +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (غمّ, إمامة،أُمومة) [ن] [ا م م]যাওয়া, মেরামত করা, ঈমামতি করা, মাতা হওয়া , أُمٌّ ج أُمّهات**মাতা, উৎস, ভিত্তি,** أُمٌّ ج أممٌ**জাতি।** **তবে তার আশ্রয়স্থল**	اسم مرفوع – خبر ~ الجملة خبر <من> (هُوِي) [ض][ه و ي]ফেলা, কাটা, ডুবা, ভেঙ্গে পড়া(বিমান), هوًى**ভালবাসা,** هاوِيَةٌ**গহ্বর, ফাটল, গভীর খাত, জাহান্নাম।** **গভীর গহ্বর**

101|9|তার ঠিকানা হবে হাবিয়া। 101|10|আপনি জানেন তা কি?

هِيَهْ ﴿10﴾	مَا	أَدْرٰكَ	وَمَآ
ضمير منفصل – خبر <ما> + ضمير متصل <عاوية> **সেটা**	ح. استفهام – مبتدأ **কি**	فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر +ضمير متصل – مفعول به ~الجملة خبر [د ر ي] IV] II– অব্যাহত রাখা, চলমান রাখা, IV–অর্জন করা, অনুধাবন করান, বোঝান, পাওয়া, পৌঁছা, হঠাৎ আসা, ধরা, دَرَكٌ**অর্জন**, পাওয়া, ধরা, পুলিশ, دَرَكَةٌ دركاتٌ**নিম্ন** স্থান, নামার ধাপ। **জানাবে তোমাকে**	ح.عطف +ح. استفهام – مبتدأ **এবং কি**
101|9|তার ঠিকানা হবে হাবিয়া। 101|10|আপনি জানেন তা কি?			

حَامِيَةٌ ﴿11﴾	نَارٌ
اسم مرفوع – خبر [ح م ي(و)][س] উত্তপ্ত হওয়া, **গলানো,**حمْو উত্তাপ। **জ্বলন্ত**	اسم مرفوع – مبتدأ [ن و ر]II **প্রস্ফুটিত হওয়া, প্রজ্বলিত করা, আলোয় পূর্ণ করা,** ج نِران (م) نَارٌ**আগুন, রাইফেল এর গুলি,** النَارُ**জাহান্নাম।** **আগুন**
101|11|প্রজ্জ্বলিত অগ্নি!	

।।সূরা আল্-ক্বারিয়াহ সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ

১০২। সূরা আত্-তাকাসুর : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:০৮

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

ٱلتَّكَاثُرُ ﴿1﴾	أَلۡهَىٰكُمُ
معرفة اسم مرفوع ـ فاعل (كثْر) [ك][ن][ك ث ر IV] অতিরিক্ত গণনা করা [ن] ,বৃদ্ধি করা, অনেক হওয়া [ك], كُثْرٌবেশী পরিমান, كثْرةٌঅনেক সংখ্যক, كثيرٌ ج كثيرون،أكثارٌঅনেক, বেশী, تكثيرবৃদ্ধি, تكاثُرবৃদ্ধি। **প্রাচুর্যের প্রতিযোগীতা**	فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر +ضمير متصل المخاطبين– مفعول به ـ مقدم <م> علامة جمع الذكور، (لـهْو) [ن][(و) ل ه ي IV] ফূর্তি করা, বিমুখ করা, IV–বিমুখ করানো, অন্যমনস্ক করান, لـهْو ফুর্তি, বিনোদন, খেলা। **গাফিল করে রেখেছে তোমাদের**
102|1|প্রাচুর্যের লালসা তোমাদেরকে গাফেল রাখে,	

﴿2﴾ ٱلْمَقَابِرَ	زُرْتُمُ	حَتَّىٰ
معرفة اسم منصوب – مفعول به قَبْرٌ ج ,কবর দেওয়া[ق ب ر] [ن] [ض] (قبْر،مقبر) قُبور কবর, مقابِرُ ج مَقْبَرٌ কবরের স্থান, কবরগাহ। কবর সমুহে	فعل ماض مبني على السكون لإتصاله ،وحذفت <و> نقلت الضم إلى ما قبل +ضمير متصل – فاعل [ن][ز و ر] (زِيارة،زَوْر)দেখা করা, পরিদর্শন করা, زَوْرٌ বুকের উপর অংশ, زورٌ মিথ্যা। উপস্থিত হও তোমরা	ح. ابتداء যতক্ষণ না

102|2|এমনকি, তোমরা কবরস্থানে পৌছে যাও।

﴿3﴾ تَعْلَمُونَ	سَوْفَ	كَلَّا
فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل II (عِلْم) [س][ع ل م]জানা, II– শিখানো, শিক্ষিত করা, عُلومٌ ج عِلمٌ জ্ঞান, عالِمٌ ج عُلماءُ জ্ঞাণী, عوالِمُ،عالَمون ج عالَمٌ বিশ্ব, দুনিয়া (عِلْم) [س][ع ل م] জানা, عُلومٌ ج عِلمٌ জ্ঞান, عالِمٌ عُلماءُ ج জ্ঞাণী, عوالِمُ،عالَمون ج عالَمٌ বিশ্ব, দুনিয়া। জানবে তোমরা	ح. استقبال শীঘ্রই	ح. ردع কক্ষণনা

102|3|এটা কখনও উচিত নয়। তোমরা সত্ত্বরই জেনে নেবে।

﴿4﴾ تَعْلَمُونَ	سَوْفَ	كَلَّا	ثُمَّ
فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل II (عِلْم) [س][ع ل م]জানা, II– শিখানো, শিক্ষিত করা, عُلومٌ ج عِلمٌ জ্ঞান, عالِمٌ عُلماءُ ج জ্ঞাণী, عوالِمُ،عالَمون ج عالَمٌ বিশ্ব, দুনিয়া (عِلْم) [س][ع ل م] জানা, عُلومٌ ج عِلمٌ জ্ঞান, عُلماءُ ج عالِمٌ জ্ঞাণী, عوالِمُ،عالَمون ج عالَمٌ বিশ্ব, দুনিয়া। জানবে তোমরা	ح. استقبال শীঘ্রই	ح. ردع কক্ষণনা	ح.عطف অতঃপর

102|4|অতঃপর এটা কখনও উচিত নয়। তোমরান সত্বরই জেনে নেবে।

ٱلۡيَقِينِ ﴿5﴾	عِلۡمَ	تَعۡلَمُونَ	لَوۡ	كَلَّا
معرفة اسم مجرور بالياء <ي>لانه جمع مذكر سالم <ن>عوض عن التنوين، – مضاف إليه [ي ق ن][س] (يقْن،يقَن)নিশ্চিত হওয়া, একমত হওয়া, يقينনিশ্চয়তা, يقيناনিশ্চিতভাবে। প্রত্যয়	اسم منصوب – مفعول مطلق II (عِلْم) [س][ع ل م]জানা, II– শিখানো, শিক্ষিত করা, ج عالِمٌ ج عِلمٌ عُلومٌজ্ঞান, عالَمٌ ج عُلماءُজ্ঞাণী, ع ل عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া (عِلْم) [س][مজানা, ج عُلومٌ عِلمٌজ্ঞান, عالِمٌ ج عُلماءُজ্ঞাণী, عالَمٌ ج عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া। জ্ঞানে	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل]II (عِلْم) [س][ع ل م]জানা, II– শিখানো, শিক্ষিত করা, ج عالِمٌ ج عِلمٌ عُلومٌজ্ঞান, عالَمٌ ج عُلماءُজ্ঞাণী, ع ل عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া (عِلْم) [س][مজানা, ج عُلومٌ عِلمٌজ্ঞান, عالِمٌ ج عُلماءُজ্ঞাণী, عالَمٌ ج عالَمون،عوالِمُবিশ্ব, দুনিয়া। জানতে তোমরা	ح. شرط غير جازمٍ، جواب الشرط محذوف যদি	ح. ردع কক্ষণনা
102|5|কখনই নয়; যদি তোমরা নিশ্চিত জানতে।				

ٱلۡجَحِيمَ ﴿6﴾	لَتَرَوُنَّ
معرفة اسم منصوب – مفعول به (جحِمٌ(م [ج ح م]জাহান্নামের আগুন। দোযখ	ل-تاكيد(واقهة القسم) +فعل مضارع مبني على حذف النون إتّصاله +ن-تاكيد +ضمير <و>المحذوفة لإلتقائها ساكنة مع <نّ>-فاعل (رأْي) [ف][ر ا ي]দেখা, رَأْي ج آراءٌমতামত, দর্শন ।

	অবশ্যই দেখবে তুমি
102|6|তোমরা অবশ্যই জাহান্নাম দেখবে,	

﴾7﴿ ٱلۡيَقِينِ	عَيۡنَ	لَتَرَوُنَّهَا	ثُمَّ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه (يقْن،يقَن) [س][ي ق ن] নিশ্চিত হওয়া, একমত হওয়া, **يقينনিশ্চয়তা,** **يقيناনিশ্চিতভাবে।** **প্রত্যয়**	اسم منصوب – مفعول به [ع ي ن] **।।নির্দিষ্ট করা, চিহ্নিত করা, ج (م)عيْنٌ** **عُيونٌচোখ, বদ নযর, ঝর্ণা, উৎস।** **চোখে**	ل-تاكيد +فعل مضارع مبني على حذف <ن> لإتصاله +ن-تاكيد +ن-تاكيد +ضمير <و>المحذوفة لإلتقائها ساكنة مع <نّ>-فاعل (رأْي) [ف][ر ا ي] **দেখা, ج رَأْي** **آراءٌমতামত, দর্শন ।** **অবশ্যই দেখবে তোমরা তা**	ح.عطف **অতঃপর**
102|7|অতঃপর তোমরা তা অবশ্যই দেখবে দিব্য প্রত্যয়ে,			

﴾8﴿ ٱلنَّعِيمِ	عَنِ	يَوۡمَئِذٍ	لَتُسۡـَٔلُنَّ	ثُمَّ
معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل [ن ع م][ن] [ف] [س] (نعْمة،منْعم)**সুখে বাসকরা, نعْيمٌপ্রাচুর্য,** আয়েশ, ج نَعَمٌ **أنْعامٌগৃহপালিত পশু।** **নিয়ামতের**	جرّ **হতে**	ظ. زمان منصوب «يوم» + «اِذٍ» بالكسر لإلتقاء السكينين ،سكونه و سكون التنوين – مضاف إليه ~ و هو مضاف،الجملة محذوفة – مضاف إليه [المعوض بالتنوين«اِذٍ» ~ '' تنوين العِوَضِ''] **সেদিন**	ل-تاكيد +فعل مضارع مرفوع بثبوت النون محذوفة ،<وْ> المحذوفة لإلتقاء السكينين – فاعل +ن-تاكيد [س ا ل][ض][ف] (سُؤال)(سِأْل)**জিজ্ঞাসা করা,** **سؤلة،سُؤْلٌইচ্ছা, অনুরোধ,** **سؤال ج أسئلٌজিজ্ঞাসা ।**	ح.عطف **অতঃপর**

			অবশ্যই জিজ্ঞাসা করা হবেই তোমাদের	
102|8|এরপর অবশ্যই সেদিন তোমরা নেয়ামত সম্পর্কে জিজ্ঞাসিত হবে।				

।।সূরা আত্‌-তাকাসুর সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ العَصْرِ مَكِّيَّةٌ

১০৩। সূরা আল্‌-আসর : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:০৩

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

خُسۡرٍ ﴿2﴾	لَفِيۡ	ٱلۡإِنسَـٰنَ	إِنَّ	وَٱلۡعَصۡرِ ﴿1﴾
اسم مجرور – خبر <ان> [خ س ر][س] (خُسور،خسارةٌ)ক্ষতি হওয়া, ক্ষতি স্বীকার করা, ক্ষতি করা , خسارةَ ج خسائِرُক্ষতি। ক্ষতির	ل- تاكيد(المزحلقة) جرّ+ অবশ্যই মধ্যে	معرفة اسم منصوب – اسم <ان> [ك] [س][ا ن س] বন্ধু হওয়া, ভাল হওয়া, أُنْسٌবন্ধুত্ব, নৈকট্য, إِنْسٌবন্ধু, মানষ, মানবজাতি, إنسانমনুষ,	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	جرّ +(و-القَسَم) +معرفة اسم مجرور – مقسم به ~متعلق بالفعل المحذوف (عصْر) [ض][ع ص ر]চাপ দেওয়া, চিপান, عصْرٌ ج أعْصُرٌ،عُصورٌ،أعْصارٌ،عصارٍ চিপা, কাল, সময়, আসরের নামাজ (عصَارٍ) । শপথ, কালের

		الإنسابমানুষ, কেউ, এক ব্যক্তি। মানুষ		
103|1|কসম যুগের (সময়ের), 103|2|নিশ্চয় মানুষ ক্ষতিগ্রস্ত;				

ءَامَنُوٓا	ٱلَّذِينَ	إِلَّا
فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل <ا> (أمْن) (أمانة) [س] [ك][ا م ن] IV, বিশ্বাসী হওয়া [ك] ، নিরাপদ হওয়া [س],IV-বিশ্বাস করা, أمْنٌশান্তি, أمينٌ ج أُمناءُবিশ্বস্ত IV] ঈমান এনেছে	اسم موصول – مستثنىযারা	ح. استثناء ব্যতীত
103|3|কিন্তু তারা নয়, যারা বিশ্বাস স্থাপন করে ও সৎকর্ম করে এবং পরস্পরকে তাকীদ করে		

ٱلصَّٰلِحَٰتِ	وَعَمِلُوا
معرفة اسم منصوب الكسرة لأنه جمع مؤنث سالم -مفعول به (صلاح،صلاحية)،(صلاح،صُلوح،مَصلحة) [ك][ف][ن][ص ل ح]ভাল হওয়া, সঠিক হওয়া, ধার্মিক হওয়া, মূল্যবান হওয়া, صالِحٌ ج صوالِحُভাল, ঠিক, সৎ, الصالِحاتভাল কাজ । সৎ কর্ম	ح.عطف +فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل – فاعل <ا> (عمَل) [س][ع م ل]করা, কাজ করা, সম্পাদন করা , عمَلٌকাজ, অভ্যাস, কাজকর্ম। সম্পাদন করেছে
103|3|কিন্তু তারা নয়, যারা বিশ্বাস স্থাপন করে ও সৎকর্ম করে এবং পরস্পরকে তাকীদ করে	

وَتَوَاصَوْا	بِالْحَقِّ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على <ا>،المحذوفة لإلتقاء السكينين<تواصيْوْا> +ضمير متصل – فاعل ،<ا> [و ص ي VI], II– আস্থা রাখা, অনুমোদন করা,VI– একে অপরকে অবলম্বন করতে বলা, গ্রহন করা, পোষ্য গ্রহন করা,وصِي ج أوصياءُ**অভিভাবক,** প্রতিনিধি, وصيَةٌ ج وصايَةٌ**উপদেশ,** নির্দেশনা, وصاية،وصاة**উপদেশ,** আদেশ, নির্দেশনা । **এবং পরষ্পরকে উপদেশ দিয়েছে**	**جرّ +معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل** **(حقّ) [ض] [ح ق ق]সত্য হওয়া,আবশ্যিক হওয়া,প্রয়োজনীয় হওয়া, حقٌّসত্য, সঠিক।** **হকের**
সত্যের এবং তাকীদ করে সবরের।	

وَتَوَاصَوْا	بِالصَّبْرِ ﴿3﴾
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح المقدّر على <ا>،المحذوفة لإلتقاء السكينين<تواصيْوْا> +ضمير متصل – فاعل ،<ا> [و ص ي VI], II– আস্থা রাখা, অনুমোদন করা,VI– একে অপরকে অবলম্বন করতে বলা, গ্রহন করা, পোষ্য গ্রহন করা,وصِي ج أوصياءُ**অভিভাবক,** প্রতিনিধি, وصيَةٌ ج وصايَةٌ**উপদেশ,** নির্দেশনা, وصاية،وصاة**উপদেশ,** আদেশ, নির্দেশনা । **এবং পরষ্পরকে উপদেশ দিয়েছে**	**جرّ +معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل** (صبْر) [ض] [ص ب ر]বাঁধা, ধৈর্য ধরা, সহনশীল হওয়া, বিরত থাকা, صَبْرٌ**ধৈর্য, দৃঢ়তা, নিয়ন্ত্রন,** صُبْرَةٌ**অতি** ঠান্ডা **ধৈর্য্যের**
এবং তাকীদ করে সবরের।	

।।সূরা আল্-আসর সমাপ্ত ।।

سُوۡرَةُ الهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ

১০৪। সূরা আল্-হুমাযাহ্ : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:০৯

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

لُّمَزَةِ ﴿1﴾	هُمَزَةٍ	لِّكُلِّ	وَيۡلٌ
اسم مجرور - بدل <همزة> (أمْن) [ض] [ن] [ل م ز]বাঁকা চোখে তাকানো, অবাঞ্ছিত কথা বলা,দোষ দেওয়া, ছিদ্রান্বষণ করা, لمّازٌ ،لُمزةٌ**ছিদ্রান্বেষ** কারী, কূট সমালোচনা কারী। **পিছনে দোষ প্রচারকারী**	اسم مجرور – مضاف إليه (همْز) [ض] [ن] [ه م ز]ছিদ্র করা, খোঁচা দেওয়া, চাপ দেওয়া, (ة) هَمْزٌ খোঁচা, চাপ, অপবাদ, চুকলি(চোগলখুরী), هُمَزَةٌ**পশ্চাতে** অপবাদ কারী। **সামনে নিন্দাকারীর**	جرّ +اسم مجرور – بخبر محذوف (كلٌّ) [ض][ك ل ل] **পরিশ্রান্ত হওয়া,** **كُلّসব,** **كلّاকক্ষণও না।** **জন্য প্রত্যেক**	اسم مرفوع – مبتدأ ويلٌ، [و ي ل] **কষ্ট,** অসুবিধা,ধিক وسلة ج ويلاتٌ**দুর্যোগ,**ধবংস। **ধ্বংস** (ধিক!)

104|1|প্রত্যেক পশ্চাতে ও সম্মুখে পরনিন্দাকারীর দুর্ভোগ,

ٱلَّذِىۡ	جَمَعَ	مَالًا	وَعَدَّدَهٗ ﴿2﴾

ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح – مستتير <هو>+ ضمير متصل – فاعل، مفعول به (حِدّ) (حدّ) (حدّ) [ض] [ن] [ح د د II] তীক্ষ্ণ করা, সীমাবদ্ধ করা(গণনা করে) , বাধা দেওয়া [ن], রাগান্বিত হওয়া [ض], বিলাপ করা, **حَدٌّসীমাব্দ্ধতা(**গণনা করে), সীমাবদ্ধতা, প্রতিবন্ধকতা, حَدٌّ ج **حُدودচাকুর** ধার, সীমানা । **গণনা করে রেখেছে তা**	اسم منصوب – مفعول به (جمْع) [ف][ج م ع] একত্রিত করা, সংগ্রহ করা,جُموعٌ ج **جمْعٌসংগ্রহ,** একত্রিত করন, একত্রকারী,একত্রে রাখা, (ج) সমাবেশ, সেনাদল،জনতা। **মাল**	فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو> [ف][ج م ع] (جمْع)একত্রিত করা, সংগ্রহ করা, ج جُموعٌ **جمْعٌসংগ্রহ,** একত্রিত করন, একত্রকারী,একত্রে রাখা, (ج) সমাবেশ, সেনাদল،জনতা। **জমা করেছে**	اسم موصول – خبر ،مبتدأ محذوف <هو> **যারা**
104|2|যে অর্থ সঞ্চিত করে ও গণনা করে			

أَخْلَدَهُ ﴿3﴾	**مَالَهُ**	**أَنَّ**	**يَحْسَبُ**
فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستتير <هو>+ضمير متصل – مفعول (خُلود) [ن][خ ل د] অবস্থান অব্যাহত রাখা, চির স্থায়ী হওয়া, IV–চিরস্মরণীয় করা , **خُلْدٌচিরকাল সময়,** ج **خالِدٌ خوالِدُ،خالِدونচিরস্থায়ী,** অমর, (ج) পর্বতমালা। **চির স্থায়ী করবে তাকে**	اسم منصوب – اسم <ان>+ضمير متصل – جرّ بالإضافة [م و ل]IIধণী করা, অর্থ সরবরাহ করা, مالٌ ج أموالٌ সম্পদ, মাল, موّالٌ ج موّالون সম্পদের অধিকারী, অর্থ দাতা। **তার মাল**	ح. مشبه بفعل **যে**	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير <هو> [ح س ب]III (حسْب،حِسابٌ) [ن] **হিসাব করা, III–হিসাব চুড়ান্ত করা, হিসাব গ্রহন করা** حِساباتٌ ج **حِسابٌহিসাব, বিল ।** **মনে করে সে**

104|3|সে মনে করে যে, তার অর্থ চিরকাল তার সাথে থাকবে!

ٱلْحُطَمَةِ ﴿4﴾	فِى	لَيُنۢبَذَنَّ	كَلَّا ۖ
معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل (حطْم) [ض][ح ط م] চুর্ণ করা, ধ্বংস করা, مِطمةٌ ج حِطَمٌ ক্ষুদ্র অংশ, ভাঙ্গা টুকরা, حُطمَةٌ চূর্ণকারী ভীষণ অগ্নি কুন্ড, الحُطَمَةِ জাহান্নামের একটি নাম । **বিচূর্ণকারী**	جرّ **মধ্যে**	ل-تاكيد +فعل مضارع مجهول مبني على الفتح لإتصاله +ن-تاكيد (نَبْذ) [ض] [ن ب ذ] নিক্ষেপ করা, বাদ দেওয়া, বহিষ্কার করা, প্রত্যাখান করা, نَبْذٌ নিক্ষিত করণ, نَبْذةٌ ক্ষুদ্র অংশ। **অবশ্যই নিক্ষিপ্ত হবে সে**	ح. ردع **কক্ষণনা**
104|4|কখনও না, সে অবশ্যই নিক্ষিপ্ত হবে পিষ্টকারীর মধ্যে।			

ٱلْحُطَمَةُ ﴿5﴾	مَا	أَدْرَىٰكَ	وَمَآ
معرفة اسم مرفوع – خبر (حطْم) [ض][ح ط م] চুর্ণ করা, ধ্বংস করা, مِطمةٌ ج حِطَمٌ ক্ষুদ্র অংশ, ভাঙ্গা টুকরা, حُطمَةٌ চূর্ণকারী ভীষণ অগ্নি কুন্ড, الحُطَمَةِ জাহান্নামের একটি নাম । **বিচূর্ণকারী**	ح. استفهام – مبتدأ **কি**	فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا> للتعذر ،فاعل – مستتير <هو>+ضمير متصل – مفعول به [د ر ي IV] II– অব্যাহত রাখা, চলমান রাখা, IV–অর্জন করা, অনুধাবন করান, বোঝান, পাওয়া, পৌঁছা, হঠাৎ আসা, ধরা, دَرَكٌ অর্জন, পাওয়া, ধরা, পুলিশ, دَرَكةٌ دركاتٌ নিম্ন স্থান, নামার ধাপ। **জান তুমি**	ح.عطف +ح. استفهام – مبتدأ **এবং কি**
104|5|আপনি কি জানেন, পিষ্টকারী কি?			

نَارُ	ٱللَّهِ	ٱلۡمُوقَدَةُ ﴿6﴾
اسم مرفوع – مبتدأ [ن و ر] II প্রস্ফুটিত হওয়া, প্রজ্বলিত করা, আলোয় পূর্ণ করা, نـَارٌ (م) ج نِران আগুন, রাইফেল এর গুলি, النـارُ জাহান্নাম। আগুন	لفظ الجلالة مجرور – مضاف إليه [اله] II খোদা বানান, الهٌ،إلاهٌ ج آلِهةٌ খোদা, উপাস্য, الله (ال+اله) আল্লাহ। [আল্লাহর	معرفة صفة مرفوعة IV (وقْد) [و ق د][ض] আগুন নেওয়া, জ্বালান, পোড়া, وَقُودٌ জ্বালানি, مُوقَدَةٌ উত্তপ্ত, প্রজ্জ্বলিত। উত্তপ্ত উৎক্ষিপ্ত
104|6|এটা আল্লাহর প্রজ্জ্বলিত অগ্নি,		

ٱلَّتِي	تَطَّلِعُ	عَلَى	ٱلۡأَفۡـِٔدَةِ ﴿7﴾
اسم اشارة – صفة ثانٍ <نار> যা	فعل مضارع مرفوع بالضمة ،فاعل – مستتير <هي> [ط ل ع] II [ف] [ن] (طُلوع،مطلع) উঠা, দৃশ্যমান হওয়া, উপরে আসা, طلهةٌ সৌন্দর্য, বাহ্যিক দর্শন, II– উঠান, দৃশ্যমান করা , مطْلعٌ ج مطالِعُ উদয়, উদয়ের সময়,, উদয়ের স্থান। পৌঁছে যাবে	جرّ উপর	معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل [ف ا د]،فُؤادٌ ج أفـْءِدةٌ হৃদয়, অন্তর। অন্তর সমুহের
104|7|যা হৃদয় পর্যন্ত পৌছবে।			

إِنَّهَا	عَلَيۡهِم	مُّؤۡصَدَةٌ ﴿8﴾

اسم مرفوع – خبر <ان> (وصَد) [ض][و ص د] দৃঢ় ভাবে দাঁড়ান, IV–বন্ধ করা (দরজা) , وصيدٌ ج وصُدٌدোরগোড়া, বারান্দা, مُؤصدَةٌপরিবেষ্টনকারী, مُؤصدةٌবন্ধ। প্রতিবন্ধ। **অবরুদ্ধ**	جرّ +ضمير – مجرور متعلق بخبر <ان> **তাদের উপর**	ح. مشبه بفعل +ضمير متصل – اسم <ان> **নিশ্চয়ই তা**
104|8|এতে তাদেরকে বেঁধে দেয়া হবে,		

مُّمَدَّدَةٍ ﴿9﴾	عَمَدٍ	فِيْ
صفة مجرورة (مدّ) [ن][م د د]সম্প্রসারিত করা, II– সম্প্রসারিত করা , مدٌ ج مُدودٌসম্প্রসারণ, مَمدودসম্প্রসারিত, مُمدَّدপ্রসারিত, ছড়ানো । **দীর্ঘায়িত**	اسم مجرور – (عمْد) [ض][ع م د] সাহায্যকরা, উদ্দেশ্য করা, গ্রহন করা, عمْدٌঅভিপ্রায়, عُمُدٌ ج عَمَدٌখুটি, স্তম্ভ। **স্তম্ভসমূহের**	جرّ **মধ্যে**
, 104|9|লম্বা লম্বা খুঁটিতে।		

।।সূরা হুমাযাহ্ সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ الفِيْلِ مَكِّيَّةٌ

১০৫। সূরা আল্-ফীল : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:০৫

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

رَبُّكَ	فَعَلَ	كَيۡفَ	تَرَ	أَلَمۡ
اسم مرفوع - فاعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ر ب ب][ن] (ربّ) প্রভু হওয়া, ج ربٌّ أربابٌরব। তোমার রব	فعل ماض مبني على الفتح [ف ع ل] [ف](فعْل،فِعْل) করা,সম্পাদন করা, কাজ করা, فِعْلٌ ج أفْعالٌ فِعالٌ،কাজ, কর্ম, প্রভাব। করেছেন	ح. استفهام – حال কেমন	فعل مضارع مجزوم بحذف العلة <ي> [ر ا ي][ف] (رأْي)দেখা, رَأْي ج آراءٌমতামত, দর্শন । দেখ তুমি	ح. استفهام +ح. نفي وجزمٍ কি নাই
105|1|আপনি কি দেখেননি আপনার পালনকর্তা				

ٱلۡفِيلِ ﴿1﴾	بِأَصۡحَٰبِ
معرفة اسم مجرور –مضاف إليه [ف ي ل][ض] (فُيولة) ভুল দেখা।। ج فيلٌ فِيَلَةٌ،فُيولٌ،أفْيالٌহাতী। হাতির	جرّ +اسم مجرور-متعلق بفعل [ص ح ب][س] (صُحْبة،صَحابة) সাথী হওয়া, صاحِبٌ،صاحِبةٌ(م) ج أصحابٌ ،صاحِباتٌ(م)সঙ্গী। পরিচালকদের সাথে
হস্তীবাহিনীর সাথে কিরূপ ব্যবহার করেছেন?	

تَضۡلِيلٖ ﴿2﴾	فِي	كَيۡدَهُمۡ	يَجۡعَلۡ	أَلَمۡ

ح. استفهام +ح. نفي কি নাই	فعل مضارع مجزوم بالسكون (جعْل) [ف][ج ع ل]তৈরী করা, রাখা, সৃষ্টি করা, আইন করা, নিয়োগ করা, চিন্তা করা, বিশ্বাস করা, প্রতিনিধিত্ব করা, দেওয়া, আস্থা রাখা, উৎসাহিত করা, جُعْلٌ ج أجعالٌবেতন, মজুরি, পুরস্কার,। পর্যুদস্ত করে দেন তিনি	اسم منصوب – مفعول به +ضمير – جرّ بالإضافة [ك ي د][ض] (كَيْد،مكيدة) প্রতারণা করা, ক্ষতি করা, كَيْدٌ كِيادٌচালাকি, ধূর্ততা, প্রতারণা, ষড়যন্ত্র। তাদের কৌশল	جرّ মধ্যে	اسم مجرور – متعلق بالفعل [ض ل ل] [ض] (ضلال،ضلالة)পথ হারানো, বিভ্রান্ত হওয়া, ضالٌّ ج ضالّونভুল, ضلٌّ বিভ্রান্ত, বিপথগামী । নিঃষ্ফলতার
105|2|তিনি কি তাদের চক্রান্ত নস্যাৎ করে দেননি?				

وَأَرْسَلَ	عَلَيْهِمْ	طَيْرًا	أَبَابِيلَ ﴿3﴾
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح +فاعل- مستيير <هو>، IV] ر س ل] [س] (رسَل) লম্বাচুলের হওয়া, IV–পাঠান, رسولٌ ج رُسُلٌবার্তা বাহক এবং পাঠিয়েছেন	جرّ +ضمير – متعلق بالفعل তাদের উপর	اسم منصوب – مفعول به [ط ي ر][ض] (طيران) উড়া, উড়ে যাওয়া, طَيْرٌ(ة) ج طُيورٌপাখী, অশুভ। পাখি	صفة منصوبة [ا ب ل][س][ن] (أَبَلٌ)(إبالةٌ) প্রতিপালন করা(উঠের) , যত্ন করা, إِبَّولٌ ج أبابيلُপাখীর ঝাঁক। ঝাঁকেঝাঁকে
105|3|তিনি তাদের উপর প্রেরণ করেছেন ঝাঁকে ঝাঁকে পাখী,			

تَرْمِيْهِم	بِحِجَارَةٍ	مِّنْ	سِجِّيْلٍ ﴿4﴾
فعل مضارع مرفوع بالضم المقدر على <ي> للثقل، فاعل – مستيير <انت> +ضمير متصل – مفعول به	جرّ +اسم مجرور – متعلق بالفعل [ح ج ر][ن] (حجْر،حِجْر،حِجْران) থামানো, অনুমতি না দেওয়া, حَجْرٌ ،حِجْر ج أحجار،حُجورবাধা, নিষেধ,কোল, ঘোটকী, বক্ষ,	جرّ হতে	اسم مجرور – متعلق بصفة مجرورة <حجرةٍ> [س ج ل]IIনিবন্ধনকরা, প্রবেশ করা, নোট করা, سِجِّلٌ ج سِجِّلاتনিবন্ধন, তথ্য, তালিকা,

سِجِّيلٌপাথর (অনেক ও শক্ত), জাহান্নাম। **কংকর**		মন,বুদ্ধিমত্তা, সাপের গর্ত , حَجَرٌপাথর, حُجْرَةٌঘর, হুজরা। **পাথরগুলি**	[ر م ي] [ض] (رمْي،رماية) নিক্ষেপ করা, رمْيনিক্ষেপ করণ, رميةٌনিক্ষেপ। **নিক্ষেপ করে তাদের উপর**
105|4|যারা তাদের উপর পাথরের কংকর নিক্ষেপ করছিল।			

مَّأْكُولٍ ﴿5﴾	كَعَصْفٍ	فَجَعَلَهُمْ
اسم مجرور – صفة مجرورة (اكْل،مأكل) [ن][ا ك ل]খাওয়া, গ্রহন করা, গলধঃকরণ করা, শেষ করা, أُكُلٌখাদ্য, খাবার, أُكْلٌখাদ্য, ফল **ভক্ষণ করা**	جرّ – (مثل) مبني على الفتح في محل نصب، صفة +اسم مجرور - مضاف إليه – متعلق (عصْف،عُصوف) [ض] [ع ص ف] ঝড় তোলা, প্রচন্ডভাবে উড়িয়ে দেওয়া,عصفٌখড়কুঠা,ঝড়, عصفةٌঝড়ো বাতাস। **যেমন ভূষি**	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح +ضمير متصل – مفعول به ،فاعل – مستيير <هو> (جعْل) [ف][ج ع ل] তৈরী করা, রাখা, সৃষ্টি করা, আইন করা, নিয়োগ করা, চিন্তা করা, বিশ্বাস করা, প্রতিনিধিত্ব করা, দেওয়া, আস্থা রাখা, উৎসাহিত করা, جُعْلٌ ج أجعالٌবেতন, মজুরি, পুরস্কার,। **এবং করে দেন তাদের**
105|5|অতঃপর তিনি তাদেরকে ভক্ষিত তৃণসদৃশ করে দেন।		

।।সূরা আল-ফিল সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ

১০৬। সূরা আল্-কুরাইশ : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:৩

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

لِإِيلَٰفِ	قُرَيۡشٍ ﴿1﴾
جرّ +اسم مجرور – متعلق بالفعل الأخر <ليعبدوا> (أَلْف)[ض][ا ل ف] আসক্ত হওয়া, অভ্যস্ত হওয়া, ايلافٌআসক্তি, প্রতিশ্রুতি। **আসক্তির জন্যে**	اسم علم مجرور – مضاف إليه **কুরাইশরা**
106|1|কোরাইশের আসক্তির কারণে,	

إِۦلَٰفِهِمۡ	رِحۡلَةَ	ٱلشِّتَآءِ	وَٱلصَّيۡفِ ﴿2﴾
اسم مجرور – بدل <ايلاف> +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (أَلْف)[ض][ا ل ف]আসক্ত হওয়া, অভ্যস্ত হওয়া, ايلافٌআসক্তি, প্রতিশ্রুতি। **আসক্তির কারণে**	اسم منصوب – مفعول به (رحيل) [س] [ر ح ل] যাত্রা করা, গমন করা, رِحْلَةٌ ج رِحلاتٌভ্রমণ, সফর। **সফরে**	معرفة اسم مجرور – مضاف إليه [ش ت و][ن] (شَتْو) **শীত কাটানো, শীত যাপন করা,** شتاءٌ ج أَشتِيَةٌ شُتي،**শীতকাল,** বর্ষা মৌসুম, বৃষ্টি। **শীতের**	ح.عطف +معرفة اسم مجرور – مضاف إليه معطوف [ص ي ف] [ض] (صيْف)গ্রীষ্ম পার করা , صيفٌ ج أَصيافٌগ্রীষ্ম । **গ্রীষ্মের**
106|2|আসক্তির কারণে তাদের শীত ও গ্রীষ্মকালীন সফরের।			

فَلۡيَعۡبُدُواْ	رَبَّ	هَٰذَا	ٱلۡبَيۡتِ ﴿3﴾

معرفة اسم مجرور ـ ـ صفة مجرورة (مَبيت) [ض] [ب ي ت] পার করা, কাটান, অবস্থা করা (রাতে), পাওয়া, بيْتٌ بيوتٌ،بيوتات বাড়ী, ঘর, তাবু। **ঘরের**	اسم اشارة – جرّ بالإضافة **এই**	اسم منصوب – مفعول [ر ب ب][ن] (ربّ) **প্রভু হওয়া,** ربٌّ ج أربابٌ **রব ।** **রবের**	ح.عطف +ل-أمر +فعل مضارع مجزوم بحذف النون +ضمير متصل – فاعل ،<ا> فارقة [ع ب د][ن] (عِبَدة،عُبودة) সেবা করা, এবাদত করা, عبْدٌ ج عبيدٌ عِبادٌ গোলাম, বান্দা। **সুতরাং ইবাদত করা উচিত তাদের**

106|3|অতএব তারা যেন এবাদত করে এই ঘরের পালনকর্তার

جُوعٍ	مِّنْ	أَطْعَمَهُم	ٱلَّذِىٓ
اسم مجرور – متعلق بالفعل [ج و ع][ن] (جوع) ক্ষুধার্ত হওয়া, অনাহারে থাকা, جُوعٌ **ক্ষুধা,** অনাহার। **ক্ষুধা**	جرّ **হতে**	فعل ماض مبني على الفتح،فاعل – مستيير <هو>+ضمير مفعول به [ط ع م][س] (طعَم) IV, **খাওয়া, স্বাদ** **নেওয়া,IV-খাওয়ানো** طعامٌ ج أطْعِمَة **খাদ্য, পুষ্টি ।** **আহার দিয়েছেন তাদের**	اسم موصول – صفة <ربّ> **যিনি**

106|4|যিনি তাদেরকে ক্ষুধায় আহার দিয়েছেন এবং যুদ্ধভীতি থেকে তাদেরকে নিরাপদ করেছেন।

﴿4﴾ خَوْفٍ	مِّنْ	وَءَامَنَهُم
اسم مجرور – متعلق بالفعل	جرّ হতে	ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستيير <هو> +ضمير متصل – مفعول به

(خوْف) [ف][خ و ف]ভীত হওয়া, خَوْفٌভয়। ভয়		IV (أَمْن) (أمانة) [س] [ك][ا م ن]বিশ্বাসী হওয়া [ك] ، নিরাপদ হওয়া [س], IV - বিশ্বাস রাখা, আস্থা রাখা, أَمْنٌশান্তি, أُمناءُ ج أمينٌবিশ্বস্ত । IV] নিরাপত্তা দিয়েছেন তাদের
যুদ্ধভীতি থেকে তাদেরকে নিরাপদ করেছেন।		

।।সেরা আল – কুরাইশ সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ

১০৭। সূরা আল্-মা’উন : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:০৭

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

بِالدِّيۡنِ ﴿1﴾	يُكَذِّبُ	الَّذِىۡ	اَرَءَيۡتَ
جرّ +معرفة اسم مجرور – متعلق بالفعل (دين)[ض][د ي ن]স্বীকার করা, أديان ج دينٌধর্ম, মত,	فعل مضارع مرفوع بالضم ،فاعل – مستيير <هو> (كِذْب) [ض][ك ذ ب] II] মিথ্যা বলা, II–মিথ্যারোপ করা, مُكذِّبٌ ج مكذِّبونমিথ্যারোপকারী।	اسم موصول - مفعول به যে	ح. استفهام +فعل ماض مبني على الضم لإتصاله +ضمير متصل المخاطب – فاعل مستيير <انت>

বিশ্বাস, يوم الدينশেষ বিচার দিবস। বিচার দিন	অবিশ্বাস করে		(رأي) [ف][ر ا ي]দেখা, رَأْي ج آراءٌমতামত, দর্শন । কি দেখেছ তুমি
107|1|আপনি কি দেখেছেন তাকে, যে বিচারদিবসকে মিথ্যা বলে?			

﴾2﴿ ٱلۡيَتِيمَ	يَدُعُّ	ٱلَّذِي	فَذَٰلِكَ
معرفة اسم منصوب – مفعول به ~الجملة صلة الموصول (يتَم،يتُم،يتَ)[س] [ك] [ض][ي ت م] এতম হওয়া, يتيمٌ ج يتْم،يتُم،،يتَمٌঅভিভাবকহীনত্ব, ইয়তীমত্ব, يتامى،أيتامٌএতিম, ইয়াতীম। ইয়াতীমকে	فعل مضارع مرفوع بالضم ،فاعل – مستيير <هو> (دعّ) [ن] [د ع ع] ধমক দেওয়া, প্রত্যাখ্যান করা। ধাক্কা দেয়	اسم موصول خبر –যে	ح.وقاعة في الشرط +اسم اشارة - مبتدأ এবং ঐ
107|2|সে সেই ব্যক্তি, যে এতীমকে গলা ধাক্কা দেয়			

﴾3﴿ ٱلۡمِسۡكِينِ	طَعَامِ	عَلَىٰ	يَحُضُّ	وَلَا
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه [م س ك ن][II গরীব হওয়া, গরীব হওয়ার ভান করা, নমনীয় হওয়া, مِسكينٌ ج مِسكونَ، مَسكَنَةদারিদ্র, مساكينُগরীব, ভিক্ষুক। অভাবগ্রস্থদের	اسم مجرور – متعلق بالفعل (طعَم) [س][ط ع م]|IV, খাওয়া, স্বাদ নেওয়া,IV- খাওয়ানো طعامٌ ج أطْعِمَةখাদ্য, পুষ্টি । খাদ্য দানের	جرّ উপর	فعل مضارع مرفوع بالضم،فاعل – مستيير <هو> (حضّ)[ن][ح ض ض] উদ্দীপ্ত করা,প্ররণা দেওয়া, উৎসাহিত করা حضٌّ,উৎসাহ। উৎসাহিত করে	ح.عطف +ح. نفي এবং না

107|3|এবং মিসকীনকে অন্ন দিতে উৎসাহিত করে না।

لِّلْمُصَلِّيْنَ ﴿4﴾	فَوَيْلٌ
جرّ +معرفة اسم مجرور بالياء<ي> لأن جمع مذكر سالم، <ن>عوض عن التنوين – خبر محذوف <ويل> (صلوة)[ص ل و]|| নামায আদায় করা, প্রার্থনা করা, مُصلٍّ ج صلواتٌ صلوةٌ،صلاةٌ নামায, ইসলামের আনুষ্ঠানিক, مُصالّون **নামায** আদায়কারী, مُصالًّى **নামাযের** স্থান। প্রার্থনা। **নামাযীদের জন্য**	ح. استئنافية +اسم مرفوع - مبتدأ ويلٌ، [و ي ل]**কষ্ট,** অসুবিধা,ধিক ويلاتٌ ج ويلة **দুর্যোগ,** ধ্বংস। **ধ্বংস** (ধিক!) **অতএব ধ্বংস**
107|4|অতএব দুর্ভোগ সেসব নামাযীর,	

سَاهُوْنَ ﴿5﴾	صَلَاتِهِمْ	عَنْ	هُمْ	اَلَّذِيْنَ
اسم مرفوع – خبر (سهْو،سُهوو) [ن][س ه و]অমনযোগী হওয়া ,অন্যমনস্ক হওয়া, ساهٍ ج ساهون**অমনোযোগী,** سهْو**অমনযোগীতা।** **উদাসীন**	اسم مجرور- متعلق بالخبر +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (صلوة)[ص ل و]|| নামায আদায় করা, প্রার্থনা করা, صلواتٌ ج صلوةٌ،صلاةٌ নামায, ইসলামের আনুষ্ঠানিক, مُصلٍّ ج مُصالّون **নামায** আদায়কারী, مُصالًّى **নামাযের** স্থান। প্রার্থনা। **তাদের নামাজ**	جرّ **হতে**	ضمير منفصل - مبتدأ **তারা**	اسم موصول – صفة <المصلين> **যারা**

107|5|যারা তাদের নামায সম্বন্ধে বে-খবর;

﴿6﴾ يُرَآءُوْنَ	هُمْ	ٱلَّذِيْنَ
فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (رأي) [ف][ر ا ي] [III] দেখা, III- মানুষ দেখানো, رَأْي ج آراءٌমতামত, দর্শন । লোক দেখায় তারা	ضمير منفصل – مبتدأ তারা	اسم موصول بدل ،صفة <المصلين> যাদের

107|6|যারা তা লোক-দেখানোর জন্য করে

﴿7﴾ ٱلْمَاعُوْنَ	وَيَمْنَعُوْنَ
معرفة اسم مرفوع – خبر [م ع ن] IV আগ্রহী হওয়া, নিষ্ঠাবান হওয়া, ماعون ج مواعينপ্রয়োঝনীয় দ্রব্যাদি, যন্ত্রপাতি, আসবাব। সাধারন প্রয়োজনীয় জিনিষ	ح.عطف +فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (مَنْع) [ف][م ن ع]থামান, বাধা দেওয়া, مَنْعٌপ্রতিরোধ, বাধা, مَنْعةٌবাধা, শক্তি। এবং অস্বীকার করে তারা

107|7|এবং নিত্য ব্যবহার্য্য বস্তু অন্যকে দেয় না।

।।সূরা আল – মা’উন ।।

سُوْرَةُ الكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ

১০৮। সূরা আল্-কাওসার : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:০৩

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

ٱلۡكَوۡثَرَ ﴿1﴾	أَعۡطَيۡنَٰكَ	إِنَّآ
معرفة اسم منصوب – مفعول به [ع ط و] IV] , III– দেওয়া, IV–দান করা, উপহার দেওয়া, অনুমোদন করা, عطًاদান, উপহার, عطِيَةٌ ج عطايا উপহার, দান, كوثرٌপ্রচুর সম্পদের মালিক ও দাতা, নদী, الكوثر বেহেস্তের নদী বিশেষ। **আল কাওসার**	فعل ماض مبني على السكوت لإتصاله +ضمير – فاعل +ضمير متصل – مفعول به [ع ط و]IV] , III– দেওয়া, IV–দান করা, উপহার দেওয়া, অনুমোদন করা, عطًاদান, উপহার, عطِيَةٌ ج عطايا উপহার, দান। **দিয়ছি আমরা তোমাকে**	ح. مشبه بفعل +ضمير متصل – اسم <ان> **নিশ্চয়ই আমরা**

108|1|নিশ্চয় আমি আপনাকে কাওসার দান করেছি।

وَٱنۡحَرۡ ﴿2﴾	لِرَبِّكَ	فَصَلِّ
ح.عطف +فعل أمر مبني على السكوت، فاعل – مستيير <انت> [ن ح ر][ان] (نَحْر] গলা কাটা, জবেহ করা, হত্যা করা, نَحْرٌজবেহ করণ, হত্যা, نَحْرٌ ج نُحور বুকের উপরের অংশ,, نِحْنٌ نِحريرٌ جদক্ষ, অভিজ্ঞ, نَحيرٌ منحورٌ،জবেহকৃত। **এবং কুরবানী কর তুমি**	جرّ +اسم مجرور – متعلق بالفعل +ضمير متصل – المخاطب جرّ بالإضافة (ربّ) [ان][ر ب ب] প্রভু হওয়া, ربٌّ أربابٌ جরব । **তোমার রবের**	ح. استئنافية +فعل أمر مبني على حذف < ي> العلة،فاعل – مستيير <انت> (صلوة)[ص ل و]II নামায আদায় করা, প্রার্থনা করা, صلوةٌ،صلاةٌ ج صلواتٌনামায, ইসলামের আনুষ্ঠানিক প্রার্থনা।, مُصلٍّ ج مُصالّون নামায আদায়কারী, مُصالًّىনামাযের স্থান। **অতঃপর নামাজ আদায় কর তুমি**

108|2|অতএব আপনার পালনকর্তার উদ্দেশ্যে নামায পড়ুন এবং কোরবানী করুন।

حرف			
إِنَّ	شَانِئَكَ	هُوَ	ٱلۡأَبۡتَرُ ﴿3﴾
ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	اسم منصوب – اسم <ان> +ضمير متصل المخاطب – جرّ مرحبا (شَنْء) [ف][ش ن ا]শত্রুতা করা, ঘৃণা করা, شَانِءٌشَنْءٌ،شِنْءٌ،شُنْءٌশত্রু, ঘৃণিত। শত্রু তোমার	ضمير منفصل – مبتدأ সেই	معرفة اسم مرفوع – خبر (بتْر) [ن] [ب ت ر] কাটা,أَبْتَرٌকর্তিত, কাটা, بَتَّارٌতীক্ষ্ণ ধার। নির্বংশ

108|3|যে আপনার শত্রু, সেই তো লেজকাটা, নির্বংশ।

।। সূরা আল কাওসার ।।

سُوۡرَةُ ٱلۡكٰفِرُوۡنَ مَكِّيَّةٌ

১০৯। সূরা আল্-কাফিরূন : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:৬

بِسۡمِ اللّٰهِ ٱلرَّحۡمٰنِ ٱلرَّحِيۡمِ

قُلۡ	يٰٓاَيُّهَا	ٱلۡكٰفِرُوۡنَ ﴿1﴾
فعل أمر مبني على السكون، فاعل – مستيير <انت>	ح. نداء +اسم مرفوع – منادى في محل نصبٍ +ها ـ للتنبيه হে	معرفة اسم مرفوع بالواو<و>لأنه جمع مذكر سالم المفرد ، <ن>عوض عن التنوين – صفة مرفوعة مثلها على اللفظ

(كفْر) [ض] [ك ف ر]ঢেঁকে রাখা, গোপন করা, বিদ্রোহী হওয়া,IV- বিদ্রোহী করা, বিদ্রোহী বলা, كافِرٌ ج كافِرون،كُفّارٌ কাফের, বিদ্রোহী। কাফেররা		(قوْل) [ن][ق و ل]কথা বলা, বলা, قَالَةٌ কথা, বক্তৃতা, قَوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُ শব্দ, কথা,বক্তব্য । বল
109|1|বলুন, হে কাফেরকূল,		

﴿2﴾ تَعۡبُدُونَ	مَا	أَعۡبُدُ	لَآ
فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (عِبَدة،عُبودة) [ن][ع ب د] সেবা করা, এবাদত করা, عبْدٌ ج عبيدٌ, عِبادٌ গোলাম, বান্দা। ইবাদত কর তোমরা	اسم موصول – مفعول به যাদের	فعل مضارع مرفوع بالضم ،فاعل – مستيير <انا> (عِبَدة،عُبودة) [ن][ع ب د]সেবা করা, এবাদত করা, عبْدٌ ج عبيدٌ, عِبادٌ গোলাম, বান্দা। ইবাদত করি আমি	ح. نفي না
109|2|আমি এবাদত করিনা, তোমরা যার এবাদত কর।			

﴿3﴾ أَعۡبُدُ	مَآ	عٰبِدُونَ	أَنتُمۡ	وَلَآ
فعل مضارع مرفوع بالضم ،فاعل – مستيير <انا> ~ الجملة صلة (عِبَدة،عُبودة) [ن][ع ب د] সেবা করা, এবাদত করা, عبْدٌ ج عبيدٌ, عِبادٌ গোলাম, বান্দা।	اسم موصول – مفعول به لإسم فاعل<عابدون> যার	اسم مرفوع بالواو <و>لأنه جمع مذكر سالم ،<ن>عوض عن التنوين المفرد – خبر (عِبَدة،عُبودة) [ن][ع ب د] সেবা করা, এবাদত করা, عبْدٌ ج عبيدٌ, عِبادٌ গোলাম, বান্দা।	ضمير منفصل – مبتدأ তোমরা	ح.عطف +ح. نفي এবং না

ইবাদত করি আমি		ইবাদতকারী		
109|3|এবং তোমরাও এবাদতকারী নও, যার এবাদত আমি করি				

﴾4﴿ عَبَدتُّمْ	مَّا	عَابِدٌ	أَنَا۠	وَلَآ
فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل المخاطبين ،<م>الجمع ـفاعل ~ الجملة صلة (عِبَدة،عُبودة) [ع ب د][ن] সেবা করা, এবাদত করা, عبْدٌ ج عبيدٌ, عِبادٌ গোলাম, বান্দা। ইবাদত করছ তোমরা	اسم موصول – مفعول به لاسم فاعل যাদের	اسم مرفوع – خبر (عِبَدة،عُبودة) [ع ب د][ن] সেবা করা, এবাদত করা, عبْدٌ ج عبيدٌ, عِبادٌ গোলাম, বান্দা। ইবাদতকারী	ضمير منفصل - مبتدأ আমি	ح.عطف +ح. نفيএবং না
109|4|এবং আমি এবাদতকারী নই, যার এবাদত তোমরা কর।				

﴾5﴿ أَعْبُدُ	مَآ	عٰبِدُوْنَ	أَنْتُمْ	وَلَآ
فعل مضارع مرفوع بالضم ،فاعل – مستيير <انا>~الجملة صلة (عِبَدة،عُبودة) [ع ب د][ن] সেবা করা, এবাদত করা, عبْدٌ ج عبيدٌ, عِبادٌ গোলাম, বান্দা। ইবাদত করি আমি	اسم موصول - مفعول به - لاسم فاعل যার	اسم مرفوع بالواو لأنه جمع مذكر سالم ،<ن>عوض عن التنوين المفرد – خبر (عِبَدة،عُبودة) [ع ب د][ن] সেবা করা, এবাদত করা, عبْدٌ ج عبيدٌ, عِبادٌ গোলাম, বান্দা। ইবাদতকারী	ضمير منفصل – مبتدأতোমরা	ح.عطف +ح. نفيএবং না
109|5|তোমরা এবাদতকারী নও, যার এবাদত আমি করি।				

دِيْنِ ﴿6﴾	وَلِيَ	دِينُكُمْ	لَكُمْ
اسم مرفوع – مبتدأ مؤخر +ضمير متصل <ي> محذوفه ،الكسرة دالة عليه (دين)[ض][د ي ن] স্বীকার করা, دينٌ ج أديان ধর্ম, মত, বিশ্বাস, يوم الدين শেষ বিচার দিবস। আমার দ্বীন	ح.عطف +جرّ +ضمير – خبر مقدم আমার জন্য	اسم مرفوع – مبتدأ مؤخر +ضمير متصل – جرّ مرحبا (دين)[ض][د ي ن] স্বীকার করা, دينٌ ج أديان ধর্ম, মত, বিশ্বাস, يوم الدين শেষ বিচার দিবস। তোমার দ্বীন	جرّ +ضمير متصل – خبر مقدم তোমাদের জন্য
109|6|তোমাদের কর্ম ও কর্মফল তোমাদের জন্যে এবং আমার কর্ম ও কর্মফল আমার জন্যে।			

।।সূরা আল কাফিরুন সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ

১১০। সূরা আন্-নাসর : মাদানী

রুকু: ০১ আয়াত:০৩

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالْفَتْحُ ﴿1﴾	اللَّهِ	نَصْرُ	جَاءَ	إِذَا
ح.عطف +معرفة اسم مرفوع – فاعل،معطوف <نصر الله >	لفظ الجلالة مجرور – مضاف إليه	اسم مرفوع - فاعل	فعل ماض مبني على الفتح	ظ. زمان – الشرط غير جازِمٍ

(فتْح) [ف][ف ت ح]] খোলা, ج فتحةٌ فُتَحاتখোলা , 'আস্বরবর্ণ। বিজয়	[اله]॥ খোদা বানান, الهٌ،اِلاهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, (ال+اله) الله আল্লাহ। [আল্লাহর	(نصْر،نُصُور) [ن][ن ص ر]] সাহায্য করা, জয়ী করা, نصْرٌসাহায্য, সহায়তা, نُصْرةসাহায্য, সহযোগীতা। সাহায্য	(مجئ) [ض][ج ي ا] আসা, পৌঁছা, جيئةপৌঁছা। আসবে	যখন

110|1|যখন আসবে আল্লাহর সাহায্য ও বিজয়

وَرَأَيْتَ	ٱلنَّاسَ	يَدۡخُلُوۡنَ	فِيۡ
ح.عطف +فعل ماض مبني على السكون لإتصاله +ضمير متصل – فاعل (رأْي) [ف][ر ا ي]॥॥] দেখা, ॥- মানুষ দেখানো, رَأْي ج آراءٌমতামত, দর্শন । এবং দেখবে তুমি	معرفة اسم منصوب - مفعول به (نوْس) [ن][ن و س]দোল খাওয়া, সামনে পিছন যাওয়া, نـاسٌমানুষ , জনগণ। মানুষদের	فعل مضارع مرفوع بثبوت النون +ضمير متصل – فاعل (دُخول) [ن][د خ ل]প্রবেশ করা, دخْلٌআয়, মুনাফা, دخَلٌবিশৃঙ্খলা। প্রবেশ করছে	جرّ মধ্যে

110|2|এবং আপনি মানুষকে দলে দলে আল্লাহর দ্বীনে

دِيۡنِ	ٱللّٰهِ	أَفۡوَاجًا ﴿2﴾
اسم مجرور – متعلق بالفعل <يدحلون> (دين)[ض][د ي ن]স্বীকার করা, دينٌ ج أديانধর্ম, মত, বিশ্বাস, يوم الدينশেষ বিচার দিবস। দ্বীনের	[اله]] الفظ الجلالة مجرور – مضاف إليه ॥খোদা বানান, الهٌ،اِلاهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, الله (ال+اله)আল্লাহ। আল্লাহর	اسم منصوب حال منصوب- [ف و ج] فوجٌ ج أفواجٌদল, গোষ্ঠী। দলেদলে

প্রবেশ করতে দেখবেন,

وَٱسْتَغْفِرْهُ ۚ	رَبِّكَ	بِحَمْدِ	فَسَبِّحْ
ح.عطف +فعل أمر مبني على السكون ،فاعل – مستيير <انت> +ضمير متصل – مفعول به X (غفْر،مغفِرة) [ض][غ ف ر] ক্ষমা করা, লাঘব করা, غفْرٌক্ষমা, II-পাহারা দেওয়া, X-ক্ষমা চাওয়া , غفورٌক্ষমাপ্রবন(আল্লাহ তায়ালা)। ও ক্ষমা চাও তাঁর	اسم مجرور- مضاف إليه +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (ربّ) [ن][ر ب ب] প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌ রব । তোমার রবের	جرّ +اسم مجرور – متعلق بالفعل (حمْد) [س][ح م د] প্রশংসা করা, حمْدٌপ্রশংসা, حميدٌপ্রশংসিত, أحمدُঅধিক প্রশংসিত। প্রশংসার সাথে	فا-واقعة (جواب الشرط) +فعل أمر مبني على السكون ،فاعل – مستيير <انت> [ف][س ب ح] (سبْح،سباحة)[II] সাঁতরানো, II–প্রশংসা করা, سُبحان الله আল্লাহর প্রশংসা। তবে তসবীহ করবে তুমি

110|3|তখন আপনি আপনার পালনকর্তার পবিত্রতা বর্ণনা করুন এবং তাঁর কাছে

﴿3﴾ تَوَّابًا	كَانَ	إِنَّهُۥ
اسم منصوب – خبر <كان> (توب،توبة) [ن][ت و ب]অনুতাপ করা, প্রত্যাবর্তন করা, توبةٌঅনুতাপ, تائِبٌপ্রত্যাবর্তনকারী, অনুতাপকারী। তওবা গ্রহনকারী	فعل ماض ناقص، اسم <كان> مستيير <هو> (كوْن،كِيان) [ن][ك و ن]হওয়া, ঘটা, থাকা, كوْنٌ ج أكوان ঘটনা । হলেন	ح. مشبه بفعل +ضمير متصل – اسم <ان> নিশ্চয়ই তিনি

ক্ষমা প্রার্থনা করুন। নিশ্চয় তিনি ক্ষমাকারী।

।।সূরা আন – নাসর সমাপ্ত ।।

سُورَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ

১১১। সূরা আল্-লাহাব : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:০৫

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

أَبِي	يَدَآ	تَبَّتْ
اسم مجرور – مضاف إليه أَبٌ ج آباءٌ، [ا ب و]পিতা, পূর্বপুরুষ। আবু	اسم مرفوع بالألف<ا> لأنه مثنى، حذفت <ن> لإتصاله <يدان> [ي د ي] يَدٌ، (مث) يَدانِ، ج أيدٍ،أيادٍ হাত, সামনের পা। দুই হাত	فعل ماض مبني على الفتح ،<تْ>التأنيث [ت ب ب]ধ্বংস হল
111|1|আবু লাহাবের হস্তদ্বয় ধ্বংস হোক		

وَتَبَّ ﴿1﴾	لَهَبٍ
ح.عطف +فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستيير <هو> (تبّ،تبب) [ض] [ت ب ب]মুছে যাওয়া, নিশ্চিহ্ন করা, ধ্বংস হওয়া, تَبًّا له ধ্বংস হোক। এবং ধ্বংস হল সেও	اسم مجرور- مضاف إليه لَهبٌ ج (لهْب،لهَب) [س][ل ه ب] জ্বালান, পড়ান, لَهِيبٌশিখা, আগুনের শিখা। লাহাবের
এবং ধবংস হোক সে নিজে,	

عَنْهُ	أَغْنٰى	مَآ
جرّ +ضمير- متعلق بالفعل তার জন্য	فعل ماض مبني على الفتح المقدر على <ا>للتعذر (غِنًى،غَناء) [س][غ ن يIV] ধণী হওয়া, অভাবমুক্ত হওয়া, غِنًىধণী, X-প্রয়োজনমুক্ত হওয়া । কাজে আসল	ح. نفي না

111|2|কোন কাজে আসেনি তার ধন-সম্পদ ও যা সে উপার্জন করেছে।

كَسَبَ ﴿2﴾	وَمَا	مَالُهُ
فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستيير <هو> (كسْب) [ض][ك س ب]অর্জন করা, লাভ করা, كَسْبٌঅর্জন। উপার্জন করেছিল সে	ح.عطف +اسم موصول - معطوف <ما> এবং যা	اسم مرفوع – فاعل +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [م و ل]IIধণী করা, অর্থ সরবরাহ করা, مالٌ ج أموالٌসম্পদ, মাল, مموّلٌ ج موّلون সম্পদের অধিকারী, অর্থ দাতা । তার মাল

ও যা সে উপার্জন করেছে।

لَهَبٍ ﴿3﴾	ذَاتَ	نَارًا	سَيَصْلٰى
اسم مجرور – مضاف إليه [ل ه ب][س] (لَهْب،لَهَب)জ্বালান, পড়ান, لَهَبٌ ج	اسم منصوب – صفة منصوبة ذُو،ذي،ذا - [ذو] ذات(م) ج ذوو،أولو،ذَوات(م) অধিকারী, মালিক।	اسم منصوب – مفعول به [ن و ر]II প্রস্ফুটিত হওয়া, প্রজ্বলিত করা, আলোয় পূর্ণ করা, نارٌ (م) ج نِران আগুন, রাইফেল গুলি, النارُজাহান্নাম। আগুনে	ح. استقبال +فعل مضارع مرفوع بالضم المقدر على<ا>للتعذر ،فاعل – مستيير <هو> [ص ل ي] [ض] (صلي) ভাজা, আগুনে উন্মুক্ত

لَهِيبٌশিখা, আগুনের শিখা। **শিখার**	**অধিকারী**		**হওয়া, مُصطلًىচুল্লি,** আগুনের স্থান । **শীঘ্রই জ্বলবে**
111|3|সত্বরই সে প্রবেশ করবে লেলিহান অগ্নিতে			

ٱلْحَطَبِ ﴿4﴾	**حَمَّالَةَ**	**وَٱمْرَأَتُهُۥ**
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه (حطَب) [ض] [ح ط ب]খড়ি সংগ্রহ করা, حَطَبٌ ج أحطابٌ**খড়িকাঠ, حاطِبٌকাঠ** সংগ্রহকারী। "حمّالة الحطب"**জ্বালানিকাঠ** বহনকারিনী-আবু লাহাবের স্ত্রী। **কাঠ**	اسم منصوب – مفعول به ،فعل – محذوف تقديره<أذم> (حمْل) [ض] [ح م ل]বহন করা, তোলা, حِملٌ،أحمالٌ**ভার,** বোঝা, حمّالة**কড়িকাঠ,** খুঁটি। **বহন কারিণী**	ح.عطف +اسم مرفوع - مبتدأ +ضمير متصل – جرّ بالإضافة (مراءة)[ك] [س] [ن] [م ر ا] (مروءة)(مراة) **স্বাস্থ্যবান হওয়া** [س] , **পৌরুষদীপ্ত হওয়া** [ك], **সুস্থ আবহাওয়া হওয়া** [ك], (أمرأ،إمْؤ)- المَرءُ**একজন মানুষ।** **তার স্ত্রীও**
111|4|এবং তার স্ত্রীও-যে ইন্ধন বহন করে,		

مَّسَدٍۭ ﴿5﴾	**مِّن**	**حَبْلٌ**	**جِيدِهَا**	**فِى**
اسم مجرور – متعلق بصفة محذوفه <حبل> (مسْد) [ن][م س د]পাকানো, ভালভাবে মোড়ানো,مَسَدٌ ج مِسادٌ،أسادٌ খেজুর **গাছের আঁশ,তন্তু** " حبلٌ من مسدٍ" খেজুর আঁশের রশি । **পাকান**	جرّ **হতে**	اسم مرفوع- مبتدأ [ح ب ل] VIIIফাঁসের মধ্যে ধরা, حبْلٌ ج حِبالٌ، أحبُلٌ**দড়ি,** সূতা, ক্যাবল **রশি**	اسم مجرور- خبر مقدم +ضمير متصل – جرّ بالإضافة [ج ي د]،جِيدٌ ج أجيادٌ،جيودٌ**গলা,** গ্রীবা। **তার গলার**	جرّ **মধ্যে**
111|5|তার গলদেশে রশি নিয়ে।				

سُوْرَةُ الاخْلاَصِ مَكِّيَّةٌ

১১২। সূরা আল্-ইখলাস : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:০৪

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

أَحَدٌ ﴿1﴾	ٱللَّهُ	هُوَ	قُلۡ
اسم مرفوع – بدل [ا ح د]॥ একত্রিত করা, أَحَدٌ ج إِحْدى এক, একজন। **এক অদ্বিতীয়র**	اسم مرفوع – خبر [اله] ॥ খোদা বানান, الهٌ،اِلاهٌ ج آلِهةٌ খোদা, উপাস্য, (ال+اله) الله আল্লাহ। **আল্লাহ**	ضمير منفصل – مبتدأ **তিনি**	فعل أمر مبني على السكون ،حذفت <و> لإلتقاء السكنين ،ونقلت الضم الى<ق> ،فاعل – مستيير <انت> (قَوْل) [ن][ق و ل] কথা বলা, বলা, قَالَةٌ কথা, বক্তৃতা, أقاوِيلُ،أقوالٌ،قوّلٌ শব্দ, কথা,বক্তব্য । **বল**
112|1|বলুন, তিনি আল্লাহ, এক,			

ٱلصَّمَدُ ﴿2﴾	ٱللَّهُ
معرفة اسم مرفوع – خبر (سمد،صُمود) [ض][ن][ص م د]অবলম্বন করা, যাওয়া,অস্বীকার করা, বাধা দেওয়া [ن], বন্ধ করা,সিপি দেওয়া [ض], صمَدٌ চিরন্জীব, অমুখাপেক্ষী (আল্লাহ)।	لفظ الجلالة مرفوع – مبتدأ

মুখাপেক্ষহীন	[اله] ‖ খোদা বানান, الهٌ،اِلاهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, (ال+اله) الله আল্লাহ। আল্লাহ
112|2|আল্লাহ অমুখাপেক্ষী,	

يُوْلَدْ (3)	وَلَمْ	يَلِدْ	لَمْ
فعل مضارع مجزوم مجهول مبني على السكون ،نائب فاعل – مستيير <هو> (وِلَادَة،لِدَ،مولِد) [ض] [و ل د]বহন করা, জন্ম দেওয়া, উৎপাদন করা,لِدون ج لِدةٌপ্রসব, জন্ম, ولدٌ ج أولادٌ, وُلْدٌঅধস্তন, প্রজন্ম, সন্তান। **জন্ম দেওয়া হয় নাই তাঁকে**	ح.عطف +ح. نفي **এবং নাই**	فعل مضارع مجزوم بالسكون ~حذفت واو <يَوْلِدُ> ،فاعل – مستيير <هو> (وِلَادَة،لِدَ،مولِد) [ض] [و ل د]বহন করা, জন্ম দেওয়া, উৎপাদন করা,لِدون ج لِدةٌপ্রসব, জন্ম, وُلْدٌ ,ولدٌ ج أولادٌঅধস্তন, প্রজন্ম, সন্তান। **জন্ম দেন**	ح. نفي **না**
112|3|তিনি কাউকে জন্ম দেননি এবং কেউ তাকে জন্ম দেয়নি			

أَحَدٌ (4)	كُفُوًا	لَّهُ	يَكُنْ	وَلَمْ
اسم مرفوع – اسم <كان>[ا ح د] **কেউই**	اسم منصوب – خبر <كان> مقدم (كفْأ) [ف] [ك ف أ]ঘুড়ান, উল্টান, সড়ান, كَفْءٌ،كِفءٌ،كُفءٌ ج أكفاءٌ،كِفاءٌসমান, একরকম, كُفُوءٌ،كُفُوٌসমান, সমতুল্য। **সমতুল্য**	جرّ +ضمير – متعلق بحبر <كُفُوًا> তার **জন্য**	فعل مضارع ناقص مجزوم بالسكون<يَكُوْنْ> ، نقلت <الضم> الى <ك> للثقل ، حذفت <و> لإلتقاء السكنين (كوْن،كِيان) [ن][ك و ن] **হওয়া, ঘটা, থাকা,** كَوْنٌ ج أكوان**ঘটনা** । **হয়**	ح.عطف +ح. نفي **এবং না**
112|4|এবং তার সমতুল্য কেউ নেই।				

।।সূরা আল – ইখলাস সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ الفَلَقِ مَكِّيَّةٌ

১১৩। সূরা আল্‌-ফালাক : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:০৫

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

﴾1﴿ الْفَلَقِ	بِرَبِّ	أَعُوْذُ	قُلْ
معرفة اسم مجرور – مضاف إليه (فلْق) [ض][ف ل ق]বিভক্ত করা, পরিষ্কার করা,চৌচিড় করা, ঘটানো,আঁধার অপসারণ করা, فَلْقٌ**ফাটা,** চিড়া, فَلَقٌ**সকাল,** ভোর । প্রভাতে	جرّ +اسم مجرور - متعلق بالفعل [ن][ر ب ب] (ربّ)**প্রভু হওয়া,** ربٌّ ج أرباب**রব ।** **রবের নিকট**	فعل مضارع مرفوع بالضم فاعل – مستيير <انا>، [ع و ذ] [ن] (عوْذ،عياذ،معاذ) নিরাপত্তা চাওয়া, আশ্রয় চাওয়া, عوْذٌ**আশ্রয়,** عَوَذٌ**আশ্রয়** স্থান। **আশ্রয় চাই আমি**	فعل أمر مبني على السكون ،حذفت <و> لإلتقاء السكنين،ونقلت الضم الى <ق> ،فاعل – مستيير <انت> [ق و ل][ن] (قوْل) **কথা বলা, বলা,** قَالَةٌ**কথা, বক্তৃতা,** قوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُ**শব্দ, কথা,বক্তব্য ।** **বল**

113|1|বলুন, আমি আশ্রয় গ্রহণ করছি প্রভাতের পালনকর্তার,

﴾2﴿ خَلَقَ	مَا	شَرِّ	مِنْ

فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستيير <هو> (خاْق) [ن][خ ل ق]**গঠন করা, আকৃতি দেওয়া, সৃষ্টি করা, خَلْقٌসৃষ্টি, خُلُقٌ ج أخلقٌপ্রকৃতি ।** **সৃষ্টি করেছেন তিনি**	اسم موصول – جر بالإضافة **যা**	اسم مجرور – متعلق بالفعل [س][ك][ف] [ش ر ر] (شَرّ)(شِرّة) খারাপ হওয়া, অসাধু হওয়া, شرٌّ جشُرور**খারাপ, অমঙ্গল, অন্যায়, নিকৃষ্ট।** **অনিষ্ট**	جرّ **হতে**
113|2|তিনি যা সৃষ্টি করেছেন, তার অনিষ্ট থেকে,			

وَقَبَ ﴿3﴾	إِذَا	غَاسِقٍ	شَرِّ	وَمِنْ
فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستيير <هو> [و ق ب][ش] (وقْب) গর্তে পড়া, অস্ত যাওয়া, ডুবে যাওয়া, وقْبٌ ج أوقبٌগর্ত, চক্ষু কোঠর । **আচ্ছন্ন হয়**	ظ. زمان – في محل حال محذوفة <غاسق> **যখন**	اسم مجرور – مضاف إليه [غ س ق][ض] (غسْق،غسَق،غسان)অন্ধকার হওয়া, غسَقٌ**সন্ধ্যা,** গোধূলি, غاسِقٌ **অন্ধকারকারী।** **অন্ধকারকারী**	اسم مجرور – متعلق بالفعل ،معطوف [س][ك][ف] [ش ر ر] (شَرّ)(شِرّة) খারাপ হওয়া, অসাধু হওয়া, شرٌّ جشُرور**খারাপ, অমঙ্গল, অন্যায়, নিকৃষ্ট।** **অনিষ্ট**	ح.عطف +جرّ **এবং হতে**
113|3|অন্ধকার রাত্রির অনিষ্ট থেকে, যখন তা সমাগত হয়,				

﴿4﴾ ٱلْعُقَدِ	فِي	ٱلنَّفَّٰثَٰتِ	شَرِّ	وَمِن
معرفة اسم مجرور [ع ق (عقْد) [ض][دবুনান, গিট দেওয়া, গিট দায়ে বাঁধা, জমা করা, ভাঁজ করা, عُقْدَةٌ ج عُقَدٌ**গিরা,** গ্রন্থি, জোড়া। **গিরিগুলির**	جرّ **মধ্যে**	معرفة اسم مجرور ،بالكسرة<تِ> لأنه جمع مؤنث سالم – مضاف إليه (نفْث) [ض] [ن][ن ف ث]থুথু ফেলা, কাশি দেওয়া, ফুঁক দেওয়া, **نفثٌকাশ,** লালা, **نفاثٌলালা,** ফুঁক, **نَفّاثٌজেট** ইন্জিন, **نفّاثةٌ ج نفّاثاتٌ**নফ্ফাছাত**গিরায়** ফুক দানকারিনী মহিলা **ফুঁকদানকারীর**	اسم مجرور – متعلق بالفعل ،معطوف [ش ر ر] [ف][ك][س] (شرّ)(شِرّة) খারাপ হওয়া, অসাধু হওয়া, شرٌّ جشُرور**খারাপ, অমঙ্গল, অন্যায়, নিকৃষ্ট।** **অনিষ্ট**	ح.عطف +جرّ **হতে**
113|4|গ্রন্থিতে ফুঁৎকার দিয়ে জাদুকারিনীদের অনিষ্ট থেকে				

﴿5﴾ حَسَدَ	إِذَا	حَاسِدٍ	شَرِّ	وَمِن
فعل ماض مبني على الفتح ،فاعل – مستيير <هو> (حسْد) [ن][ح س د]হিংসার করা, ক্ষোভ করা, **حَسدٌহিংসা,** حاسِدٌ ج حاسِدون،حُسّادٌ،حسدةٌ**হিংসাকারী,** ক্ষোভ কারী। **হিংসা করে সে**	ظ. زمان – في محل حال محذوفة <حاسد> **যখন**	اسم مجرور – مضاف إليه (حسْد) [ن][ح س د] হিংসার করা, ক্ষোভ করা, **حَسدٌহিংসা,** حاسِدٌ ج حاسِدون،حُسّادٌ،حسدةٌ**হিংসাকারী,** ক্ষোভ কারী। **হিংসুকের**	اسم مجرور – متعلق بالفعل ،معطوف [ش ر ر] [ف][ك][س] (شرّ)(شِرّة) খারাপ হওয়া, অসাধু হওয়া, شرٌّ جشُرور**খারাপ, অমঙ্গল, অন্যায়, নিকৃষ্ট।** **অনিষ্ট**	ح.عطف +جرّ **এবং হতে**
113|5|এবং হিংসুকের অনিষ্ট থেকে যখন সে হিংসা করে।				

।।সূরা আল-ফালাক সমাপ্ত ।।

سُوۡرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ

১১৪। সূরা আন্-নাস : মাক্কী

রুকু: ০১ আয়াত:০৬

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

ٱلنَّاسِ ﴿1﴾	بِرَبِّ	أَعُوذُ	قُلْ
معرفة اسم مجرور ـ مضاف إليه (نوْس) [ن][ن و س]দোল খাওয়া, সামনে পিছন যাওয়া, نـاسٌমানুষ , জনগণ। মানুষের	جرّ +اسم مجرور - متعلق بالفعل [ر ب ب][ن] (ربّ)প্রভু হওয়া, ربٌّ ج أربابٌরব । রবের নিকট	فعل مضارع مرفوع بالضم فاعل ـ مستيير <انا>، [ع و ذ] [ن] (عوْذ،عياذ،معاذ) নিরাপত্তা চাওয়া, আশ্রয় চাওয়া, عوْذٌআশ্রয়, عَوَذٌআশ্রয় স্থান। আশ্রয় চাই আমি	فعل أمر مبني على السكون ،حذفت <و> لإلتقاء السكنين،ونقلت الضم الى <ق> ،فاعل ـ مستيير <انت> (قوْل) [ن][ق و ل] কথা বলা, বলা, قَالَةٌকথা, বক্তৃতা, قوْلٌ،أقوالٌ،أقاوِيلُশব্দ, কথা,বক্তব্য । বল

114|1|বলুন, আমি আশ্রয় গ্রহণ করিতেছি মানুষের পালনকর্তার,

ٱلنَّاسِ ﴿3﴾	إِلَٰهِ	ٱلنَّاسِ ﴿2﴾	مَلِكِ
معرفة اسم مجرور [ن][ن و س] نَوْس)দোল খাওয়া, সামনে পিছন যাওয়া, ناسٌমানুষ , জনগণ। মানুষের	اسم ج [اله] ll খোদা বানান, الهٌ،إلاهٌ ج آلِهةٌখোদা, উপাস্য, الله (ال+اله)আল্লাহ। ইলাহর	معرفة اسم مجرور [ن][ن و س] نَوْس)দোল খাওয়া, সামনে পিছন যাওয়া, ناسٌমানুষ , জনগণ। মানুষের	اسم مجرور (مَلْك،مُلْك) [ض][م ل ك]অধিগ্রহণ করা, মালিক হওয়া , مَلاَكٌ ج ملاكون অধিকারী, মালিক, مُلْكٌ ج مُلُوكٌ রাজা, বাদশাহ, مَلَكٌ (مَلأَك)،ملائِكةٌ ফেরেশতাগণ। মালিকের
114|2|মানুষের অধিপতির, 114|3|মানুষের মা'বুদের			

ٱلْخَنَّاسِ ﴿4﴾	ٱلْوَسْوَاسِ	شَرِّ	مِنْ
معرفة صفة مجرورة (خنْس) [ن][خ ن س] পিছনে যাওয়া, خانِسٌ ج خُنَّسٌপশ্চাদগামী, الخُنّسতারকাসমূহ যারা লুকায়, الخنّاس– শয়তানের উপাধী(যারা আল্লাহর নাম নিলে দুরে সড়ে যায়), পলায়নকারী। বারবার প্রত্যাবর্তন কারী	معرفة اسم مجرور- مضاف إليه [و س و س]Qlফিসফিস করা, কানাকানি করা, কুমন্ত্রণা দেওয়া,, وسْوَسةٌ ج وساوِسُশয়তানতুল্য, অতিমন্দ, কুমন্ত্রণা, প্রলোভন, وساوِسُ ج وسْواسٌ অতিমন্দ, কুমন্ত্রণা, প্রলোভন। কুমন্ত্রণা কর দাতার	اسم مجرور – متعلق بالفعل معطوف، [ش ر ر] [ف][ك][س] (شَرّ)(شِرّةٌ) খারাপ হওয়া, অসাধু হওয়া, شرٌّ جشُرُورখারাপ, অমঙ্গল, অন্যায়, নিকৃষ্ট। অনিষ্ট	جرّ হতে
114|4|তার অনিষ্ট থেকে, যে কুমন্ত্রণা দেয় ও আত্নগোপন করে,			

<table>
<tr><td>فِيْ</td><td>يُوَسْوِسُ</td><td>ٱلَّذِىْ</td></tr>
<tr><td>جرّ

মধ্যে</td><td>فعل مضارع مرفوع بالضم ،فاعل – مستيير <هو>

[و س و س] Qlফিসফিস করা, কানাকানি করা, কুমন্ত্রণা দেওয়া,, وسْوَسةٌ ج وساوِسُশয়তানতুল্য, অতিমন্দ, কুমন্ত্রণা, প্রলোভন, وساوِسُ ج وسْواسٌ وسْواسٌ অতিমন্দ, কুমন্ত্রণা, প্রলোভন।

কুমন্ত্রণা দেয়</td><td>اسم موصول – صفة

<للوسواس>

যে</td></tr>
<tr><td colspan="3">114|5|যে কুমন্ত্রণা দেয় মানুষের অন্তরে</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>ٱلنَّاسِ ﴿٥﴾</td><td>صُدُوْرِ</td></tr>
<tr><td>معرفة اسم مجرور

نوْس) [ن][ن و س]দোল খাওয়া, সামনে পিছন যাওয়া, نَاسٌমানুষ , জনগণ।

মানুষের</td><td>اسم مجرور – متعلق بالفعل

(صُدور) [ض] [ن][ص د ر]সামনে যাওয়া, যাওয়া, উঠা, বের হওয়া, উদ্ভুত হওয়া, প্রকাশিত হওয়া, صُدورٌ ج صدْرٌবক্ষ, স্তন, লিজা, হৃদয়, সামনের দিক, নেতা, সেনাপতি, صدرةগেন্জি, মেয়েদের গেঞ্জি । অন্তর সমুহের</td></tr>
<tr><td colspan="2">114|5|যে কুমন্ত্রণা দেয় মানুষের অন্তরে</td></tr>
</table>

مِنَ	ٱلْجِنَّةِ	وَٱلنَّاسِ ﴿6﴾
جرّ হতে	اسم مجرور – متعلق <يوسوس> (جنّ،جُنون) [ج ن ن][ن] ঢাঁকা, গোপন করা, নামা,(م)جِنّيِةٌ জ্বিন, جِنّ جِنان، جَنّاتٌ ج جَنَّةٌ বেহেস্ত, বাগান । জ্বীনের	ح.عطف +معرفة اسم مجرور – معطوفة <الجنة> (نوْس) [ن و س][ن]দোল খাওয়া, সামনে পিছন যাওয়া, ناسٌমানুষ , জনগণ। ও মানুষের

114|6|জ্বিনের মধ্য থেকে অথবা মানুষের মধ্য থেকে।

|| ৩০ তম পারা সমাপ্ত||